CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

PROF. RAGHUVIRA'S EXPEDITION TO CHINA

LOKESH CHANDRA
AND
S. D. SINGHAL

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

PROF. RAGHUVIRA'S EXPEDITION TO CHINA

PART I

(Travel Diary and Photographs)

edited by

Prof. Dr. **LOKESH CHANDRA**

and

Dr. Mrs. **S. D. SINGHAL**, Benaras Hindu University

INTERNATIONAL ACADEMY OF INDIAN CULTURE, NEW DELHI, 1969

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Published by the
INTERNATIONAL ACADEMY OF INDIAN CULTURE
J22 Hauz Khas Enclave
New Delhi 16 (India)

All rights reserved, including the right to reprint, translate or to reproduce this book or parts thereof in any form.

Printed: January 1956
Published: January 1969

क्रमसंख्या 5656
प्राप्ति तिथि
विभाग
श्रेणी
STATE MUSEU... LUCKNOW.

Printed by
the Arya Bharati Mudranalaya
New Delhi-16

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आचार्य रघुवीर का चीन-अभियान

भाग १ (यात्रा–दैनिकी)

संपादक

डॉ. लोकेशचन्द्र एम्. ए., डी. लिट्.

एवं

डॉ. श्रीमती सुदर्शना देवी सिंहल, डी. लिट्.

प्रकाशक

सरस्वती-विहार, नई दिल्ली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ŚATA-PIṬAKA SERIES

INDO-ASIAN LITERATURES

Volume 76

Reproduced in original scripts and languages
Translated, annotated and critically evaluated by
specialists of the East and the West
in a Series of Collectanea

Founded by

RAGHU VIRA *M.A., Ph.D., D.Litt. et Phil.*

क्रमसंख्या 5656
प्राप्ति तिथि
विभाग
श्रेणी
STATE MUSEUM, LUCKNOW

आचार्य-रघुवीर-समुपक्रान्तं

जम्बुद्वीप-राष्ट्राणां
(भारत-नेपाल-गान्धार-शूलिक-तुरुष्क-पारस-ताजक-भोट-चीन-मोंगोल-मञ्जु-
उदयवर्ष-सिंहल-सुवर्णभू-श्याम-कम्बुज-चम्पा-द्वीपान्तरादीनां)

**एकैकेषां समस्रोतसां संस्कृति-साहित्य-समुच्चय-
सरितां सागरभूतं**

शतपिटकम्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषयसूची

	पृष्ठ
भारत से प्रस्थान	१
क्वाङ्-चोउ	४
षड्बोधिवृक्ष मन्दिर	६
पेइ-चिङ	१२, १२५
पेइ-चिङ् पुस्तकालय	१४
राष्ट्रीय-अल्पसंख्य-जाति-भाषा-साहित्य विभाग	१४
प्रथम मई का उत्सव	१६
विद्या-विभाग	२३
प्रासाद-पुस्तकालय	२३,१२७
भाषाविज्ञान-पीठ	२५
युङ्-हो-कुङ्	२७,१२०,१२५
क्वान्-ची मन्दिर	२६,१२५,१३२
सुङ्-चू स्स	३०
फू-थी स्स	३०
तुङ्-च्याओ स्स	३०
कृषि-उत्पादन-सहकारी-मण्डल	३१
वस्त्र-निर्माणी संख्या १	३१
राष्ट्रीय-अल्पसंख्यक-जाति-विद्यालय	३३
पेइ-चिङ् विश्वविद्यालय	३८
पी-विन् स्स (५०० अर्हतों का मन्दिर)	४०
चोउ-अन्-लाइ से भेंट	४१
ग्रीष्म-प्रासाद का बुद्ध-परिमल-स्तम्भ मन्दिर	४४
फू-तू स्स	४५
महाकाल-म्याओ	४५
श्रमिक-संघ	४६
ता-तुङ् (नगर)	४७,५१,६३
होहे-हॉता	४८
शी-ली-थू-चाओ मन्दिर	४८
फ़ा-शी स्स (धर्मनन्दी विहार)	४९
ता-चाओ-वू-ल्याङ स्स	५०
हुतात्म स्मारक-स्तम्भ	५१
युन्-काङ्	५२
उपरि ह्वा-यन् स्स	६३
अधो ह्वा-यन् स्स	६४
कोयले की खान में	६४
तुन्-ह्वाङ् के लिए प्रस्थान	६६
लान्-चाओ	६७,८६,६५
चू-च्यान् (नगर)	६६,८६
युङ्-मन्	७१
आन्-शी (ग्राम)	७१,८८
तुन्-ह्वाङ्	७१
तुन्-ह्वाङ्-गवेषणालय	८०
तुन्-ह्वाङ-शिलालेख	८४
पञ्चोत्स मन्दिर	८६,६६
शी-निङ् में भोट और मोंगोल नृत्य	६०,६५
कुम्-बुम् अथवा ता-अर् स्स	६१
ताओ मन्दिर	६६
शी-आन्	६६
दुन्दुभि-भवन	६७
घण्टा-भवन	६७
थ्स-अन् स्स	६७
ता-यन्-था (वनहंस का महामन्दिर)	६८
ता-च्येन्-फू स्स	६६
श्याओ-यन्-था	६६
शी-आन् विश्वविद्यालय	६६
फ़ू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स	१००
तू-शू-क्वान् (पुस्तकालय)	१०१
शी-आन् अद्भुतागार	१०२
क्वान्-जन्-स्स	१०२
हुङ्-फ़ू स्स	१०३
थ्स-अन् स्स	१०३
मिङ्-लुङ् भवन	१०३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

	पृष्ठ
शिङ्-च्याओ स्स	१०३
ता-शिङ्-शान् स्स	१०४
काइ-य्वेन् स्स	१०४
वो-लुङ् स्स	१०५
पेइ-लिन् (शिला-वन)	१०५
वन्-म्याओ (ऐतिहासिक शिलालेखों का संग्रहालय)	१०५
ह्वा-यन् स्स	१०६
ध्साओ-थाङ् स्स	१०६
चीनी छाया-नाटक	१०६
लो-याङ्	१०८
पो-मा स्स (श्वेताश्व-विहार)	१०८
छी-युङ् था अथवा पूर्वीय पो-मा स्स	११०
अष्टकोण-स्तम्भ-धारणी	१११
लुङ्-मन्	११२
ता-चिङ (ग्राम)	१२१
मुक्देन्	१२२
श-सङ् स्स अथवा पीत मन्दिर	१२३
छिङ् राजाओं के प्रासाद में	१२३
मुक्देन् पुस्तकालय	१२३
आन्-शान् में लोहे की निर्माणी	१२४
पेइ-चिङ् पुस्तकालय	१२५,१२६
भारत-संगीत-मण्डल का विशेष कार्यक्रम	१२५
शिशुशाला	१२७
चीनी संसद् का सत्र	१२७
पुरातन साहित्य विक्रयशाला	१२८
मोंगोल सेना की संगीत-मण्डली	१२६
महाभित्ति पर षड्भाषालेख	१३०
चीन में संस्कृत	१३२
चीन से प्रस्थान-भोज	१३३
चोउ-अन् लाइ को कविता समर्पण	१३८
पेइ-चिङ से प्रस्थान	१४२
नान्-चिङ् अद्धु तागार	१४२

	पृष्ठ
चिङ्-लिङ् अर्थात् नान्-चिङ्-बौद्धसूत्र-मुद्रणालय	१४३
छी-श्या स्स	१४४
शाङ्-हाइ	१४६
चिन्-आन् स्स	१४६
यू-फ़ू स्स	१४७
सूती कपड़ों को रंगने और छापने की निर्माणी	१४७
हाङ्-चोउ	१४९
लेइ-फ़ङ् स्तूप	१५०
लिङ-यिन् स्स	१५१
फ़ेइ-लाइ-फङ	१५२,१५४
श्या-थ्येन्-चू स्स	१५२
चाओ-छिङ्-लू स्स	१५२
काओ-ली स्स	१५३
लू-फ़ो स्तूप	१५३
युन्-छी स्स	१५३
श-वू तुङ् (५१६ अर्हत्)	१५४
यन्-श्या तुङ्	१५४
चिङ्-शान् स्स	१५६
स-याङ गिरि	१५६
वू-थाइ-शान् अथवा छिङ-ल्याङ-शान्	१५७
ता-था-य्वेन् स्स	१५८
वू-पाइ-लो-हन्-था अर्थात् ५००-अर्हत् मन्दिर	१६०
ता-फ़ू स्स अर्थात् महाबुद्ध-मन्दिर	१६०
सुन्-यात्-सन्-विश्वविद्यालय	१६०
हॉङ-कॉङ् से प्रस्थान	१६२
सिंहपुर	१६३
पीनांग	१६३
श्रीलंका	१६३
बम्बई	१६४
नई दिल्ली में प्रदर्शनी	१६५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्रसूची

	पृष्ठ के सामने
चीन का जनव्याप्त संस्कृत मन्त्र	१
भारत के एक आचार्य चीन-प्रवास में	२
इ-चिङ विरचित संस्कृत-चीनी कोष के विलोकन में तल्लीन आचार्य रघुवीर	३
पेइ-चिङ के स्थात्र पर आचार्य रघुवीर का स्वागत	१२
राष्ट्रमन्दिर छि न्येन् थ्येन् में	१३
युङ-हो-कुङ	२६
युङ-हो-कुङ में मैत्रेय की महाप्रतिमा	२७
क्वान्-ची मन्दिर	२८
क्वान्-ची मन्दिर के पुस्तकागार में	२९
क्वान्-ची मन्दिर की महाप्रतिमा के समक्ष	३०
पेइ-चिङ की वस्त्र-निर्माणी में	३२
कुओ-मो-जो आचार्य रघुवीर का स्वागत करते हुए	३७
चोउ-अन्-लाइ के साथ	४१
आचार्य रघुवीर चोउ-अन्-लाइ को अपनी 'अहिंसा-पञ्चाशिका' देते हुए	४३
धर्मनन्दी विहार (होहे-हॉता)	४८
धर्मनन्दी विहार की मुद्रणशाला में	४९
होहे-हॉता के विहार की वेदी देखते हुए और मन्त्रपाठ लिखते हुए	५०
आभ्यन्तर मोंगोल का अमिताभ-विहार	५१
युन्-काङ के गुहा-कलाप में	५२
युन्-काङ में तथागत की विशाल प्रतिमा	५३
युन्-काङ की बुद्ध-त्रिमूर्ति (६-७वीं शती)	५४
युन्-काङ की गुहा २२	५५
तुन्-ह्वाङ गुहावली का नवभूमिक काष्ठ-निर्मित प्रवेश-मण्डप	७१
तुन्-ह्वाङ के नवभूमिक मण्डप की शिखरभूमि पर आचार्य रघुवीर	७२
तुन्-ह्वाङ गवेषणालय में प्राचीन लिपियां देखते हुए आचार्य रघुवीर	७३
तुन्-ह्वाङ गुहा २८८ में चित्रानुकृति-संभार के पास	७४
तुन्-ह्वाङ गुहा २८५ में चित्रानुकरण करता हुआ कलाकार	७५
तुन्-ह्वाङ गुहा २७५ में छिङ-कालीन लीलागमना नारी	७६
आधुनिक चीन में तुन्-ह्वाङ कला	७७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

	पृष्ठ के सामने
मो-गाओ-कू में षडक्षरी विद्या का षड्लिपि शिलालेख	७८
तुन्-ह्वाङ् की स्वी-कालीन मूर्त्तियों में आचार्य रघुवीर	७९
तुन्-ह्वाङ् गुहा ३१९ की स्वर्णयुगीन कलाकृतियों में आचार्य रघुवीर	८०
तुन्-ह्वाङ् गुहा २३८ में पुनरालेखन देखते हुए आचार्य रघुवीर	८१
तुन्-ह्वाङ् के थाङ्-कालीन भित्तिचित्रों में आचार्य रघुवीर	८२
तुन्-ह्वाङ् की थाङ्-कालीन तथागत-प्रतिमा देखते हुए आचार्य रघुवीर	८३
तुन्-ह्वाङ् में ब्राह्मी लिपि में ध्वजस्तम्भ-लेख	८४
तुन्-ह्वाङ् के अध्यक्ष छाङ् आदि के साथ	८८
लान्-चाओ के मन्दिर-द्वार पर कालचक्रतन्त्र का वीजमन्त्र	८९
आभ्यन्तर तिब्बत स्थित कुम्-बुम् विहार	९०
कुम्-बुम् के दो जीवित बुद्धों के साथ	९१
कुम्-बुम् का उपदेश-भवन	९२
कुम्-बुम् का जाम्याङ-कुन्सिक् खाङ् पुस्तकागार	९३
कुम्-बुम् की प्राचीन मुद्रणशाला	९४
कुम्-बुम् के जीवित बुद्ध आचार्य रघुवीर को भेंट करते हुए	९५
कुम्-बुम् के दिवंगत आचार्यों के सुरक्षित शरीर	९६
शि-आन् में सप्तभूमिक श्वेन्-च्वाङ स्तूप	९७
श्वेन्-च्वाङ स्तूप की उपरितम भूमि में	९८
पञ्चदशभूमिक ई-चिङ स्तूप	९९
श्वेन्-च्वाङ समाधि के समीप का विहंगम दृश्य	१००
पञ्चभूमिक श्वेन्-च्वाङ समाधि	१०१
श्वेन्-च्वाङ के समाधि-लेख की छाप लेते हुए	१०२
क्वि-चि (श्वेन्-च्वाङ के शिष्य)	१०३
श्वेन्-त्स (श्वेन्-च्वाङ के शिष्य)	१०४
वो-लुङ् स्स विहार में शिलोत्कीर्ण बुद्ध-पाद	१०५
शी-आन् के अद्भुतागार में ६-७वीं शती की मूर्त्तियां	१०६
पो-मा स्स अर्थात् चीन का प्रथम श्वेताश्व विहार	१०७
पो-मा स्स के प्रवेशद्वार पर श्वेत घोड़ा	१०८
पो-मा स्स में दो भारतीय धर्माचार्यों की समाधियां	१०९
पो-मा स्स के पूर्व में १३-भूमिक छी-युङ-था अर्थात् मेघचुम्बी स्तूप	११०
लुङ्-मन् गुहाएं प्रवेश करते हुए आचार्य रघुवीर	११२
लुङ्-मन् से बुद्ध-त्रिमूर्त्ति के शिलाचित्र की छाप	११३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृष्ठ के सामने

लुङ्-मन् की १३वीं गुहा की छत में विराट् पद्म ११६
लुङ्-मन् की महाप्रतिमाओं की अधिच्छाया में ११७
लुङ्-मन् की महाप्रतिमा का समीप-चित्र ११८
लुङ्-मन् की गुहा में मूर्त्ति का अवलोकन करते हुए ११९
युङ-हो-कुङ् के अध्यक्ष यिशिगावा के साथ १२०
महाकाल के अनुचर क्षेत्रपाल १२५
श्वेन्-च्वाङ् का शिलाचित्र १४१
डॉ. राधाकृष्णन् प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए १६४
आचार्य रघुवीर पं. नेहरू को मोंगोल से लाए सत्तू का प्रसाद देते हुए १६५
प्रदर्शनी का विहंगम दृश्य १६६
प्रदर्शनी में तान्त्रिक कपाल १६७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

PREFACE

I have witnessed hoary sights
And have sipped wondrous saps.
Nineteen centuries have rolled back
And I have joined the marching caravan of time.
What the Han, the Uigur,
The Tibetan, the Mongol and the Manchu
Had garnered,
A part, a tiny part,
But withal a substantial part,
I carry as a cherished gift
Bestowed by your loving heart
And generous hands.

Raghu Vira

Trailing into the steps of the great Indian Ācāryas who spread the Dharma in China and the Chinese pilgrims of faith who betook hazardous journeys to India, my father Prof. Raghu Vira took an expedition to China, Inner Mongolia, Central Asia and Inner Tibet in search of materials for his grand project of Indo-Asian literatures to which he gave the collective appellation of the Śatapiṭaka. On his return, he described his richly rewarded expedition in the following statement:

"On an invitation from the Government of China I went there to study and to collect materials concerning the interflow of culture between India and China. To assist me my daughter Sudarshana Devi accompanied me.

"We travelled throughout China for three months and three days. We were given great facilities by the Government. We went as far and as long as we could. We saw wonderful places and things till our eyes got fatigued. We collected till our arms could bear the weight no longer. We enjoyed the hospitality of the Chinese people and Government. Premier Chou En-lai took personal interest in all our activities, of which I may particularly mention the activity of acquiring literature in Chinese, Tibetan, Mongolian, Manchurian and Hsi-hsia languages.

"While Chinese and Tibetan have already attracted some students and scholars, Mongolian, Manchurian and Hsi-hsia languages and literatures are brought for the first time in the long history of India. Hsi-hsia is a name to conjure with, a name known to a score of men, but its literature hardly known. China has about a hundred texts. The Government of China have complied with my request of microfilming the entire lot and giving it to me.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"My list of rare acquisitions contains a remarkable set of coloured photographs taken by me with the help of the Government photographers inside the world-famed grottoes of Tun-huang, lying beyond the western-most gate of the Great Wall of China. An inscription preserved in the Caves gives us 366 A.D. as the starting point of the undertaking of the first cave. They are no less than 476, some small, some big, some no more than niches, others being spacious halls. Their walls and ceilings have been made the messengers of the noble message of Lord Buddha. Artists have been busy till as late as 1936 A.D. It is the biggest art gallery, authenticated historically, covering a period of sixteen centuries and the result of collaboration of artists and scholars belonging to a multitude of nationalities: Chinese, Tibetans, Mongols, Uigurs and Indians. There was a time when the restricted view of nationalism did not form either boundaries or barriers.

"The Tun-huang caves were made famous in the beginning of the century. Scholars of various nationalities led scientific expeditions and photographed them. Aurel Stein, Pelliot, Warner and others took away thousands of manuscript rolls. They were written in diverse tongues, before the 10th century A.D. These rolls were preserved in one of the caves. Only eight thousand and odd rolls still remain in China.

"The pictures of Tun-huang so far have been taken in monochrome. As I was told by the Director of the Tun-huang Institute, I am the first to be allowed and helped in photographing the murals in colour. I hope I shall be able to publish them in colour and that paucity of funds shall not stand in the way.

"When I said to Premier Chou En-lai that Tun-huang Caves are significant to the whole world, he said 'yes' but they are the standing monuments of the close co-operation between India and China. Their historical value for China and India is inestimable. The Chinese Government has made Tun-huang murals the focal point in the new art-resurgence and has utilised them for decorating pillars, walls and ceilings of new public buildings all over China.

"The younger as well as the older generation of Indians knows in a very broad way that Buddhism spread over the length and breadth of China. While in China, Mongolia and Manchuria and on the borders of Turkistan, I have been able to see and collect ample evidence of Indian religion as it obtained during the 7th, 8th, 9th and 10th centuries. Then Buddhism had been permeated thoroughly with Śaiva practices in their Tantric form. I bring with me an astounding mass of mantras wherein Buddhism and Śaivism have welded.

"In future it would be better to rename the religion of High Asia and East Asia as Śaiva-Buddhism. Only then one would understand the presence of the Mahakala Temple in the heart of Peking. Only then one would understand the

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

presence of the famous Gāyatrī mantra of the Yajur-Veda in the grand collection of dhāraṇīs.

"How the Mongols live their spiritual life is best told by silk-paintings in monastery halls. I have been able to bring dozens of these wondrous works of art. The oldest among them may be three to four centuries old. The youngest are of the 19th century.

"Sanskrit inscriptions are generously sprinkled over the provinces of China. I have brought estampages of a few.

"China is a land of stelae The interflow of culture between India and China could not have been historically phased without the information communicated by these stelae. Even portraits are incised on them. It was able to get skilled and experienced men who could prepare lovely inked copies from the slabs. It was worthwhile to have the estampages mounted. . Mounting estampages is a Chinese art unknown to India and not practised on any appreciable scale anywhere in Europe or America".

Thirteen years have passed since 1955 and my father is no more. His wishes and words ring in my ears. From the deeps of silence I can still hear his voice: "I am planning to publish an account of my Chinese travels together with a number of photographs. Very soon we shall be starting the publication of some of the rare works". The present volume is the first of a long series designed to present important and outstanding materials of his Expedition. It reproduces his travel diary, illustrated with photographs. The coming volumes will comprise photographs of different Buddhist monasteries, stūpas and cave-complexes, estampages of important inscriptions, a full volume of coloured plates of Tun-huang murals and sculptures, over a hundred volumes of Tun-huang Chinese rolls, a volume or two of Uigur, Saka and Tibetan fragments and rolls from Tun-huang, three or four volumes on early Mongol texts from the Imperial Palace at Peking, a few volumes of Manchu Buddhist texts, thirty volumes of Sanskrit texts in Manchu, Chinese, Mongolian and Tibetan transcriptions and so on. This knowledge will widen the horizon and deepen the understanding of those who are trying to comprehend the culture of India.

Lokesh Chandra

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

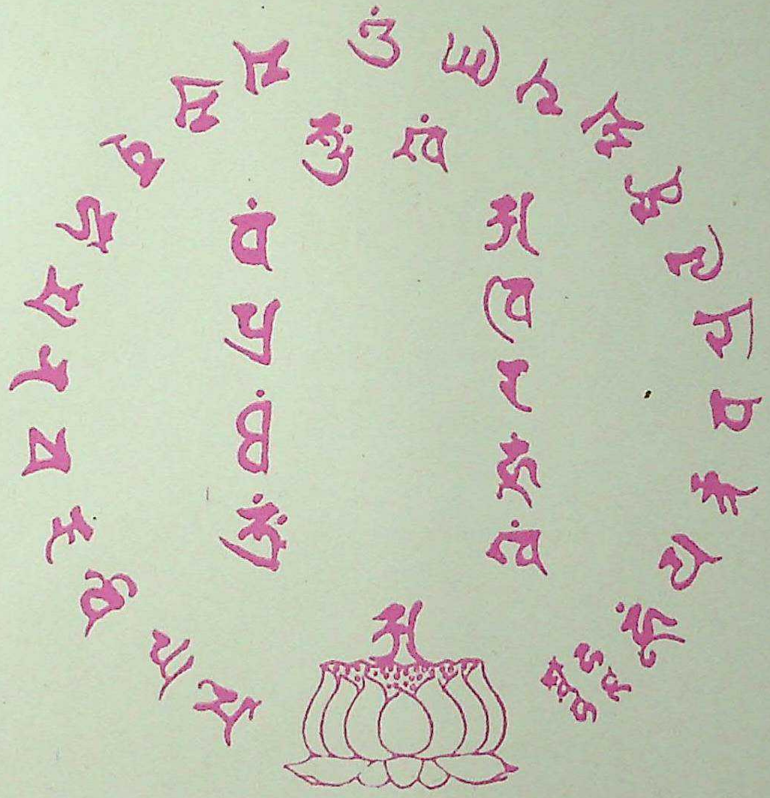

चीन का जनव्याप्त संस्कृत मन्त्र । पाठ है—
ॐ भूः खं
अमोघवैरोचन महापुत्र मणिपद्म
ज्वल प्रवर्त्तय हूं फट् स्वाहा
आविर हं खं वं प्र व्वं भ्रः

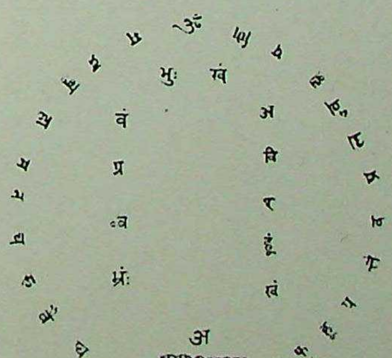

One of the widespread Sanskrit mantras in China.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रातः का समय था। मैं संसद् जाने लगा था कि चीनी दूतावास से श्री सो-वान्-पिट् ने दूरभाष किया – यदि आप आज मिलने का कष्ट कर सकें तो महती कृपा होगी। संसद् के सत्र से लौट कर दोपहर के समय मैं श्री सो-वान्-पिट् से मिलने गया। आपने चीनी शासन के विद्या-विभाग (Academia Sinica) की ओर से आया हुआ पत्र दिखाया। पत्र चीनी भाषा में था। केवल एक पंक्ति थी – विद्या-विभाग आचार्य रघुवीर को छः सप्ताह की चीन-यात्रा के लिए निमन्त्रित करता है।

बहुत मासों से मैं चीनी शासन से चीनी वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावलि के सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार कर रहा था। वैज्ञानिक शब्दावलि की समस्या चीन और भारतवर्ष में मूलतः समान है। चीनियों ने इस शताब्दि के आरम्भ से इस दिशा में विशेष प्रगति की है। पेन्सिल, मोटर, रेल, बिस्कुट, चॉकलेट, पुलिस, रेडियो आदि शब्दों के लिए उन्होंने प्रारम्भ से ही चीनी के नए बनाए हुए शब्दों का प्रयोग किया है।

निमन्त्रण-पत्र इस पत्र-व्यवहार का परिणाम था।

इन दिनों मैंने दिल्ली में लिखने पढ़ने के लिए अपना नया कार्यालय बनाया था। संसद् के सदस्यों के लिए संसदीय प्रक्रिया की दो अढ़ाई सौ पृष्ठ की पुस्तक लिखना आरम्भ कर दिया था। चारों ओर से सामग्री इकट्ठी हो रही थी। चीन जाने का अर्थ इस कार्य को स्थगित करना होते हुए देख मन में कुछ क्षोभ हुआ। किन्तु एक ओर से चीन और भारत के प्राचीन सम्बन्ध और दूसरी ओर से नए सम्बन्ध – इनका आकर्षण संसदीय प्रक्रिया पुस्तक लिखने की अपेक्षा अधिक महत्त्व का जान कर मैंने निमन्त्रण स्वीकार किया और प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू से परामर्श करके अपनी चीन-यात्रा की योजना चीनी शासन को भेज दी।

मेरा विचार जलयान से जाने का था। किन्तु जलयान से यात्रा करने पर विलम्ब हो जाता और पेइ-चिङ का पहली मई का उत्सव मैं देख न पाता। श्री सो-वान्-पिट् की यही इच्छा थी कि मैं इस उत्सव में अवश्य सम्मिलित होऊं। साम्यवादी चीन की क्या आशाएं हैं, क्या उद्देश्य हैं और इनको पूरा करने के लिए माओ-त्स-तुङ और उनके साथी जनता को किस प्रकार से देश के विकास के लिए काम में प्रेरित किए हुए हैं, यह जनता किस उत्साह और परिश्रम से नव-समाज-निर्माण में लगी हुई है, यह देखने का अवसर हाथ से खोने नहीं देना चाहिए। अतः जलयान का विचार छोड़ कर विमान से ही जाने का निश्चय किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चीन में व्यग्रता इतनी रहेगी कि यदि प्रतिदिन का विवरण प्रतिदिन न लिखा गया तो पीछे जाकर अनेक छोटी छोटी किन्तु आवश्यक बातें भूल जाएंगी। पुस्तकालयों, मन्दिरों, शिक्षा-स्थानों, उद्योग-निर्माणियों, स्त्री और बच्चों के हित के लिए बनाए गए भवनों आदि में अकेले जाने की अपेक्षा एक और व्यक्ति का साथ होना आवश्यक है। आवश्यक राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक वार्तालापों में जो व्यक्ति साथ साथ टिप्पण लेता जाए ऐसे व्यक्ति का होना लाभकारी होगा। चीन में सब स्थानों पर और सब कार्यों में एकमात्र भाषा चीनी का प्रयोग होता है। इसलिए यदि यह व्यक्ति चीनी लिख भी सके तभी पूरा लाभ होगा। चीनी शब्दों को अंग्रेज़ी अथवा देवनागरी लिपि में लिखना निरर्थक है। चीनी भाषा की विशेषता ही यह है कि लिखे हुए शब्द अधिकांश उच्चारण के अनुकूल नहीं, किन्तु अर्थ के अनुकूल हैं। भारतीय अङ्क इस स्थिति के अच्छे उदाहरण हैं। हिन्दी और पंजाबी दोनों में ३ का अङ्क एक ही समान लिखा जाता है। यह अर्थ का वाची है, उच्चारण का नहीं। अतः इसका अर्थ हिन्दी और पंजाबी दोनों में एक ही है। किन्तु यदि उच्चारण के अनुकूल लिखना हो तो पंजाबी में "त्रै" लिखेंगे और हिन्दी में "तीन"।

बौद्ध धर्म के साथ परिचय होना तथा संस्कृत जानना भी ऐसे व्यक्ति के लिए आवश्यक है।

मेरी लड़की सुदर्शना ने २७ मार्च को अपनी बी.ए. की परीक्षा पूरी की थी। वह अब रिक्त थी। अनुसन्धान में प्रायः प्रयुक्त शब्दों से परिचित है। संस्कृत में काव्यतीर्थ कर चुकी थी। चीनी जापानी का भी अध्ययन आरम्भ किया हुआ था। मैंने इसको अपनी यात्रा का साथी बनने के लिए लिखा।

दिल्ली से नागपुर आया। वहां दो तीन दिन ठहर कर यात्रा की सज्जा पूरी की। यात्रा के प्रारम्भिक व्यय के लिए पंडित जवाहरलाल नेहरूजी ने सहायता की। अपना बृहत् आंगल-हिन्दी कोष (जिसमें प्रशासन, विज्ञान, व्यापारादि के डेढ़ लाख से ऊपर शब्द, समास और वाक्यांश हैं) तथा अपनी अन्य वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक पुस्तकें साथ लीं। चीन में कितने ही प्राचीन दृश्य देखने को मिलेंगे जिनको सदा के लिए अपनी स्मृति में बांधना सम्भव न होगा पर आवश्यक अवश्य होगा। इसलिए अपनी स्मृति की सहायता के लिए और अन्य मित्रों के उपकारार्थ मैंने चार रूपित्र (camera) साथ लिए। एक चलचित्रों के लिए, एक विशेष रूप से प्राचीन कला-कृतियों की अनुकृति के लिए, और दो साधारण काले और रंगीन चित्रों के लिए। भारतीय संगीत के उदाहरण-स्वरूप तीस चालीस सीताबिम्ब (records) साथ लिए। भारतवर्ष ने पिछले दिनों में कितनी आर्थिक उन्नति की है यह दिखलाने के लिए चार पांच चलचित्र भी साथ लिए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत के एक आचार्य प्रवास में।
"तभी तो मैंने अपने पग इस
ओर उठाए कि मैं उस संस्कृति-
सरिता-प्रवाह की गवेषणा करूं
जिसने चीन और भारत के
हृदयों को जोड़ा था।"

रघुवीर

One of the Indian Ācāryas who took the Dharma to the Celestial Empire, a precursor of Prof. Raghu Vira a modern pilgrim to China in search of that interflow :

"I have witnessed hoary sights
And have sipped wondrous saps,
Nineteen centuries have rolled back
And I have joined the marching caravan of time." Raghu Vira

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

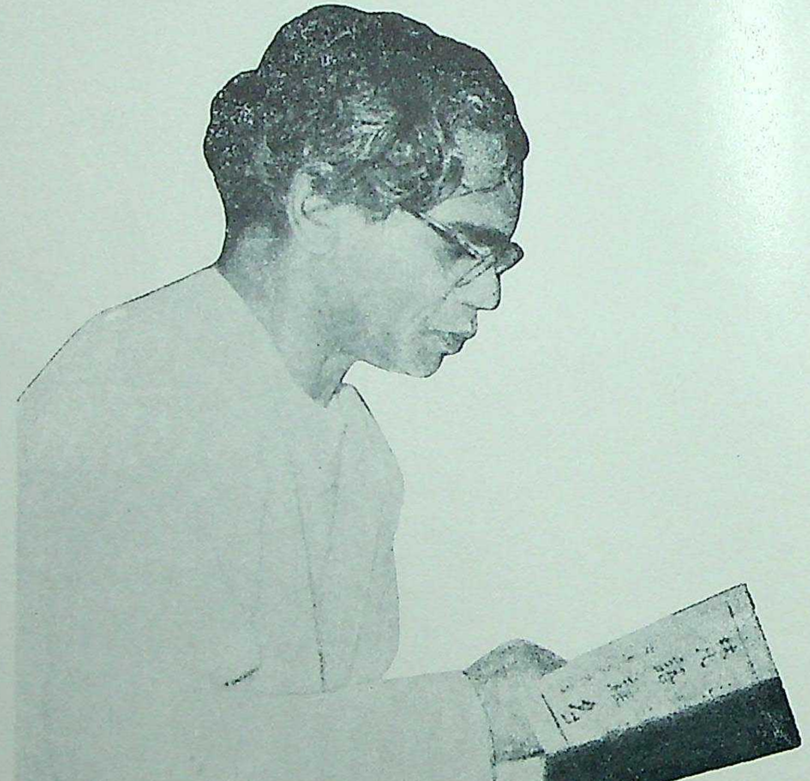

इत्सिङ् विरचित संस्कृत-चीनी कोष के विलोकन में तल्लीन आचार्य रघुवीर
Prof. Raghu Vira glancing through a Sanskrit-Chinese lexicon compiled by I-tsing

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संगीत और उद्योग प्रगति के ये श्रव्य और दृश्य उदाहरण श्री केसकर जी के सौजन्य से प्राप्त हुए ।

१७ एप्रिल को प्रातः हम दिल्ली से चले और २० को कलकत्ते से विमान द्वारा आठ नौ घण्टे में चीनी राज्य बहिःस्थित चीनी नगर हॉङ-कॉङ में पहुंच गए । यहां हमारा स्वागत करने के लिए चीनी शासन के प्रतिनिधि आए हुए थे ।

यद्यपि हॉङ-कॉङ द्वीप और उसके साथ का चीनी तटस्थ क्वो-लून् चीन का भाग है किन्तु अभी तक चीनी शासन ने इसकी मांग नहीं की । यहां अंग्रेज़ निश्शङ्क राज्य करते हैं । जब तक राजनैतिक स्थिति शान्तिमयी नहीं बन जाती तब तक चीन हॉङ-कॉङ की मांग न करेगा ऐसा मेरा विश्वास है । हॉङ-कॉङ द्वार है जिसमें से सारे संसार के पदार्थ चीन में प्रवेश करते हैं और आवश्यकतानुसार बाहर जाते हैं ।

हमको दिल्ली में ही बता दिया गया था कि रंगीन चित्रपट्टियां (films) चीन में न मिलेंगी और हॉङ-कॉङ में भारतवर्ष की अपेक्षा सस्ती मिलेंगी । सो हमने हॉङ-कॉङ से चित्रपट्टियां और अन्य सम्भार मोल लिया ।

२३ को प्रातः ही गाड़ी में पेइ-चिङ के लिए प्रस्थान किया । ४०, ५० मील की दूरी पर चीन की सीमा आ गई । संयान (train) परिवर्तन हो गया । चीनी शासन के अधिकारी स्वागत करने के लिए आए । इनके साथ एक दुभाषिया लड़की भी थी ।

२३ एप्रिल, दोपहर के एक बजे से लेकर २६ जुलाई तीन बजे तक, जब हम फिर यहां लौट कर पहुंचे, दुभाषिये और शासन के कोई न कोई अधिकारी हमारे साथ रहे, एक दिन भी हमसे अलग न हुए ।

शासन के अधिकारियों के साथ रहने के कारण आयातकर विभाग ने हमारे से न कोई प्रश्न पूछे और न सम्भार को ही खोला ।

दो बजे चीन की गाड़ी में सवार हुए। गाड़ी में बैठते ही उच्च स्वर में साम्यवादी गीत कर्णगोचर हुए । संयान के प्रत्येक डिब्बे में ये गीत सुनाई पड़ते हैं ।

हम गवेषणा करते करते एक डिब्बे से दूसरे, दूसरे से तीसरे में चलते गए और अन्त में छोटी सी कोठड़ी में पहुंचे जहां एक लड़की बैठी हुई सीतावाद्य (gramophone) के बिम्ब (records) बजा रही थी । यात्रियों को यदि कोई सूचना देनी होती थी तो वह भी यही लड़की देती थी । आरम्भ में ये गीत अच्छे लगे । नवीनता के कारण इनमें विशेष आकर्षण प्रतीत हुआ, किन्तु कुछ समय के पश्चात् इनका ऊंचा स्वर कानों को अखरने लगा । ठहर ठहर कर ये गीत घण्टों तक चलते हैं ।

गाड़ी में स्वच्छता का विशेष प्रबन्ध है । दिन में आठ दस बार व्यक्ति स्वच्छ करने आता है । रोगाणु न फैलें इसलिए रोगाणुनाशक औषधों का प्रयोग बहुत है । साम्यवादी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शासन जनता के स्वास्थ्य के लिए प्रयत्नशील है। किन्तु देश बहुत बड़ा है। जनता की संख्या भी बहुत बड़ी है। आरोग्य संपादन में अभी अनेक वर्ष लगेंगे।

चाए और उष्ण पानी का चीनी गाड़ियों में निरन्तर प्रबन्ध है। ज्यों ही यात्री गाड़ी में आकर बैठता है उसको हरी चाए की छोटी सी पुड़िया और उष्ण पानी का पात्र मिल जाता है। जैसे ही वह पानी समाप्त हुआ फिर व्यक्ति नया उष्ण पानी डाल जाता है। दिन में १०, १५ बार उष्ण पानी पात्र में भरा जाता है। किन्तु चाए की पत्ती प्रायः दोबारा नहीं डाली जाती।

गाड़ी में दोनों ओर हमने चीन की पहाड़ियों खेतों आदि के दर्शन किए। एप्रिल मास सूखा मास है। अतः हरियाली अधिक न थी। पर्याप्त दूर तक मिट्टी श्वेत रंग की थी।

५, ६ घण्टे धीरे धीरे चलती हुई गाड़ी क्वाङ-चोउ पहुंची। आयुर्विज्ञान-विद्यालय के अध्यक्ष तथा अन्य शासन के अधिकारी स्थात्र पर स्वागतार्थ आए और हमको १५ भूमि ऊंचे विश्रान्ति-गृह में ले गए। यह विश्रान्ति-गृह मुक्ता नदी के तट पर स्थित है। दूर दूर तक जहां तक भी दृष्टि काम देती है नौकाएं खड़ी हैं। ये नौकाएं घर और व्यापार दोनों का ही काम देती हैं। सहस्रों की संख्या में चीनी नाविक परिवार इनमें अपना जीवन व्यतीत करते हैं। यहां ही उनका जन्म और मृत्यु होते हैं और ये ही नौकाएं इनकी आजीविका का साधन हैं। हमारे दुभाषिये ने बतलाया कि साम्यवादी शासन से पूर्व इन नाविकों को स्थलवासी जनता के साथ विवाह करने की आज्ञा न थी। इतना ही नहीं, इनके कोई राजनैतिक अधिकार न थे। इनको भूमि पर घर बना कर रहने का भी अधिकार न था। हमारे दुभाषिये का यह कथन किस अंश तक सत्य है यह अन्वेषण करने का हमको समय और अवसर न मिल सका। रात्रि में सहस्रों दीपकों के प्रतिबिम्ब रूपी लम्बे लम्बे रश्मिस्तम्भ पानी में अनुपम शोभा फैला रहे थे। यदि एक नौका दूसरी नौका के मार्ग में आती तो वह अपनी यान्त्रिक भाषा में पीं पीं पीं करके उसको आगे से हटने का आदेश देती। नौकाओं के बाहुल्य के कारण दूसरी नौका तीसरी को यही आदेश देती और तीसरी चौथी को। इस प्रकार दो चार कला (minute) तक पीं पीं पीं, पीं पीं पिं, पीं पीं पिं, की निरन्तर माला सी बंध जाती।

२४-४-५५

कल रात्रि को निश्चय हुआ कि क्वाङ-चोउ के उन्हीं स्थानों का दर्शन करेंगे जो साम्यवादी युग में बने हैं। अपवाद-स्वरूप केवल एक बौद्ध विहार हमारे कार्यक्रम में रखा गया।

सर्वप्रथम प्रातः ९ बजे नगर के प्रसिद्ध क्रीडास्थान (stadium) पर गए। यह क्रीडास्थान आठ मास के परिश्रम से बनाया गया है। ५० सहस्र व्यक्तियों के बैठने का स्थान है। मध्य में पाद-कन्दुक का क्षेत्र है और चारों ओर दौड़ने के लिए ७,८ रेखाएं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लगी हुई है। जनता के कुछ व्यक्ति प्रातः सायं आकर व्यायाम करते हैं। प्रथम मई की सार्वजनिक सभा भी यहां पर होती है। इस स्थान के ऊपर अद्भुतागार है। पहले यहां मन्दिर हुआ करता था। पूर्वैतिहासिक युग से प्रारम्भ करके माओ के युग तक की वस्तुएं यहां रखी हुई हैं। अद्भुतागार में प्रवेश करते ही मोटे श्वेत काष्ठाक्षरों में जनता को राष्ट्रपति माओ का आदेश है कि राष्ट्र की सम्पत्ति राष्ट्र की संस्कृति है। जनता को इन सांस्कृतिक पदार्थों की रक्षा करनी चाहिए।

एक अनुपम बुद्ध की मूर्ति भी है जो १,५०० वर्ष पहले भारतवर्ष से आई थी। विचित्रतम वस्तु समय नापने की द्रोणियां हैं। ऊपर की द्रोणी का पानी नीचे की द्रोणी में टूंटी द्वारा गिरता है। इसी प्रकार दूसरी का तीसरी में और तीसरी का चौथी में। चौथी द्रोणी में दो पट्टियां खड़ी की गई हैं। एक धातुमयी और दूसरी काष्ठमयी। जैसे जैसे पानी बढ़ता है, काष्ठ की पट्टी ऊपर उठती है ओर लोहे पर लगे हुए चिह्नों से देख लिया जाता है कि कितना समय व्यतीत हुआ। लोहे की पट्टी पर १२ चिह्न लगे हैं। प्राचीन चीन में दिन रात के १२ विभाग किए जाते थे।

समीप ही राष्ट्रपिता सुन्-यात्-सन् का ऊंचा स्मारक है। हम वहां गए। जनता न चारों ओर से हमको घेर लिया। उनकी मुद्रा-विहीन दृष्टि को मैत्रीपूर्ण बनाने के लिए उनसे हमने बातें प्रारम्भ कीं। एक एक बच्चे और व्यक्ति का नाम पूछ कर हिन्दी में लिख कर उनको दिया। विस्मय-स्फारित नेत्रों से देख कर उन्होंने उसको ग्रहण किया। जो मुखाकृतियां कुछ क्षण पूर्व वैदेशिकता के भाव से भरपूर थीं वही अब मित्रता और स्नेह से भर गईं। विदेशों में आकर जनता से सीधा सम्पर्क करना अत्यावश्यक है।

विक्षार-जल (soda water) के स्थान में सोया का रस प्रचलित था। गन्ने की पोरियां, लगभग १६ अंगुल लम्बी, स्थान स्थान पर बिक रही थीं। हमने लेनी चाहीं किन्तु हमको नहीं मिली। कारण बताया गया कि फीकी हैं।

संयान की समय-सारणी (railway time-table) प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न किया किन्तु न कहीं दिखाई पड़ी और न प्राप्त हो सकी। कारण बतलाया गया कि गाड़ियां इतनी थोड़ी और सुनिश्चित हैं कि जनता को समय-सारणी की आवश्यकता ही नहीं। न मानते हुए भी यह बात स्वीकार करनी पड़ी।

१२ बजे कन्फूशस के मन्दिर में प्रवेश किया। १९२४ में यह मन्दिर क्रान्ति-शिक्षणालय में परिवर्तित किया जा चुका था। १९२४ से १९२७ तक इस मन्दिर में माओ-त्स-तुङ, चाउ-अन्-लाइ और उनके साथियों ने क्रान्ति के नेताओं का निर्माण किया। कृषक-क्रान्ति की नींव यहां डाली गई।

मन्दिर विशाल और दर्शनीय है। अब इसका प्रयोग केवल स्मारक के रूप में है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माओ-त्स-तुङ का कार्य-कोष्ठ, उसकी आसन्दी और पटल, सोने के लिए काष्ठ-शय्या, लेखनी तथा मसीपात्र, बापू गान्धी के अवशेषों का स्मरण दिलाते हैं। इस सरलता में रह कर ही माओ ने अग्नि प्रज्वलित की थी।

एक कोष्ठ में योद्धाओं का वेष, दूसरे विशाल कोष्ठ में विद्यार्थियों के बैठने के सीधे साधे फलक (bench)। कोष्ठ के बाहर सौ वर्ष पुराना, किन्तु फिर भी वामन, देवदारु की जाति का एक पात्र में लगा हुआ वृक्ष। बाहर निकलने के द्वार से पूर्व कृत्रिम पुल। इस प्रकार के कृत्रिम संक्रमण अर्थात् पुल अन्य स्थानों पर भी देखने में आए।

क्रान्ति के लिए सहस्रों ने ही प्राणों की आहुतियां दी हैं। क्वाङ-चोउ क्रान्ति का जन्म-स्थान है। यहां ७२ हुतात्माओं का गौरवपूर्ण स्मारक है।

स्मारकों के दर्शन करने के पश्चात् दोपहर की कड़ी धूप में हम शासन के बहु-विभागीय विक्रयागार (departmental stores) में पहुंचे। यह ५, ६ भूमि ऊंचा भवन है। सभी प्रकार की छोटी बड़ी वस्तुएं यहां प्राप्य हैं। आज यहां अत्यधिक भीड़ है। हमने एक जाली मोल ली जिसमें अपनी बिखरी हुई वस्तुओं को उठा कर ले जा सकें। सुदर्शना का विचार गुड़िया लेने का था किन्तु देख कर निराशा हुई। सब पाश्चात्य गुड़ियां थीं। कोई भी तो उनमें से चीनी गुड़िया न थी। हाथीदांत की वस्तुएं सुन्दर थीं। वस्तुओं के मूल्य पर्याप्त है। भारत से लगभग दुगने।

आधुनिक चीन में बड़े व्यापार और हट्टियां शासन के हाथ में हैं। छोटे व्यापार जनता के हाथ में। पूंछने पर भी विस्तार से पता न लग सका कि आज जनता और शासन के बीच में सीमा कहां है।

मध्याह्न भोजन के पश्चात् हम सुन्-यात्-सन् का भवन देखने गए। इसका निर्माण १९२७ से १९३१ तक हुआ था। अन्दर से भवन अष्टकोण है। इसमें ५००० जनता के बैठने के लिए आसन्दियां लगी हुई हैं। भारतीय नृत्यमण्डल का नृत्य भी इसी भवन में हुआ था।

षड्बोधिवृक्ष मन्दिर

द्वार पर चार बजे क्वाङ-मिङ ने स्वागत किया। बड़े पुजारी च्याओ-चिन् फुप्फुस-रोग से कई मास से पीडित हैं, इसलिए स्वागत करने बाहर द्वार पर न आ सके। मन्दिर ७ भूमि ऊंचा है। १४१४ वर्ष पूर्व इसका निर्माण हुआ था। इस मन्दिर की प्रसिद्धि का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि जापानियों ने सम्पूर्ण त्रिपिटक इस मन्दिर को भेंट किया है।

एक सहस्र वर्ष पूर्व कई भारतीय पण्डित बुद्धगया से बोधिवृक्ष का पौधा लाए थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उस वृक्ष के बीज से उगा हुआ प्राचीन पीपल वृक्ष इस विहार में विद्यमान है।

मन्दिर १,४०० वर्ष पुराना प्रतीत नहीं होता किन्तु अन्तिम भूमि पर जाकर लगा हुआ धातु-स्तम्भ अवश्य प्राचीन है । अनेक शताब्दियों तक यह स्तम्भ वर्षा, धूप और वायु झेलता रहा है। इस स्तम्भ पर छोटे छोटे बुद्ध मद्धम पड़ चुके हैं । धातु-स्तम्भ की छत में सिद्धम् लिपि में कई धारणियां लिखी हुई हैं । पुजारी सिद्धम् पढ़ने में असमर्थ है। मन्दिर के प्रांगण में राजाश्म का छोटासा स्तम्भ खड़ा है जिसे धारणी-स्तम्भ कहते हैं। इस पर चारों ओर धारणी है। प्रत्येक सिद्धम् अक्षर के पास चीनी अक्षर में उच्चारण दिया हुआ था।

धातुगर्भ-सप्तभूमि स्तूप में ८८ स्थानों में से केवल ७ स्थानों पर चीनी मिट्टी की मूर्तियां रखी हुई थीं, शेष लुप्त हो चुकी थीं । मैंने पूछा मूर्तियां कहां गईं । उत्तर मिला कि प्रतिक्रियावादी क्वो-मिन्-ताङ के लोग उठा ले गए और तोड़ दीं । पुजारी के हृदय में ग्लानि और आंखों के सामने उस समय के दृश्य आ खड़े प्रतीत हुए। उन दृश्यों की स्मृति और तज्जन्य दुःख में वह बिना बोले हुए ७०, ८० सीढ़ियां नीचे उतर गया।

सीढ़ियों की सम्पूर्ण संख्या १५३ है। यह नगर का सबसे ऊंचा स्थान है। ऊपर चढ़ कर ठण्डी वायु और चतुर्दिक् दृश्य इन्द्रियगोचर होते हैं । चार उल्लेखनीय भवन हैं जो ऊपर से दिखाई पड़ते हैं। इनकी छतें नीली अथवा रक्तपीत चीनी मिट्टी से पकी हुई खपरैलों से बनी हैं । इन खपरैलों का प्रयोग केवल वैभवशाली भवनों की छतों पर होता है । प्रथम भवन डा. सुन्-यात्-सन् का स्मारक है । इसकी छतों के कोनों से घण्टे लटके हुए हैं, परन्तु इतने बड़े और भारी हैं कि वायु चलने पर बजते नहीं । दूसरा भवन शासन का कार्यालय है । तीसरा घट-रूप में नगर का जलप्रदाय-स्रोत (water-works) है ।

धातुगर्भ-स्तूप के अनेक अंग हैं । कभी इसका अनन्त वैभव रहा होगा । आज केवल चार पुजारी विद्यमान हैं और सायं छः बजे की पूजा पर केवल तीन उपासक और तीस चालीस दर्शक । सम्भव है इनमें से कुछ हमारे कारण से हों । पूजा का दृश्य श्रद्धा और भक्ति से पूर्ण था । मुख्य पुजारी धारणियों का सस्वर पाठ कर रहे थे । चीनी में भी कुछ अनुवाद थे । नमो-शब्द के अतिरिक्त चीनी और संस्कृत गान में भेद सुनाई नहीं पड़ा । घुटने टेकने के लिए छोटे छोटे पटड़े प्रत्येक पुजारी के सामने रखे हुए थे । पटड़ों पर गद्दियां रखी थीं, जिससे लकड़ी की कठोरता घुटनों को कष्टदायी न हो । पुजारी आघातवाद्यों का प्रयोग कर रहे थे । दो वाद्य लकड़ी के और दो कांसे के थे । एक पतीले के समान था । प्रत्येक धारणी की समाप्ति पर विराम-स्वरूप डंके की एक चोट इस पतीले के तट पर पुजारी लगाता था । दूसरा कांसे का वाद्य आलू के समान गोल था ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्दर से कुछ खोखला और बीच में दराड़। इस पर भी डंका मारने से मधुर ध्वनि निकलती थी। अब रहे दो लकड़ी के वाद्य। एक छोटा और एक बड़ा। छोटा साधारण गेंद जितना बड़ा। आकार गोल किन्तु एक ओर से पकड़ने के लिए कर्णरूपी हस्तक और हस्तक के दूसरी ओर गोलाई में दराड़। इस पर भी डण्डा मारने से पर्याप्त ध्वनि निकलती थी। इसी गेंद का बड़ा स्वरूप लकड़ी की चतुष्पदी पर रखा हुआ था। इसको हाथ में पकड़े रखना सम्भव न था। इस पर आघात करते करते छिलके उतर चुके थे। काष्ठमय दोनों वाद्यों का नाम है—काष्ठमीन अर्थात् लकड़ी की मछली। इन चारों पर लगातार आघात न होता था। केवल ताल-स्वरूप कहिए अथवा विराम-स्वरूप। कुछ कुछ समय के पश्चात् ही इन पर एक दो चोट लगाई जाती थी। पूजा की समाप्ति पर सीढ़ी पर चढ़ कर मुख्य पुजारी ने दो लकड़ी के डण्डों से चार पांच कला तक लगातार नगाड़ा बजाया। धूपदीपादि की क्रिया हमारे प्रवेश से पहले ही हो चुकी थी।

मन्दिर में पूजा प्रतिदिन दो बार होती है। प्रातः साढ़े चार बजे और सायं छः बजे। प्रातः की पूजा के समय उपासकों की भीड़ होती है। पटलों की संख्या से अनुमान होता है कि अधिकाधिक बीस उपासक आते होंगे।

पूजा-स्थान में प्रवेश करते ही पहले हास्य-शील, तुन्दिल मूर्ति के दर्शन होते हैं। ये प्रसिद्ध मी-लो-फ़ो अर्थात् भावी मैत्रेय हैं। आगे चल कर धूपवत्तियां जलाने के लिए लोहे की ६, ७ पाद ऊंची धूपधानी बनी है। पूजा-स्थान में तीन मुख्य मूर्तियां हैं। तीनों स्वर्णरोपित। इनके आगे क्वान्-यिन् अर्थात् अवलोकितेश्वरी की मूर्ति है। दोनों ओर हस्त-बद्ध दो उपासक खड़े हैं। और कुछ दूर पर पार्श्व-भित्तियों में १८ लोहन् अर्थात् अर्हतों की मूर्तियां हैं। प्रत्येक ओर ९। मूर्तियों की चमक दमक तथा मुख की मुद्राएं, इनकी वेशभूषा और शरीरभङ्ग, सब अध्ययन के भाजन हैं। चीनी और भारतीय कला का मिश्रण सर्वत्र व्यक्त है।

हमने १० शतिक (cent) की धूपबत्तियां लीं। इनकी संख्या १८ रही होगी। धूप की राख से पात्र भरा हुआ था। इसी मृदु राख में एक एक करके धूपबत्ती खड़ी की। धूपवत्तियां दीपक की लौ में पहले जला ली थीं। दीपकों में मूंगफली के तेल का प्रयोग करते हैं। दीपकों में ही नहीं, भोजन में भी। चीन से ही वनस्पति घी का प्रारम्भ हुआ है।

हमने पुजारी से सिद्धम् लिपि के सम्बन्ध में बात छेड़ी। वह अपने दैनिक पूजापाठ की पुस्तक ले आया। इस पुस्तक में यत्र-क्वचिद् ही सिद्धम् अक्षर थे। सर्वत्र चीनी अक्षरों में ही धारणियां लिखी हुई थीं। यह पुस्तक शाङ-हाइ में छपी थी।

पुजारी के तीन शिष्य हैं जो पूजापाठ सीख रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारे प्रार्थना करने पर पुजारी ने छपे हुए चित्र मंगाए। केवल तीन चित्र थे। तीनों हमने साढ़े तीन युआन् में ले लिए। एक में २२ के लगभग व्यक्ति हैं जिनमें से १८ अर्हत् हैं।

ये पुजारी १४ वर्ष की आयु में भिक्षु बने थे। अभी तक अविवाहित हैं। इन्होंने हमारे साथ सहर्ष धूप में खड़े होकर रंगीन चित्र खिंचवाया और अपनी पञ्जिका में हमारा नाम और पता लिखवाया। हमसे पूर्व हरीन्द्र चट्टोपाध्याय यहां आ चुके हैं। उन्होंने अपना नाम बंगला और रोमन लिपि में लिखा हुआ था। और भी दो तीन भारतीयों के नाम थे। हमने प्रश्न किया क्या भारत में तीर्थ-यात्रा के लिए आने की कामना है। प्रफुल्ल-वदन और स्मितनेत्र बोले – वह जीवन का पुण्यतम दिवस होगा। किन्तु कहते ही निराशा छा गई कि यह कैसे सम्भव हो सकेगा। भारतीय जनता और शासन का कर्तव्य है कि भारत और चीन के प्राचीन प्रेम को बनाए रखने के लिए प्रतिवर्ष बुद्ध-जयन्ती तथा निर्वाण के दिन चार सौ पांच सौ चीनी पुजारियों और उपासकों को अपने व्यय पर भारत में तीर्थ-यात्रा कराया करे। उनके स्वागत तथा रहन-सहन का वही सुन्दर प्रबन्ध हो जो राजनीतिज्ञों का होता है। साथ में बौद्ध विहारों, मन्दिरों और गुफाओं की यात्रा करने के लिए भारतीयों की यात्रि-मण्डलियों को भी प्रतिवर्ष चीन में आना चाहिए।

चित्रादि दिखला कर पुजारी हमको अपने पुस्तकालय में ले गए। ताइ-शो त्रिपिटक के अतिरिक्त अनेक ग्रन्थ और मूर्तियां विद्यमान थीं। पुजारी ने दो तीन धारणियों की पुस्तकें हमको उपहार दीं। ये पुस्तकें हमारे अपने पुस्तकालय में नहीं हैं। इनका प्रकाशन होना चाहिए। तत्पश्चात् हम आचार्य के मन्दिर में गए। अद्भुत काली मूर्ति थी। इनके सामने लकड़ी के छोटे छोटे १०० कोष्ठकों में छपे हुए पत्रक रखे हुए थे। साथ में खोखले बांस की नली में कुछ बांस की चपटियां थीं। नली को हिलाने से जो चपटी बाहर गिर पड़ती है उसकी संख्या को पढ़ कर कोष्ठक में से छपा हुआ पत्रक निकाल कर उपासक को दे दिया जाता है। पत्रक में छपे हुए आदेशानुसार आचरण करने से उपासक के कष्ट दूर हो जाते हैं। इस स्थान पर दो तीन वृद्धा स्त्रियां खड़ी थीं। उन्होंने हमको भक्तिपूर्वक अञ्जलिबद्ध नमस्कार किया। बाहर निकल कर बोधि-वृक्ष के दर्शन हुए। समीप ही आंगन में ऊंचे प्रस्तर-पीठ पर अनघड़ प्राकृतिक टेढ़ी-मेढ़ी शिला खड़ी की हुई थी। यह चीनी सौन्दर्य-बुद्धि का प्रतीक है।

इसके पश्चात् शय्या-ग्रस्त वृद्ध पुजारी के कोष्ठ में गए। शय्या नियमानुकूल काष्ठ-फलकों की बनी थी। इस पर हलका कपड़ा बिछा था। मैंने पूछा आपके रुग्ण शरीर के लिए यह शय्या कठोर होगी। मेरा कहना था कि वृद्ध सज्जन अपनी शय्या पर सिद्धासन लगा कर बैठ गए और कहा यदि शय्या कोमल हो तो सिद्धासन ठीक नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लगता। सिद्धासन को देख कर हृदय गद्‌गद् हो उठा। यही सिद्धासन क्वाङ-चोउ आते हुए जावा-निवासी श्रमिक-नेता और अध्यापक को लगाते देखा था। ये श्रमिक-प्रतिनिधि-मण्डल में पेइ-चिङ जा रहे थे। आसन, भारत एवं भारतीयता में अंगांगि-सम्बन्ध है।

मैंने प्रश्न किया हम आपके लिए क्या कर सकते हैं। उत्तर मिला हमें भारतवर्ष से पुस्तकें भेजिए। यह चीन की परम्परा है। इनको पुस्तकें भेजेंगे। कौन सी पुस्तकें। योग की पुस्तकें, संस्कृत सीखने की पुस्तकें, भारत के तीर्थ-स्थान, इत्यादि।

साढ़े छः बजे मन्दिर से बाहर निकले। विचार था कि सीधे १५ भूमि ऊंचे अन्ताराष्ट्रिय यात्रि-केन्द्र में पहुंचेंगे और द्वादश-भूमिस्थ अपने कोष्ठ में कुछ काल विश्राम करेंगे। किन्तु विश्राम से बढ़ कर, समस्त दिन की इकट्ठी थकान को, मन्दिर-द्वारस्था आपण-स्वामिनी वृद्धा ने बोधिपत्र-चित्रित वेष्टन को हाथ में दे कर तज्जन्य विस्मय से सर्वथा उड़ा दिया। एक वेष्टन में १८ पत्तों पर १८ चित्र थे। मूल्य २ युआन् अर्थात् साढ़े चार रुपये। क्या ये १८ लोहन् के १८ चित्र हैं। घर जाकर समय देकर अध्ययन करके निश्चय करेंगे कि ये लोहन् हैं अथवा नहीं। अब तो इनके सौन्दर्य का रसास्वादन ही पर्याप्त है। यह नेत्रोत्सव अनुपम है। पास ही बीच में से घड़ा हुआ कमण्डलु लटक रहा है। चलो इसे भी ले लेवें। चीन में कमण्डलु के दर्शन भारत के दर्शन हैं। यन्त्रयुग से पूर्व नहीं, धातुयुग से पूर्व का यह पात्र है। इसका सम्बन्ध उच्चतम विचारकों से है। ऋषियों, मुनियों और तपस्वियों से है, जो मानव-जन्म का प्रयोग मानव-जन्म से ऊपर उठने के लिए करते थे, मानव-जन्म का प्रयोजन मानव-सुखों के उपभोग को नहीं मानते थे, शरीर को तपा कर, इन्द्रियों का दमन करके, मानव की मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करके विश्व के स्रोत और नियन्ता प्रभु में लीन होने के लिए इन्द्रियजन्य सुखों को निछावर कर देते थे। कमण्डलु इन्हीं का तो प्रतीक है न! क्वाङ-चोउ नगरी के षड्बोधिवृक्ष मार्ग में, षड्बोधिवृक्ष मन्दिर के पुराने द्वार पर, अंगुष्ठमात्र कमण्डलु शताब्दियों के इतिहास को एक क्षण में स्फुरदीप्त कर बैठा। कुछ पैसे दे कर कमण्डलु को हस्तगत किया। और चमकते हुए कांच में मढ़े नवभूमि मन्दिर के चित्र को लेकर गाड़ी में बैठ गए।

अन्ताराष्ट्रिय यात्रि-केन्द्र में आकर हाथ मुंह धोकर दो चार खट्टे सन्तरों का रस पीकर फिर नौका-पर्यटन के लिए चल पड़े। नीचे उतरते हुए रूसी प्रतिनिधि-मण्डल के दर्शन हुए। ये भी आज रात्रि को हमारे वाली गाड़ी से पेइ-चिङ की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। उनसे बातचीत करने का यत्न किया परन्तु सफलता न हुई। यात्रि-धनादेश (traveller's cheques) भुनाने का यत्न किया। उसमें भी विफल रहे। आज इतवार है। सब अधिकोष (bank) बन्द हैं। वैसे भी सायं के सात बज चुके हैं। यदि हॉङ-कॉङ में होते तो हमारा विश्रान्तिगृह ही विनिमय कर देता। अब हमारे पास केवल चार युआन् बचे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं और यदि षड्बोधिवृक्ष मन्दिर के पुजारी हमारे चार युआन् के उपहार को स्वीकार कर लेते तो हम सर्वथा अकिञ्चन हो जाते ।

पूरे सवा सात बजे हम नौका में बैठे । एक घण्टे तक चू-चाङ अर्थात् मुक्ता-नदी में विहार किया । नदी में सहस्रों दीपों के जगमगाते झिलमिलाते, हिलते और डोलते प्रकाश-स्तम्भ शोभायमान थे । चू-चाङ का चीन की नदियों में तीसरा स्थान है । प्रथम ह्वाङ-हो अथवा पीत-नदी और दूसरी याङ-त्स ।

क्वाङ-चोउ से समुद्र बहुत दूर नहीं है । साधारण वहित्र-नौका (motor-boat) में समुद्र-तट तक पहुंचने में दो घण्टे लगते हैं। इस नदी पर ही तो वह प्रसिद्ध पुल है जिसको क्वो-मिन्-ताङ ने गोलों से उड़ाया था और साम्यवादियों को दक्षिण में आने से कुछ समय के लिए रोका था ।

क्वाङ-चोउ से पेइ-चिङ पहुंचने के लिए दो साधन उपस्थित थे । एक संयान और दूसरा विमान । संयान से तीन दिन तीन रात का मार्ग था और विमान से केवल एक दिन का । हमारे चीनी मित्रों की इच्छा थी कि हम विमान द्वारा जाएं किन्तु हमारी भी उतनी ही उत्कट इच्छा थी कि विमान से न जाकर संयान से ही जाएं । हमने निश्चय अपने मित्रों पर छोड़ना चाहा किन्तु जब उन्होंने सर्वथा हम पर ही बात छोड़ दी तो यात्रा के कष्टों का विचार न करके हमने संयान से ही जाने का निश्चय किया। हम चीन देखने के लिए आए हैं । विमान से तो बादल ही दिखाई पड़ेंगे । चीन की धरती दो तीन मील ऊपर जा कर अपना रूप हमको कैसे दिखलाएगी ? फिर जनता, खेती, घर, पशु पक्षी, उद्योग-निर्माणियां, नदी नाले, और जनता का परस्पर व्यवहार ये सब विमान से हमको कैसे दिखाई दे सकेंगे । एक साथ पेइ-चिङ नगर में पहुंचने की अपेक्षा तीन दिन और तीन रात चीनी स्थिति से परिचय प्राप्त करना अच्छी भूमिका होगी इत्यादि अनेक विचार सामने थे ।

आठ बज कर बीस कला पर अपने १२०१, १२०२ संख्यक कोष्ठों में पहुंचे । पौने ९ बजे भोजन समाप्त किया । घण्टा भर नींद ली । १० बजे सम्भार लेने के लिए सेवक आ पहुंचे । उनको सम्भार देकर फिर लेट गए। ११ बजे उठ कर स्थात्र के लिए प्रस्थान किया । संयान बहुत लम्बा था । एक सिरे पर रूसी प्रतिनिधि-मण्डल और दूसरे सिरे पर हम । क्या हम लोग इकट्ठे ही एक डिब्बे में न जा सकते थे । नहीं । स्थान पहले से निश्चय हो चुके थे । परिवर्तन की प्रार्थना करना भी उचित प्रतीत नहीं हुआ ।

क्वाङ-चोउ के सबसे बड़े वैज्ञानिक और चीन के राष्ट्रीय विज्ञान-मण्डल के प्रतिनिधि डा० काओ-लिन् हमको मिलने आए । ये यहां के आयुर्विज्ञान-विद्यालय के अध्यक्ष हैं। इस वर्ष इस विद्यालय से ३०० स्नातक निकलेंगे । आपके कथनानुसार तीन पञ्चवर्षीय योजनाओं में उपयुक्त संख्या में चिकित्सक पूरे हो सकेंगे । चीन में चिकित्सकों की अत्य-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धिक आवश्यकता है। चिकित्सा-विभाग और जनस्वास्थ्य-विभाग साम्यवादी शासन का बड़ा भारी अंग है। इनके अधिकारी स्थान स्थान पर फैल रहे हैं। डा० काओ-लिन् भारत-चीन-मैत्री के दृढ पोषक हैं। आपने बताया कि नेत्र-चिकित्सा में चीन ने प्राचीन काल में भारत से बहुत कुछ सीखा था। मैंने जब अधिक विस्तार में प्रश्न किया तो आपने बताया कि इस प्रकार का अन्वेषण पेइ-चिङ में किया जा रहा है और भारत चीन के वैज्ञानिक सम्बन्ध के आदान-प्रदान के विषय में सामग्री पेइ-चिङ में ही मिल सकेगी।

संयान-सेवक नीचे बिछाने और ऊपर ओढ़ने के लिए गद्दे और तुलाई ले आया। १२ बज चुके थे। लेटते ही आंखें बन्द हो गईं।

२६ को प्रातः मार्ग में बड़ी नदी पड़ी। इसका नाम याङ-त्स है। इस पर पुल नहीं बना। एक दो वर्षों तक बनने की आशा है। हमको उतरना पड़ा। यहां भी शासन के अधिकारी स्वागत करने के लिए आए। दो चार घण्टे ठहर कर विश्रान्तिगृह में स्नानादि किया। नगर का चक्कर लगाया और फिर नौका में बैठ कर नदी को पार कर नए संयान में सवार हुए।

२७ को सायं साढ़े चार बजे चीन की एक सहस्र वर्ष पुरानी राजधानी पेइ-चिङ में पहुंचे। भारतीय दूतावास की ओर से श्री गोवर्धन जी विशेष रूप से आए हुए थे। साथ में श्री अग्रवाल जी थे। चीनी स्वागतकारी सज्जन भी थे।

पेइ-चिङ में दो विश्रान्तिगृह हैं जिनमें विदेशियों के निवास का प्रबन्ध है। केवल पेइ-चिङ में ही नहीं, चीन की प्रान्तीय राजधानियों में भी विदेशियों के लिए विशेष विश्रान्ति-गृह बनाए गए हैं। इनका स्तर पश्चिम यूरोप के विश्रान्तिगृहों का स्तर है। जिस विश्रान्तिगृह में हमको ठहराया गया उसका नाम शिन्-च्याओ फ़ान्-त्येन् है। शिन् का अर्थ नवीन, च्याओ का अर्थ प्रवासी चीनी, फ़ान् का अर्थ भोजन और त्येन् का अर्थ गृह है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि चीनी भाषा में होटल आदि विदेशी शब्दों का प्रयोग नहीं होता।

आज से हमारा सम्पर्क कुओ-मिन्-थ्साइ और चाओ-युङ-चुङ से हुआ। श्री चुङ दुभाषिया हैं। प्रत्येक विभाग के अलग अलग दुभाषिये हैं। श्री चुङ विदेश से सांस्कृतिक सम्बन्धों के लिए स्थापित चीनी जनसंघ से सम्बद्ध हैं।

श्री थ्साइ विद्या-विभाग के सम्पर्काधिकारी हैं।

चीन के आधुनिक जीवन में दुभाषिये बाह्य संसार के साथ योजक शृंखला का काम करते हैं। राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, सेनापति आदि उच्चाधिकारियों से लेकर सामान्य सैनिक, कुली और विद्यार्थी तक कोई भी चीन का व्यक्ति विदेशी भाषाओं में प्रवीणता प्राप्त करने का यत्न नहीं करता। राज्य का नियम है कि विदेशी भाषा का प्रयोग न हो। जो विदेशी भाषा जानते भी हैं, वे भी बहुत सीमित रूप में उसका प्रयोग करते हैं। शेष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पेइ-चिङ् के स्थात्र पर आचार्य रघुवीर का स्वागत करते हुए भारतीय दूतावास के श्री गोवर्धन जी, चीन के भाषाविज्ञान-पीठ के अध्यक्ष लो चाङ्-पेइ, भाषा अनुसंधान संस्थान के सचिव श्री वु श्याओ-लिङ्, अनुवाद-विभाग के अध्यक्ष श्री चोउ ताइ-य्वान्।

Lo Chang-pei, Director of the Linguistic Research Institute of Academia Sinica, Mr. Wu Shiao-ling, Secretary of the Linguistic Research Institute, Mr. Chou Tai-yuan, Director of the Bureau of Translation and Compilation, and Shri Goburdhan from the Indian Embassy welcoming Prof. Raghu Vira at the Peking railway station.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

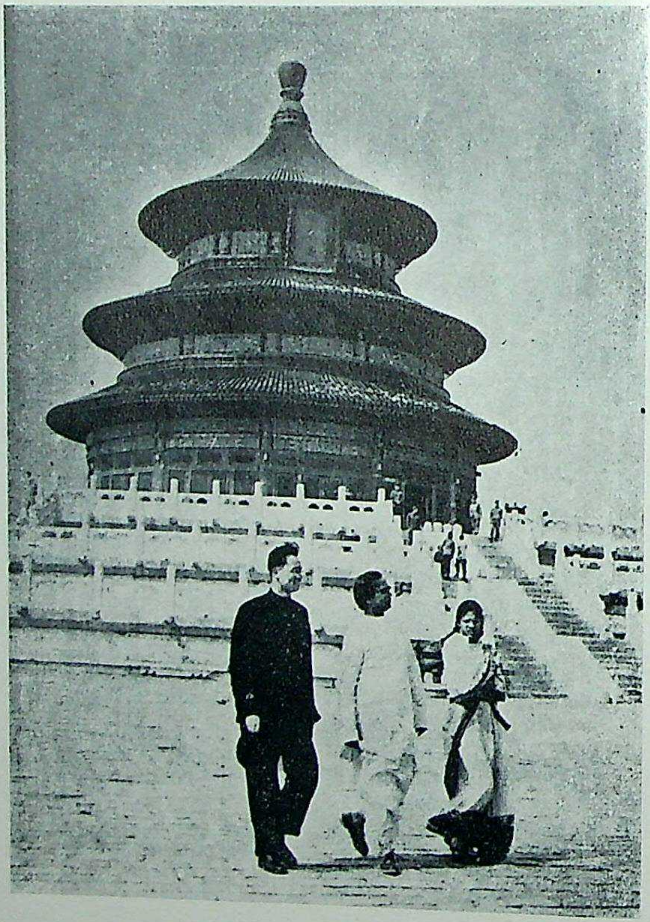

आचार्य रघुवीर और उनकी पुत्री सुदर्शना देवी राष्ट्रमन्दिर छि न्येन् थ्येन् में, जहां प्रतिवर्ष देश-कल्याण के लिए यज्ञ सम्पन्न हुआ करते थे ।

Prof. Raghu Vira and his daughter Sudarshana Devi at the historic Chi Nien Tien, the magnificent Temple of Heaven where great sacrifices and offerings were held every year.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संसार से सम्बन्ध के लिए दुभाषियों की पद्धति विशाल रूप से चलाई गई है। हमारे विश्रान्तिगृह में भोजन के समय विचित्र दृश्य उपस्थित होता था। प्रत्येक पटल पर एक दुभाषिया और एक अथवा अनेक विदेशी बैठे भोजन कर रहे हैं। विदेशी को चीनी जानने की आवश्यकता नहीं, और जानता हो तो प्रयोग करने की आवश्यकता अथवा अवसर नहीं।

किसी पटल पर विदेशी दुभाषियों के साथ इस्पानी बोल रहे हैं, किसी पर जर्मन, किसी पर रूसी, किसी पर चॅक, किसी पर पोले, किसी पर जापानी और किसी पर मलय। यदि हमारे देश में अंग्रेज़ी न जानने वाला विदेशी पहुंच जाए तो वह गूंगा और बहरा बन कर केवल संकेतों से ही अपना निर्वाह कर सकता है।

विदेशी भाषाएं सिखाने के लिए विशेष विद्यालय और श्रेणियां हैं। न्यूनतम दो वर्ष और अधिकतम चार वर्ष की पढ़ाई होती है। इनमें विद्यार्थियों को लिखने पढ़ने और बोलने का पूर्ण अभ्यास कराया जाता है। इस प्रकार की श्रेणियों की हमारे देश में भी अत्यन्त आवश्यकता है।

हमको पेइ-चिङ नगर शान्त लगा।

भावी कार्यक्रम को सामान्य रूप से दृष्टि में रखते हुए दिन प्रतिदिन का चलना फिरना, देखना भालना आरम्भ हुआ। चीन के नेताओं से मिलना, केवल राजनैतिक नेताओं से नहीं, किन्तु सांस्कृतिक नेताओं से भी मिलना और अपनी योजना के साफल्य के लिए उनसे परामर्श करना दिनचर्या का अत्यावश्यक अंग बन गया।

भारतीय राजदूत श्री राघवन् भारतीय संस्कृति के भक्त हैं। उन्होंने हमारे कार्य में बहुत रुचि दिखाई। यद्यपि पेइ-चिङ में ही पहली बार इनसे साक्षात् हुआ था तब भी इनके साथ भ्रातृ-स्नेह सा हो गया, और चाहे छोटी बात हो अथवा बड़ी, इन्होंने उसके साफल्य के लिए भरसक यत्न किया।

पहले कुछ दिन तो प्रति सायं कोई न कोई महाभोज होता था जिसमें चीन के गण्य मान्य विभागाध्यक्षों और विद्वानों से परिचय होता। दिन में विद्या-संस्थाओं में जाते और उनका अध्ययन करते। चीन को समझने के लिए यह हमारा प्रथम पग था। कहीं भी जाना अथवा मिलना तभी सम्भव होता था जब पहले से उपयुक्त अधिकारियों के द्वारा प्रबन्ध हो।

आर्थिक और राजनैतिक संस्थाओं को भी हमने पर्याप्त देखा और अनुभव किया कि साम्यवादी राज्य में व्यक्ति का क्या स्थान है, वह कैसे देश की प्रगति में सहयोग दे रहा है। एक मन, एक विचार का चारों ओर साम्राज्य है। देश की गतिविधि के सम्बन्ध में किसी का कहीं पर मतभेद नहीं। हड़ताल का नाम नहीं। शासन अथवा नेता की समालोचना नहीं। नियम बहुत थोड़े किन्तु उनका पालन कठोरता से होता है। देश के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सभी व्यक्तियों का उद्देश्य सर्वथा एक है। इसलिए जो भी योजना बनती है उसको एकाग्रचित्त से जनता और अधिकारी निभाने का यत्न करते हैं।

रूस परम मित्र है। अनुभवी सखा और सहायक है। उद्योग और राजनीति के प्रत्येक विभाग में रूसी विशेषज्ञ विद्यमान हैं।

भारत के प्रति आदर और भ्रातृ-भावना है। जब से पण्डित जवाहरलाल नेहरू चीन आए और पञ्चशील की स्थापना हुई तब से समस्त समाचारपत्र भ्रातृभाव का राग अलापते हैं। जनता उनका अनुकरण करती है।

बौद्ध मन्दिरों में संस्कृत दैवी भाषा मानी जाती है। अमोघवज्र ने संस्कृत लिपि और ध्वनियों को पूजा का स्थान दिया था। संस्कृत मन्त्रों का मन्दिर मन्दिर में उच्चारण आरम्भ हुआ और उस समय की भारतीय संस्कृत लिपि का प्रसार हुआ। आज भी ऐसा कोई भिक्षु नहीं जो संस्कृत सीखने को पुण्यकर्म न मानता हो। यदि भारतीय पण्डित जाएं तो चीन के एक एक विहार में संस्कृत शिक्षार्थी मिल जाएंगे।

प्रतिदिन प्रातः नौ बजे से एक बजे तक और दोपहर के तीन बजे से रात्रि के ग्यारह बजे तक हमारा कार्यक्रम चलता था।

पेइ-चिङ चीन का सांस्कृतिक केन्द्र रहा है। एक दो शताब्दियों से नहीं किन्तु दस शताब्दियों से। हम पेइ-चिङ के बड़े पुस्तकालय का निरीक्षण करने गए। यहां लाखों पुस्तकें हैं, किन्तु सब चीनी भाषा में। विदेशी भाषाओं के ग्रन्थ तो सहस्रों तक ही सीमित हैं। इससे भारत को भी शिक्षा लेनी चाहिए। भारतीय आधुनिक भाषाओं में साहित्य बहुत थोड़ा है। साहित्य-सर्जन का कार्य देश की बौद्धिक प्रगति का साधन है। हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं में साहित्य इतना थोड़ा है कि अपने को बड़ा देश मानते हुए लज्जा आती है। यह सच है कि संस्कृत का साहित्य विशाल और विस्तृत है, गम्भीर और विपुल है, किन्तु वह तो हस्तलिखित संग्रहालयों में सीमित है। उसका भी यदि प्रकाशन हो जाए तो हमारे पुस्तकालयों का आधार गहरा और ऊंचा हो जाए। दूसरी ओर से हमारे यहां वैज्ञानिक साहित्य की न्यूनता है अथवा यह ही क्यों न कहें कि अभाव है।

३०-४-५५

पेइ-चिङ पुस्तकालय में साम्यवादी शासन के पश्चात् एक विभाग खोला गया जिसका नाम है राष्ट्रीय-अल्पसंख्य-जाति-भाषा-साहित्य-विभाग। आज प्रातः हमने इस विभाग में प्रवेश किया। ली-ते-ची मोंगोल आदि के अच्छे विद्वान् माने जाते हैं। वे इस विभाग के अध्यक्ष हैं।

इनके भोट संग्रह में कञ्जूर (བཀའ་འགྱུར་) और तञ्जूर (བསྟན་འགྱུར་) के दो संस्करण हैं, देर्गे (སྡེ་དགེ་) और नार्थाङ (སྣར་ཐང་) । देर्गे रक्त मसी में छपा है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नार्थाङ सम्पूर्ण है। किन्तु देर्गे के कुछ अन्तिम भाग नहीं हैं। फिर भी ३०० भाग हैं। पेइ-चिङ संस्करण का केवल एक भाग है।

इस विभाग में विशेष संग्रह मञ्जु साहित्य का है। ५०० से अधिक ग्रन्थों के दश सहस्र के लगभग खण्ड हैं। अधिकांश मूल हैं। कुछ नीली अनुकृतियां (blue prints) हैं। इनके मूल प्रासाद-पुस्तकालय में विद्यमान हैं। मञ्जु में आधिक्य ऐतिहासिक पुस्तकों का है। बौद्ध साहित्य पर्याप्त है। किन्तु खण्डित दशा में है। जो भी बौद्ध साहित्य आज पेइ-चिङ में बचा है वह कू-कुङ-पो-वू-य्वेन् अर्थात् प्रासाद में है। प्रासाद में कञ्जूर के ६० भाग हैं। कुछ तञ्जूर के भी अंश हैं।

श्री ली ने बतलाया कि मञ्जु का त्रिपिटक जो १८०५ विक्रम में महाराज ने प्रकाशित कराया था सो मुत्वदेन् में होना चाहिए। मञ्जु-लिपि के अनेक रूप जो आज तक कभी प्रकाशित नहीं हुए, वे इस संग्रह में दिखाई पड़े। ये रूप आलंकारिक हैं। इनका ऐतिहासिक मूल एक ही है।

मञ्जु राजाओं के काल में बहुभाषा-कोषों की रचना हुई। इनमें से एक कोष संस्कृत का है। प्रत्येक संस्कृत शब्द का अनुवाद भोट, चीनी, मंगु और मञ्जु में दिया है। एक और कोष है जिसमें फारसी लिपि में 'हुइ' भाषा के प्रतिशब्द भी चीनी, भोट और मोंगोल के साथ दिए हैं। बहिर्मोंगोल कें साम्यवादी शासन की ओर से प्रकाशित हुआ ११३० पत्रों का मोंगोल-भोट कोष भी यहां देखा। भोट भाषा में इसका नाम इस प्रकार है—

བོད་ཧོར་ཀྱི་བརྡ་ཡིག་མིང་ཚིག་དོན་གསུམ་གསལ་བྱེད་བཞུགས།

१८२८ विक्रम में मञ्जु-चीनी का सामान्य कोष बना था। यह कोष संसार के बहुत थोड़े पुस्तकालयों में मिलेगा। मुझे बताया गया कि चीन में भी इस कोष की दूसरी प्रति विद्यमान नहीं।

पेइ-चिङ पुस्तकालय (पेइ-चिङ थू-षू-क्वान्) का यह अनोखा संग्रह है।

नए व्यक्ति के लिए पेइ-चिङ में अनेक अद्भुत दृश्य हैं। पुराने पेइ-चिङ के जानकार भी आज के पेइ-चिङ को देख कर चकित होते हैं कि यहां के आरोग्य-विभाग ने मक्खियों और मच्छरों को कैसे सर्वथा समाप्त कर दिया। गलियों के ऊंचे नीचे गढ़े सम कर दिए। नए भवनों का निर्माण चारों ओर चल रहा है। जो आश्चर्य हमने देखा वह यह था कि एक स्थान जो पहले रिक्त था और जहां कुछ गढ़े और खाइयां खुद रही थीं वहां रातोंरात दस बारह हाथ ऊंचे वृक्ष लग गए। यह चीन की कला है कि झाडियों, पौधों और २० पाद तक ऊंचे वृक्षों को भी एक स्थान से लाकर दूसरे स्थान में लगा देते हैं। स्थानान्तरण से न पौधों और झाड़ियों के पत्ते मुरझाते हैं और न उनके फूल झड़ते हैं। छोटे पौधे अथवा बड़े वृक्ष मोल बिकते हैं। आप लीजिए और घर में अथवा वाटिका में कुछ घण्टों में ही नई बाड़ लगा लीजिए अथवा पूरी नई वाटिका खड़ी कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लीजिए। यह बात ठीक है कि सब प्रकार के वृक्षों का स्थानान्तरण होना सम्भव नहीं किन्तु जितनों का भी स्थानान्तरण चीनी कर रहे हैं, उतनों का हम भारत में तो नहीं करते।

१-५-५५

पेइ-चिङ के जीवन में प्रथम मई का उत्सव उल्लासपूर्ण है। शीतर्तु समाप्त हो चुकती है, बसन्त का आदि होता है। इस उत्सव की सज्जा दो चार मास पहले आरम्भ होती है। शासन और जनता, कार्यालय तथा निर्माणियां, स्त्री और पुरुष, बच्चे तथा बूढ़े, सभी इस उत्सव की प्रतीक्षा करते हैं। छः मास पूर्व ही विदेशों से प्रतिनिधि-मण्डलों को निमन्त्रित करने के लिए दूतावासों से शासन सूचियां मंगाता है। साम्यवादी देशों के प्रतिनिधि तो बड़ी संख्या में आते ही हैं। इनके अतिरिक्त अन्य देशों से भी समाजवाद से सम्बद्ध संस्थाओं और समितियों के प्रतिनिधियों को पर्याप्त संख्या में बुलाया जाता है।

इस वर्ष भारतवर्ष से व्यापार-संघों (trade unions) के ३२ प्रतिनिधि आए हैं। इनमें से दो तीन व्यक्ति नागपुर के हैं। द्वीपान्तर (Indonesia) से श्रमिक-संघों के २९ प्रतिनिधि हैं। ये हमको क्वाङ-चोउ आते समय संयान में मिले थे। बर्मा, पाकिस्तान के भी अनेक व्यक्ति आए हैं। बर्मा के प्रतिनिधि-मण्डल में तीन पतली दुबली, सौम्यवदना, महिलाएं भी हैं। बुलगेरिया, चेखोस्लोवाकिया, वीतनाम और रूस से भी बहुत पुरुष, स्त्रियां और बच्चे आए हैं। आज उत्सव में दो तीन हब्शी स्त्रियां दिखाई पड़ीं।

हम अपने निवास स्थान से नौ बजे चल पड़े। ठीक दस बजे राष्ट्रपति माओ थ्येन्-आन्-मन् पर अन्य अधिकारियों सहित आ पहुंचे। पेइ-चिङ के नगराध्यक्ष और उपराष्ट्रपति श्री माओ के साथ थे।

प्रारम्भ राष्ट्रीय गान के वाद्य से हुआ। तत्पश्चात् अन्ताराष्ट्रिय श्रमिक-गान का वाद्य बजा। साथ में २१ शतघ्नियों की दनदनाती स्फोट-ध्वनि होती रही।

थ्येन्-आन्-मन् के सामने सौ पाद से अधिक चौड़ी सड़क पर पांच वहित्रों ने पानी का अच्छा छिड़काव कर दिया था। भूमि सुसिक्त हो गई थी और लगातार तीन घण्टों तक पांच लाख व्यक्तियों के चलने पर भी एक रजःकण नहीं उठा।

सामने वाद्य बजाने वाले श्वेत वस्त्रों में शोभायमान थे। उनके दोनों ओर पाठ-शालाओं के विद्यार्थी तथा आदर्श कार्यकर्ता आदि के वर्ग थे। लगभग प्रत्येक वर्ग में वेष की समानता थी। वैसे पेइ-चिङ का अधिकांश वेष नीला बन्द गले का कोट और नीली पतलून है। स्त्री पुरुष के वेष में भेद नहीं। कभी कभी कोट के गले की बनावट में भेद होता है। सिर सब के खुले रहते हैं। केवल स्त्रियों का केशविन्यास तथा मुखाकृति उनके स्त्रीत्व के सूचक हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सड़क के दोनों ओर लगभग ५, ६ पाद के अन्तर पर सैनिक खड़े हुए थे। इनका प्रवन्ध अन्त तक सुव्यवस्थित रहा। क्षणमात्र के लिए भी कहीं उच्छृंखलता दिखाई नहीं पड़ी।

जनता पंक्तिबद्ध धीरे धीरे चलती थी। चार चार व्यक्तियों के कन्धों पर एक एक चित्र का चौखटा रखा हुआ था। ५, ६ पाद ऊंचे चित्र सहस्रों की संख्या में लाए गए थे। चित्रों से भी अधिक संख्या रक्तवर्ण झण्डों की थी जिन पर प्रायः कुछ लिखा हुआ न था। विभिन्नता के लिए अन्य वर्णों के झण्डे भी जनता उठाए हुए थी। जिस प्रकार से माओ आदि के चित्र कन्धों पर उठा रखे थे उसी प्रकार से बड़े बड़े काष्ठमय चीनी के अक्षर भी जनता ने उठाए हुए थे। कपड़ों पर नाना प्रकार के घोषनाद लिखे हुए थे।

जो वर्ग यात्रा में सबसे पूर्व आए उन्होंने सैकड़ों सहस्रों वायुगोले (baloons) छोड़े। दृश्य अविस्मरणीय था। रक्त, जामनी, पीले, नीले वर्णों के गोले वायु के साथ धीरे धीरे ऊपर उठते और बहते हुए आकाश में चढ़ते गए, छोटे होते गए और शनैः शनैः इतने ऊंचे चढ़ गए कि अदृश्य हो गए। गोलों के साथ लम्बे लम्बे चीनी के घोषनाद भी १०, १२ यष्टि लम्बे कपड़ों पर लिखे हुए आकाश में चढ़ने लगे। इनमें से प्रथम घोषनाद था—हम अफ्रीका एशिया सम्मेलन का अभिनन्दन करते हैं। एक और वर्ग आया। उसने सैंकड़ों कबूतर एक साथ हाथों में से उड़ाए। ये कबूतर हम पर से उड़ते हुए आठों दिशाओं में फैल गए।

तीन घण्टे तक अविछिन्न रूप से जनता और शासन के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति नाना प्रकार के फूल हिलाते हुए और "माओ-त्स-तुङ वान् श्वि" (१०,००० वर्ष जीवित रहो) का नाद करते हुए निकलते रहे।

प्रत्येक वर्ग ने राष्ट्रपति को बतलाया कि हमने पिछले वर्ष में कितना कार्य किया है। कितना उत्पादन बढ़ाया है। वर्गों के आगे बड़े बड़े झण्डों पर चित्र बने थे कि इस वर्ष में इतना उत्पादन हमने बढ़ाया है। चीन की प्रथा के अनुसार अधिकांश वस्तुएं मनुष्यों के कन्धों पर चल रही थीं। पशु तो एक भी न था। गाड़ियां भी न थीं। हां, कुछ भारी यन्त्रों के नीचे पहिए लगे हुए थे जिनको मनुष्य-शक्ति धकेल रही थी। ये यन्त्र वे थे जो चीन में बनाए जा रहे हैं जैसे वरीवर्त (turbines), बाष्पित्र (boilers), गन्त्र (engines)। एक वर्ग तो एक चट्टान ले जा रहा था जिसमें एक मूर्तिमय श्रमिक वाति-व्यध (pneumatic drill) लगाए हुए था। यह कोयला निकालने वालों का वर्ग था।

विश्व-शान्ति की चिन्ता, प्रचार और उसके लिए सज्ज रहना अनेक वर्गों के चित्रों और घोषनादों में प्रतिनिहित था। कई वर्गों ने भूमि के मानचित्र-रूपी विशाल गोले उठाए हुए थे। इन पर साम्यवादी देशों का सन्तत क्षेत्र रक्त वैभव में शोभायमान था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शासन के खाद्य-विभाग ने सूअर और मछली ऊपर उठाई हुई थी। जनता का समुद्र पुष्पभूमि बना हुआ था। एक एक वर्ग ने एक ही प्रकार के फूल उठाए हुए थे। विद्यार्थियों के विभिन्न वर्गों के पृथक् पृथक् वेष थे। लड़कियों के वर्गों ने भी निकरें पहनी हुई थीं। आधी टांगें अनावृत थीं। एक वर्ग के प्रान्त पर बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों का समूह था। इन्होंने काली कुर्ती और काषाय पहना हुआ था। इनके पीछे काली टोपी वाले कुछ ताओ सम्प्रदायी चल रहे थे। कुछ वर्गों के पश्चात् श्वेत टोपी पहने हुए मुस्लिम पाठशालाओं के विद्यार्थी थे।

धूप प्रखर थी। लगभग एक घण्टे के पश्चात् ऊपर खड़े हुए अतिथि नीचे जाने लगे जहां चाए और निम्बुरस का प्रबन्ध था। इस उत्सव में बैठने का स्थान नहीं। राष्ट्रपति, मन्त्रिगण, राजदूत और विदेशी अभ्यागत पुरुष अथवा स्त्री सभी बिना छतरियों के खड़े हुए थे।

अन्त में खिलाड़ी और नाटक मण्डलियों के समूह आए जिनमें दो विदेशी मण्डलियां भी थीं। एक चेखोस्लोवाकिया की और दूसरी वीतनाम की। ये नाचते खेलते कूदते जा रहे थे। सब ने अपने देश के वेष पहने हुए थे। भोट, मोंगोल आदि चीनी राष्ट्र के भी पृथक् वर्ग थे। समाप्ति पर वाद्य बजने लगे। राष्ट्रपति माओ हमारी ओर आए। माओ हृष्टपुष्ट और स्वस्थ प्रतीत होते थे। इनकी प्रसन्न मुखाकृति चित्र से बहुत भिन्न है। चित्र में तो जीवन का आभास ही नहीं होता। साक्षात् दर्शन करने पर माओ सजीवता और स्फूर्ति की मूर्ति हैं।

बड़े बड़े चित्रों का निम्न क्रम था। सर्वप्रथम मार्क्स, तदनन्तर एंगल्ज़्, लेनिन्, स्टालिन्, माओ और बुल्गानिन्।

कई वर्गों ने दो चित्र उठाए हुए थे। पहले माओ और फिर बुल्गानिन्।

शासन ने पहली मई के लिए घोषनादों की सूची निकाली थी। यह सूची अध्ययन करने योग्य है और हमारे श्रमिकों के लिए अनुकरणीय है।

Long live the world's working people!

Strive for lasting world peace! Long live world peace!

Fraternal salutations to the great Soviet people now triumphantly carrying out communist construction! Long live the Soviet Union, model for China's construction work and invincible bastion of world peace! The great alliance between China and the Soviet Union is a reliable safeguard for consolidating peace in the Far East and the whole world. Long live the unbreakable friendship between the Chinese and the Soviet peoples!

Develop relations of peaceful cooperation among Asian nations on the basis of the five principles of mutual respect for each other's sovereignty and territorial integrity, non-aggression, non-interference in each other's internal affairs, equality and mutual benefit and peaceful coexistence! Oppose U.S.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

imperialists creating division in Asia, organising military blocs for aggressive purposes and prepare for new war!

Long live friendship between the Chinese people and the people of India Burma, Indonesia and other nations in Asia, Africa and the Paoific region!

People throughout the country work together conscientiously and industriously to overcome difficulties, increase production and practice economy so as to fulfil the First Five-Year Plan for the development of China's national economy! Work for the all-round completion and overfulfilment of the 1955 state plan!

Men and women workers, technicians and office employees in factories and mines ! Observe labour discipline, study and raise your technical level promote advanced experiences, develop emulation campaigns, raise the quantity and quality of products, increase the number of new items, reduce costs and create more wealth for the nation!

Men and women workers, technicians and office employees in the capital construction departments! Strengthen the work of designing, surveying and management of construction, ensure the quality of construction, reduce costs of construction and installation, pay strict attention to economy, guard against waste and ensure the completion of construction projects fast, well and at lower costs!

Men and women workers, technicians and office employees in the geological prospecting departments! Try to fulfil your task of prospecting, raise the quality of work, improve the work of analysis and research, expand general geological surveying according to plan and meet the national construction demands for resources and geological data!

Men and women workers, technicians and office employees in the communications, transport and postal and tele-communications departments! Improve communications, transport and postal and tele-communications work, speed up the turn-round of vehicles and vessels, make more efficient use of equipment, increase the quality in transport work, reduce transport costs, build new and improve old communications lines and expand communications, transport and post and tele-communications work!

Trade unionists! Keep in close touch with the mass of workers and employees, raise their socialist consciousness to a higher level, increase education in labour discipline, help them raise their technical and educational levels, promote labour emulation campaigns, get the workers to make rationalisation proposals, disseminate advanced experience, pay real attention to the welfare of the workers, increase education in safety and sanitation, and ensure fulfilment of state plans!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Men and women peasants ! Work actively to increase the production of grain, cotton, oil seed and other farm produce, improve farming technique, popularise high-quality seed, build water conservancy work, cultivate carefully, make effective use of land, reclaim arable wasteland, take precautions against and combat natural calamities, adhere to the state policy of planned purchase and supply, and make efforts to support the country's industrial construction!

Workers, technical personnel, office employees and civilian workers taking part in water conservancy work! Complete the water conservancy projects, develop rural irrigation, take proper precautions against drought, flood and water-logging, defeat natural calamities, strive to achieve abundant harvests and make full use of water resources!

Forestry workers, technical personnel and tree-growers! Improve the work of lumbering and transport, improve management and administration, ensure the supply of timber, plant and protect forests, develop mutual aid and cooperation among tree-growers step by step, and strive to develop the country's afforestation work!

Workers, technical personnel and office employees on livestock farms and livestock breeders! Improve animal strains, improve methods of breeding, prevent animal diseases, protect and cultivate pasture lands, gradually develop mutual-aid and cooperation among livestock breeders and strive to raise more livestock and turn out more animal products!

Salt industry workers and salt producers! Increase the output of salt, raise its quality and strive to meet and overfulfil the national plan!

Workers in state commerce, supply and marketing cooperatives and consumer cooperatives! Work zealously to develop urban-rural trade, improve business management, reduce the cost of commodity turnover, carry out fully the state policy of planned supply and purchase, work well for the socialist transformation of private commerce, gradually develop mutual-aid and cooperation among pedlars and improve your service to the producers and consumers!

Shop assistants in private commerce! Unite with and supervise the capitalists to improve business management under the leadership of state commerce and work to supply consumer needs!

Government workers! Raise your political consciousness and vocational level, carry out state policies, raise working efficiency constantly, at all times maintain and strengthen close contact with the mass of people, oppose bureaucracy, avoid arrogance and self-complacency, serve the people whole-heartedly! Government institutions should make reasonable readjustment of their staff, reduce the number of departments and save on administrative expenses!

Teachers! Raise the quality of teaching, instruct our youth and children

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

with advanced scientific knowledge, patriotism and a socialist outlook and the spirit of loving labour and observing discipline, pay attention to the moral education and health of young people, strive to fulfil the state plan for training personnel and bring up active builders of socialism!

Child-care workers! Love children and improve child-care work!

Scientists! Work hard to raise the level of scientific research, strengthen the link between theory and practice, link research work with production, actively train personnel, popularise scientific knowledge, make scientific work serve national construction effectively!

Medical and public health personnel! Raise your scientific and technical level, train medical and public health personnel, strengthen unity between doctors of traditional Chinese medicine and western-trained doctors, ensure that doctors of traditional Chinese medicine play a fuller role in medical and public health work, develop health work for the masses and improve the people's health!

Physical culturists! Develop people's sports and improve the people's physique!

Young men and women! Students! Carry out Chairman Mao's call to "keep healthy, study well and work well," do physical training, acquire knowledge of culture and science, observe discipline conscientiously, cultivate the habit of work and good moral qualities, serve national construction and defence!

Children! Study hard, do physical training, cultivate love of labour and observe discipline, train yourselves to be loyal sons and daughters of the motherland!

Followers of all religious creeds! Develop patriotism, take an active part in the struggle against imperialist aggression in defence of peace!

Overseas Chinese unite, oppose the suppression and deceit of the traitorous Chiang Kai-shek clique, develop mutual help, protect your legal rights and interests, love your motherlan

Long live the great solidarity of the people of the whole country!

Long live the great People's Republic of China!

रात्रि को साढ़े आठ बजे अग्निक्रीडा (fireworks) आरम्भ हुई। यदि इसको स्फोट-क्रीडा कहें तो अधिक उपयुक्त होगा।

स्फोट आकाश में बहुत ऊंचे जाकर फटते थे। गर्जन-ध्वनि मेघों और शतघ्नियों के समान थी। स्फोट-क्रीडा चीनी आविष्कार है और पेइ-चिङ चीन का केन्द्र है। पेइ-चिङ का आज महत्तम उत्सव है। विदेशों के नाना प्रतिनिधि आए हुए हैं। इसलिए आज का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्फोट-प्रदर्शन चीन का उत्कृष्ट प्रदर्शन है। एक ओर स्फोट फटने पर बिजली के लट्टुओं के समान नीले, लाल और पीले सैंकड़ों दीप आकाश में फैल जाते हैं। मूल स्फोट से निकलने और चारों ओर फैलने में, धूम्र-रेखाएं वृक्ष की टहनियों का रूप धारण कर लेती हैं। जिनके आगे लटके हुए विद्युत्-कन्द इधर उधर फैलते ही जाते हैं।

दूसरी ओर देखा एक और स्फोट फटा। छतरी के खुलने के समान इसमें से फूल और तारे झड़ने लगे।

सर्वथा सामने, निर्झररूपी स्फोट में से फूलों की लम्बी लम्बी शाखाएं निकलती ही जा रही हैं।

जनता नाच रही है, गा रही है।

आज कितना व्यय हुआ यह कोई नहीं बता सकता। लाखों यष्टि कपड़ा, लाखों बांस और लकड़ी के फट्टे। सहस्रों मन रंग, लाखों पत्र के बने फूल।

अलग अलग देखने पर वस्तुएं साधारण और सस्ती दिखाई पड़ती थीं किन्तु उनका सामूहिक प्रभाव वैभव और ऐश्वर्य का था।

२-५-५५

पेइ-चिङ का भारतवर्ष के साथ दूरभाष-सम्बन्ध स्थापित हो चुका है। ३ कला (minute) का ४० रुपये शुल्क है। तत्पश्चात् प्रत्येक कला का शुल्क १३$\frac{1}{3}$ रुपये होता है। यद्यपि विमान द्वारा डाक आती है तथापि कई बार अनेक दिनों तक पत्र नहीं मिलते। हमको नागपुर छोड़े १९ दिन हो चुके थे और घर से कोई पत्र न मिला था। इसलिए २-५-५५ को शासन के द्वारा प्रबन्ध हुआ कि एक और दो बजे के मध्य दूर-भाष किया जाए। पेइ-चिङ का समय नागपुर से साढ़े तीन घण्टे आगे है। जब पेइ-चिङ में दोपहर का एक बजता है तब नागपुर में प्रातः के साढ़े नौ। दूरभाष में ध्वनि अस्पष्ट आती है। दिल्ली से लन्दन दूरभाष करने में जो स्पष्टता है वह यहां नहीं। केवलमात्र हमको यह सन्तोष हुआ कि घर में सब सकुशल हैं और हम अपनी कुशलता की सूचना दे सके।

हमने अनेकों निर्माणियों का निरीक्षण किया। सब स्थानों पर एक विशेषता पाई कि यहां श्रमिक वेतन-वृद्धि और मन्द-गति के लिए यत्न नहीं करते। वेतन कितना हो, श्रमिकों को क्या सुविधाएं मिलें– यह निश्चय करना शासन का काम है। देश की आर्थिक दशा के अनुकूल उनको यथोचित वेतन दिया जाता है। ६० रुपये से लेकर ५०० रुपये तक वेतन की अवधि है– कोई वेतन अधिक मांगने का नाम नहीं लेता। निर्माणियों में यदि किसी बात की चिन्ता है तो उत्पादन बढ़ाने की। एक एक श्रमिक की यह इच्छा है केवल प्रबन्धकों की नहीं। जो बहुत अधिक कार्य करता है वह आदर्श श्रमिक कहलाता है। इन श्रमिकों के चित्र निर्माणियों में लगते हैं। इनका आदर और सत्कार होता है और छोटी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मोटी अनेक सुविधाएं दी जाती हैं।

पेइ-चिङ में बड़े पुस्तक-विक्रयालय शासन के हाथ में हैं। केवल कुछ छोटे आपण हैं जो अभी लोगों की निजी सम्पत्ति हैं। अनाज आदि भोज्य पदार्थों का नियन्त्रण सर्वथा शासन के हाथ में है।

अनेक स्थानों पर यत्न करने के पश्चात् पता लगा कि ल्यू-ली-छाङ नामक मार्ग में बौद्ध पुस्तकें मिल सकेंगी। ल्यू-ली-छाङ में कुछ पुस्तकें मिलीं भी किन्तु बहुत थोड़ी।

वैसे तो साम्यवादी शासन में निश्चित मूल्य रखने का सार्वत्रिक आदेश है, नहीं तो घोर दण्ड मिलने की सम्भावना रहती है। "दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः" यह मनु-वाक्य जहां कहीं भी प्रयोग में लाया जाएगा वहां व्यवहार सत्यपूर्ण होगा। किन्तु फिर भी व्यापारी अपनी पुरानी प्रथाओं को नहीं भूले हैं। ल्यू-ली-छाङ में एक ८८ खण्डों वाली पुस्तक का मूल्य २४० रुपये बताया गया किन्तु एक खण्ड न्यून था। व्यापारी ने कहा यह खण्ड कल पूरा कर दूंगा। आप कल आकर ले लीजिए। अगले दिन व्यापारी ने केवल हमको एक खण्ड ही नहीं दिया किन्तु मूल्य भी २८० रुपये कर दिया। हम स्तब्ध रह गए। दुभाषिये ने व्यापारी का ही पक्ष लिया। कहा कि अब एक खण्ड बढ़ गया इसलिए ४० रुपये मूल्य बढ़ गया।

३-५-'५५

आज चीन के विद्या-विभाग में वैज्ञानिक शब्दावलि पर मेरा भाषण हुआ। गण्य मान्य वैज्ञानिक और साहित्यिक, जो इस कार्य में संलग्न हैं, वे उपस्थित हुए। इनकी और हमारी विचारधारा लगभग सर्वथा मिलती है। इनके कार्य का मूल सिद्धान्त है कि जो शब्द चीनी भाषा में बन सकते हैं वे बनाए जाएं। और इनको नव-शब्द-निर्माण में ९५ प्रतिशत से अधिक सफलता हुई है।

प्रांगार-रसायन जो अति-विस्तृत विषय है उसका इन्होंने सफलतापूर्वक चीनी में एक एक शब्द करके अनुवाद किया है। वनस्पति- और प्राणि-शास्त्र में भी अन्ताराष्ट्रिय कहे जाने वाले लाखों लातीनी शब्दों का चीनी में अनुवाद किया जा रहा है।

४-५-'५५

हम अपने मित्रों के आभारी हैं कि वे आज हमको प्रासाद में ले गए। अध्यक्ष ने अपने कोष्ठ में हमारे लिए रंगीन सुनहरी चित्रित कलात्मक, हस्तलिखित तीन बौद्ध सूत्र निकाले। इनमें से पहला हृदय-सूत्र का मोंगोल भाषा में अनुवाद था। दूसरा भोट, मोंगोल, मञ्जु और चीनी भाषाओं में संस्कृत मन्त्रों का संग्रह आर्य-सर्व-तथागत-अधिष्ठान-हृदय-गुह्य-धातु-करण्ड-नाम धारणी-महायान-सूत्र। तीसरा महा-रत्न-सञ्चय-सूत्र। ये ग्रन्थ पोथी रूप में अलग अलग पत्रों पर लिखे हुए हैं। ऊपर और नीचे लकड़ी के पाट लगे हैं जिन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर इन्द्र, यम, ब्रह्मा आदि के चित्र हैं। इन चित्रों से मनुष्य घण्टों तक स्वनेत्रतर्पण कर सकता है।

हमको बताया गया कि अनेक ग्रन्थ चाङ-काइ-शेक् ताइ-वान् ले गया। क्या क्या ले गया यह कोई नहीं बता सका।

प्रासाद में वाचनालय और गवेषणालय भी है किन्तु इनको देखने के लिए शासन की विशेष अनुमति चाहिए।

जिस प्रासाद-पुस्तकालय का पिछले ३० वर्षों से हम वर्णन पढ़ते आ रहे थे, आज पेइ-चिङ में आकर भी उसके केवल ३ ग्रन्थों पर दृष्टिपात कर सके। इन पर भी दृष्टिपात हो सका सो सौभाग्य मानना चाहिए। किन्तु फिर भी बुद्धि नहीं मानी। बहुत समझाया कि चीन की नई परिस्थिति है। इसमें यही बहुत है। किन्तु जो बुद्धि इतने दिनों से एक महाभोज के लिए लालायित थी वह कैसे तृप्त होती। जब विश्रान्तिगृह में आए तो अर्ध-मृत अवस्था में हताश बिस्तर पर लेट गए। जब हमने कुछ चीनी मित्रों से प्रासाद पुस्तकालय देखने की बात की तो उत्तर मिला प्रासाद में अद्भुतागार है। अद्भुतागार में राजाओं के रहने सहने की सामग्री है। भला प्रासाद में पुस्तकालय का क्या स्थान। भोगी विलासी राजाओं को पढ़ने में क्या रुचि इत्यादि इत्यादि।

सायं को हम फिर पुरानी पुस्तकों के स्थान पर गए और वहां हमको प्रासाद-पुस्तकालय के मञ्जु और मोंगोल ग्रन्थों का छपा हुआ सूचीपत्र मिला।

दोपहर दोनों देशों के सम्बन्ध की चर्चा होती रही। व्यापार की दृष्टि से जो संविदा हुई है वह विशेष लाभदायक नहीं। मुख्य कारण यह है कि भारत और चीन की आर्थिक व्यवस्था लगभग समान है। जो वस्तुएं भारतवर्ष से बाहर जाती हैं वे ही चीन से भी बाहर जाती हैं।

तिब्बत के साथ अनेक वर्षों से जो हमारा व्यापार रहा है वह अब बहुत घट गया है। चीन तथा तिब्बत के मध्य नई सड़कें बन जाने से भारत और तिब्बत के व्यापारिक सम्बन्ध भविष्य में बढ़ने की आशा नहीं।

हमने इस वर्ष बर्मा का चावल नहीं लिया। चीन ने ले लिया। चावल लेकर उन्होंने पूरा मूल्य भी नहीं दिया। केवल २० प्रतिशत मूल्य दिया। ६० प्रतिशत चीन में बनी हुई वस्तुएं दीं और शेष २० प्रतिशत के बन्ध (bonds) दिए कि बर्मा इतने मूल्य के कोई भी पदार्थ रूस से ले लेवे। कितना सुन्दर प्रबन्ध है। भारतवर्ष का कपड़ा, कोणायस (angle iron), लोहे की नालियां इत्यादि अनेक पदार्थ अब चीन से बर्मा जाया करेंगे।

पाकिस्तान के साथ भी चीन की संविदा हुई है। पाकिस्तान चीन से कोयला और सूती कपड़ा लेगा और चीन को रूई और सन् देगा।

इसी प्रकार द्वीपान्तर का भारतीय व्यापार चीन के हाथ में जा रहा है। लंका से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घृषि (rubber) महंगा लेकर चीन अन्ताराष्ट्रिय मूल्य से न्यून मूल्य पर लंका को चावल दे रहा है।

कई बार हमारी नीति तत्काल दृष्टि से सीमित होती है। हमें दीर्घकालीन दृष्टि से काम लेना चाहिए। विदेश-व्यापार की नीति शासन को बनानी चाहिए। वैयक्तिक व्यापारियों पर न छोड़नी चाहिए। शासन को भी सावधानी और बुद्धिमत्ता से अपने हितों की रक्षा करनी चाहिए।

पहले भारतवर्ष का प्रतिद्वन्द्वी जापान था। अब इस क्षेत्र में चीन ने भी पदार्पण किया है।

चीन में दो प्रकार की विचारधाराएं हैं। एक प्रधान मन्त्री की, जो भारत से मैत्री रखना परमावश्यक समझते हैं। और भारत की मैत्री का पूर्ण लाभ उठाना चाहते हैं। पिछले ५, ६ वर्षों में भारत की सद्भावनाओं की परीक्षा हो चुकी है। और भारत की मैत्री का अनन्त लाभ चीन ने उठाया है। दूसरा पक्ष कट्टर साम्यवादियों का है। खुले रूप में तो इस पक्ष ने कभी भी भारत का विरोध नहीं किया किन्तु गुप्त परामर्शों में यह शत प्रतिशत रूस के साथी हैं। इनको कभी भी यह बात नहीं भाती कि भारत साम्यवादी नहीं। इनका सिद्धान्त रोमन केथोलिक लोगों का है— "There is no salvation outside the Roman Catholic faith" अर्थात् जो हमारे साथ नहीं वह हमारा शत्रु है।

चीन की मित्रता को बनाए रखने के लिए हमको आभ्यन्तर शक्ति-निर्माण की आवश्यकता है। आज हम औद्योगिक क्षेत्र में चीन से आगे हैं। किन्तु यदि हम ऐसे ही चलते गए तो दस वर्ष में चीन हमसे आगे निकल जाएगा। प्रान्तीय झगड़े मिटा कर राष्ट्रभाषा की स्थापना और राष्ट्रभावना का निर्माण सब दृष्टियों से अनिवार्य समझना चाहिए।

५-५-'५५

आज भाषा-विज्ञान-पीठ देखने गए। यहां अध्यक्ष ने प्रेम और आदरपूर्वक स्वागत करते हुए कहा- आचार्य रघुवीर ने कोषों का महत् कार्य किया है। हम इनके अनुभव से अवश्य लाभ उठाएंगे।

हमको बतलाया गया कि इस संस्था में रूसी पढ़ना अनिवार्य है तथा समस्त अनुसन्धान-कार्य मार्क्स के आधार पर किया जा रहा है।

श्री छाङ-पेइ-लो "चीनी में संस्कृत शब्दों का प्रयोग"— इस विषय पर कई वर्षों से व्यापृत हैं। श्री लुओ-छाङ-फ़ेइ ने "चीनी ध्वनिशास्त्र के अध्ययन में भारत की देन"— इस विषय पर दस वर्ष पूर्व लेख लिखे थे। ये लेख चीनी में ही नहीं किन्तु हिन्दी में भी प्रकाशित हुए थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री वू-श्याओ-लिङ, जिनका संस्कृत नाम दिवाकर उपाध्याय है, चार संस्कृत ग्रन्थों का चीनी में अनुवाद कर रहे हैं।

प्रथम— लघु-सिद्धान्त-कौमुदी का समास-प्रकरण

द्वितीय— साहित्य-दर्पण का नाटक-परिच्छेद

तृतीय— मृच्छकटिक

चतुर्थ— शाकुन्तल

इनके अतिरिक्त, रामायण के चीनी साहित्य में कितने उल्लेख हैं, उनका भी ये संकलन कर रहे हैं।

भाषा-विज्ञान-पीठ-पुस्तकालय चीनी दृष्टि से बहुत अच्छा है किन्तु वैज्ञानिक अनुसन्धान की दृष्टि से अधूरा है। पाश्चात्य पुस्तकें बहुत थोड़ी हैं।

हस्तलिखित ग्रन्थ दो चार देखने में आए। उनमें से दक्षिण चीन के युन्-नान् प्रान्त में प्राचीन थाइ लिपि में लिखित पुस्तिका विशेष उल्लेख्य है। थाइ लिपि ब्राह्मी की पुत्री तो नहीं किन्तु दौहित्री अवश्य है। इसी प्रकार पुइ भाषा की लिपि भी चीन में रही होगी।

भारतवर्ष का सम्पर्क शताब्दियों से हट गया, इसलिए आज ये लिपियां भी लोप होती जा रही हैं। किसी को यह भावना ही नहीं कि इन लिपियों का लम्बा इतिहास है और ये भारत के साथ मैत्री की बहुत आवश्यक शृंखलाएं हैं। भारत में हम अनभिज्ञ हैं।

श्री किन्-फङ ने आज से १८ वर्ष पूर्व अभिधर्म की भोट और चीनी पारिभाषिक शब्दमाला प्रकाशित की थी।

प्राचीन वीगूर भाषा में श्री सिंखु साली तुतुङ ने श्वेन्-च्वाङ की जीवनी का अनुवाद किया था। इसकी प्रति यहां के पुस्तकालय में देखी। यह अनुवाद असामान्य महत्त्व का है। भाषाविज्ञान, धर्मप्रचार, भारत-चीन-वीगूर-सम्बन्ध आदि अनेक दृष्टियों से इसका महत्त्व है। इस पर बातचीत करते हुए चीनी मित्रों ने इच्छा और आशा प्रकट की कि भारतवर्ष में श्वेन्-च्वाङ का उपयुक्त स्मारक बनना चाहिए। श्वेन्-च्वाङ चीन के प्रेम-पात्र हैं। श्वेन्-च्वाङ की "पश्चिम अर्थात् भारत की यात्रा" नामक पुस्तक राष्ट्रपति माओ-त्स-तुङ युद्ध में भी अपने साथ रखते रहे हैं। जब श्वेन्-च्वाङ १६ वर्ष लम्बी भारत-यात्रा से लौट कर चीन आए तब चीन की राजधानी छाङ-आन् में घर घर में अवलोकितेश्वर की मूर्ति की स्थापना हुई। राजा और रंक बुद्ध के गुणगान में अपने को धन्य मानने लगे। श्वेन्-च्वाङ 玄 奘 श्रद्धालु और भक्त ही नहीं थे किन्तु दार्शनिक और प्रभावशाली लेखक भी थे। इनकी लेखनी ओजस्विनी थी और इनका व्यक्तित्व सर्वाभिभावी था।

श्वेन्-च्वाङ का स्मारक भारत के व्यक्ति व्यक्ति के हृदय में बनना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

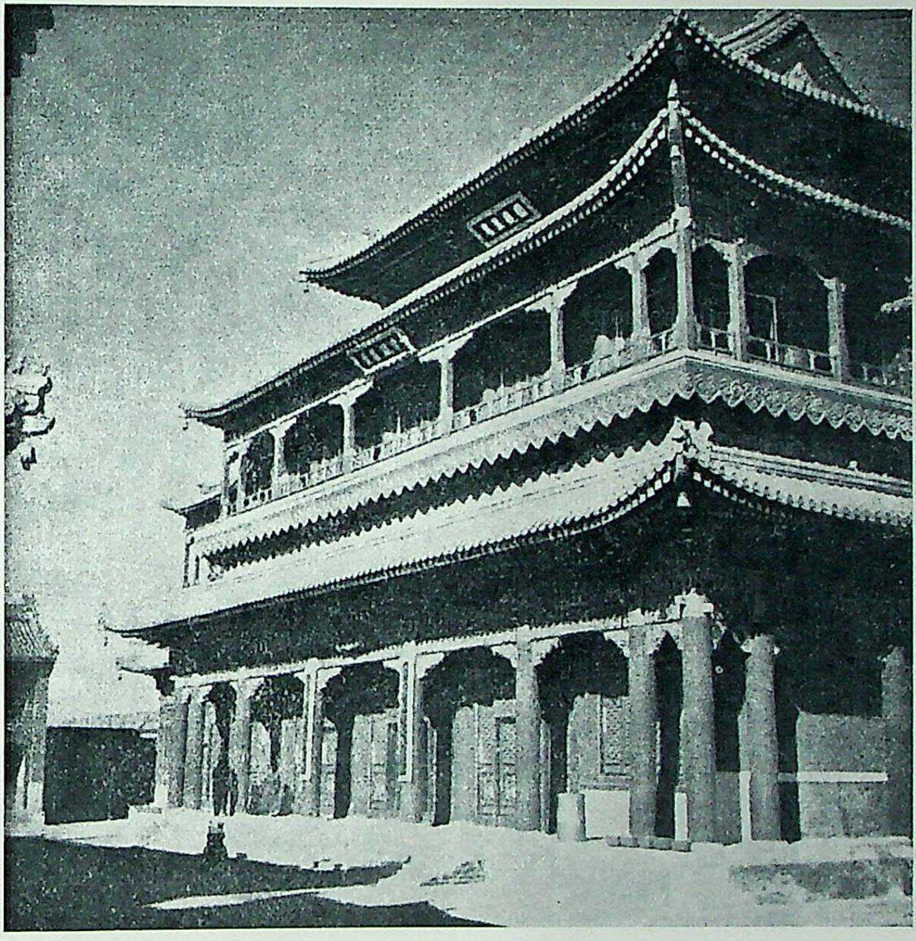

पेकिङ स्थित ऐतिहासिक मोंगोल मन्दिर युङ-हो-कुङ प्राचीन काल से भारत-भारती के अध्ययन का महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है। सम्राट् छ्येन्-लुङ् ने अपने भव्य प्रासाद को पुनीत मन्दिर का रूप दिया, जैसाकि तत्रवर्ती शिलालेख पर उत्कीर्ण है–"हमने इस स्थान को जेतवन का रूप दिया है, धार्मिक चित्रों से सजाया है, गन्ध, ध्वज और रत्नमालाओं से भूषित किया है, जहां प्रातः मन्त्रों का जप होता है, और सायं घण्टों की मधुर ध्वनि। मन्दिर के भवन शुद्ध एवं अवदात आचार के भिक्षुओं से बसे हैं।" इस मन्दिर में नववर्ष और पर्वदिनों पर उर्गा, क्याख्ता, और कोब्दो के मोंगोल, बैकाल भील के बुर्यात्, वोलगा नदी के काल्मुक्, चिचिखार् के मञ्जु, कोकोनोर् भील के ताङुत्, ल्हासा के भोट और नपाल के गोरखे अपनी श्रद्धाञ्जलि चढ़ाने आते थे।

The famous Mongolian temple Yung-ho-kung erected by Emperor Ch'ien-lung in the 57th year of his reign, i.e. 1782.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

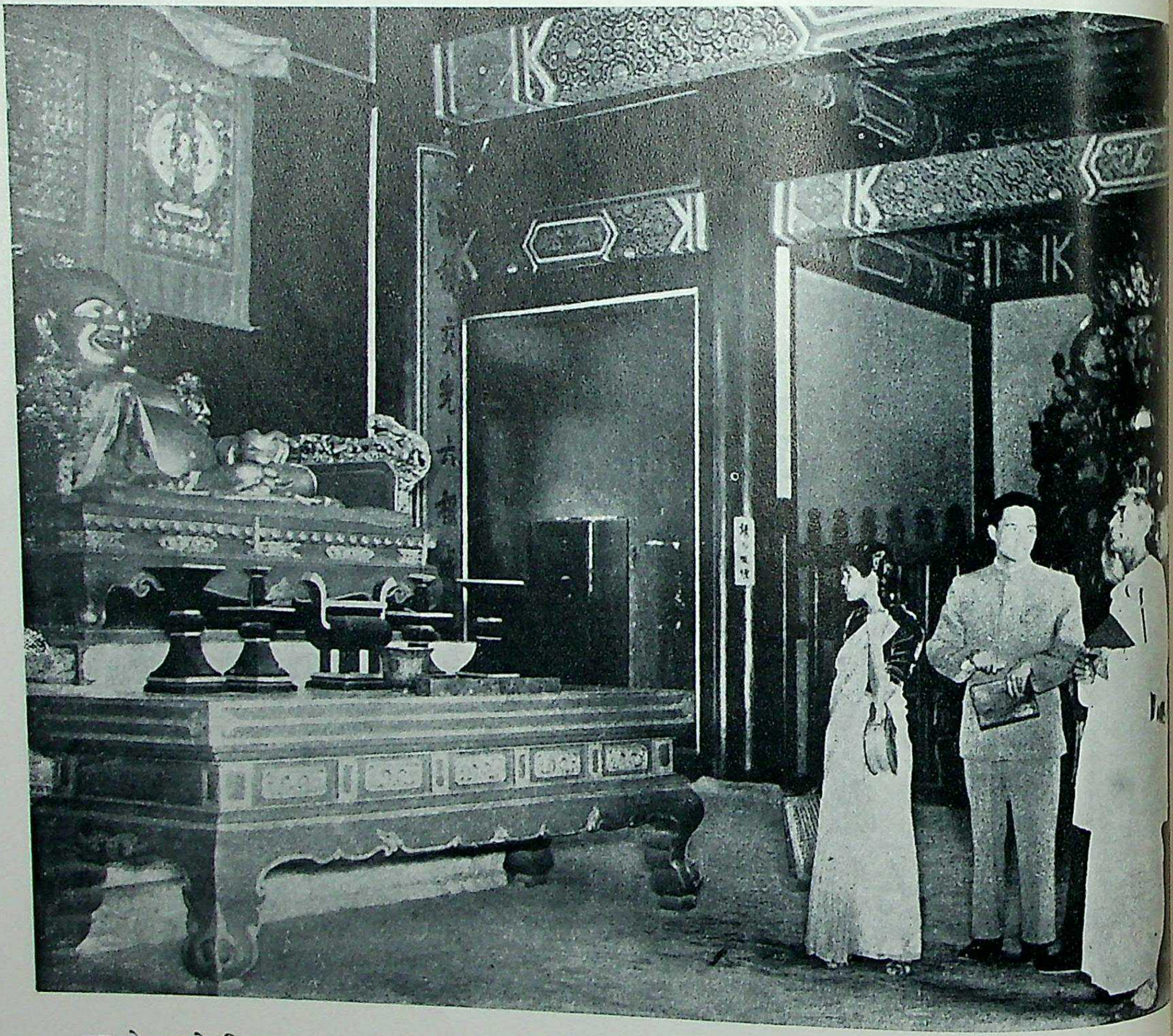

युङ-हो-कुङ के दिक्पाल-भवन में मैत्रेय की महाप्रतिमा का अवलोकन करते हुए आचार्य रघुवीर और उनकी पुत्री।
भवन के चार कोनों पर चार दिक्पाल वैश्रवण, विरूपाक्ष, विरूढक और धृतराष्ट्र स्थित हैं।
The Smiling Buddha in the Hall of Guardian Gods. Flanking the hall are the Four Guardian
Gods, of whom one is visible behind Prof. Raghu Vira

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६-५-५१

आज प्रसिद्ध मोंगोल मन्दिर युङ-हो-कुङ में गए । यहां ८० मोंगोल लामा रहते हैं। इनकी धर्मभाषा भोट है । कञ्जूर तञ्जूर का पाठ केवल भोट में ही करते हैं । आपस में बातचीत की भाषा मोंगोल है, अन्यों के साथ बातचीत की भाषा चीनी है । यहां हमको बतलाया गया कि सुङ-चू स्स में भोटग्रन्थ छपते हैं। अभी तक मुद्रण-काष्ठ-फलक लामाओं के पास हैं किन्तु शासन उनको हस्तगत करने का प्रयत्न कर रहा है। हमने इस स्थान को देखना चाहा किन्तु हमको सफलता न मिली । युङ-हो-कुङ के अध्यक्ष वृद्ध वैद्य हैं। इनका नाम यिशिकावा ཡུང་ཧོ་ཀུང་མཁན་པོ་བླ་མ་ཡེ་ཤེས་དགའ་བ་ है। इनके अधीन दो और प्रबन्धक लामा हैं— ན་ཡིན་གྲས་ और ཉེ་མ ।

युङ-हो-कुङ मोंगोल धर्म का महान् केन्द्र रहा है । यहां भोट और मोंगोल के सहस्रों और लाखों पृष्ठ छपते रहे हैं । यहां पीतल और कांसे की मूर्तियां ढलती रही हैं । एक समय था जब चीन के सम्राट् हेमवर्ण पालकियों से उतर कर रत्नाभूषित परिवार और मन्त्रिमण्डल के साथ युङ-हो-कुङ की राजाश्ममयी सीढ़ियों पर चढ़ते थे । और जिन मूर्तियों का उन्होंने मन्दिर को स्वयं दान दिया था उनकी आराधना और उपासना करने के लिए घण्टों बिताते थे । यह वही युङ-हो-कुङ है जहां महारानियां शान्ति और सान्त्वना पाने के लिए आती थीं । पिछले ५०, ६० वर्षों में युङ-हो-कुङ की सम्पत्ति, साहित्य, मूर्तियों और चित्रों को विदेशियों ने, चोरों, डाकुओं और नास्तिकों ने भरसक लूटा है । किन्तु फिर भी १६ विशाल भवन अद्भुत और अपूर्व पूजासामग्री से भरे हैं । यह ठीक है कि अब यहां वे विधियां और संस्कार नहीं होते जो पहले हुआ करते थे । अब यहां पुरातन वैभव नहीं रहा । फिर भी जो कुछ शेष है वह अध्ययन और दर्शन के योग्य है ।

युङ-हो-कुङ में अलौकिक श्रद्धा और भावना के साथ साथ तान्त्रिक मार्ग के रौद्र आचार भी होते रहे हैं । यह ऐतिहासिक मन्दिर है जहां नववर्ष और पर्वदिनों पर उर्गा, क्याख्ता, और कोब्दो के मोंगोल, बैकाल् झील के बुर्यात्, वॉल्गा नदी के काल्मुक्, चिचि-खार् के मञ्जु, कोको-नोर् झील के ताङ्गुत्, ल्हा-सा ལྷ་ས་ के भोटिए और नेपाल के गोधूमवर्ण वामनाकृति गोरखे अपनी श्रद्धाञ्जलि चढ़ाने आते थे ।

युङ-हो-कुङ प्राचीन काल से अध्ययन का महत्त्वपूर्ण केन्द्र रहा है । आज भी यहां आयुर्वेद, ज्यौतिष, तन्त्र और धर्म का अध्ययन अध्यापन होता है ।

कभी युङ-हो-कुङ का फ़ो-छाङ अर्थात् बुद्ध-भाण्डागार चीन का गौरव था । इसमें मन्दिर की समस्त सामग्री रहा करती थी। इसमें अब क्या कुछ बचा है सो हम न देख पाए।

युङ-हो-कुङ का इतिहास दो राजाश्म-शिलाओं पर चार भाषाओं में उत्कीर्ण है । इनमें मूल चीनी को मानना चाहिए, तत्पश्चात् मञ्जु, मोंगोल और भोट। सम्राट् छ्येन्-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लुङ ने पितरों के कल्याण के लिए गद्दी पर बैठते ही अपने प्रासाद को मन्दिर का रूप दिया। हम इस शिलालेख के एक दो उद्धरण देते हैं।

"हमने इस स्थान को जेतवन का रूप दिया है। हमने इसको धार्मिक चित्रों से सजाया है। गन्ध, ध्वजा और रत्नमालाओं से भूषित किया है। यहां प्रातः मन्त्रों का जप होता है और सायं घण्टों की मधुर ध्वनि। हमने मन्दिर के भवनों को शुद्ध और अवदात आचार के भिक्षुओं से बसाया है।

"हमारे पूज्य पिता धर्म-भक्त थे। वे निर्वाण-समाधि और अनुत्तर-सम्यक्-सम्बोधि प्राप्त कर चुके हैं। महाराज शाक्यमुनि के समान वे शक्तिशाली और करुणामय थे। सब प्राणी उनमें शरण लेते थे।

"पितृवर, प्रेम के मेघों से आच्छादित, माधुर्य के अवश्याय-बिन्दुओं से विभूषित तथा चिन्तामणि प्राप्त करके आप निर्वाण के महासागर में प्रवेश कर गए हैं। गंगा के बालु के समान असंख्य लोग आपके पवित्र तत्त्व का रसास्वादन कर रहे हैं।"

इत्यादि इत्यादि।

ये शिलालेख सम्राट् छचेन् लुङ ने अपने राज्य के नवें वर्ष (१८०१ विक्रम) के दसवें मास में उत्कीर्ण कराया था।

आज दोपहर को पारिभाषिक शब्दावलि समिति ने बुलाया है। इस समिति ने बहुत काम किया है। इनके कार्य-सिद्धान्त वे ही हैं जो हमारे हैं। इन्होंने अपनी सब पुस्तकें भेंट कीं।

यद्यपि जापानी भी पारिभाषिक शब्दों के लिए चीनी का आश्रय लेते हैं और उन्होंने पहले ही वैज्ञानिक शब्दावलि बनाई हुई है तथापि उनके साथ समानता रखने का आज चीन में कोई विचार नहीं। ये स्वतन्त्र कार्य कर रहे हैं।

हमारे विश्रान्तिगृह में प्रतिदिन नाना दिग्दिगन्तर से आए हुए विदेशी मिलते रहते हैं। आज हमको विशेष प्रसन्नता हुई कि तीन जर्मन विद्वान् जिन्होंने चीन को अपना अनुसन्धान-क्षेत्र बनाया हुआ है, वे पूर्वी जर्मनी से यहां आए हैं। प्राध्यापक Eduard Erkes लाइप्सिक् विश्वविद्यालय में चीनी के अध्यापक हैं और पूर्व एशिया संस्था के अध्यक्ष हैं। इन्हीं के साथ Dr. Schubert तथा Dr. Völker बर्लिन् अद्भुतागार के अधिकारी हैं। प्राध्यापक Robert Heidenreich येना (Jena) के पुरावशेषज्ञ हैं। इन्होंने बतलाया कि भोट और मोंगोल छपने का स्थान अभी तक पेइ-चिङ में विद्यमान है। इनसे यह भी पता लगा कि बूदापेस्त से प्राध्यापक लिगेती आए हुए हैं। प्राध्यापक लिगेती ने १९४२ में मोंगोल कन्जूर का सूचीपत्र पुस्तक रूप में प्रकाशित किया था। यह सूचीपत्र मैं अपने साथ लाया हुआ था। इनसे मिलने पर पता चला कि तन्जूर का सूचीपत्र उलान्-बातोर् में बन रहा है और शीघ्र ही प्रकाशित हो जाएगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रसिद्धतम चीनी मन्दिर क्वान्-ची। यह विशाल और भव्य प्रासाद रूप में बना मन्दिर अपने पुस्तक-संग्रह और अद्भुतागार के लिए प्रसिद्ध है।

The celebrated Chinese Buddhist Kuan Chi Temple, a rich repository of Buddhist texts and art treasures.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

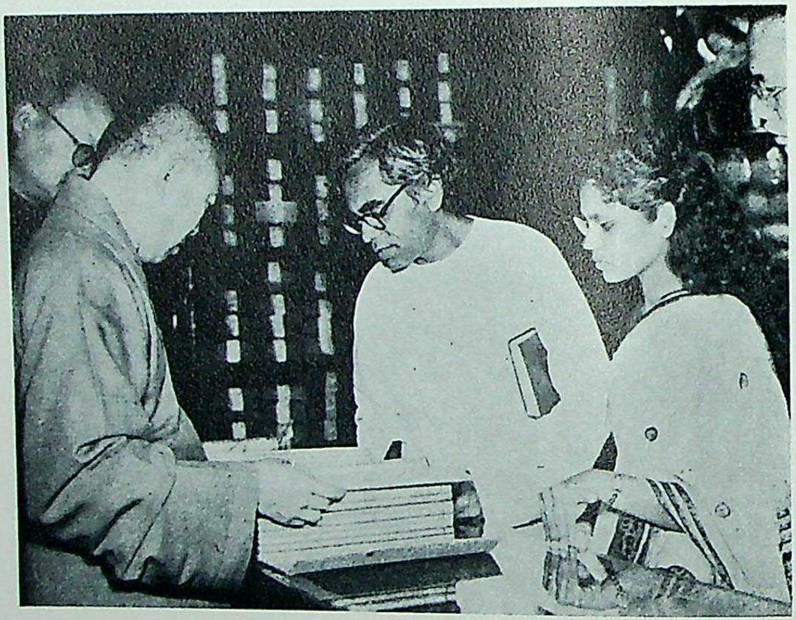

क्वान्-ची मन्दिर के पुस्तकागार में चीन-बौद्ध-मण्डल के प्राणभूत भदन्त चू-त्सान् के साथ आचार्य रघुवीर। श्री चू-त्सान् की योग तथा तत्सम्बन्धी साहित्य में विशेष रुचि है।

Prof. Raghu Vira in the Kuang-chi Temple with Venerable Chiu-tsang the moving spirit of the Chinese Buddhist Association.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८-५-'५५

आज प्रातः ९ बजे चीन की प्रसिद्ध ऐतिहासिक विशाल भित्ति देखने के लिए चले। मार्ग की लम्बाई १५० ली। सड़क कुछ कच्ची कुछ पक्की। मार्ग में आंधी से शरीर भर गया। बड़ी भित्ति के अतिरिक्त और भी दो छोटी छोटी भित्तियां दिखाई पड़ीं। भित्ति पहाड़ पर बनी है। इस पर केवल मनुष्य ही चल सकते हैं। सम्भव है पेइ-चिङ से आगे जाकर सीढ़ियां आदि न हों और भित्ति पर घोड़े दौड़ सकते हों। भित्ति पर सदा वायु चलती रहती है। निर्जन पर्वतों का चारों ओर का दृश्य शोभान्वित है।

आते समय मार्ग में मिङ राजाओं की १३ समाधियां देखने के लिए सड़क से बाईं ओर को मुड़े। समाधियां आरम्भ होने से कई कोस पहले एक द्वार है। द्वार से आगे सड़क के दोनों ओर सिंह, घोड़े, ऊंट, हाथी, गधे, सेनापति और मन्त्री आदियों की बड़ी बड़ी अश्ममयी प्रतिमाएं सड़क की रक्षा करती हैं। बहुत दूर आगे जाकर पितृपूजा के विशाल और विस्तृत भवन हैं। ये भवन आज बन्द थे। चारों ओर बांसों और बल्लियों की पैड़ें बांधी हुई थीं। जीर्णोद्धार का बहुत बड़ा कार्य चल रहा था। भवनों के पीछे मिट्टी की एक कोस क्षेत्रफल वाली पहाड़ी सी है जिसकी ऊंचाई भवनों से नीची है। इस पहाड़ी में किसी अज्ञात स्थान पर द्वितीय मिङ राजा का शरीर समाधिस्थ है। ठीक स्थान का किसी को पता नहीं। यह रहस्य शव की रक्षा के निमित्त है। इसी प्रकार दूर दूर १२ और भवन तथा समाधियां हैं। प्रथम मिङ राजा की समाधि नान्-चिङ में है।

९-५-५५

जिस प्रकार से युङ-हो-कुङ पेइ-चिङ का प्रसिद्धतम मोंगोल मन्दिर है उसी प्रकार चीनियों का प्रसिद्धतम मन्दिर क्वान्-ची है। मन्दिर प्रासाद रूप में बना है। यह मन्दिर पुस्तक-संग्रह और अद्भुतागार के लिए प्रसिद्ध है। श्री चू-त्सान् इस मन्दिर की आत्मा हैं। ये चीन-बौद्ध-मण्डल में भी कार्य करते हैं। तथा राजनीति में भी भाग लेते हैं। इनकी योग में अत्यन्त रुचि है। जितनी बार भी इनसे साक्षात् होता रहा उतनी ही बार इन्होंने अभ्यर्थना की कि योग-सम्बन्धी साहित्य मुझे भेजिए। १९५२ में लंका से सेली अर्थात् बुद्ध का शरीरांश यहां भेंट में आया था। यह सेली कूपी में रखा हुआ है। श्री चू-त्सान् ने हमारा स्वागत करते हुए कहा— आपका आगमन इतिहास की विशेष घटना है। इस वाक्य में कितना स्नेह और कितनी आशाएं बंधीं हैं, यह कौन कह सकता है।

पेइ-चिङ विश्वविद्यालय में केवल एक भारतीय विद्यार्थी है— श्री नारायण चन्द्र सेन। भारतीय विद्यार्थियों की संख्या बढ़नी चाहिए। इस ओर भारतीय शासन और जनता का ध्यान आकर्षण करना परमावश्यक है। पेइ-चिङ विश्वविद्यालय में पर्याप्त विदेशी विद्यार्थी हैं। संख्या की दृष्टि से पहला स्थान वीत-नाम का है और दूसरा कोरिया का। उत्तर वीत-नाम से २१० विद्यार्थी और कोरिया से १००। रूस, हंगरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और बाह्य मोंगोल से १०, १० विद्यार्थी हैं। द्वीपान्तर के भी ६ विद्यार्थी हैं। चीन हमारा पड़ौसी है। हम दो सहस्र वर्षों से सांस्कृतिक बन्धु हैं। आज भी राजनीति में भारत चीन का साथ दे रहा है। हमारा राजनैतिक और सांस्कृतिक कर्तव्य है कि सैंकड़ों की संख्या में भारतीय विद्यार्थी चीन के विश्वविद्यालयों में आकर इनके प्राचीन और आधुनिक साहित्य, कला, दर्शन, अर्थव्यवस्था, राजनीति आदि का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें। केवल अंग्रेज़ी पढ़ने से और चीन पर अंग्रेज़ों की लिखी हुई पुस्तकें पढ़ने से हम चीन को कभी न जान सकेंगे। चीन प्रगतिशील देश है। हम भी प्रगति कर रहे हैं। एक दूसरे को सम्यग् रूपेण जानना और समझना हमारे लिए अनिवार्य है।

आज श्री शूबर्ट् नामक जर्मन विद्वान् के पुनः दर्शन हुए। इन्होंने प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् वेलर् (Weller) का जयन्ती-ग्रन्थ सम्पादित किया है। अनेक बातें जो हमको वैसे पता न लग सकतीं वे आज उनसे पता लगी हैं। स्वभाव से सौम्य और भारत के स्नेही हैं। आप लाइप्सिक् में रहते हैं।

१०-५-५५

अन्ताराष्ट्रिय विद्यार्थी-संघ-स्वास्थ्याश्रम अनोखी संस्था है। केवल यक्ष्मा के प्रारम्भिक रोगी इस संस्था में लिए जाते हैं। अभी तक यहां कोरिया और वीत-नाम के रुग्ण विद्यार्थी आए हैं। मैत्री का अच्छा साधन है।

साम्यवादी देशों में स्वास्थ्याश्रम सुन्दरतम स्थानों पर बनाए जा रहे हैं। इन पर अनन्त द्रव्य व्यय किया जा रहा है। यन्त्र अधिकांश पूर्वी जर्मनी और रूस के बने हुए हैं।

११-५-५५

सुङ-चू स्स— यह भोट मन्दिर है। यहां २१ लामा रहते हैं। ज्येष्ठ लामा श्री पा-थू-सङ हैं। इनके सबसे छोटे शिष्य दस वर्ष की आयु के हैं। देर्गे का सम्पूर्ण कञ्जूर तञ्जूर यहां रखा हुआ है।

फू-थी स्स— यह मन्दिर ३००,वर्ष पुराना है। फू-थी चीनी का शब्द नहीं, संस्कृत का शब्द "बोधि" है। इसके द्वार पर देवनागरी लिखी हुई है। दलाइ-लामा སྐྱབས་མགོན་རིན་པོ་ཆེ तथा पञ्छेन्-लामा པཎ་ཆེན་རིན་པོ་ཆེ་ यहां उपदेश करते रहे हैं। इनके पास ल्हासा का सम्पूर्ण कञ्जूर है। मोंगोल, चीनी और भोट विद्वान् मिल कर भोट-चीनी-कोष बना रहे हैं। इनको हमारे भोट-संस्कृत-कोष की अत्यन्त आवश्यकता है।

तुङ-च्याओ स्स— यह भिक्षुणी मन्दिर है। ५३ भिक्षुणियां यहां निवास करती हैं। मन्दिर विशाल, सुन्दर और अत्यन्त स्वच्छ है। चीनी त्रिपिटक के तीन विभिन्न संस्करण हैं जिनका अध्ययन और पारायण सदा होता रहता है।

छोटी आयु की भी दस भिक्षुणियां हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भदन्त चू-त्सान् क्वान्-ची मन्दिर के मुख्य भवन में बोधिसत्त्व की भव्य, सौम्य और शान्तिमय मूर्ति, श्रद्धा और स्नेहाप्लावित गर्व से आचार्य रघुवीर को दिखाते हुए।

Prof. Raghu Vira, his daughter and Venerable Chiu-tsang gaze at the central image of the Kuang-chi temple.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक वृद्धा ने अपनी जिह्वा के रुधिर से पांच वर्ष तक चीनी त्रिपिटक के बहुत से अंश लिखे। प्रतिदिन पांच पृष्ठ लिखा करती थी। एक पृष्ठ में २०० अक्षर।

पेइ-चिङ की सीमा पर अनेक कृषि-उत्पादन-सहकारी-मण्डल हैं। हम इनमें से एक काओ-पेइ-त्येन् में गए। यहां १४२५ कुल हैं जिनमें ४८५५ नर नारी और बच्चे हैं। भूमि का क्षेत्रफल ८५०० माओ है। छः माओ का एक एकड़ होता है। प्रत्येक काम करने वाले व्यक्ति को लगभग दो माओ भूमि मिली है। यहां मक्की, गेंहू और चावल की खेती होती है।

साम्यवादी शासन से पूर्व इस ग्राम में ४२ धनी कुल थे जिनके पास ५१२ एकड़ भूमि थी। अर्थात् ११, १२ एकड़ वाले परिवार को धनी माना जाता था। मध्यवर्ग के परिवार २५३ थे। इनके पास ३८ प्रतिशत भूमि थी। ८०५ कुल भूमिहीन तथा दरिद्र थे। इनकी भूमि-सम्पत्ति २६ प्रतिशत थी।

साम्यवादी शासन ने भूमि का वण्टन कार्यकर्ताओं के आधार पर किया। जिस चौधरी से हम बात कर रहे थे उसके परिवार में दस व्यक्ति हैं। पहले इनके पास ११ माओ भूमि थी। अब १६ माओ है। खेती के अतिरिक्त स्त्रियां कढ़ाई का काम और पुरुष खच्चर आदि से भार ढोने का काम करते हैं। यदि किसी पुरुष के पास एक खच्चर और एक गाड़ी हो और उसको लगातार काम मिलता रहे तो पेइ-चिङ की सीमाओं पर उसे ४, ५ युआन् प्रतिदिन मिल जाते हैं।

ग्राम में मछलियों का तालाब है।

१२-५-५५

आज हम पेइ-चिङ की शासन-चालित वस्त्र-निर्माणी संख्या १ देखने गए। पेइ-चिङ में तीन वस्त्र-निर्माणियां हैं। यन्त्र पूर्वी जर्मनी से आए हैं तथा कुछ चीन के हैं। प्रतिदिन दो पर्यायों में काम होता है। इस निर्माणी में ५०,००० तर्कु (spindles) और ११५२ करघे (looms) हैं। श्रमिक संख्या २६५०। एक श्रमिक २४ करघों अथवा ६०० तर्कुओं की देखभाल करता है। जो सूत इस निर्माणी में बनता है उसका $\frac{1}{3}$ भाग बेच दिया जाता है और $\frac{2}{3}$ भाग से कपड़ा बुना जाता है।

इस निर्माणी में केवल एक ही प्रकार का साधारण वस्त्र बनता है। रंगाई और छपाई यहां नहीं होती।

श्रमिकों को वेतन कार्य की मात्रा के अनुसार मिलता है। दिनों और घण्टों के अनुसार नहीं। वेतन का माध्य प्रतिमास ५३ युआन् पड़ता है।

८० प्रतिशत श्रमिक निर्माणी से संलग्न भवनों में रहते हैं। भवन तीन भूमि ऊंचे हैं। समस्त भवन संख्या २६ है। शीत ऋतु में भवन भाप से उष्ण रखे जाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बच्चों के लिए प्राथमिक पाठशाला है जिसमें ९० बच्चे पढ़ते हैं। शिशुशाला स्नानागार आदि भवनों के साथ संलग्न हैं।

श्रमिक स्त्रियां ५१.८ प्रतिशत हैं। हमको देख कर आश्चर्य हुआ कि ⅘ श्रमिक २४ वर्ष की आयु से नीचे के हैं। अधिकारी भी अधिकांश छोटी आयु के हैं।

उच्चाधिकारियों की संख्या ३०० है। इस निर्माणी में कोई विदेशी कार्य नहीं करता। यदि आवश्यकता पड़े तो रूसी विशेषज्ञों से सहायता ली जाती है। मुख्य अभि-यन्ता का मासिक वेतन २५० युआन् है। उसके नीचे चार साधारण अभियन्ता हैं।

प्रति तीन मास में १ लाख ४० सहस्र थान बनते हैं। प्रत्येक थान की लम्बाई ४० यष्टि है। अथवा यों कहें कि प्रतिदिन २००० के लगभग थान बनते हैं।

एक वर्ष में केवल सात छुट्टियां मिलती हैं। नववर्षावतार एक दिन, श्रमिक-दिवस एक, राष्ट्रीय दिवस दो, तथा वसन्त की छुट्टियां तीन दिन।

चीन में हड़ताल नहीं होती। यह प्रश्न कोई उठाता ही नहीं। यदि किसी श्रमिक को असंतोष हो तो वह व्यक्तिरूप से श्रमिक-संघ को बतला सकता है किन्तु संघरूप से कोई असंतोष प्रकट नहीं किया जा सकता। श्रमिकों का काम कार्य की वृद्धि है। और इसके लिए उनका कर्तव्य है कि वे अपने सुझाव दें कि किस प्रकार से थोड़े व्यक्ति अधिक काम कर सकेंगे तथा किस प्रकार से नए यन्त्र लगाए जाएं जिनमें थोड़े से थोड़े श्रमिक लग सकें।

स्थिति भारत से सर्वथा विपरीत है। भारतीय श्रमिक थोड़े से थोड़ा काम और अधिक से अधिक वेतन चाहता है। वह नए और अधिक काम करने वाले यन्त्रों का विरोधी है। वह प्रबन्धकों को अपना शत्रु माने बैठा है। उत्पादन की वृद्धि करना उसका कार्य नहीं। हड़तालें करना, असंतोष फैलाना उसके जीवन का अंग है। और आश्चर्य यह कि यह सब कुछ साम्यवादी तथा उनके साथी कराते हैं।

चीन की निर्माणियों में स्थान स्थान पर घोषनाद लगे हुए हैं। इनमें से कुछ हम यहां देते हैं—

(१) यह निर्माणी हमारा गौरव है। हमारे यहां अधिकतम उत्पादन-मात्रा है।
(२) श्रमिको, भरसक यत्न करो कि वस्तुओं का स्तर ऊंचा उठे।
(३) श्रमिको, भरसक यत्न करो कि छोटे से छोटी वस्तु का भी नाश न हो।
(४) श्रमिको, देखो प्रतियोगिता में तुम कहां हो।
(५) यह श्रमिका सबसे अधिक उत्पादन करती है। यह आदर्शकर्त्री है। इससे शिक्षा लो।
(६) कच्ची सामग्री को बचाओ और नाश न होने दो।
(७) अधिक पूंजी का संग्रह करो जिससे राष्ट्रीय निर्माण शीघ्रतर हो और हम ताइ-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

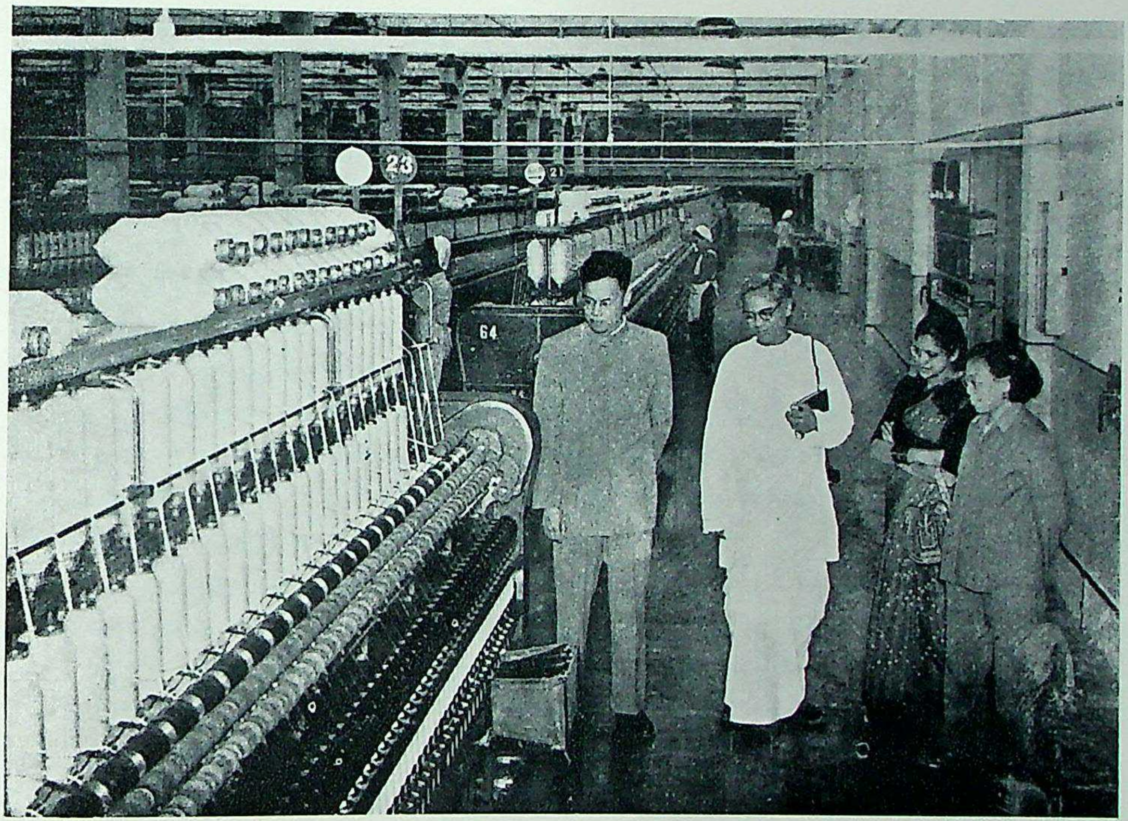

पेइ-चिङ की शासनचालित वस्त्र-निर्माणी पूर्वी जर्मनी से आए तथा स्वदेश-निर्मित यन्त्रों से सुसज्जित है जहां एक श्रमिक २४ करघों अथवा ६०० तर्कुओं की देखभाल करता है ।

Prof. Raghu Vira and his daughter visited the Peking State No. 1 Cotton Mill on on 12 May 1955.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वान् द्वीप शीघ्र स्वतन्त्र करा सकें।

(८) श्रमिको, तुम में एकता होनी चाहिए। जो तुम्हारा अनुभव है वह तुम दूसरों को दो और जो दूसरों का अनुभव है उसको तुम लो और कार्य-योजना को पूरा करो।

(९) श्रमिको, केवल तुम अपना ही कार्य पूरा न करो किन्तु वर्ग का कार्य भी पूरा करो।

(१०) यान्त्रिक स्तर को ऊंचा उठाओ।

(११) चारों ओर देखभाल रखो कि कहीं दुर्घटना न हो।

(१२) कोई यन्त्र बिगड़ने न पाए।

(१३) किसी श्रमिक को चोट लगने न पाए।

(१४) नियमों का पालन सर्वमनसा करना ही चाहिए।

(१५) इस निर्माणी के अध्यक्ष का आदेश पालन करना श्रमिकों का कर्तव्य है। इत्यादि इत्यादि।

प्रत्येक श्रमिक-वर्ग के लिए उत्पादन-सारणी लटकी रहती है। जो वर्ग अधिक कार्य करता है उसको पीले प्रान्त वाली रक्तवर्ण ध्वजा मिलती है। निर्माणी में एक पर्वत-चित्र बना है। उस पर प्रत्येक वर्ग चढ़ने का यत्न कर रहा है। निश्चित अवधि के अन्त में देखते हैं कि चोटी पर कौन सा वर्ग पहुंचा है।

श्रमिक अन्य श्रमिकों को पत्र लिखते हैं और आह्वान करते हैं कि आओ अधिकाधिक काम करें। अधिकाधिक कर्मकौशल प्राप्त करें। अधिकाधिक देश की उन्नति हो।

निर्माणी के संचालक श्रमिकों का उत्साह वर्धन करने के लिए उनके अच्छे कार्य की प्रशंसा और न्यूनतापूर्ति के लिए प्रेरणात्मक पत्र लिखते हैं। ये पत्र निर्माणी की भित्तियों पर चिपकाए जाते हैं।

आज प्रातः वस्त्र-निर्माणी देखने गए थे। वहां हमने श्रमिक विधान की पुस्तिका लेनी चाही। निर्माणी की सचिवा ने पुस्तिका मंगाई भी, पर दुभाषिये ने कहा कि यह प्रति ठीक नहीं और यह कह कर लौटा दी। सायंकाल अंग्रेज़ी की प्रति लाकर दी गई।

निर्माणी में अच्छे कार्य के लिए ध्वजाएं दी जाती हैं। वर्म (shields) नहीं। वर्म देने की प्रथा यावनी (यूनानी) प्रथा है। झण्डा टांगा जा सकता है, फहराया जा सकता है। ढाल को लेकर क्या करेंगे।

पेइ-चिङ में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक जातियों के लिए एक विशेष विद्यालय जून १९५१ में खोला गया। समस्त चीन में इसी प्रकार के छः और विद्यालय हैं। हमने पूछा राजनीति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में कौन सी पाठ्यपुस्तकें हैं तो उत्तर मिला पहले आप विद्यालय देख लीजिए उसके पश्चात् आपको बताएंगे।

इस विद्यालय में १३०० विद्यार्थी अध्ययन करते हैं जिनमें ३०० कन्याएं हैं। अधिकांश विद्यार्थी चीनी हैं जो चीनी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं का अध्ययन करते हैं जिससे कि वे इन जातियों में जाकर प्रचार और शासन का कार्य कर सकें तथा इनकी भाषाओं में मार्क्सवाद पर पुस्तकें लिख सकें। १३०० विद्यार्थियों में से ७०० चीनी हैं, ४०० भोट और मोंगोल हैं, और २०० वीगूर तथा कज़ाक्। इस विद्यालय में तीन विभाग हैं। पहला राजनीति, दूसरा भाषा और तीसरा प्रारम्भिक प्रौद्योगिक शिक्षा (elementary technical education)। यदि इस नीति का भारत अनुसरण करे तो उसका अर्थ यह होगा कि हिन्दी-भाषी विद्यार्थी अहिन्दी-भाषी प्रान्तों की भाषाओं को सीखें और उनमें राष्ट्रीयता का प्रचार करें, पुस्तकें लिखें, जिससे कि वे अन्य प्रान्तों को अपने साथ ले सकें।

यहां चार साहित्यिक भाषाओं के पढ़ने पढ़ाने का विशेष प्रबन्ध है— (१) भोट, (२) मोंगोल, (३) वीगूर, (४) कज़ाक्। जो भाषाएं साहित्यिक नहीं और केवल छोटे क्षेत्रों में बोली जाती हैं उन भाषाओं को भी चीनी विद्यार्थी सीखते हैं। इनके लिए बारह श्रेणियां हैं। जो विद्यार्थी अल्पसंख्यक जातियों में से यहां शिक्षा प्राप्त करने आते हैं उनका स्तर उठाने के लिए छोटी और बड़ी कक्षाएं हैं। आधुनिक आर्थिक और राजनैतिक स्थिति को जानने के लिए अनुसन्धान विभाग हैं।

सब विद्यार्थियों का व्यय शासन देता है। खाना, कपड़ा और कभी कभी दस बारह युआन् ऊपर के व्यय के लिए विद्यार्थियों को दिए जाते हैं। यदि विद्यार्थी पहले कहीं काम करते हों और उनके मातापिता आदि का भार उन पर ही हो तो उनकी शिक्षा की अवधि तक शासन परिवार की सहायता भी करता है। मुसलमान विद्यार्थियों के लिए रसोई अलग है।

चार वर्ष के अध्ययन अध्यापन में मार्क्सवाद को अधिकतम समय दिया जाता है। वह समस्त शिक्षा का आधार है।

हमने पूछा कि विद्यार्थियों के पास कितनी पुस्तकें रहती हैं। कुछ ठहर कर, कुछ सोच कर, धीरे धीरे दबे शब्दों में उत्तर मिला— विद्यार्थी पुस्तकालय में जाकर पढ़ लेते हैं।

चीनी विद्यार्थियों के लिए किसी प्रकार के पूजापाठ का प्रबन्ध नहीं, वे तो सब धर्महीन बन ही चुके। किन्तु भोट और मोंगोल विद्यार्थियों के लिए अलग पूजा-कोष्ठ बनाया हुआ है। यहां हमने भोट का सम्पूर्ण कञ्जूर देखा। यह नार्थाङ संस्करण है। देर्गे संस्करण के सम्पूर्ण कञ्जूर तञ्जूर मंगाए जाने का प्रबन्ध किया जा रहा है। मुस्लिम विद्यार्थियों के लिए भी एक अलग उपासना-कोष्ठ है जिसमें खजूर की चटाइयां बिछी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुई हैं। यहां पुस्तक केवल एक ही है, इस्लाम को दूसरी पुस्तकों की आवश्यकता नहीं। एक ओर भोट और मोंगोल पूजा-गृह में कोमल गद्दे, अद्भुत चित्र, बहुमूल्य मूर्तियां और सहस्रों ग्रन्थों का संग्रह कन्जूर है, उसके प्रति इस्लाम का उपासना-गृह सांसारिक और बौद्धिक वैभवहीन है। किन्तु इस्लाम की एक दूसरे को बांधने वाली शक्ति संभवत: कहीं अधिक है। वैभव की अपेक्षा भावना की उग्रता मनुष्य के जीवन के नियमन में अथवा एकसूत्र में पिरोने में कहीं अधिक समर्थ है।

इस विद्यालय में सब से बड़े विद्वान् यू-ताओ-छ्वेन् हैं। ये आजकल असाहित्यिक भोट-कोष निर्माण में लगे हुए हैं। ये लन्दन में अनेक वर्षों तक School of Oriental and African Studies में पढ़ाते रहे हैं। इनकी बड़ी कामना थी कि मेरे से लम्बी बातचीत करें किन्तु अवसर न था। यही एक व्यक्ति हैं जो धाराप्रवाह अंग्रेज़ी बोलते हैं, जिनको आधुनिक अनुसन्धान-पद्धति का ज्ञान है और जो इस दृष्टि से उपलभ्य भोट और चीनी साहित्य के सम्बन्ध में बहुत कुछ सूचना दे सकते हैं।

चीन में तिब्बत का लीन हो जाना नई घटना है। चीनी, तुर्किस्तान और मोंगोल देश को भी चीन में पूर्णरूप से मिला देना शासन के उद्देश्यों में से है। इस सम्बन्ध में माओ-त्स-तुङ के घोषनाद स्थान स्थान पर मिलते हैं– चीन की सब जातियां एक हों, सबमें एकता रहे, कोई विघ्न न पड़ने पाए। दलाइ-लामा के इस आशय के वचन सब भोट और मोंगोल मन्दिरों तथा शिक्षालयों में प्रमुख स्थानों पर लटके हुए मिलते हैं— चीन की सब जातियों की नई एकता दृढ हो।

विद्यालय में एक प्रसिद्ध भोट चित्र का अति-मनोहर रूप देखा। विशालकाय सौम्य प्रकृति हाथी, उस पर नटखट बन्दर चढ़ा हुआ, बन्दर की पीठ पर सशंक और सतर्क शश, तथा शशे पर अभिमानपूर्वक कौवा चढ़ा हुआ। बन्दर के हाथ में फल है।

तत्पश्चात् हमको अनुसन्धान-विभाग में ले गए। अनुसन्धान-कोष्ठ का अर्थ अनुसन्धान नहीं किन्तु केवलमात्र विषय-विशेष के अध्यापकों के संमनन का कोष्ठ है। शिक्षक इकट्ठे बैठ कर यहां विद्यार्थियों को पढ़ाने की पद्धति पर विचार करते हैं। जिस कोष्ठ में हमको पहले ले गए वह भोट-भाषा का था। भोट के लिए छः भोटिए और आठ चीनी अध्यापक हैं। एक अध्यापक की पञ्जिका हमने देखनी चाही और समझनी चाही। उत्तर बहुत अस्पष्ट मिला— बहुत खोदने पर यह समझ में आया कि यह पञ्जिका का पृष्ठ ल्हासा के प्रथम दिवस के उत्सव का वर्णन है। किस प्रकार का वर्णन है यह पता न लग सका। केवल इतना पता लगा कि भोटिया अध्यापक चीनी अध्यापक को समझाएगा और चीनी अध्यापक विद्यार्थियों को समझाएगा। सभी भाषाओं में जो इस विद्यालय में अथवा अन्यत्र पढाई जाती हैं यही स्थिति है। यह अल्पसंख्यक अध्यापकों पर एक ओर से नियन्त्रण है और दूसरी ओर से चीनी अध्यापकों का प्रशिक्षण है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्णरूपेण तो हमने विद्यालय न देखा न दिखाया गया । एक श्रेणी देखी जिसमें भोट विद्यार्थी चीनी सीख रहे थे ।

भोट मोंगोल आदि सब जातियों के विद्यार्थी और अध्यापक चीनी सीखते हैं । चीनी ही उनका माध्यम बनता है और चीनी विद्यार्थी भोटादि भाषाएं पढ़ते हैं ।

इस विद्यालय का उद्देश्य चीन-राष्ट्र को भाषा और राजनीति द्वारा एक बनाना है । राष्ट्रपति माओ का वचन है कि राष्ट्र में एकता होनी चाहिए । सब जातियों को अपनी भाषा में स्वातन्त्र्य है किन्तु राष्ट्र में एकता होनी चाहिए, परस्पर घनिष्ठता होनी चाहिए ।

इस विद्यालय में दलाइ-लामा और पन्छेन्-लामा आ चुके हैं । दलाइ-लामा ने राष्ट्रीय एकता पर व्याख्यान भी दिया था ।

यहां चीनी और भाषित भोट का कोष बन रहा है ।

चीनी शासन ने शरच्चन्द्र दास के भोट-अंग्रेज़ी कोष का १९५१ में पुनर्मुद्रण किया । ३५ युआन् में यह कोष सर्वत्र प्राप्य है । इस कोष की प्रतियां भारतवर्ष और अन्य पश्चिमी देशों में पहुंचनी चाहिएं ।

भोजनशालाएं सात हैं । प्रत्येक बहुत विशाल । हम भी एक भोजनशाला में गए । वहां विभिन्न प्रकार के भोजन करने वाले विद्यार्थियों की सूची लगी हुई थी । २०० में से सात भोट विद्यार्थी शाकाहारी हैं । कुछ भोट और मोंगोल विद्यार्थी ऐसे हैं जो गोमांस और अजाविमांस नहीं खाते । यह जान कर आश्चर्य हुआ कि केवल मुसलमान ही नहीं किन्तु और भी कुछ विद्यार्थी ऐसे हैं जो शूकर-मांस नहीं खाते । भोजनशालाओं में दुर्गन्ध तीव्र और सिर को फाड़ने वाली होती है ।

वाचनालय में पुस्तक-सूची देखी । उसमें एक सहस्र मोंगोल पुस्तकों के नाम थे । हमें आश्चर्य हुआ । जाकर देखा तो छोटी छोटी १९४८ के पश्चात् की प्रचारात्मक पुस्तिकाएं हैं । इनमें प्राचीन मोंगोल साहित्य का कोई ग्रन्थ नहीं । यही दशा अन्य साहित्यों की भी है ।

यहां पढ़ने वाले कुछ भोट विद्यार्थी हिन्दी भी जानते हैं । उनसे हमारा मिलना नहीं हुआ । वास्तव में चीन में किसी स्थान पर हम विद्यार्थियों से खुल कर बात न कर पाए । कोइ ऐसा अवसर ही नहीं आया । विद्यालयों में समस्त समय मुख्याध्यापक तथा एक दो और अध्यापक ले जाते थे । कोरिया के २८ विद्यार्थी हैं । उनके लिए कोरिया भाषा के समाचार-पत्र आते हैं । इन पत्रों में चीनी के अक्षर सर्वथा निकाल दिए गए हैं । हमको बतलाया गया कि १९४९ के पश्चात् साम्यवादियों ने कोरिया भाषा में यह सुधार किया ।

मोंगोलिया के दो समाचारपत्र आते हैं । दोनों पांचवें दिन प्रकाशित होते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विद्या-विभाग के अध्यक्ष बुद्धधर्मानुरागी कुओ मो-जो आचार्य रघुवीर का स्वागत करते हुए। शतपिटक योजना के विस्तार और महत्त्व को समझते हुए आपने चीन में आचार्यजी की यात्रा को सुफलवती बनाने में सहयोग दिया।

Kuo Mo-jo, President of the Chinese Academy of Sciences, welcoming Prof. Raghu Vira.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पञ्चाह की प्रथा प्राचीन है ।

कोरिया के विद्यार्थी चीन के अनेक विद्यालयों और संस्थाओं में दिखाई पड़ते हैं। यक्ष्मा के रुग्णालय में भी अधिकांश वीत-नाम और कोरिया के विद्यार्थी थे। किसी दिन कोरिया और वीत-नाम चीन के भाग बनेंगे । इसको कौन रोक सकता है ।

जिधर भी पेइ-चिङ नगर में जाओ उधर ही प्राचीन भित्ति के बाहर नए भवनों का निर्माण हो रहा है। कुछ वर्षों में पेइ-चिङ आधुनिक नगर बन जाएगा । नए भवन अधिकांश पाश्चात्य ढंग के बनाए जा रहे हैं । कहीं कहीं छत और बाह्य द्वार चीनी पद्धति से बने और रंगे हुए होते हैं ।

सड़कों पर बैल अथवा ऊंट नहीं दिखाई पड़ते । सर्वत्र गधे, खच्चर तथा घोड़े ।

पुरुष सिर पर भार नहीं उठाते । बंहगी का बहुत अधिक प्रयोग है । चीन में प्राचीन काल से ही भार उठाने का कार्य अधिकांश मनुष्य करते आए हैं । दुष्काल के समय चीनी पशुओं को खा जाते हैं और फिर खेती के लिए पुरुष अपने कन्धों पर हल रख कर भूमि जोतते हैं ।

आज रात को पेइ-चिङ नाटक में गए । नाटक में एक ओर कला और दूसरी ओर साम्यवाद का प्रचार था । दुष्ट भूमिपति ने व्याधों के मारे हुए व्याघ्र को छिपा लिया इत्यादि ।

भारत से लाया हुआ हमारा केश-तैल समाप्त हो चुका है । कई दिनों से यत्न कर रहे हैं किन्तु सारे पेइ-चिङ में केश-तैल की एक बूंद नहीं मिली ।

१३-५-५५

आज का दिन विद्या-विभाग के प्रधान श्री कुओ-मो-ज़ो से प्रारम्भ किया । मिलते ही आपने कहा— आपसे दिल्ली में भेंट हुई थी । साढ़े नौ से साढ़े ग्यारह बजे तक बातचीत होती रही । आप बुद्धधर्मानुरागी हैं । धीरे धीरे आपसे अपनी योजना का परिचय कराया । आप हमारी योजना के महत्त्व को समझने लगे हैं ।

मैंने कहा सुदर्शना यहां अकेली है । इसका परिचय किसी भी चीनी परिवार से नहीं हुआ तो उत्तर दिया– मेरी पत्नी बाहर गई हुई है नहीं तो उनसे परिचय करा देता ।

चलते समय आपने अपनी दो पुस्तकें भेंट दीं । पुराने कांसी के पात्रों पर जो चीनी के अक्षर खुदे हुए हैं उन पर ये अनुसन्धानात्मक ग्रन्थ हैं । इन ग्रन्थों को आपने अपने हाथ से लिखा है और छपाई भा-चित्रण द्वारा हुई है । कार्ल्ग्रेन् के सम्बन्ध में आपने कहा कि इनको चीनी उपभाषाओं का अच्छा ज्ञान है और हम उनका आदर करते हैं । किन्तु कांस्य-पात्रों की लिपि का ज्ञान इतना अच्छा नहीं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आज सायंकाल को श्री जन्-पो-सङ मिलने आए। ये बौद्ध हैं। इन्होंने कहा आपके आने से बौद्ध धर्म को शक्ति मिली है। ये एक मास तक हरीन्द्र चट्टोपाध्याय के साथ रहे हैं। जब इनसे कहा कि आज आप हमारे यहां आए हैं, हम भी किसी दिन आपके घर आएंगे, तो तुरन्त उत्तर मिला– मैं तो किसी समय घर में रहता ही नहीं।

दोपहर पेइ-चिङ विश्वविद्यालय में व्यतीत किया। यहां का जलस्थात्र त्रयोदश-भूमि स्तूप के समान बना हुआ है। पुस्तकालय में घुसते ही मस्क्वा (Moscow) विश्वविद्यालय के संस्थापक श्री लोमोनोसोफ् की मूर्ति के दर्शन हुए। इनका जीवन काल १७११ से लेकर १७६५ तक था। यह श्वेत राजाश्म की मूर्ति रूस से भेंट में आई है।

विश्वविद्यालय में भोट और मोंगोल के सैंकड़ों ग्रन्थ हैं। ये काष्ठ-मुद्रित हैं। कन्जूर के छः, सात भाग सुन्दर हस्तलिखित भी देखे। श्री वज्रामृतपञ्चिका बहुत सुन्दर और मोटे अक्षरों में मुद्रित है।

यह विश्वविद्यालय तीन विश्वविद्यालयों का बना है। १९५२ में पेइ-चिङ, चिङ-ह्वा तथा यन्-चिङ विश्वविद्यालयों को मिला कर एक कर दिया गया। पुराना १८१८ का पेइ-चिङ विश्वविद्यालय नगर के भीतर है।

४ मई १९१९ से लेकर निरन्तर तीस वर्षों तक पेइ-चिङ विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों और अध्यापकों ने क्रान्ति के लिए कार्य किया है। श्री माओ का कोष्ठ नगर के भीतर है।

विश्वविद्यालय में तेरह विभाग हैं। विद्यार्थी संख्या पांच सहस्र। विदेशी विद्यार्थी १५०, जिनमें से केवल एक भारतीय है। भाषा-विभाग में चार खण्ड हैं। प्रथम खण्ड– चीनी, द्वितीय खण्ड– रूसी। इसमें पोल् और चेक् भी पढ़ाई जाती है। तृतीय खण्ड– पश्चिमी भाषाएं। अभी केवल तीन भाषाओं का प्रबन्ध है– अंग्रेज़ी, जर्मन और फ्रांसीसी। चतुर्थ खण्ड– पूर्वीय भाषाएं। दस पूर्वीय भाषाओं का प्रबन्ध है– मोंगोल, कोरिया, जापानी, वीतनामी, द्वीपान्तर, बर्मी, स्यामी, हिन्दी, उर्दू और अरबी।

हिन्दी पढ़ाने के लिए चार भारतीय और उनके साथ चार चीनी अध्यापक हैं। पुरुषोत्तम प्रसाद और उनकी पत्नी प्रभा। प्रभा नागपुर में पढ़ी हैं। ये हमारी चीनी प्रदर्शनी भी देखने आई थीं। राजेशसरण और भानुचन्द्र वर्मा। उर्दू के लिए एक मुसलमान अध्यापक उत्तरप्रदेश से आए हैं– मुख्तार अहमद। पांचों शाकाहारी हैं और पांचों साम्यवाद के भक्त हैं।

द्वीपान्तर के पांच विद्यार्थी हैं। रूस का एक भी विद्यार्थी नहीं। किन्तु चीन के ५,००० विद्यार्थी रूस में अध्ययन कर रहे हैं। वीत-नाम और कोरिया के लगभग २०० विद्यार्थी हैं। हंगरी, पोलैण्ड, चेखोस्लोवाकिया, बुल्गेरिया और पूर्वी जर्मनी के लगभग ४० विद्यार्थी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रूसी भाषा को विशेष रूप से २०० चीनी विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। शेष पश्चिमी भाषाएं पढ़ने वालों की संख्या २०० के लगभग है। हिन्दी के ८० विद्यार्थी और उर्दू के १०। उर्दू का प्रारम्भ इसी वर्ष हुआ है।

हिन्दी अध्यापन का उद्देश्य अनुवादक और दुभाषिये बनाना है। इसी उद्देश्य को रख कर अन्य विदेशी भाषाएं पढ़ाई जा रही हैं। हिन्दी का पाठ्यक्रम चार वर्ष का है।

सब विद्यार्थियों का रहना सहना और पढ़ना निःशुल्क और निर्व्यय है। दरिद्र विद्यार्थियों को शासन कपड़ों आदि के व्यय के लिए १० युआन् मासिक देता है। खाने पीने रहने सहने आदि का व्यय १५ युआन् प्रतिविद्यार्थी हो जाता है।

विश्वविद्यालय में तीन प्रकार के कर्मचारी हैं– कर्मी, अध्यापक और अधिकारी। इन तीनों का वेतन ३२ श्रेणियों में बंटा हुआ है। कर्मी को २५ युआन् और कुलपति को २४० युआन् मिलते हैं। अध्यापकों के चार वर्ग हैं– (१) सहायक अध्यापक, ५० युआन् प्रति-मास। (२) व्याख्याता, १०० युआन् प्रति-मास। (३) संयुक्त प्राध्यापक, १३० युआन् प्रति-मास और (४) प्राध्यापक, १६०-२४० युआन् प्रति-मास।

अध्यापकों के घरों का भाड़ा ५ से २० युआन् प्रतिमास तक है। संस्कृतज्ञाता प्राध्यापक ची के तीन कोष्ठ वाले घर का भाड़ा पांच युआन् मासिक है और बिजली का व्यय १.२० युआन् मासिक।

भृत्या अथवा आया का वेतन प्रति-मास १५ से २० युआन् तक है। इसमें प्रायः भोजन सम्मिलित नहीं होता।

श्री ताङ-युङ-तुङ दर्शन-विभाग के बहुत प्रसिद्ध अध्यापक हैं। आपने बुद्ध-धर्म का इतिहास लिखा है। इसका अनुवाद अमेरिका में हुआ है।

साम्यवादी अपना अधिकांश काम समझा बुझा कर निकालते हैं। यदि कोई एक बार कहने से नहीं मानता तो दो बार तीन बार समझाते हैं। एक नहीं अनेकों व्यक्ति उसके पीछे पड़ जाते हैं। और मना कर छोड़ते हैं। माओ का आदेश है– झगड़ा मत करो, संघर्ष मत करो, समझा कर अपना काम निकालो। जितनी दूर तक हो सके दूसरे के साथ चलो और फिर अपने मार्ग पर लाओ। साम्यवाद की शक्ति का यह भी एक रहस्य है।

विद्यार्थियों में अपूर्व उत्साह है। विद्यालय में प्रवेश करते ही विद्यार्थी के जीवन-कार्य का निश्चय हो जाता है और तदनुकूल उसकी शिक्षा होती है। जब भारतीय विद्यार्थी सेन पेइ-चिङ में आया तो उससे प्रश्न किया गया भारत में जाकर आप क्या बनेंगे, हम उसी के अनुसार आपको शिक्षा देंगे। सेन के पास कोई उत्तर न था और अब भी नहीं है। विद्यार्थियों का संगठन सुदृढ और सर्वव्यापी है।

जब पण्डित नेहरू चीन आए तब चीनी शासन तथा जनता को हिन्दी पढ़ने पढ़ाने के महत्त्व का भान हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१४-५-५५

आज पी-विन् स्स अर्थात् नीलमेघ-मन्दिर में आए। १८०६ विक्रम में ५०० अर्हतों के मन्दिर का निर्माण हुआ जिसमें सुवर्ण-पत्र-मण्डित काष्ठमयी ५०८ मूर्तियां स्थापित हैं। ५०० अर्हतों के भवन चीन के मन्दिरों की विशेषता हैं। अब ये मन्दिर बहुत थोड़े रह गए हैं। यहां मनुष्य कुछ घण्टे नहीं किन्तु अनेक सप्ताह व्यतीत कर सकता है। अर्हतों में काश्यप, नागसेन, वनपाश, सुभग, राहुल, इन्द्र आदि संस्कृत नाम पहचाने जा सकते हैं। किन्तु अभी तक हमने सम्पूर्ण नाम संस्कृत में नहीं देखे। थोड़े से समय में हम जो कुछ कर पाए वह था ५०० अर्हतों के नामों का संग्रह। ये हमने चीनी अक्षरों में परिशिष्ट में दिए हैं।

अर्हतों की रूपाकृति एक दूसरे से भिन्न, विचित्र, सौम्य अथवा क्रूर, सुरूप अथवा कुरूप सभी प्रकार की है। एक अर्हत् के पेट में से मूर्ति निकल रही है। इसको देख कर कंगरू का स्मरण हो आता है। एक अर्हत् ने पर्णमाला पहनी हुई है। लंगोटी भी पर्णमयी है। एक अन्ध-पंगु-युगल है। इत्यादि।

इस मन्दिर में श्री सुन्-यात्-सन् का शव चार वर्ष तक रखा गया। १९४९ के पश्चात् रूसी शासन ने चांदी तथा कांच के दो सात सात पाद लम्बे शवाधान (coffins) उपहार में दिए। उनके लिए विशेष भवन बनाया गया।

नीलमेघ-मन्दिर में आज कोई भिक्षु नहीं। मन्दिर में भी केवल काष्ठ तथा धातु की मूर्तियां शेष हैं।

१५-५-५५

यथापूर्व साढ़े आठ बजे दुभाषिया चुङ आया और कहने लगा आज ग्रीष्म-प्रासाद न चलेंगे। किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए आज साढ़े नौ बजे एक उच्चाधिकारी आपसे मिलने आएंगे।

नौ बजे प्रातराश समाप्त कर के हम अपने कोष्ठ में पहुंचे तो श्री राघवन् का दूरभाष आया— क्या आपको पता है कि आज ग्यारह बजे प्रधान मन्त्री श्री चोउ-अन्-लाइ ने आपको निमन्त्रित किया है। यदि आप साढ़े दस बजे मेरे यहां पहुंच जाएं तो हम इकट्ठे चलेंगे।

सुदर्शना कहने लगी कि क्या मैं भी साथ चल सकती हूं। मैंने कहा अवश्यमेव। यदि नागपुर से पेइ-चिङ आ सकती हो तो शिन्-च्याओ फ़ान्-त्येन् विश्रान्तिगृह से प्रधान मन्त्री के घर तक भी जा सकती हो। हमारे लिए तो चोउ-अन्-लाइ चीन के साक्षात् प्रतीक हैं।

साढ़े नौ बजे शासन के उच्चाधिकारी भी आ पहुंचे। कुशल-प्रश्न के पश्चात्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

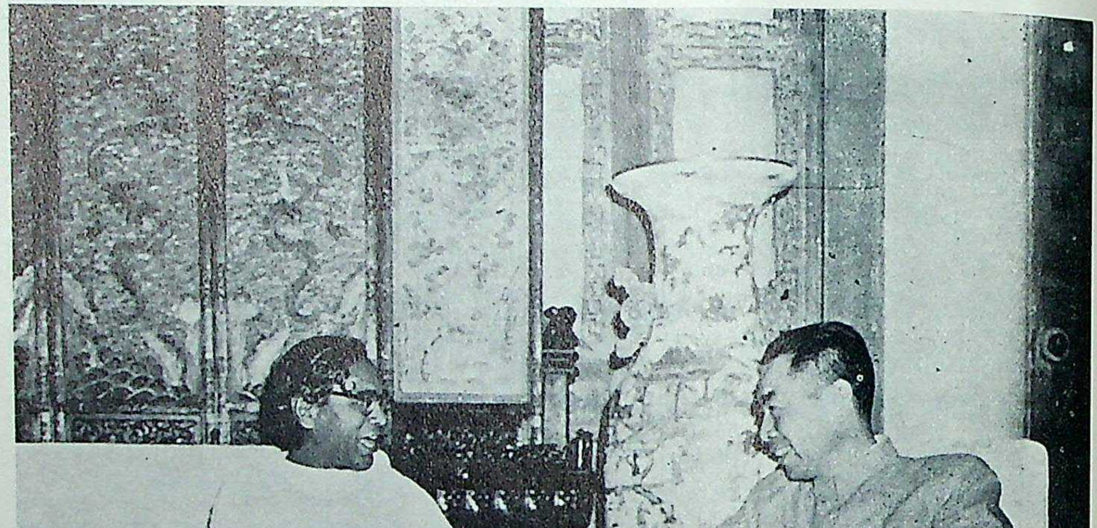

चीन के प्रधान-मन्त्री चोउ अन्-लाइ ने भारतीय श्वेन्-च्वाङ कहकर आचार्य रघुवीर का स्वागत किया। आपने बड़े प्रेम से कहा—"हम आपको सूत्र दिए बिना यहां से प्रस्थान न करने देंगे।"

Premier Chou En-lai receives Prof. Raghu Vira.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रधान मन्त्री का निमन्त्रण मौखिक रूप से दिया। आपको और सुदर्शना देवी को श्री चोउ-अन्-लाइ ने ग्यारह बजे निमन्त्रित किया है। आप पधारने की कृपा कीजिएगा।

सुदर्शना की चिन्ता भी दूर हुई। मैंने अपनी पुस्तकें इकट्ठी कीं— आंगल-भारतीय-बृहत्कोश, अहिंसा पर चीनी कविताएं और चित्र, तान्त्रिक बीज, आलि-कालि, श्री नेहरू का सरस्वती-विहार में आगमन।

श्री राघवन् द्वीपान्तर में रह चुके हैं। उनका द्वीपान्तर और संस्कृत के प्रति गाढ अनुराग है। उनके लिए अपने यहां प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक Sanskrit in Indonesia उठाई और परिश्रमी विद्यार्थी के समान पुस्तकों का बारह सेर भार उठा कर विश्रान्तिगृह से नीचे उतरे। श्री राघवन् को Sanskrit in Indonesia भेंट दी। उन्होंने गद्गद-स्वर में आभार प्रदर्शन किया। हम ठीक ग्यारह बजे प्रधान मन्त्री के बंगले पर पहुंच गए।

बाहर ६, ७ गाड़ियां खड़ी देख कर श्री राघवन् ने कहा क्या बात है कि आज इतनी गाड़ियां खड़ी हैं। इस प्रश्न का उत्तर प्रधान मन्त्री के कोष्ठ में पदार्पण करते ही मिल गया। शासन के गण्यमान्य अधिकारी, विद्वान् और साहित्यिक अर्थात् जो कोई भी व्यक्ति मेरे उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधक हो सकते थे, वे सब आज निमन्त्रित थे। इन में मुख्य महानुभाव ये थे– विद्या-विभाग के प्रधान श्री कुओ-मो-ज़ो, संस्कृति के उपमन्त्री श्री चन्-चङ-तो, विदेश सांस्कृतिक सम्पर्क मण्डल के अध्यक्ष श्री हुङ-सङ और उनके उपाध्यक्ष चङ-चुङ-चिङ, भाषा-विज्ञान-संस्था के अध्यक्ष श्री लो-चाङ-पेइ, पेइ-चिङ विश्वविद्यालय के प्राच्य-भाषा-विभागाध्यक्ष श्री ची-श-लिन् तथा कवयित्री श्रीमती श्ये-पिङ-शिङ। आज प्रतीत हुआ कि चोउ-अन्-लाइ केवल शिष्टाचार निष्णात ही नहीं हैं किन्तु कार्य साधने में भी निपुण हैं। कुशल-प्रश्न के पश्चात् प्रधान मन्त्री ने वार्तालाप आरम्भ की– पुरातन काल में श्वेन्-च्वाङ सूत्रों के संग्रह के लिए भारत गए थे। अब आप भारत से यहां आए हैं। आप भारतीय श्वेन्-च्वाङ हैं। ये सूत्र आपकी सम्पत्ति हैं।

उपस्थित सज्जनों में से एक एक का परिचय कराते गए– ये हमारे उपप्रधान हैं, ये विद्या-विभाग के प्रधान हैं, ये हमारी कवयित्री हैं जिनका नागपुर में सुदर्शना ने स्वागत किया था। ये हमारे संस्कृति के विशेषज्ञ हैं, आदि आदि।

"मैंने आज इन सज्जनों को आपके कार्य को सिद्ध करने के लिए बुलाया है। आपको यहां आए कितने दिन हुए।" मैंने उत्तर दिया– "हम यहां २७ एप्रिल को पहुंच गए थे।" प्रधान मन्त्री ने कहा– "सो आपके २० दिन नाश हुए। मैं बाण्डुङ में था सो आपको पहले निमन्त्रित न कर सका। किन्तु अब मैं आपको विश्वास दिलाता हूं अब आपका एक भी क्षण नाश न होगा।"

बाण्डुङ सम्मेलन का वर्णन करते हुए प्रधान मन्त्री ने कहा–"हमने बाण्डुङ में सर्व-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्मति से यह प्रस्ताव पारित किया है कि हमारे देशों में सांस्कृतिक विनिमय हो । भारत और चीन प्राचीन सखा हैं । हमने भारत से बहुत कुछ लिया । हमारा कर्तव्य है कि जो कुछ आप चाहते हैं हम आपको दें ।''

फिर प्रश्न किया–''आप यहां कब तक ठहरेंगे ।'' मैंने कुछ उपहास में तथा कुछ सत्यरूपेण कहा– ''जब तक सूत्र न मिलेंगे तब तक यहां ठहरूंगा ।'' श्री चोउ-अन्-लाइ ने बड़े प्रेम से कहा– ''हम आपको सूत्र दिए बिना यहां से प्रस्थान न करने देंगे ।''

परस्पर विमर्श के पश्चात् चोउ-अन्-लाइ ने कहा–'' कि (१) जिन सूत्रों की हमारे पास एक से अधिक प्रतियां हैं उन सूत्रों की एक एक प्रति हम आपको सदा के लिए दे देंगे । (२) जिनकी हमारे पास एक प्रति है उनके हम आपको अणुचित्र दे देंगे । (३) समयाभाव से जिनके चित्र न हो सकेंगे उनको आप एक वर्ष अथवा निश्चित अवधि के लिए उधार ले जाइए और (४) अन्त में जिन ग्रन्थों का आप केवलमात्र निरीक्षण करना चाहते हैं उनका आप निरीक्षण कर सकेंगे ।''

व्याख्या रूप में श्री चोउ-अन्-लाइ ने कहा– ''जिन ग्रन्थों की हमारे पास केवल एक प्रति है उनको देश से बाहर भेजने का अथवा देने का कोई पूर्व उदाहरण नहीं, किन्तु चीन को भारत पर पूर्ण विश्वास है । हमारी कोई वस्तु आपसे छिपी हुई नहीं । एक दूसरे की सहायता करना हमारा कर्तव्य है । यह वस्तु आपकी ही तो है । अब आप यहां एक सप्ताह और ठहरिए और इन सज्जनों के साथ मिल कर कार्यक्रम बना लीजिए । तत्पश्चात् एक मास तक उत्तर, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में बुद्धधर्म के प्राचीन अवशेषों का निरीक्षण कीजिए । फिर पेइ-चिङ में लौट कर एक सप्ताह और ठहरिए और सब सूत्र लेकर भारत जाइए ।''

प्रधान मन्त्री ने चीन के प्राचीन यात्रायोग्य स्थानों का नाम लेते हुए तुन्-ह्वाङ और युन्-काङ 雲岡 आदि का जब नाम कीर्तन किया तो उपस्थित सज्जनों में से दो तीन ने कहा कि ये स्थान तो हम में से भी अनेकों ने नहीं देखे हैं । प्रधान मन्त्री ने उनको परामर्श दिया– ''आप भी इनके साथ चलें क्योंकि पचास वर्ष के पीछे शरीर की शक्तियां क्षीण होने लगती हैं सो आवश्यक है कि कर्तव्य कार्य पूरे किए जाएं और द्रष्टव्य स्थानों का दर्शन किया जाए ।''

मेरे से पूछा आपकी आयु कितनी है ? मैंने कहा ५३ वर्ष । कहने लगे आप भी ५० से ऊपर हो चुके हैं आपको ये स्थान देखने ही चाहिएं । मैंने श्री प्रधान मन्त्री से निवेदन किया कि चीन आने का एक बड़ा फल इन स्थानों को देखना है । तुन्-ह्वाङ और युन्-काङ केवल चीन की राष्ट्रीय सम्पत्ति और गौरव नहीं हैं किन्तु सम्पूर्ण संसार की सम्पत्ति और गौरव हैं । इस पर चोउ-अन्-लाइ ने बल देकर कहा कि ये भारत और चीन के सांस्कृतिक सहकार्य के फल हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

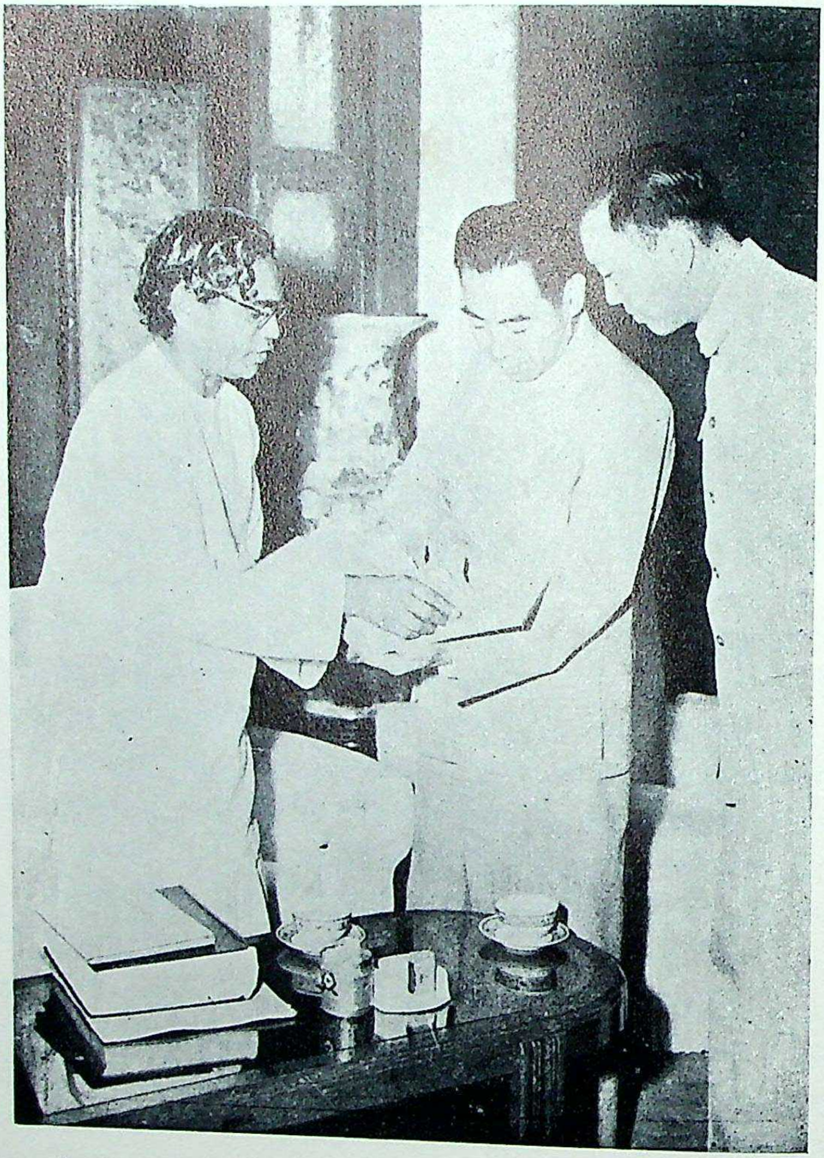

आचार्य जी द्वारा प्रकाशित 'चीनवर्षीया अहिंसा-पञ्चाशिका' नामक अहिंसा-संबन्धी चीनी कविताओं और उनकी चित्राक्षिव्यक्ति को स्नेह एवं आश्चर्य से देखते हुए श्री चोउ अन्-लाइ कहने लगे — "आपको चीनी कविता प्रिय है । भारतवर्ष और चीन में साहित्य और कला का आदान-प्रदान होना चाहिए।" पुस्तक में चीनी कविताएं और उनका संस्कृत तथा आंगल अनुवाद है ।

Prof. Raghu Vira presenting his book *Chinese Poems and Pictures on Ahiṁsā* to Premier Chou En-lai.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आजकल प्रधान मन्त्री को संसार की उतनी चिन्ता नहीं जितनी भारत और चीन की मैत्री की चिन्ता है।

इसके पश्चात् मैंने कहा कि मुझे दो चार स्थानों पर और भी जाना चाहिए। कान्-सू प्रान्त में लाब्राङ བླ་བྲང་བཀྲ་ཤིས་འཁྱིལ་ और कुम्-बुम् སྐུ་འབུམ་བྱམས་པ་གླིང་། मञ्चूरिया में जेहोल् और दोलोनोर् और आभ्यन्तर मोंगोलिया में होहे-हॉता इत्यादि।

संस्कृत के प्राध्यापक श्री ची से पूछने लगे– ये सूत्र कितनी भाषाओं में हैं? श्री ची ने उत्तर दिया— पांच भाषाओं में। चीनी, भोट, मोंगोल, मञ्जु और शी-श्या।

अभी तक मैंने शी-श्या के त्रिपिटक की बातचीत न श्री राघवन् से की थी और न ही अपने पत्र-व्यवहार में चीनी शासन से।

सुदर्शना ने अपनी हस्ताक्षर-पञ्जिका आगे बढ़ाई। कवयित्री ने सहायता की। प्रधान मन्त्री ने चीनी पञ्जिका देख कर हर्षोत्फुल्ल नेत्रों से आश्चर्य प्रकट किया। अहो! तुम तो चीनी पञ्जिका लाई हो। हस्ताक्षर किए। १९५५, ५, १५ यह तिथि डाली। श्री राघवन् ने परिचय कराया कि यह भी बहुभाषाध्येत्री है। प्रधान मन्त्री ने कहा– दुहिता पितृचरणानुगामिनी है।

मैं पुस्तकें भेंट करने लगा तो प्रधान मन्त्री बोले– अभी हमने तो सूत्र दिए नहीं और आप पहले ही हमको अपनी पुस्तकें दे रहे हैं। तान्त्रिक बीज में से शम् की कविता पढ़ कर सुनाई। बहुत प्रसन्न हुए। अहिंसा को बारंबार पन्ने उलटा कर इधर उधर से देखते रहे। मैंने कहा इसका प्रथम संस्करण तीन मास में समाप्त हो गया। कहने लगे सो आपको चीनी कविता प्रिय है। पण्डित नेहरू ने भी अपने जीवनचरित में चीनी कविता का प्रेम दर्शाया है। भारतवर्ष और चीन में साहित्य और कला का आदान-प्रदान होना चाहिए।

मैंने उनके उदात्त भाव, सौजन्य और कृपालुता का धन्यवाद किया। प्रधान मन्त्री ने उत्तर दिया हम आपको सन्तुष्ट करने का पूर्ण यत्न करेंगे। सब उपस्थित सज्जन आपके लिए प्रयत्नशील होंगे। भारत और चीन साथी हैं और साथी रहेंगे।

पूरे बारह बज गए। और हमने श्री प्रधान मन्त्री से अनुज्ञा ली। आज का दिन हमारे कार्य के प्रारम्भ का दिन है। भारत और चीन के प्राचीन सम्बन्धों और गौरव का दिवस है। उनके पुनरुज्जीवन का नया प्रारम्भ है। यह तो निश्चित है कि इससे भारत में उल्लास की लहरें फैलेंगी। भारतीयों में आत्म-सम्मान जागृत होगा।

हम जहां भी जाते हैं भाचित्रक वहां पहले ही पहुंचा होता है। किन्तु आज प्रातः हमको सन्देह था कि वह प्रधान मन्त्री के निवासस्थान पर भी पहुंच पाएगा अथवा नहीं। क्योंकि जब हमको ही निमन्त्रण नौ बजे मिला तो उसको सूचना मिल गई होगी यह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संदिग्ध था । हमको तो आशा थी कि उसको सूचना देना भी सम्भवतः किसी के ध्यान में न आया होगा। किन्तु हमारा सन्देह प्रधान मन्त्री के घर पहुंचते ही दूर हो गया। भाचित्रक श्रद्धाबद्धाञ्जलि हनुमान् के समान एक कोणे में खड़ा हुआ था ।

श्री चोउ-अन्-लाइ जब दिल्ली में आए थे उस की अपेक्षा अब कुछ दुबले प्रतीत हुए ।

१६-५-५५

यह दिन पेइ-चिङ के प्रसिद्ध ग्रीष्म-प्रासाद में व्यतीत किया। यहां से ही डेढ़ बजे नागपुर में लोकेश को दूरभाष किया । किन्तु सात कला तक निरन्तर यत्न करने पर भी लगातार वार्तालाप न हो सका। ध्वनि ठीक प्रकार सुनाई नहीं पड़ी।

ग्रीष्म-प्रासाद पेइ-चिङ के मुख्य द्रष्टव्य स्थानों में से है। बुद्ध-परिमल-स्तम्भ नामक चार भूमि ऊंचा मन्दिर है। पहले इसमें नौ भूमियां थीं।

ग्रीष्म-प्रासाद का साम्यवादी शासन ने जीर्णोद्धार किया है। बुद्ध की प्रभास्वर मूर्तियां, जो हेमवर्ण से चमक दमक रही हैं, यहां का विशेष आकर्षण हैं। पक्षि-कूजन सुनने के लिए विशेष भवन बना है। मन्दिरों को छोड़ कर अन्य स्थानों पर पक्षी देखने में नहीं आते। ऐसा प्रतीत होता है कि जनता मार कर खा जाती है। इस देश में मांस-भक्षण की पराकाष्ठा है। जहां मनुष्य बसता है वहां कोई पशु पक्षी कैसे बस सकता है। केवल गधे, घोड़े, खच्चर, भेड़, बकरी, बैल, गाय तथा कहीं कहीं ऊंट मनुष्य की सेवा करते हुए दिखाई पड़ते हैं। इनका जीवन भी मनुष्य के सेवाकाल तक सीमित है।

ग्रीष्म-प्रासाद का रंगमण्डप त्रिभूमि है। नाटक मध्यभूमि में होता था। पाताल-लोक के दृश्य अधोभूमि में और स्वर्गलोक के उपरि-भूमि में होते थे। पाताल और स्वर्ग के निवासी नीचे और ऊपर की भूमि से मध्यभूमि में आया करते थे।

तुन्-ह्वाङ की आठ सहस्र वलिता-पुस्तकों (rolls) को देखने के लिए आज फिर पेइ-चिङ पुस्तकालय में गए। ये ग्रन्थ अधिकांश थाङ 唐 काल के हैं। इनमें बहुसंख्या बौद्ध सूत्रों की है। इनकी छः भागों में सूची छप चुकी है। इस सूची को प्राप्त करने के लिए हमको दो मास से अधिक निरन्तर प्रयत्न करना पड़ा। अन्त में शाङ-हाइ में जाकर एक व्यक्ति से ३२ रुपये में मिली। इसका वास्तविक मूल्य २, ३ रुपये से अधिक नहीं है।

तुन्-ह्वाङ के अतिरिक्त आज शी-श्या भाषा के भी २० ग्रन्थों का अवलोकन किया। चीन में जीवित व्यक्तियों में से अब केवल श्री वाङ-चिङ-लू हैं जिन्हें शी-श्या के सम्बन्ध में कुछ जानकारी है।

इस सम्बन्ध में एक दो पुस्तकें भी चीन से १९३५ में प्रकाशित हुई थीं। ये पुस्तकें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब चीन में अप्राप्य हैं।

शी-श्या भाषा संसार से लुप्त हो चुकी हैं। इसका समस्त साहित्य बौद्ध था। भारत और चीन के सांस्कृतिक सम्बन्धों में शी-श्या भी एक सुवर्ण-शृंखला है।

शी-श्या ताङ्गुत् जाति की भाषा थी। १२ वीं, १३ वीं, १४ वीं शताब्दी में चीन के पश्चिमी भाग में ताङ्गुत् जाति का साम्राज्य रहा है। तभी शी-श्या साहित्य का सर्जन हुआ।

फू-तू स्स प्राचीन मन्दिर है। इसका वैभव समाप्त-प्राय है। यहां अब केवल चार लामा शेष हैं। इनमें से श्री थ्येन्-साङ ने हमारा स्वागत किया। पेइ-चिङ में यही एक मन्दिर है जहां मोंगोल कन्जूर पढ़ा जाता है। चन्दन का बना हुआ सुमेरु नागफण के समान प्रतीत होता है। मक्खन तथा आटे के लाल स्तूपों के सामने दीप जलते रहते हैं। अष्टकोण परिक्रामी पुस्तकालय बहुत बड़े परिमाण का है। एक साथ सौ घण्टे बजाने के लिए लकड़ी का विशेष चौखटा है।

यह मन्दिर केवल बौद्ध मन्दिर ही नहीं किन्तु **महाकाल-मन्दिर** भी है। चीनी में भी इसका एक नाम महाकाल-म्याओ है। मुख्य मूर्तियां पांच हैं। ये रुद्रस्वरूप और नितान्त कृष्णवर्ण हैं। कृष्णवर्ण काक, कुत्ते और व्याघ्रों की संख्या बारह है। मूर्तियों के दाएं बाएं दो कृष्णवर्ण भयानक व्यक्ति खड़े हैं। मूर्तियां सभी काष्ठ की बनी हुई हैं।

हमारा परिचय दो प्रसिद्ध महाकाल-मन्दिरों से हुआ है— एक भारतीय साहित्य में कालिदास-वर्णित उज्जयिनी-स्थित मन्दिर से और दूसरा इस पेइ-चिङ मन्दिर से। यह भारत और चीन का सांस्कृतिक सखित्व है।

मन्दिर के सामने दो ध्वजा-स्तम्भ हैं। मन्दिर के सामने का भवन सहकारि-भवन के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। कुछ वर्ष पूर्व यह मन्दिर का भाग था।

बहुत दिनों से यत्न था कि मैं और सुदर्शना चीनी परिवारों में जाएं। सो आज प्रबन्ध किया गया कि हम चीनी संस्कृति के उपमन्त्री माननीय श्री चन्-चङ-तो के घर चलें और चाए पिएं। श्री चन् अच्छी अंग्रेज़ी बोलते हैं किन्तु इनकी पत्नी और बच्चे केवल चीनी ही जानते हैं। इनका निवासस्थान पुराना घर है जो इनकी अपनी सम्पत्ति है। इनके पास ५, ६ कोष्ठ हैं। बीच में छोटी फूलों की वाटिका है।

२०-५-५५

चीन में संस्कृत का अध्यापन बन्द है। जब हिन्दी का पर्याप्त अध्यापन हो चुकेगा तब संस्कृत प्रारम्भ करेंगे। संस्कृत के अध्यापक भारत-चीन-सम्बन्धों पर अनुसन्धान कर रहे हैं। आजकल उनके अनुसन्धान का विषय है— चीन की कौन कौन सी जातियां भारतवर्ष में गईं। यह अनुसन्धान राजनैतिक है।

मोंगोल बुद्ध-भक्त हैं। इनके साहित्य में संस्कृत के सैंकड़ों शब्दों का प्रयोग होता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। इनके विहारों, मन्दिरों में अभी तक नैयायिक वाद-विवाद चलते हैं। मोंगोल देश में हम क्या कुछ देखना चाहते हैं इसकी हमने बहुत लम्बी सूची बनाई थी। वह सूची कटते कटते सर्वथा कट गई और अन्तिम निश्चय हुआ कि हम मोंगोल देश की राजधानी होहे-हॉता चलें। यही एक स्थान है जहां सब प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध हैं। विदेशी मित्रों के निवास के लिए बड़ा सुन्दर नया विश्रान्तिगृह अभी पूरा हुआ है।

पेइ-चिङ में २२ दिन रहने के पश्चात् जब शासन के साथ समस्त उपहारों का निश्चय हो चुका और द्रष्टव्य स्थान तथा वस्तुएं देख चुके तथा जब अगले ५० दिन का चीन-यात्रा का क्रम बन चुका तब बीस को प्रातः आठ बजे मोंगोल की यात्रा आरम्भ की। समाचारपत्रों से पहले ही सूचना मिल गई थी कि साइबेरिया से शीत की लहर मोंगोल देश में फैल रही है। भारतीय दूतावास के सज्जन मित्रों ने ऊनी वस्त्र दिए।

हमारे साथ तीन व्यक्ति थे। एक तो अनिवार्य द्विभाषिक, दूसरे प्राध्यापक ची और तीसरे केन्द्र-प्रान्त-सम्पर्काधिकारी श्री छाङ-मिङ-तान्। आज से २६ जुलाई तक जब भी हम पेइ-चिङ से बाहर गए श्री छाङ हमारे साथ गए। इनका कार्य हमको प्रान्तीय अधिकारियों से मिलाना था।

प्राध्यापक ची संस्कृतज्ञ हैं। आप विद्या-विभाग के चीनी भाषा और साहित्य के नव-निर्माण के अध्यक्ष हैं। प्राच्य भाषाओं के विद्यालय के भी आप अध्यक्ष हैं। जर्मन विद्वान् त्सीक् (Zieg) के विद्यार्थी हैं। तुषार भाषा का अध्ययन करते रहे हैं। आजकल आप एक लेख लिख रहे हैं कि बुद्ध, श्रमण, सुमेरु, श्रमणेर, गंगा, मैत्रेय आदि शब्द चीनी में तुषार भाषा द्वारा आए हैं।

आप का श्रमिक-संघ से विशेष सम्बन्ध है। आपने बतलाया कि यह श्रमिक-संघ अनेक कार्य करता है—

(१) अपने सदस्यों की आर्थिक सहायता, उधार के रूप में अथवा दान के रूप में।
(२) राजनैतिक शिक्षा। बिना साम्यवाद की शिक्षा के व्यक्ति ठीक काम नहीं कर सकते।
(३) आदर्श श्रमिकों को समुद्र तथा पहाड़ों पर विश्राम और आमोदप्रमोद के लिए ले जाता है। (चिङ-ताओ जो पहले जर्मनी का उपनिवेश था और जिसको पूर्व का स्विट्ज़रलैण्ड मानते हैं वह अब श्रमिकों का स्वास्थ्याश्रम है)।
(४) शासन, अधिकारियों के वेतन में से दो प्रतिशत अंश, श्रमिक-संघ को देता है।
(५) चीन में केवल एक श्रमिक-संघ है। दूसरा श्रमिक-संघ बनना सम्भव नहीं।
(६) इसका काम मार्क्सवाद पढ़ाना और फैलाना है।
(७) विश्वविद्यालय में भी श्रमिक-संघ-गोष्ठी है। इसके पास सुन्दरतम कोष्ठ और उपस्कर (furniture) हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(८) श्रमिक-संघों में किसान सम्मिलित नहीं हो सकते।
आज चीनी समाज के तीन अंग माने जाते हैं— श्रमिक, सैनिक तथा किसान।

* * *

हमारी गाड़ी पेइ-चिङ से प्रातः ठीक आठ बजे चल पड़ी। मार्ग में कोई विशेष उल्लेखनीय घटना नहीं हुई। वे ही पुराने गधे और खच्चर, कहीं खेत और कहीं पहाड़ियां, साथ चलती रहीं। स्थात्रों में से दो प्रसिद्ध स्थात्र मार्ग में आए। पहला ता-तुङ और दूसरा काल्-गान्।

पेइ-चिङ से ता-तुङ 大同 तक १२ घण्टे की यात्रा रही। इन बारह घण्टों के लिए प्रत्येक व्यक्ति ने चाय के निमित्त २० शतिक (cent) दिए। बारंबार सेवक उष्ण जल दे जाता था। कितनी बार सो कोई गणना नहीं।

मार्ग में चीन की प्रसिद्ध महाभित्ति पार करने के पश्चात् चीन के प्रसिद्ध संयान-अभियन्ता श्री छाङ-त्येन्-योउ के दर्शन हुए। इन्होंने पहाड़ी संयानों के मार्ग बनाने में क्रान्तिकारी विचार दिया है। इनकी सहायिका इनकी लड़की है। संयान लगातार पहाड़ी पर गोल घूमता हुआ चढ़ता ही जाए यह सब पहाड़ियों पर सम्भव नहीं। गोल मार्ग के स्थान पर इन्होंने वक्रावक्र (zigzag) मार्ग की कल्पना तथा निर्मिति की है। पहले मार्ग एक पहाड़ी के शिखर तक पहुंचता है। फिर कुछ नीचे उतर कर दूसरी पहाड़ी के शिखर तक जाता है।

ता-तुङ के पश्चात् हमारा डिब्बा रिक्त हो गया। हमारे बिस्तरे बहुत चौड़े और लम्बे बिछा दिए गए। यद्यपि गाड़ी के अन्दर विशेष शीत न था किन्तु बाहर शीत शून्य से भी नीचे था। शीत को रोकने के लिए खिड़कियों में दो दो कांच लगे हुए थे। इनके बीच में दो अंगुल वायु का स्तर ठण्ड को आगे न बढ़ने देता था।

इस गाड़ी में एक डिब्बा बच्चों वाली स्त्रियों के लिए था। बच्चे चुपचाप थे। यह आश्चर्य की बात थी। रोने, चिल्लाने, मांगने आदि की कोई ध्वनि न थी। किन्तु विशेष प्रकार की दुर्गन्ध थी। भोजन-कोष्ठ की ओर जाते हुए चार बार इस कोष्ठ में से निकलना पड़ा। यद्यपि भोजन-कोष्ठ में हमारा पटल अलग था तथापि मत्स्य-मांस की गन्ध की लपटें चारों ओर नाक को घेरे हुए थीं। ऐसा अनुभव होता था कि जो भोजन हम कर रहे हैं उसकी यह गन्ध है। यथाकथंचित् रोटी के दो टुकड़े निगल कर इस गन्ध से छुटकारा पाने के लिए हम अपने कोष्ठ में आए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२१-५-'५५

प्रातः ५ बजे गाड़ी **होहे-हॉंता** में पहुंची। यह नगर मोंगोल देश की राजधानी है। जनसंख्या है १ लाख ६० सहस्र। नगर के दो भाग हैं नया और पुराना। नए बने हुए विशाल विश्रान्तिगृह में हमको ठहराया गया। साढ़े पांच बजे धूप निकल आई किन्तु शीत शून्य से नीचे था। सब वस्त्र पहनने के पश्चात् भी हाथों और पाओं को शीत लगता ही रहा। पौने सात बजे ऐसा प्रतीत होने लगा कि जैसे दस बज रहे हों। सूर्य आकाश में पर्याप्त ऊंचा उठ चुका था।

स्थात्र पर उतरते ही चारों ओर धूममार्ग (chimney) दिखाई पड़ने लगे। हमने समझा कि ये बड़ा भारी उद्योग-केन्द्र है। किन्तु पूछने पर पता चला कि ये धूममार्ग निर्माणियों के नहीं किन्तु बड़े भवनों के हैं। शीत के आधिक्य के कारण सब बड़े बड़े भवनों में बहुत सा कोयला जलाना पड़ता है और कोयले का धुआं नगर में न फैले इसलिए धूममार्ग इतने ऊंचे बनाए गए हैं।

चुङ ने आकर बतलाया कि प्रातराश आठ बजे होगा। यह सुनकर हम विश्रान्तिगृह से बाहर निकले और नगर की पुरानी भित्ति की ओर चल पड़े। यहां पर ही प्रथमवार द्विककुद् ऊंटों की पंक्तियां दिखाई पड़ीं। अब शीतकाल का अन्त था इसलिए शरीर पर से लम्बी ऊन वाली त्वचा अलग होकर नीचे गिरती जा रही थी। ऊन से रहित त्वचा का भाग देखने में बहुत भद्दा लगता था। ऊंट की ऊन बहुत उष्ण, कोमल और महंगी होती है।

सवा घण्टा भ्रमण करने के पश्चात् पूरे आठ बजे लौटे। भोजन-कोष्ठ में हमारे अतिरिक्त केवल तीन और व्यक्ति थे। दो चीनी और एक पाश्चात्य। हमारे लिए अलग पर्याप्त दूर पटल बिछाया गया, जिससे हम तक मत्स्य-मांस की गन्ध न पहुंच सके। अब तक हमारे मित्रों को पता लग चुका था कि मांस का दृष्टिगोचर होना ही हमारी मनोग्लानि का कारण बन जाता है।

होहे-हॉंता में मोंगोल प्रायः घोड़ी का दूध पीते हैं। घोड़ी के थन बालों से भरे होते हैं। अतः दूध में छोटे छोटे बाल मिल जाते हैं। कहते हैं कि घोड़ी का दूध पीने से पहली बार गला पक जाता है। स्वाद भी बड़ा विचित्र होता है। तात्पर्य यह कि हमारे मित्रों ने घोड़ी और ऊंटनी के दूध की इतनी निन्दा की कि हम इस घोड़े और ऊंटों के देश में आकर भी इनके दूध से पराङमुख हो गए। और हमने केवल गाय के दूध की मांग की। यहां गाय का दूध बहुत स्वादु मिला। मलाई की पपड़ियां भी खाने को मिलीं।

होहे-हॉंता का अर्थ है नील-नगरी। सो नगर से बाहर निकल कर सड़कों के दाएं बाएं घास के नीले फूल नील-नगरी नाम के समर्थक प्रतीत हुए किन्तु वास्तव में नील-नगरी का अभिप्राय हरी भरी नगरी से है, इन फूलों से नहीं।

यद्यपि यह मोंगोल नगरी है तथापि यहां चीनी जनता बहुत पर्याप्त मात्रा में है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

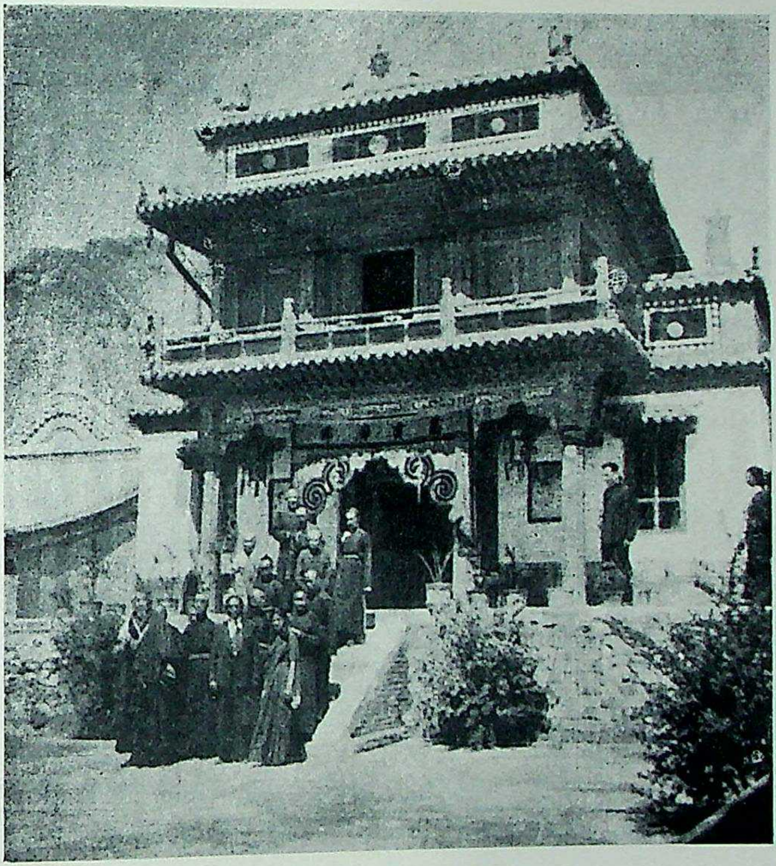

आभ्यन्तर मोंगोल देश की राजधानी होहे-हॉता (नीलनगरी) के समीप धर्मनन्दी विहार। इसका चीनी नाम फ़ा-शी स्स है। यह मन्दिर भोट साहित्य के मुद्रण का विशाल केन्द्र रहा है। मन्दिर का शिखर काशी के समीपवर्ती मृगदाव के दृश्य से सुशोभित है।

Prof. Raghu Vira and his daughter with the monks at the lamasery at Hohehot (Inner Mongolia) where the *opera omnia* (*gsuṅ-ḥbum*) of Sum-pa mkhan-po Ye-śes-dpal-ḥbyor (*ज्ञानश्रीभूति) were printed.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धर्मनन्दी विहार में ५,००० से ऊपर मुद्रण-काष्ठफलक हैं, जिनसे भूगोल, मोंगोल इतिहास, पञ्चांग, आयुर्वेद आदि की पुस्तकों का प्रकाशन होता है।

The printery of the Hohehot lamasery which has over five thousand xylographic plates for various texts including the collected works of Sum-pa mkhan-po Ye-śes-dpal-ḥbyor.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चारों ओर चीनी भाषा का प्रयोग होता है। पाठशालाओं में केवल मोंगोल बच्चे ही मोंगोल पढ़ते हैं और ये भी १०, ११ वर्ष की आयु में चीनी पढ़ने लगते हैं।

होहे-हॉंता में दो तीन मोंगोल मन्दिर हैं। प्रातः साढ़े नौ बजे हम **शी-ली-थू-चाओ** ཤྲི་ཐུ་ཅོ་འཛམ་དགྲུངས་ में गए। मुख्य लामा श्री साम्थान् གསམ་གཏན་ हैं। हमने इनको चन्दन की मृग-मूर्ति दी। मूर्ति को लामा ने हृदय से लगाया और मन्दिर की छत के ऊपर बने हुए धर्मचक्र तथा उसके दाएं बाएं खड़े हुए दो मृगों की ओर संकेत किया। मोंगोल मन्दिरों के ऊपर सर्वत्र ही धर्मचक्र और दो मृग मिलेंगे। ये बुद्ध के प्रथम धर्म-प्रवर्तन के प्रतीक हैं। श्री साम्थान् ने भी हमको चित्र उपहार में दिए। बन्द और खुलने वाले लकड़ी के चौखटे में लगे हुए २५ चित्र थे। वर्षों तक इनके सामने धूप जली है और धूप के धूम से ये काले हो चुके हैं। चित्रों का चित्रत्व आधा लोप हो चुका है किन्तु जो भक्ति का धुआं इनमें प्रवेश हुआ है वह अमूल्य है।

विहार विशाल और वैभवपूर्ण है। लकड़ी के स्तम्भों पर आरोही नाग वाले ऊन के कम्बल लगाए हुए हैं। यहां भोट का सम्पूर्ण रक्त-वर्ण कञ्जूर और तञ्जूर है। लामाओं की संख्या बीस है। इनमें से एक लामा सुन्दर चित्रकार है। उसने अपना बनाया हुआ शाक्यमुनि का चित्र उपहार में दिया।

इस विहार में यद्यपि सभी लामा मोंगोल हैं किन्तु पठन पाठन प्रायः भोट कञ्जूर का करते हैं। प्रतिवर्ष समस्त कञ्जूर का पारायण कर लेते हैं। तञ्जूर के तो यत्र तत्र क्वचिद् अंश ही पढ़ते हैं।

होहे-हॉंता में हमने प्राथमिक पाठशाला, माध्यमिक शालाएं, अध्यापक-शिक्षणालय और शिशु-शालाएं देखीं। शिशु-शाला में केवल अधिकारियों के बच्चे थे। यहां विशाल चिकित्सालय है। अधिकारियों और साम्यवाद-पक्ष के सदस्यों को छोड़ कर अन्यों से शुल्क लिया जाता है।

रात्रि को हमारे स्वागत में सबसे बड़े रंग-मण्डप में गान और नृत्य हुए। पचास से ऊपर अभिनेता और अभिनेत्रियां थीं। जनता से भवन भरा हुआ था। गान और नृत्य की समाप्ति पर हमने अभिनेता अभिनेत्रियों से हाथ मिलाया। भारत और चीन की मैत्री के घोषनादों से भवन गूंज उठा।

२२-५-५५

होहे-हॉंता से एक घण्टा धूल उड़ाते हुए हमारी गाड़ियां **फ़ा-शी स्स** पहुंचीं। यह चीनी नाम है। इसका अलग मोंगोल नाम भी है। चीनी नाम का अर्थ है धर्मनन्दी-विहार। यहां तीस लामा निवास करते हैं। भोट कञ्जूर तञ्जूर के पेइ-चिङ और नार्थाङ संस्करण पूर्ण हैं। इनके अतिरिक्त यहां ५,००० से ऊपर मुद्रण-काष्ठ-फलक हैं, जिनसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूगोल, मोंगोल इतिहास, पञ्चांग, आयुर्वेद आदि पुस्तकों का प्रकाशन होता है।

मोंगोल लामा शाकाहारी नहीं होते। शाकाहार केवल चीनी भिक्षुओं में प्रचलित है। मोंगोल का यहां केवल कञ्जूर है।

लामा कञ्जूर का पाठ करते हैं। कञ्जूर के भी केवल कुछ अंशों का। भैषज्यगुरु 藥師 का विशेष मान है। इससे उतर कर हृदय-पारमिता का। अवतंसक-सूत्र का भी पाठ चलता रहता है।

जीवित बुद्ध के उपदेश के लिए अलग भवन बना हुआ है। इस भवन में चारों ओर चीनी सूत्रों के उद्धरण हैं। चलते समय इन्होंने हमको चोङ-ख-प ཙོང་ཁ་པ་ की पीतल की मूर्ति, महाकाल का पत्र पर चित्र तथा एक सूत्र-पुस्तिका उपहार में दी।

आज मध्याह्न चार बजे आठ लामाओं का प्रतिपदा-पाठ सुना। पाठ प्रायः स्मरण था। कभी कभी पुस्तक से भी पढ़ते थे। पुस्तक का नाम— आर्य-तथागत * सितातपत्रे अपराजित-महाप्रत्यंग * पारमी-सिद्ध नाम धारणी।

हम भी लामाओं के साथ बैठ गए और पढ़ने लगे—

वज्रपाणि फट्।
ओम् अनले अनले। खसमे खसमे।
वैरे वैरे। सौमे सौमे। शान्ते शान्ते।
दान्ते दान्ते। विषदे विषदे। वीरे वीरे।
देवि वज्रधारि। बन्धबन्धनि।
वज्रपाणि हूं फट्। ओं हुं हुं द्रूं * फट् स्वाहा। हुं द्रूं बन्ध फट्।
हूं द्रूं बन्ध फट् स्वाहा॥

यहां से एक और मन्दिर में गए जिसका चीनी नाम **ता-चाओ-वू-ल्याङ् स्स** है और भोट नाम དཔག་མེད་གླིང་ है। यहां हमको बोधिसत्त्वचर्यावतार उपहार में मिला। हमसे कहा गया कि हम पहले भारतीय हैं जो वर्तमान मोंगोल देश में आए हैं। एक एक व्यक्ति का प्रेम, चाहे वह बौद्ध हो चाहे साम्यवादी, उमड़ा नहीं समाता था।

यह घास-भूमि है। यहां बड़े वृक्ष अथवा कांटे वाली झाड़ियां बहुत थोड़ी हैं। गाय और बैल बिना ककुद् के हैं। घोड़े और ऊंट छोटे छोटे हैं। घोड़े, गधे और खच्चर के रूप में थोड़ा ही अन्तर है। यहां के स्मारक उद्यान में एक नया प्राणी भी देखा। इसका नाम है स्स-पू-श-थाङ। स्स का अर्थ चार, पू-श का अर्थ नास्ति, थाङ का अर्थ समान। अर्थात् चारों के समान नहीं है। चारों से अभिप्राय गाय, गधा, भेड़ और हरिण से है। परिमाण में यह हरिण जैसा है। भेड़ जैसे इसके सींग हैं। मुख की आकृति कुछ गाय और गधे से मिलती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धर्मनन्दी विहार में महाकाल की मूर्ति के सम्मुख रखी पूजा सामग्री का निरीक्षण करते हुए विहार के अध्यक्ष एवं आचार्य रघुवीर।

Prof. Raghu Vira and his daughter accompanied by the Abbot viewing the altar at a Hohehot lamasery where offerings are laid out before Mahākāla.

होहेहॉता-स्थित शील-थू-चाओ विहार में आठ लामा 'आर्य-तथागत-सितातपत्रे-अपराजित-महाप्रत्यंगिरा-पारमी-सिद्ध नाम धारणी' से प्रतिपदा-पाठ कर रहे हैं।

Prof. Raghu Vira noting down the Sanskrit recitation at a Hohehot lamasery.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

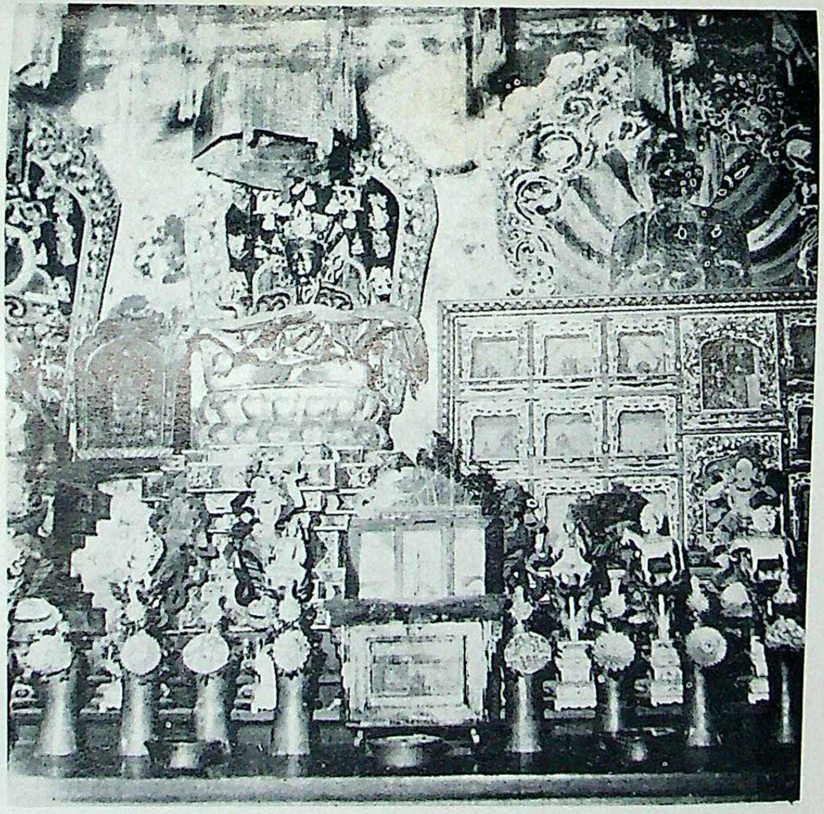

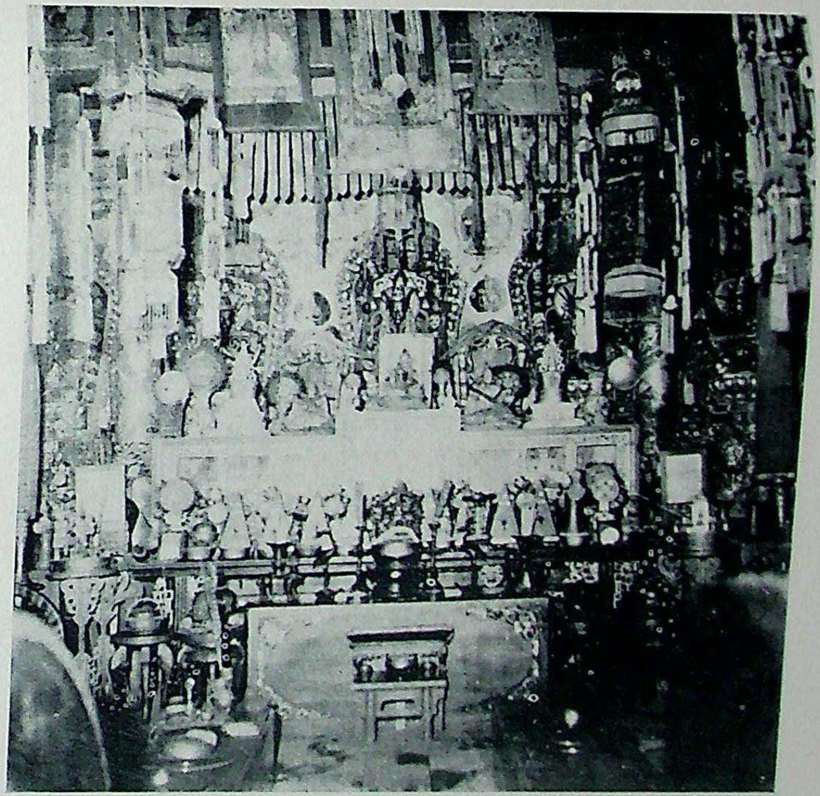

होहेहॉता के अमिताभ-महाविहार ता-चाओ-वू-ल्याङ स्स के मुख्य भवन में प्रवेश करते ही श्रद्धालु इन भव्य दृश्यों को देखकर आश्चर्यचकित मुग्ध रह जाता है।

The central altar of the Dpag-med-gliṅ monastery at Hohehot.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुतात्म-स्मारक-स्तम्भ पर राष्ट्रपति माओ के हस्तलेख में एक ओर चीनी अक्षरों में और दूसरी ओर मोंगोल अक्षरों में लिखा था— हुतात्म अमर होते हैं।

विहारों में घूमते हुए हमको कहीं भी नई मूर्तियां नहीं मिलीं। कुछ वर्षों से नई मूर्तियों का बनाना बन्द हो गया है। पहले विहारों में नई मूर्तियां बनाई जाती थीं। पीतल, ताम्बा, चांदी, सोना आदि के ढालने का प्रबन्ध तथा तन्निष्णात कर्मकार विहारों में हुआ करते थे। अब केवल एक एक दो दो चित्रकार रह गए हैं।

छोटी छोटी, "चतुर्थी की चन्द्रकला" के सदृश आंखों वाली जनता हमको चारों ओर घेरे खड़ी है। मार्ग निर्बाध करने के लिए आरक्षी (police) आए हैं। अनेक स्थानों पर हमारे लिए सड़क के दोनों ओर आरक्षियों का प्रबन्ध है।

मोंगोल भाषा का चीनी भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं। हमारे समान इसमें भी प्रत्येक शब्द अनेकाक्षरी होता है। मोंगोल का व्याकरण संस्कृत के समान रूपों से भरा हुआ है। अनेक कृत् और तद्धित प्रत्यय हैं। चीनी के समान अर्थों का स्वरों से सम्बन्ध नहीं। पाठकों के मनोरञ्जन के लिए दो, चार मोंगोल शब्द तथा वाक्य देते हैं—

स्यॅन् प्यॅना ... ... आप अच्छे हैं
पी स्यॅना ... ... मैं अच्छा हूं
शिन्-ह्वा-यह-चिकलि ... नव-चीन-राजमार्ग (यह नई बनी सड़क का नाम है)
होहे-हॉता चॉछिलाहॉ काचिर् ... नील-नगरी-विश्रान्तिगृह-स्थान (यह विदेशी मित्रों के ठहरने का स्थान है)
पाका-सॉर्कार्कॉलि ... ... छोटी पाठशाला
पक्षिन्-अंहिन्-सॉर्कार्कॉलि ... अध्यापक-आदर्श-पाठशाला
अम्छिन्-हॉरियन्ना ... ... औषध-स्थान अर्थात् चिकित्सालय
आरतॉन्-छिछिलक् ... ... जनता-वाटिका
कारा-हॉता ... ... मृत-नगरी

कारा-हॉता पुराना नगर है, जहां से शी-श्या भाषा के अनेक बौद्ध सूत्र मिले हैं। एक शीश्या-कोष भी उपलब्ध हुआ है।

२३-५-'५५

आज प्रातः **ता-तुङ्** 大同 पहुंचे। यह शान्-सी प्रान्त की राजधानी है। ता-तुङ का प्राचीन नाम फिङ-छङ 平城 था। फिङ-छङ उत्तर वेइ 北魏 की पुरानी राजधानी रह चुका है। यहां भी हम विदेशी मित्रों के लिए विशेष रूप से निर्मित विश्रान्तिगृह में ठहराए गए। प्रान्तीय शासन के अधिकारियों ने हमारा आतिथ्य किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विश्व-विख्यात **युन्-काङ्** 雲岡 गुहाओं के दर्शनार्थ बिना विलम्ब किए हुए, अर्थात् ता-तुङ पहुंचते ही, हम लोग बड़ी गाड़ी में बैठ कर चल दिए।

युन्-काङ का वर्णन दो चार पृष्ठों में करना असम्भव है।

युन्-काङ ता-तुङ से पश्चिम की ओर ३० ली दूरी पर है। वू-चाओ 武周川 नदी के साथ साथ भित्ति के समान ६० हाथ ऊंचा पर्वत-कूट है, जो रेतीले पत्थर का बना है। पत्थर के स्तर क्षैतिज हैं। इस कारण इसमें खुदाई करना बहुत सरल है। वू-चाओ नदी बहुत छोटी है। इसके पाट में लोग खेती करते हैं।

हमको युन्-काङ की गुहाओं के निर्माण की तिथियों का पता है। अनेक मूर्तियां निश्चित रूप से मौलिक हैं। उन पर कभी जीर्णोद्धारकों के हाथ नहीं लगे और वे इतनी अच्छी दशा में हैं कि स्वयं अपनी कहानी बता सकती हैं।

इन गुहाओं के बनाने वाले कौन थे। ऐसी कौनसी क्रान्तिकारी घटनाएं थीं जो बुद्धधर्म को चीन की उत्तर-पश्चिम सीमाओं तक बहा कर ले गईं। केवल अनुभवी इतिहास-अनुसन्धाता ही इन मूर्तियों की कहानी को सुन सकता है और सैंकड़ों कोसों घूमते हुए अशिक्षित घुड़सवारों तथा यायावर जातियों और विशाल मरुप्रदेश में बालूग्रस्त नगरों की कहानी को इस कहानी के साथ मिला सकता है। अभी तक शक, हूण, मोंगोल और तुरुष्क जातियों के सम्पूर्ण इतिहास उपलब्ध नहीं जिनसे यह पता चल सके कि आज से दो सहस्र वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म इनके हृदयों में आरूढ होकर किस प्रकार चीन में पहुंचा और यहां अपना घर बनाया। अभी तक सब से अधिक ऐतिहासिक ग्रन्थ चीनी भाषा में मिले हैं किन्तु चीनी ऐतिहासिकों ने कहां तक अपने पाश्चात्य विजेताओं के सच्चे और सम्पूर्ण विवरण लिखे हैं यह कहना कठिन है।

ली-उङ-बिङ ने अपने चीन के इतिहास में लिखा है कि वेइ वंश में कोई भी कन्या तब तक महाराणी नहीं बन सकती थी जब तक वह बुद्ध की सर्व-सुन्दर मूर्ति न ढाल सके।

जब वेइ वंश का प्रभाव जापान में फैला तब वहां भी धातुमयी मूर्तियों के निर्माण का महत्त्व राजकुलों में फैला। सुइ-को युग में राजकुमार शोतोकु प्रसिद्ध मूर्तिकारों में से थे। तार्तार् जातियों में पीतल की मूर्तियां और आभूषण ढालने की पहले ही से प्रथा विद्यमान थी।

अफगानिस्तान की सीमा पर बामियान् की गुहाओं में तथा युन्-काङ की शैली में पर्याप्त सादृश्य है। बामियान् की गुहाएं कनिष्क के समय की मानी जाती हैं। बामियान् से, तुरुष्क प्रदेशों से होते हुए, भारत की कला चीन तक पहुंची इसमें सब ऐतिहासिकों का ऐकमत्य है।

युन्-काङ माला का मध्यस्थ मणि है। युन्-काङ से कोरिया और कोरिया से जापान। चीनी ऐतिह्य की सूचना है कि थो-पा नाम की तार्तार् जाति ने ४४३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

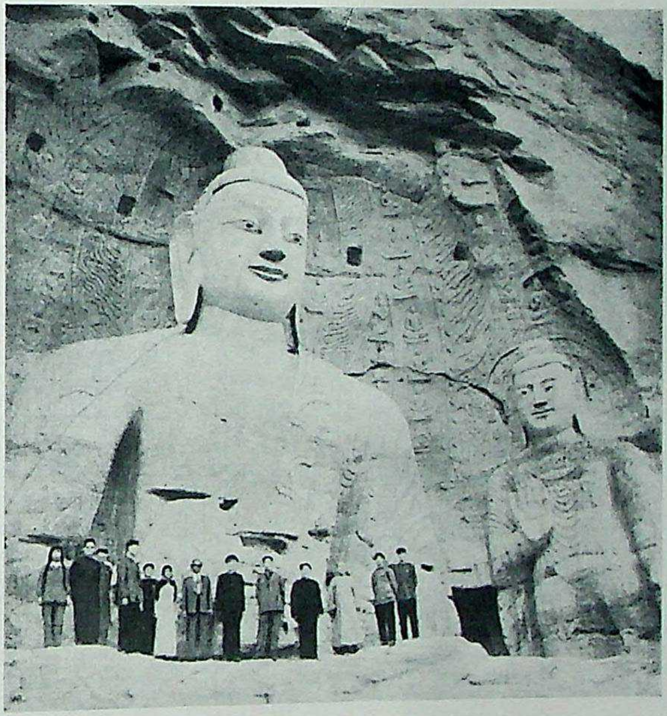

आचार्य रघुवीर और उनके अभियान-सदस्य युन्-काङ के बुद्ध की विराट् प्रतिमा की छत्रछाया में।
Prof. Raghu Vira and the members of his expedition standing near the Great Buddha at Yün-kang.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

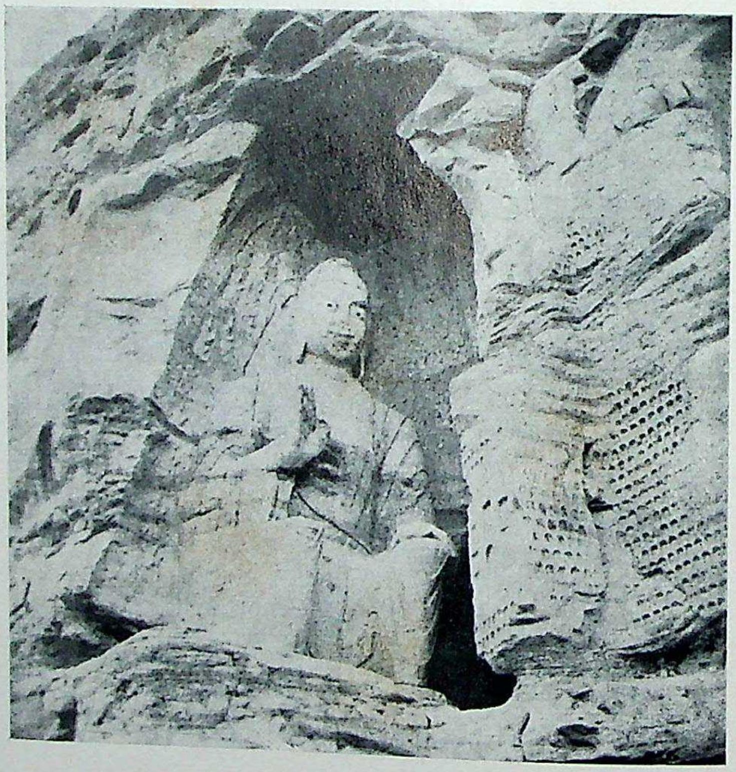

युन्-काङ की गुहाओं में तथागत की विशाल प्रतिमा
Another gigantic image of Lord Buddha at Yün-kang.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विक्रम में बेकाल झील से लेकर उत्तर-पश्चिम सीमा तक चीन पर विजय पाई। उन्होंने वेइ नाम का वंश स्थापित किया और फिङ-छङ को अपनी राजधानी बनाया। फिङ-छङ ल्याओ 遼 वंश की भी पाश्चात्य राजधानी रहा है।

वेइ काल में चीन में सात साम्राज्य थे। जिनमें से छः पर तार्तार् जातियों का राज्य था। इन्हीं दिनों में अत्तिला यूरोप की सेनाओं और राज्यों का ध्वंस कर रहा था। तार्तार् लोग शक्तिशाली और क्रूर थे। उनका आदिकाल से बारंबार चीन पर आक्रमण करने का प्रयोजन और उद्देश्य स्थायी सभ्यता के मीठे फल भोगना था। चीनी विद्वानों, राजसभ्यों, कलाकारों आदि के साहाय्य से उन्होंने चीन में राज्य स्थापित किया।

चीन के इतिहास में प्रथम वार थो-पा सम्राट् श्येन्-वन्-ती ने (५२३ से ५२७ विक्रम तक) बुद्धधर्म को समस्त राज्य का धर्म घोषित किया।

पर्वत स्थायी है। इसको उठा कर ले जाना असम्भव है। सामान्य रूप से इसके किसी बड़े अंश को तोड़ना भी सरल नहीं। इस विचार से सम्राट् वन्-ती ने अपने पूर्वज सम्राट् के बौद्ध मन्दिर और मूर्तियों के संहार को दृष्टि में रखते हुए युन्-काङ का कार्य आरम्भ किया था। मूर्तियों की संख्या असंख्य बनाने का भी यही प्रयोजन था कि विकराल काल की गति में कुछ तो बचेंगी ही।

युन्-काङ की गुहाएं और उनकी मूर्तिकला इस बात की साक्षी हैं कि एक शक्तिशाली धर्म ने एक भावुक और श्रद्धालु जाति के हृदय में गहरी छाप लगाई। यह कला महती जागृति का प्रतीक है। केवल राजकुल ही नहीं किन्तु समस्त राष्ट्र इस कला से अभिभूत हुआ। युन्-काङ उज्ज्वल तथा कम्पायमान ज्वालाओं का सन्देश है जो अति-प्राचीन काल से अपना प्रकाश आठों दिशाओं में फैलाता आ रहा है। ये आध्यात्मिक ज्वालाएं प्रचण्ड और शुद्ध श्वेतवर्ण की हैं। इनकी कीर्ति और गरिमा केवल यहां तक ही सीमित नहीं। यह कला प्रभूत भूमिखण्डों को पार करती हुई, ज्ञान और भक्ति के अजेय बल द्वारा, व्यक्तियों तथा राष्ट्रों को नए प्राणों से अभिषिक्त करती गई। जीवन में सर्जनशीलता आई। प्रगति हुई और राष्ट्रों ने नया रूप धारण किया।

जब हमने अपनी यात्रा प्रारम्भ की तो एकमात्र ध्येय था कि इतिहास के पन्ने जाग उठें। इतिहास जीवित बन जाए और हम उसका अंग होकर उसमें प्रविष्ट हों। हम स्नान करें उस जीवन-गंगा में जो भूत और वर्तमान को मिलाती है। हमारी यही भावना जावा और बाली द्वीप में थी। जो आनन्द और सन्तोष इस गंगा के प्रवाह में डुबकी लगाने का हुआ था उसने चीन की यात्रा के प्रारम्भ को और भी उत्सुकतामय बना दिया था।

युन्-काङ की गुहाओं की कहानी बुद्ध-धर्म के विजय और प्रकर्ष की कहानी है। बुद्ध-धर्म से चीनी क्षितिज की सीमाएं फट गईं। दर्शन के नए सूर्य और प्राणों के नए वातप्रवाह प्रकट हुए। सामान्य मानव जीवन भूमि के स्तर से ऊपर उठा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युन्-काङ में, प्रारम्भ में, मूर्तियां पत्थर में ही खोदी गई थीं। पीछे जाकर जब पत्थर भुरने और टूटने लगा, तरेड़ें और दरार पड़ने लगे, तब गारा लीप कर उद्धार किया गया। गारे की प्रथा तुन्-ह्वाङ की प्रथा है। गारे से जीर्णोद्धार करने में समय और परिश्रम न्यूनतम लगता है। इन सूखे प्रदेशों में गारा सैंकड़ों वर्षों तक स्थायी रहता है।

पूर्व काल में दस बड़ी बड़ी गुहाओं के सामने उनकी रक्षा करने के लिए चार भूमि ऊंचे मन्दिर बने हुए थे। इनमें से अब अधिकांश का कुछ शेष नहीं बचा, केवल पहाड़ी में छिद्र रह गए हैं, जिनमें लकड़ी के स्तम्भ गड़े हुए थे। जो कुछ अब बचा हुआ है उसका शासन उद्धार कर रहा है। एक तल से दूसरे तल पर जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं। यद्यपि इन भवनों के कारण अन्दर की गुहाओं में अन्धेरा छाया हुआ है, तथापि इनका मूल उद्देश्य, रेत और आंधी से रक्षा, अवश्य सफल हुआ है। यह प्रदेश सूखा और रेतीला है। जब आंधी चलती है तो मोटे बालू के कण आंधी के वेग से मूर्तियों को रगड़ते और घिसते हैं।

आज से कुछ वर्ष पहले इन गुहाओं में गाड़ियां, खच्चरें और गधे बांधे जाते थे। कई गुहाएं भूसा भरने के काम में आती थीं। युद्ध के दिनों में यहां सैनिक रहते थे। पास के बने हुए भवन में कभी पाठशाला भी रह चुकी है। किन्तु आज नए शासन के अधीन गुहाओं में केवल जीर्णोद्धार करने वाले श्रमिक तथा पुरावशेष-विभाग के अधिकारी दिखलाई पड़ते हैं।

यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि युन्-काङ में जहां कहीं भी भवनों का चित्रण है वह चीनी शैली का है, यद्यपि मनुष्यों की रूपाकृति सर्वथा एकमात्र चीनी नहीं। जिस समय गौतम नगर-यात्रा के लिए जाते हैं और घर से सदा के लिए पृथक् होते हैं, उस समय का राजप्रासाद एक छोटे से चीनी घर के रूप में बनाया गया है। चार देव बहुत अधिक शक्ति लगा कर गौतम के घोड़े कण्ठक के चारों पांव अपने हाथों पर उठाए हुए हैं। प्रयोजन यह है कि घोड़े की टाप की ध्वनि न हो और पहरे वाले जाग न जाएं। कुछ शताब्दियों पूर्व इस दृश्य का चित्रण सांची स्तूप के पूर्व द्वार पर हुआ था किन्तु उसमें घोड़े पर गौतम नहीं हैं। उस समय तक बुद्ध का चित्रण नहीं किया जाता था। लाहौर के अद्भुतालय में गौतम और घोड़े का चित्र है किन्तु इसमें युन्-काङ वाली शक्ति, प्रगति और जीवन नहीं। जीवन और शक्ति का संचार युन्-काङ की विशेषता है। एक और बड़ी विशेषता है कि यहां आभूषणों का अभाव है। उपासकों के मुख पर श्रद्धा की अगाध भावना अंकित है। ये मूर्तियां पूजा, आत्मसमर्पण और सौमनस्य के अनुपम प्रतिबिम्ब हैं। शान्ति और आध्यात्मिक आनन्द के मिश्रण से कलाकार ने अपने को अमर बना दिया है। उपासक बुद्ध की ओर नतनेत्र हैं। कहीं कहीं थोड़े से स्थान में अतिमात्र संख्या में मूर्तियों का एक दूसरे से सट कर बनाना भी शोभालंकार है। चाहे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वी वंश के अन्तिम राजा याङ ने पिता की पुण्य स्मृति में युन्-काङ गुहाओं की बुद्ध-त्रिमूर्ति का निर्माण कराया।
Emperor Yang of Sui dedicated the Buddha Trinity to the memory of his father Wên towards the end the sixth century or early in the seventh.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

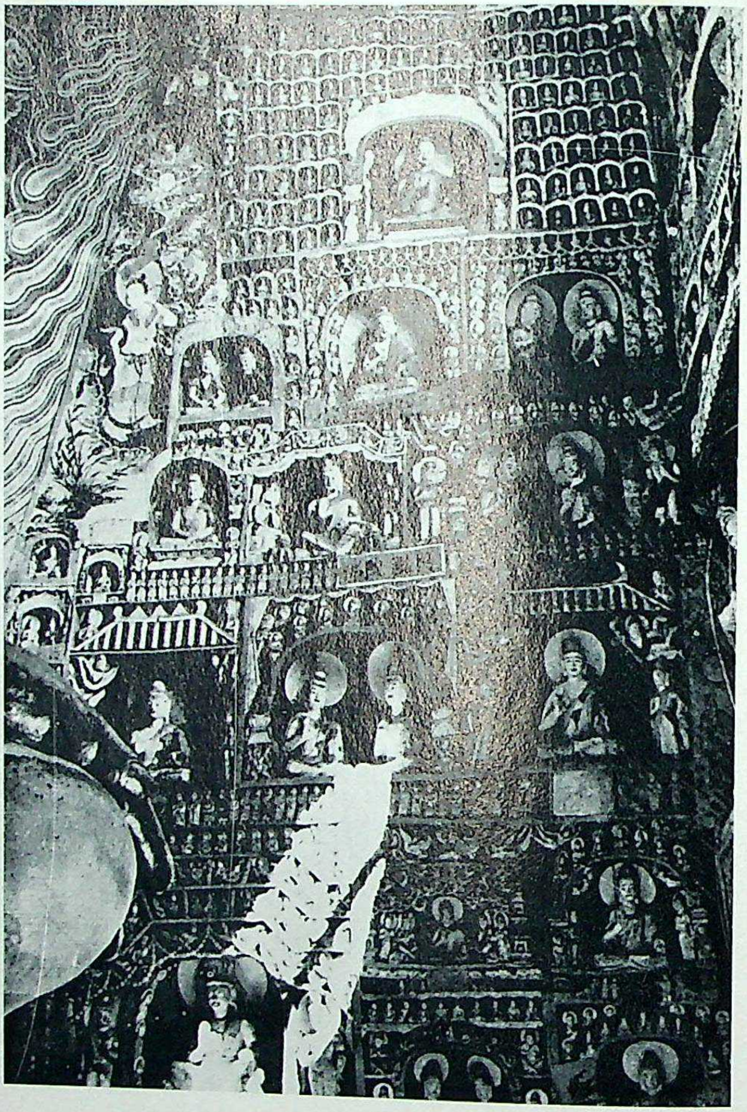

सम्राट् श्येन्-वन्-ती (५२३ से ५२७ विक्रम) ने युन्-काङ गुहाओं का निर्माणकार्य प्रारम्भ किया। युन्-काङ की गुहाओं का समस्त संसार ही पूजा और भक्ति से परिपूर्ण है। सत्य और सौन्दर्य, कला और निष्ठा, समाधि और परिधान, आसन और मुद्राएं सभी एक सूत्र में पिरोए हुए हैं।

The interior of Cave 22 of Yün-kang wherein is the gigantic Buddha Trinity, magnificently carved. To the west of this Buddha, hundreds of caves and niches of various magnitudes are exposed.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपासक हों चाहे बोधिसत्त्व, इनमें जीवन और प्राण हैं। एक ही मूर्ति अनेक बार बनी, अतः वह निःसत्त्व और फीकी पड़ जाए, सो बात नहीं।

चीनी कवि ने सच लिखा है कि शिलाएं भी स्वयं बुद्ध की पदवी तक पहुंच गईं और संसार के जीवन को सुखमय बनाने में सिद्ध हुईं।

प्रायः मूर्तियां नग्नपाद हैं। किन्तु एक दो स्थान पर उपासक चीनी जूते पहिने हुए हैं। ये जूते भारतीय जूतों के सदृश हैं।

अनेक आले जिनमें मूर्तियां बनी हुई हैं कमलदल रूप के हैं। यह प्राचीन भारतीय विहारों का रूप है।

युन्-काङ की गुहाओं का समस्त संसार ही पूजा और भक्ति से परिपूर्ण है। सत्य और सौन्दर्य, कला और निष्ठा, समाधि तथा परिधान, आसन और मुद्राएं, सभी एक सूत्र में पिरोए हुए हैं। श-च्या-फ़ो गुहा में भित्ति के उपरितम भाग में ऊर्ध्वस्थायी बुद्धों के ऊपर पद्मासनस्थ बुद्धों की पंक्ति है। प्रत्येक बुद्ध का अपना अलग आला है। सब की हस्त-मुद्राएं विभिन्न हैं। दो दो बुद्ध-मूर्तियों के बीच में छोटे परिमाण में उत्कीर्ण राजा उपासक के रूप में हस्तबद्ध नमन कर रहे हैं। आलों के बीच के कोनों पर प्रभामण्डल-युक्त उपासकों की नाभितः ऊर्ध्व भाग की मूर्तियां बनी हैं। इन सब के ऊपर आलों के शिखरों को लगभग छूती हुई मुक्तामालाएं हैं जिनको देवताओं ने अपने अञ्जलिबद्ध हाथों में लिया हुआ है। इनके ऊपर गन्धर्व और अप्सराओं के आलों की एक और पंक्ति आरम्भ होती है। इनके हाथ में वीणा, मुरली आदि अनेक वाद्य हैं। एक वीणा तो आधुनिक चीनी पी-पा के सदृश है। चित्रों में मनुष्य घण्टों तक व्यग्र और मग्न रह सकता है। इनमें विभिन्नता और प्राणदायिनी शक्ति इतनी विशिष्ट है कि मनुष्य थक जाए अथवा दो चार मास में सब कुछ जान जाए पहचान जाए सो सम्भव नहीं। आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के लिए जिन विचारों और साधनों को यूरोप में इटली के कलाकारों ने १६वीं १७वीं शताब्दी में आत्मसात् किया था उनका प्रारम्भ युन्-काङ में एक सहस्र वर्ष पूर्व हो चुका था।

ऊंची भित्तियों को सजाने और मूर्तियों से सुशोभित करने के लिए कई समस्याएं उपस्थित हुई होंगी। उनको कलाकारों ने सफलतापूर्वक पूरा किया। नीचे के भाग की जातक-कथाओं से लेकर छत के पास के उच्चतम भागों तक, तथा छत के प्रान्तों और मध्य में उत्कीर्ण मूर्तियों की गहराई और चौड़ाई इस प्रकार से अनुपात में हैं कि नीचे से देखने वाला उपासक पूर्ण आनन्द और पुण्य लाभ कर सके। श-च्या-फ़ो गुहा में ऐसा दिखाई पड़ रहा है कि जैसे सृष्टि की अप्रमेय उर्वरता और प्रचुरता यहां फूट पड़ी है।

फ़ो-लाइ गुहा में जीर्णोद्धार बहुत निम्न स्तर के कलाकारों का किया हुआ है। इनके पास मूल भारतीय मूर्तियां न थीं जिनके सहारे ये उद्धार का कार्य ठीक निभा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सकते। गुहा में घुसते ही पञ्चमुख विष्णु की मूर्ति है जो गरुड पर आरूढ हैं । मूर्ति के चार हाथों में सूर्य और चन्द्रमा, धनुष् और पक्षी बड़े स्पष्ट दृष्टिगोचर हैं । एक बाहु टूट चुका। उसमें निश्चित रूप से बाण रहा होगा। इसी प्रकार की एक पञ्चमुख मूर्ति तुरुष्क देश के खोचो स्थान में भित्ति-चित्रों में मिली है।

भगवान् विष्णु की मूर्ति के सामने ही वृषभारूढ त्रिमूर्ति शिव शोभायमान हैं। तुन्-ह्वाङ से भी ऐसी मूर्ति उपलब्ध हुई है। अवलोकितेश्वर भी तो शिव के ही अवतार हैं। युन्-काङ में यही दो मूर्तियां हैं जिनके अनेक सिर और बाहु हैं। अन्य सब देव और बुद्ध एक-शीर्ष और द्वि-बाहु हैं। उनमें अनेकविध प्रज्ञा तथा अनेकविध आयुधधारिता का चित्रण अनेक शीर्ष तथा बाहुओं द्वारा नहीं किया गया । शिव की मूर्ति के नीचे एक लोकपाल हैं जिनके जटाजूट अथवा उष्णीषधारी सिर पर पंख लगे हैं । यह त्रिशूलधारी शिव और उनके वृषभ का भार सहार रहे हैं।

वू-ता-तुङ पांच बड़ी गुहाओं का नाम है। पहले इनके सामने भवन बने हुए थे । अब केवल पहाड़ी में छिद्र रह गए हैं जिनमें कभी भवनों की छतों आदि की कड़ियां फंसी हुई थीं।

इन भवनों के अभाव में गुहाओं के अन्दर अधिक प्रकाश है। ऊपर की खिड़कियां ऐसे स्थान पर बनाई हैं कि अन्दर की मुख्य बुद्ध की मूर्तियों के मुख पर प्रकाश पड़ता रहे। इन गुहाओं में जीर्णोद्धार अधिक हुआ है, इससे मूर्तियों की शोभा बढ़ी नहीं किन्तु घट गई है और मूल रूप भी विकृत हो गए हैं। यत्न यह किया गया है कि गारे के लेप से मूर्तियों को अन्य मन्दिरों जैसा आधुनिक रूप दिया जाए। भित्तियों पर नई मूर्तियां तथा चित्र भी बनाए गए हैं।

गुहाओं के बाहर की मूर्तियां प्रायः घिस चुकी हैं । यहां वहां किसी मूर्ति का शीर्षादि कोई भाग बच रहा है। इन पर जो रंग का लेप था वह लगभग उड़ गया है।

बुद्ध की आंखें हल्की निमीलित हैं। और आध्यात्मिक ज्योति का अनुभव कर रही हैं। किन्तु जो कुछ आंखें देख रही हैं, हल्के से धीरे से बन्द किए हुए ओष्ठ, उसका वर्णन न करके ही मुग्ध हैं। यह जीवित निर्वाण का दृश्य है जो जीवन के स्रोतों का अनुभव करता है किन्तु जीवन के राग और द्वेष से पृथक् है।

रूढि और मूर्तिकार की प्रतिभा का स्थान स्थान पर संघर्ष है। प्रायः बैठे हुए बुद्ध और हस्त-बद्ध उपासक रूढि के अनुसार बनाए गए हैं। जीवन और द्रुतगति का अद्भुत निदर्शन अप्सराओं के उड्डयन में है। प्रत्येक अप्सरा का चित्रण इस प्रकार से किया गया है कि पत्थर पर कोई स्थान रिक्त न रह जाए। फिर भी प्रत्येक रेखा सजीव है । गति की शीघ्रता के कारण उड़ते हुए परिधान की वक्र रेखाएं सीधी हो गई हैं। शरीर के अंग वेत्र के समान लीलानत हो गए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रभूतरत्न ने शाक्यमुनि को अपने आधे राजासन पर बिठाया और पुण्डरीक सूत्र का उपदेश करने के लिए प्रार्थना की– इसका चित्रण अद्भुत है।

युन्-काङ की सहस्त्रों मूर्तियों का मन पर अविस्मरणीय तथा अमिट संस्कार पड़ता है। जड शिला में जीवित जागृत प्राणवान् गुण डालना असाधारण सृष्टिकारी कला-विशारदों का चमत्कार है। इस चमत्कार के घड़ने में हथौड़ी और छैनी पार्थिव साधन के अतिरिक्त कोई जटिल यन्त्र उनके पास न थे। इन मूर्तियों का घण्टों तक नेत्रों द्वारा पान करते करते मन प्रश्नों से भरपूर हो उठता है। आश्चर्य और गम्भीर भावनाएं एक दूसरे के पीछे और साथ साथ निरन्तर चलती रहती हैं। मूर्तिकार जो बताना चाहता था वह सुनाई देने लगता है। उसमें अनुपम आनन्द का आभास होने लगता है। उनका आध्यात्मिक संसार हमारा ही तो संसार था। फिर कैसे हम उनकी बात न समझते। समय का व्यवधान बाधक नहीं। जिन मूर्तिकारों ने पाषाण में प्राण डाले वे गम्भीर धार्मिक अनुभूति और जीवनलीला के प्रेम से भरे थे। प्रत्येक मूर्ति के निर्माण में मूर्ति-कार ने नई साधना की है। मानव रूप को यद्यपि अलंकार के लिए प्रयोग किया गया है फिर भी मानव रूप में जडता नहीं आने पाई। चेतनता और जागरूकता का आभास अङ्ग अङ्ग से होता है।

जिन वामनों ने अपने बाहुओं पर छत्र उठाया हुआ है उनकी मांसपेशियां भार के सम्भालने में तनी हुई हैं। इसी प्रकार स्तूपों को उठाती हुई मूर्तियां भार से दब कर फैल गई हैं। उपासक ऐसे प्रतीत हो रहे हैं जैसे उन्होंने अभी अभी घुटने टेके हों। उनके परिधान पीछे की ओर उड़े जा रहे हैं, अभी नीचे नहीं बैठे। पद्मासनस्थ बोधिसत्त्व ऐसे लगते हैं जैसे अभी उठने वाले हों। खड़ी हुई मूर्तियों ने भी अभी अभी पांव आगे बढ़ाए हैं। थकावट से, कुछ एक ओर को, श्रोणीभाग झुका हुआ है। हाथ जोड़ने में आराधना की भावना भरी है। गन्धर्व और अप्सराएं बिना पंखों के उड़ रही हैं जैसे उनके शरीरों में भार ही नहीं। किन्तु इस शक्ति से आगे आ रही हैं कि वे निर्जीव नहीं किन्तु अति सबल और सजीव हैं। प्रभामण्डल के प्रान्तों में अथवा छतों में अप्सराएं और उनके परिधान एक दूसरे का पीछा करते हुए अपने उड्डयन-नैपुण्य से क्षिप्रकारी ऊंचे नीचे उड़ते हुए कलविङ्कों के समान शोभायमान हैं।

युन्-काङ की कला में जापान की सुइको कला का मूल है। जिस प्रकार वर्षा ॠतु में सूखी भूमि से हरे अङ्कुर उमड़ पड़ते हैं उसी प्रकार युन्-काङ की पहाड़ी में से उच्चतम और उदात्त भावनाएं, मानव के देवता और दैनिक जीवन फूट पड़े हैं। शिला में से शील का उद्भव हुआ है।

बड़ी बड़ी भित्तियों पर श्रावस्ती के महान् चमत्कारों का निरूपण है। विरोधी और संशयात्मक विद्वानों को व्यामूढ करने के लिए बुद्ध ने अपने शरीर को शतगुणित, सहस्र-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुणित कर दिया है ।

निरन्तर बुद्ध की छोटी छोटी मूर्तियां केवल भित्ति-तलों पर ही नहीं किन्तु परि-धान पर भी बनी हुई मिलती हैं । एक ही मूर्ति को बारंबार बनाना विकराल काल और मानवपिशाचों की विध्वंसकारिणी वृत्ति के साथ युद्ध करना है । जब सहस्त्रों लाखों मूर्तियां बनीं तभी तो अनेक शताब्दियों के पश्चात्, और मनुष्यों की उपेक्षा तथा जान बूझकर तोड़ने फोड़ने हरण करने के पश्चात् भी लंका से जापान तक और स्थान स्थान पर मन्दिरों में, पहाड़ियों में, अथवा खेतों और मरुभूमि की गोदी में आज भी कुछ मूर्तियां विद्यमान हैं ।

मूर्ति निर्माण कराने वालों और मूर्ति निर्माण करने वालों को यह पुण्य तो अवश्य मिला है कि आज हम उनको स्मरण करते हैं और उनके आभारी हैं ।

युन्-काङ की कला में बीभत्स, रुद्र अथवा भयावह का अभाव है । चार लोकपाल, जो पीछे जाकर अन्य स्थानों पर इतने भयंकर रूप में चित्रित किए गए कि उनको असुर-राज और दानवराज कहा गया, वे युन्-काङ में शक्तिशाली और आवश्यकतानुसार रुद्रकर्म के लिए उद्यत तो हैं, किन्तु उन्होंने अभी स्वयं रुद्ररूप धारण नहीं किया ।

फूल-बूटियों की सजावट में कमल का विशेष स्थान है । कमल की डण्डी, जड़, कलियां, फूल और पत्ते लहलहाती हुई बेलों का भी काम दे रहे हैं और मालाओं का भी ।

चीन के सम्राटों का प्रसिद्ध चिह्न सपाद और सदंष्ट्र नाग युन्-काङ में नहीं मिलता ।

वाराणसी के मृगदाव का धर्मचक्र और उसके दोनों पार्श्वों में खड़े हुए मृग भोट और मोंगोल में प्रत्येक मन्दिर के प्रवेश-द्वार के ऊपर उपासक और यात्री का स्वागत करते हैं । वे भी युन्-काङ में दृष्टिगोचर नहीं ।

बौद्धकला में मनुष्य की मूर्ति को भोग और विलास के स्तर से ऊंचा उठा कर आध्यात्मिक रूप दिया गया है ।

यदि हम युन्-काङ की मूर्तियों को किसी अद्भुतागार में ले चलें तो वहां तद्रूपता और तल्लीनता नहीं आ सकती । अद्भुतागारों का वातावरण संकीर्ण और संकुचित रहता है । अपने मूल से हट जाने के कारण वातावरण में कृत्रिमता आ जाती है । मनुष्य शिला के दीर्घ जीवन का अनुमान नहीं कर पाता । धरती में से उभरती हुई चट्टानें पृथ्वी माता के अंग हैं । सहस्त्रशः मूर्तियां इन अंगों में प्राण संचार करती हैं । अद्भुतागार पर्वत के काय में प्राणसंचार कैसे दिखलाएगा । चारों ओर उड़ती हुई रेत और छोटी सी नदी युन्-काङ के साथी हैं । युन्-काङ अपने सखाओं सहित ही अपनी वास्तविक कहानी कह सकता है । युन्-काङ तक पहुंचने का श्रम और समय यात्री को दर्शनों का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पात्र बनाता है ।

युन्-काङ को विश्वविख्यात बनाने का श्रेय तोक्यो विश्वविद्यालय के प्राध्यापक चूता इतो को है । यह यहां १९०२ में आए थे । उससे पूर्व युन्-काङ अन्धकार में था ।

युन्-काङ पहाड़ी के तीन भाग हैं । पहला भाग पूर्व में है । इसमें प्रथम और द्वितीय संख्या वाली दो गुहाएं हैं । पश्चिम में दो और गुहाएं हैं । संख्या तीन और चार । ये महत्त्वपूर्ण गुहाएं हैं ।

दूसरे भाग में नौ गुहाएं हैं । ये श-फ़ो स्स 石佛寺 विहार के अंग हैं। इनकी संख्या पांच से तेरह तक है । पांचवीं और छठी गुहा के सामने चार तल ऊंचे भवन पहाड़ी के साथ ही लगे हुए हैं । सातवीं गुहा के सामने भी तीन भूमि ऊंचा भवन है ।

तीसरे भाग में जो और आगे जाकर पश्चिम में है सात गुहाएं हैं । इनकी संख्या १४ से २० तक है। २० वीं गुहा का अग्रिम भाग टूट गया है। और इसके टूटने से सुविशाल बुद्ध मूर्ति सामने से दिखाई पड़ती है । इस विशाल बुद्ध के पश्चिम में सैंकड़ों छोटी छोटी गुहाएं और आले बने हैं । किन्तु ये विकृत रूप में हैं ।

युन्-काङ गुहाओं का कार्य उत्तर वेइ वंश के सम्राट् वन्-छङ 文成帝 के समय में आरम्भ हुआ। वेइ वंश के इतिहास 魏書釋老志 के अनुसार थान्-याओ 曇曜 भिक्षु को सम्राट् ने राजधानी में बुलाया और पहली बार पांच गुहाएं खोदी गईं । वन्-छङ के पूर्ववर्ती सम्राट् थाइ-वू 太武 चीनी इतिहास में बुद्ध-धर्म के उत्पीडन और उन्मूलन के लिए सुप्रसिद्ध हैं । ५०३ विक्रम में इन्होंने आदेश दिया कि समस्त बौद्ध मूर्तियां और साहित्य जला दिया जाए तथा समस्त बौद्ध भिक्षुओं का, चाहे वे बाल, युवा अथवा वृद्ध हों, वध कर दिया जाए । इस आदेश का बड़े कठोर रूप से निष्पादन हुआ । किन्तु थाइ-वू की मृत्यु के पश्चात्, उनके उत्तराधिकारी पौत्र वन्-छङ ने गद्दी पर बैठते ही ५०९ विक्रम में इस आदेश का निराकरण किया। थान्-याओ को उच्चतम अधिकारि-पद दिया गया और ५१७ विक्रम में युन्-काङ की गुहाओं का कार्य आरम्भ हुआ ।

युन्-काङ की खुदाई के तीन प्रयोजन हैं—

(१) थाइ-वू के अत्याचारों का प्रायश्चित्त ।

(२) वेइ वंश के पिछले पांच सम्राटों के कल्याण की कामना ।

और (३) थान्-याओ का धर्म प्रसार तथा धर्म रक्षा के लिए महान् प्रयत्न तथा अभ्यर्थना ।

युन्-काङ की गुहाओं में प्रायः मध्य में वर्गाकार स्तम्भ होता है, इसके चारों ओर मूर्तियां । मध्य-स्तम्भ और उसके चारों ओर मूर्तियों का होना युन्-काङ की विशेषता है । पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए चीन, कोरिया और जापान में सुवर्ण-प्रभास-सूत्र का प्रयोग होता रहा है । सुवर्ण-प्रभास-सूत्र का अनुसरण करके ही युन्-काङ की गुहाओं की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खुदाई हुई थी ।

सम्राट् वन्-छङ ने प्रायश्चित्त के रूप में गद्दी पर बैठने के दो वर्ष पश्चात् ही खड़े हुए शाक्यमुनि की पांच मूर्तियां ताम्बे में ढलवाई थीं । और अपने पांच पूर्वजों के आध्यात्मिक कल्याण के लिए पहली पांच गुहाएं खुदवाई थीं । ये पहली गुहाएं १६, १७, १८, १९ और २० होनी चाहिएं ।

फ़ेइ-चाङ-फ़ाङ 費長房 ने उत्तरोत्तर युगों में त्रिरत्नविवरण 歷代三寶記 नामक ग्रन्थ लिखा है । इसमें उसने थान्-याओ के धर्मप्रचार सम्बन्धी चार खण्डों वाले ग्रन्थ तथा युन्-काङ की गुहाओं की खुदाई का वर्णन किया है । युन्-काङ की गुहाओं में बुद्ध की जीवनी, सद्धर्मपुण्डरीक, विमलकीर्ति तथा सुवर्णप्रभास के आधार पर चित्र, मूर्ति आदि कार्य किया गया है । इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि गुहाओं के आरम्भ होने से पांच वर्ष पूर्व कुछ भारतीय भिक्षु यहां आए थे । ये अपने साथ तीन बुद्ध मूर्तियां लाए थे । इनका युन्-काङ की मूर्तियों पर प्रभाव पड़ा है । ११ वीं गुहा में ५४० विक्रम, और १७ वीं गुहा में ५४६ विक्रम के शिलालेख हैं । ५१७ विक्रम से आरम्भ कर के ३३ वर्ष तक अर्थात् जब तक राजधानी उठा कर लो-याङ 洛陽 ले जाई गई अर्थात् ५५० विक्रम तक, मुख्य रूप से इन गुहाओं का निर्माण हुआ । ५५० विक्रम के पश्चात् भी कुछ वर्षों तक कार्य होता रहा । यह ५५२ विक्रम तिथि वाले एक और शिलालेख से सिद्ध होता है ।

युन्-काङ की बुद्ध-मूर्तियों की, जो प्रथम पांच गुहाओं में बनी हैं, ऊंचाई २० से २४ हाथ तक की है । ५ वीं गुहा की प्रधान मूर्ति ३४ हाथ ऊंची है । वर्तमान मूर्तियों में से यह विशालतम मूर्तियों में से है । १३ वीं गुहा में बैठे हुए मैत्रेय ३० हाथ ऊंचे हैं । अनुमान कीजिए इन गुहाओं की विशालता का । इन बड़ी बड़ी गुहाओं में चारों भित्तियां और अन्दर की छत सहस्र-बुद्ध मूर्तियों, उड़ती हुई अप्सराओं और फूल-बूटों से भरपूर हैं । ये गुहाएं सौन्दर्य की निधि हैं । ६ ठी गुहा का कला-कौशल निध्येय है । ७ वीं, ८ वीं, ९ वीं, १० वीं, ११ वीं, १२ वीं, १३ वीं गुहाओं में वैभव कुछ थोड़ा हो गया है । विचारों की सम्पन्नता, विभिन्नता और कलाकौशल में युन्-काङ की गुहाएं उत्तर वेइ वंश के कलाकारों की प्रतिभा की प्रतिनिधि और निधि हैं ।

इस प्रकार का गुहा-निर्माण-कार्य चीन में पहली बार हुआ है । यहां सैंकड़ों कलाकारों ने सहयोग दिया होगा । उनमें इतनी प्रवीणता कहां से आई, इस प्रश्न का उत्तर पूर्णतः सप्रमाण नहीं दिया जा सकता । किन्तु यह निश्चित है कि मगध और लंका के भिक्षु कलाकार यहां आए थे और उन्होंने चीन में गुप्त कला का प्रवेश कराया था ।

चीनी ऐतिहासिक ग्रन्थों और शिलालेखों के अनुसार चीन की सीमा पर तुन्-ह्वाङ में मिङ-शा-शान् 鳴沙山 पहाड़ी पर भिक्षु लो-त्सुन् 樂僔 ने फ़ू-छिन् 符秦 वाले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

च्येन्-य्वेन् 建 元 के द्वितीय वर्ष में अर्थात् ४२३ विक्रम में गुफाएं आरम्भ कीं। तत्पश्चात् उत्तर ल्याङ 北 涼 के निवासी चू-छू-मङ-शुन् 沮 渠 蒙 遜 ने सान्-वेइ-शान् 三 危 山 जो मिङ-शा-शान् के पूर्व में था दूसरी गुहाओं का आरम्भ किया। चू-छू-मङ-शुन् का काल ४५९ से ५०० विक्रम तक है।

तुन्-ह्वाङ में शिव, विष्णु और विनायक भारत की समीपता के अभिव्यञ्जक हैं। अनेक बुद्धों बोधिसत्त्वों की मुखमुद्रा और वेशभूषा में भारतीय शैली की झलक है।

चू-छू-मङ-शुन् उत्तर वेइ के महाराज थाइ-वू का मित्र था। वेइ और ल्याङ वंश का विवाह-सम्बन्ध भी था। दोनों में ४९६ विक्रम में युद्ध हुआ जिसमें थाइ-वू की विजय हुई और ल्याङ प्रान्त 涼 州 के तीस सहस्र परिवार थाइ-वू की राजधानी फिङ-छङ 平 城 में लाकर बसाए गए। इससे स्पष्ट है कि युन्-काङ के निर्माण में तुन्-ह्वाङ के कलाकारों का हाथ है।

श-श्येन् 師 賢 जो काश्मीर के राजकुमार थे और बौद्ध भिक्षु के रूप में ल्याङ में रहा करते थे, उत्तर वेइ की विजय के पश्चात् फिङ-छङ में आए। जब तक बौद्ध धर्म पर संकट रहा तब तक वे भिक्षु-वेश छोड़ कर चिकित्सक का कार्य करते रहे। किन्तु नया युग आरम्भ होते ही उनको राज्य में उच्च स्थान मिला और उनके उत्तराधिकारी भिक्षु थान्-याओ ने युन्-काङ गुहाओं का निर्माण आरम्भ किया। इन्हीं दिनों में पांच भिक्षु बुद्ध मूर्तियां लेकर लंका से चीन आए। इन मूर्तियों की कला और विभूति से सब चमत्कृत हुए।

१ ली गुहा– तुङ-था-तुङ 東 塔 洞

२ री गुहा– श-था-तुङ 西 塔 洞। इस गुहा का त्रिभूमि-स्तूप सम्भवतः सद्धर्म-पुण्डरीकसूत्र में वर्णित प्रभातरत्नस्तूप का प्रतिबिम्ब है और प्रथम भूमि के मध्य में साथ साथ बैठे हुए दो बुद्ध शाक्यमुनि और प्रभातरत्न हैं।

३ री गुहा– स्वी-ता-फ़ो-तुङ 隋 大 佛 洞। इस गुहा में बहुत बड़े परिमाण पर कार्य आरम्भ किया गया था, पर काम अधूरा छोड़ दिया गया। यदि काम कहीं पूरा हो जाता तो इसका बौद्ध कला के इतिहास में अद्भुत स्थान होता। ६० हाथ ऊंची पहाड़ी को खोद कर गुहा के आगे एक अद्भुत आंगन बनाया गया। दाईं और बाईं ओर दो द्वार। इनके ऊपर खिड़कियां। दोनों ओर दो सुविशाल बुद्ध मूर्तियां बननी थीं किन्तु इनमें से केवल एक ही पूरी हो सकी।

गुहा में दो कोष्ठ हैं। अन्दर के भाग में ४८ हाथ चौड़ा विशाल स्तम्भ है। इसके पश्चिम में सुविशाल बुद्ध मूर्ति उत्कीर्ण है। मुख्य मूर्ति बैठे हुए बुद्ध की है। पांव से ऊपर इसकी ऊंचाई १८ हाथ है। ओजस्विता और महत्ता इसके विशिष्ट गुण हैं। युन्-काङ की अन्य मूर्तियों से यह विभिन्न है। उत्तरीय से दोनों कन्धे ढके हुए हैं। परिधान की रेखाएं प्रवाही और बलसूचक हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोनों उपासक बोधिसत्त्व दस हाथ ऊंचे हैं। इनकी मुखमुद्रा मुख्य मूर्ति के सदृश है। इन्होंने मुकुट और कर्णाभूषण पहिने हुए हैं। मूर्तियां सम-विभक्तांग हैं और इनके परिधानों में शोभा है। प्रभामण्डल मणि-रूप में है। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्राट् याङ 煬 帝 इस गुहा को अपने माता पिता की पुण्य स्मृति में अर्पण करना चाहते थे। वे आधा ही काम पूरा कर पाए थे अर्थात् अभी मातृ-कल्याण के लिए दूसरी त्रिमूर्ति का प्रारम्भ न कर पाए थे कि उनकी हत्या की गई और महत् कार्य अधूरा रह गया।

इस गुहा के आभ्यन्तर कोष्ठ का अगला भाग ८० हाथ के लगभग चौड़ा है। इस समय छत २४ हाथ ऊंची है किन्तु सम्भावना है कि मूल कुट्टिम दो चार हाथ नीचा रहा होगा।

५ वीं गुहा– ता-फ़ो-तुङ। जैसा कि हम पूर्व कह आए हैं इस गुहा के आगे चतुर्भूमि भवन बना हुआ है, जिससे पहाड़ी के बाहर के तल की रक्षा हुई है। गुहा कुछ अण्डाकार है। पूर्व से पश्चिम की ओर की चौड़ाई ४४ हाथ है और उत्तर से दक्षिण की ओर ३४ हाथ। बैठे हुए शाक्यमुनि की ३३ हाथ की मूर्ति पर्वत में से उत्कीर्ण है। घुटनों के बीच का अन्तराय ३१ हाथ और अनामिका ५ हाथ लम्बी है। यह मूर्ति केवल युन्-काङ में नहीं किन्तु सभी पर्वत में से उत्कीर्ण बुद्ध-मूर्तियों में से विशालतमा है। इतना बड़ा आकार होते हुए भी अंगों का समविभाजन है। कई बार जीर्णोद्धार होने पर भी मुख की गरिमा, गाम्भीर्य और प्रभुता अभी तक शेष हैं। उत्तमांग के पीछे विशाल प्रभामण्डल है, जो अर्ध-चन्द्राकार छत तक पहुंचता है। किन्तु यह अधिकांश विकृत हो चुका है और उत्तरकालीन जीर्णोद्धार तथा रंग-लेपों के कारण इसका मूल स्वरूप अब दिखाई नहीं पड़ता।

दो उपासक जो साथ खड़े हैं और दो उपासक जो बुद्ध के दोनों ओर खड़े हैं वे भी पहाड़ी में से ही उत्कीर्ण हैं।

इस गुहा का उत्खनन सम्राट् श्याओ-वन् 孝 文 ने अपने पिता श्येन्-वन् 獻 文 के कल्याण के लिए किया था। इस गुफा की कला उत्तर वेइ की कला का शिखर है।

६ ठी गुहा– हम इस गुहा के केवल एक दृश्य का वर्णन करेंगे। शाक्यमुनि भवन में बैठे हैं। बाईं ओर मञ्जुश्री, दाईं ओर विमलकीर्ति, नीचे धूपधानी तथा अनेक बोधि-सत्त्व। विमलकीर्ति मञ्जुश्री का धर्मोपदेश सुन रहे हैं। विमलकीर्ति के दाएं हाथ में चमरी है और बायां हाथ भूमि पर टिका हुआ है। मञ्जुश्री का दायां हाथ ऊपर उठा हुआ है जिसकी दो अंगुलियां द्रव्यों के द्वैत के प्रतीक रूप में बाहर निकली हुई हैं। मञ्जुश्री का मुख खुला है और इसमें से गम्भीर एकता के विचार धाराप्रवाह में निकल रहे हैं। पीछे खड़े हुए चार बोधिसत्त्व उपदेश से साक्षात् प्रभावित हैं और स्तुति में उन्होंने अपने हाथ जोड़े हुए हैं।

८ वीं गुहा– इस गुहा में विशेष द्रष्टव्य शिव और विष्णु की मूर्तियां हैं। मूर्तियां

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्पष्ट और सुन्दर हैं।

९ वीं गुहा– शाक्य-तुङ 釋迦洞। नौवीं गुहा में श्याओ-शी-थ्येन् लिखा है। श्याओ का अर्थ छोटा, शी का अर्थ पश्चिम, और थ्येन् का अर्थ स्वर्गभूमि, अर्थात् यह गुफा लघु भारत है। ये अक्षर छिङ वंश के हैं और भारतवर्ष के प्रति अगाध श्रद्धा के व्यञ्जक हैं।

११ वीं गुहा– पूर्वभित्ति के ऊपर के भाग में थाइ-हो 太和 के सप्तम वर्ष अर्थात् ५४० विक्रम तिथि वाला शिलालेख है। इस शिलालेख में महास्थामप्राप्त 大勢至 और अवलोकितेश्वर 觀音 के अक्षर स्पष्ट और सुपाठ्य हैं। इस शिलालेख में सूचना है कि फ़ा-त्सुङ 法宗 ग्रामोपाध्याय और अन्य ५४ ग्रामनिवासियों ने ९५ बुद्ध और बोधिसत्त्वों की मूर्तियां स्थापित कीं और प्रार्थना की कि सम्राट् और सम्राज्ञी, राजकुमार तथा सात पीढ़ियों के भूतपूर्व उपाध्याय और पितृगण का कल्याण हो।

१७ वीं गुहा– मुख्य मूर्ति मैत्रेय बोधिसत्त्व वर्गाकार आसन पर बैठी हुई है। इसका सिर छत तक पहुंचता है। इसकी ऊंचाई २८ हाथ है। भाव सौम्य और ओजस्वी है।

पूर्वीय पार्श्व-भित्ति के ऊपरी भाग पर गुहा-कुट्टिम से २२ हाथ ऊंचे ५४६ विक्रम का शिलालेख है। इस शिलालेख के अनुसार भिक्षुणी ह्वी-तिङ 惠定 की कामना से शाक्यमुनि, प्रभातरत्न और मैत्रेय की मूर्तियों की स्थापना की गई। भिक्षुणी भयंकर रोग में ग्रस्त थी। इस रोग से मुक्ति पाने के लिए, आध्यात्मिक कल्याण के लिए, तथा माता पिता गुरुजन और सब प्राणियों की पुण्याप्ति के लिए मूर्तियों की स्थापना की गई।

इस शिलालेख में प्रभातरत्न के उल्लेख से सिद्ध होता है कि युन्-काङ का आधार सद्धर्मपुण्डरीक-सूत्र है।

ता-तुङ नगर में पूर्व द्वार के भीतर दो विहार हैं। ये एक दूसरे के साथ लगे हुए हैं। इनमें से एक ऊंचे स्थान पर है दूसरा नीचे स्थान पर। इनके नाम हैं उपरि ह्वा-यन् स्स 上華嚴寺 और अधो ह्वा-यन् स्स 下華嚴寺।

उपरि ह्वा-यन् स्स विहार सम्भवतः चिङ-मिङ 清寧 के अष्टम वर्ष अर्थात् १११९ विक्रम में बना था। यदि यह अनुमान सत्य हो, तो यह चीन के विद्यमान काष्ठ-भवनों में से प्राचीनतम है। बुद्ध-भवन एक तल ऊंचा है। सामने तीन बड़े बड़े फाटक हैं। मन्दिर में वैरोचन-बुद्ध के आसपास अक्षोभ्य, अमोघसिद्धि 成就, अमिताभ 阿彌陀, और रत्नसम्भव 寶生 हैं। मूर्तियों, उनके आसनों और प्रभामण्डलों में, लामा प्रभाव स्पष्ट है। दोनों पार्श्वों पर दस देव खड़े हैं। भित्तियों पर बनी हुई मूर्तियां नई हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इनका उद्धार १९३२ से १९६८ विक्रम तक हुआ था ।

प्रभामण्डल के शिखर पर गरुड नाग-कन्याओं को पकड़ रहा है । यह भी लामा-प्रभाव है ।

अधो ह्वा-यन् स्स विहार में भागवत पुस्तकालय मुख्य भवन है । पहले दोनों विहारों, उपरि ह्वा-यन् स्स और अधो ह्वा-यन् स्स को, महा ह्वा-यन् स्स कहा जाता था ।

शाक्यमुनि के दोनों ओर भैषज्यगुरु 藥師 और अमिताभ की मूर्तियां हैं । वास्तु-कला की दृष्टि से यह भवन ल्याओ 遼 युग का है । तीन भित्तियों के साथ साथ त्रिपिटक-संग्रह रखा हुआ है ।

२४-५-५५

आज ता-तुङ की कोयले की खान संख्या तीन में गए । यथाविधि स्वागत-कोष्ठ में उष्ण जल और चाए मिली । खान के अध्यक्ष और युवक-संघ के नेता उपस्थित थे । खान के सम्बन्ध में बहुत सी सूचनाएं इनसे मिलीं । ऐसा प्रतीत होता है कि यह स्थान साम्यवादियों को पर्याप्त संघर्ष के पश्चात् मिला । जाते समय दूसरे पक्ष के लोग खान को बिगाड़ गए । पानी भर गया और काम बन्द हो गया । थोड़े से श्रमिक रह गए जो अपने हाथों से कोयला खोद कर अपनी पीठ पर लाद कर बाहर बेच आया करते थे ।

पिछले छः वर्षों में खान अपनी पूर्वावस्था से भी आगे बढ़ गई है । हमको बतलाया गया कि अब अन्दर बाहर ३६०० व्यक्ति काम करते हैं और प्रतिदिन ३००० प्रवर्त (ton) कोयला निकलता है । कुछ श्रमिकों के लिए नए घर बनाए गए हैं । छोटे परिवारों को एक कोष्ठ और बड़े परिवारों को दो कोष्ठ मिले हैं । खान के अध्यक्ष भी दो कोष्ठों में रहते हैं । उपस्कर (furniture) बहुत साधारण है ।

वेतन की आठ श्रेणियां हैं । प्रवेश करते ही नए व्यक्ति को २४ युआन् प्रतिमास मिलते हैं । सबसे ऊंचा वेतन मुख्य अभियन्ता (engineer) का है जो १९२ युआन् है ।

प्रबन्धादि के सम्बन्ध में अनेक प्रश्न पूछने के पश्चात् हम लोग खान में घुसने के लिए सज्ज हुए । पहले तो अध्यक्ष ने कहा सुदर्शना को कठिनाई होगी । अन्दर कीचड़ है, अन्धेरा है, बहुत दूर चलना पड़ेगा । किन्तु सुदर्शना ने कहा कि मैं पीछे रह कर भी क्या करूंगी ।

घृषि के नए जूते हमने पहने । अपने जूते उतार दिए । केवल पाद्या रहने दी । कोरी पतलून और कोरा कोट पहना । कोट को पतलून के अन्दर किया और ऊपर चमड़े की पेटी बांधी । इस पेटी में अभय-दीप की विद्युत्-समूहा (battery) लगाई जाती है जिसका भार पर्याप्त था । दो सेर के लगभग होगा । पतलून के पांव के समीप बटन लगाए और पतलून के ऊपर दोनों टांगों पर पट्टियां बांधीं । मणिबन्ध पर कोट के भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बटन लगाए। गले में कोट के नीचे एक मोटा प्रोञ्छ लपेटा जिससे कोयले की धूल ग्रीवा पर न जाए। सिर पर कपड़े की टोपी माथे पर आगे बढ़ी हुई और उसके ऊपर बहुत भद्दी किन्तु परमावश्यक वीरा (willow) की दृढ किन्तु हलकी रक्षार्थ टोपी। हमारी आकृति सर्वथा श्रमिकों के समान बन गई। हम अपना रूपित्र (camera) साथ नहीं लाए थे क्योंकि खान में रूपित्र नहीं ले जाया जा सकता। न ही किसी और के पास रूपित्र था। सुदर्शना का चित्र तो विशेष रूप से स्मारक-चित्र होता।

खान में उतरने के लिए बिजली का प्रबन्ध नहीं। १६ प्रति शत ढलान है। श्रमिक गाड़ियों से नीचे जाते हैं। यह गाड़ियां हमने बाहर रखी हुई देखीं। आजकल ये गाड़ियां काम में नहीं आ रही थीं नहीं तो हमें पैदल क्यों ले जाया जाता। खान का मार्ग आठ नौ पाद चौड़ा होगा। बीच में लोहे की पटड़ी है। कोयले के छोटे डिब्बों के लिए। नीचे उतरने में आरम्भ में कठिनाई होती है किन्तु धीरे धीरे अभ्यास पड़ जाता है। पहली बार की उतराई आदि से अन्त तक सावधानी और आशंका तथा भय से पूर्ण रहती है। कहीं पानी रिस रहा है, कहीं बह रहा है। कहीं छोटे जलप्रपातों की ध्वनि हो रही है। इतनी अच्छी बात है कि कहीं फिसलन नहीं। कोयले की भरी अथवा रिक्त गाड़ियां चलने की सूचना तार की घरघर ध्वनि से मिल जाती है। तार गाड़ियों को खींचता है। इस तार के चलने के लिए पटड़ियों के बीच में घर्घरियां बनी हुई हैं। निर्जन में यह ध्वनि कुछ डरावनी सी लगती है। न जाने किस ओर से और कब कोयले की गाड़ियां हमारे ऊपर आ पड़ें। कई स्थानों पर मार्ग बहुत ही छोटा है। किन्तु कहीं कहीं अपेक्षा-दृष्टि से राजमार्ग प्रतीत होता है। यहां दुहरी पटड़ी बिछी है। दोनों पार्श्वों और छत पर मोटे मोटे चीड़ के स्तम्भ शोभायमान हैं। दूर दूर बिजली के दीप लगे हैं। चलने की भूमि पर्याप्त समतल है। किन्तु इस राजमार्ग पर चलते हुए तो कोयला खुदने वाले स्थान तक नहीं पहुंच सकेंगे। कभी दाएं कभी बाएं छोटी छोटी गलियों में मुड़ते हैं। ये सुरंगें सर्वथा कोयले के बीच में से बनी हुई हैं। यहां लोहे की पटड़ी भी नहीं। छत इतनी नीची है कि नम्र-भाव से पीठ को दोहरी किए हुए, साढ़े पांच पाद की ऊंचाई को तीन पाद की नीचाई तक लाकर ही प्रगति करना सम्भव है। कहीं भूल हुई और पीठ कुछ ऊंची उठी तो टोपी छत में जाकर लगती है और पीठ फिर दुहरी हो जाती है। पेटी में बंधा हुआ दीप हमारा नेतृत्व कर रहा है। जहां भूमि बहुत विषम है वहां आगे पीछे दो व्यक्ति हाथ पकड़ कर सहारा देते हैं। अब फिर बड़े मार्ग पर आ गए। सामने से कोयले के भरे हुए डिब्बे खिंचे आ रहे हैं। हम एक ओर हट गए। डिब्बे पास से निकल गए। उनको खींचने वाला तार भी और उसकी घरघर ध्वनि दोनों समाप्त हुए। ये गाड़ियां हमको अपने तीन घण्टे के खनि-निवास में कई बार मिलीं।

जिधर से कोयला कट कट कर आ रहा था जब उधर पहुंचे, तब कोयला कटना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बन्द था। जो कोयला कट चुका था उसको १५, २० श्रमिक एक लोहे की खुली नाली में डाल रहे थे। इस नाली की चौड़ाई दो पाद के लगभग होगी। गहराई एक पाद से अधिक न थी। इस नाली के बीच में लोहे का पटा लगातार चल रहा था।

इस आशा में कि काटने वाला यन्त्र शीघ्र ही कार्य प्रारम्भ करेगा हमने प्रतीक्षा की। एक बज चुका था। लकड़ी के खम्भों पर बैठ गए। उष्ण जल, विक्षार जल और बिस्कुट खाने लगे। इस अल्पाहार के पश्चात् एक घण्टा और ठहरने के लिए हमसे कहा गया। अब दो बज चुके थे। हमने प्रतीक्षा करना आवश्यक न समझा। धीरे धीरे चलते चलते ४० कला में ऊपर आ पहुंचे। ऊपर का प्रकाश अन्धा करने वाला प्रतीत हुआ। प्रकाश की चण्डता का प्रकाश में रहते हुए अनुमान करना सम्भव नहीं।

२७-५-५५

जब से हम चीन आए तब से **तुन्-ह्वाङ** जाने का प्रबन्ध आरम्भ हुआ। एक मास की सज्जा और प्रतीक्षा के पश्चात् आज २७ को प्रातः ३ बजे उठ कर सम्भार बांध कर ५ बजे प्रातराश करके साढ़े पांच बजे विमान-पत्तन पर जा पहुंचे। इस बार हमारे साथ भाचित्रक (photographer) भी चला। भाचित्रक को साथ लेने के लिए बड़ा यत्न करना पड़ा। आज तक किसी भी अतिथि ने भाचित्रक की मांग न की थी। हम पहले विचित्र अतिथि थे जिन्होंने शासन से यह मांग की। अनुभवी भाचित्रक ढूंढने और निश्चय करने के लिए कई सप्ताह लगे। भाचित्रक अपने साथ क्या सामग्री ले चले अथवा कौनसी सामग्री पेइ-चिङ में मिल सकती है और कितनी मात्रा में, यह बहुत गम्भीर चिन्ता का प्रश्न बना रहा। अन्त में जो कुछ सामग्री हम भारतवर्ष और हॉङ-कॉङ से लाए थे उसी को साथ लेकर चलना पड़ा। रंगीन चित्रपट्टियां चीन में नहीं मिलीं। हॉङ-कॉङ से भी मंगाने का कोई प्रबन्ध न हो सका। भारतीय दूतावास ने बड़ी कठिनाई से दो रंगीन चित्रपट्टियां ढूंढ कर दीं और भारतीय दूतावास के भाचित्रक ने अपना स्फुर-दीप (flash lamp) दिया। भाचित्रक अपने साथ अपना लाइका और रोलीफ़्लेक्स रूपित्र ले चला।

वर्षा धड़ाधड़ हो रही थी। श्री गोवर्धन ने तो कल ही कहा था कि ऋतु अच्छा नहीं है, किन्तु विमानपत्तन-अधिकारी ने कहा कि वर्षा पेइ-चिङ में हो रही है, आगे जाकर ऋतु निर्मेघ है।

धूसरवर्ण, २१ आसन वाला, द्विगन्त्रयुक्त, रूसी चालक चालित रूसी विमान १३ यात्रियों को लेकर मन्द मन्द उड़ने लगा। लगातार पौने दो घण्टे तक विमान ऊंचा नीचा डोलता रहा। शान्-सी प्रान्त की राजधानी में उतरे। आधा घण्टा ठहरे। पौने नौ पर फिर उड़े। पूरे पौने ग्यारह प्रसिद्ध शी-आन् नगरी में उतरे। हमारा स्वागत करने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के लिए विदेश-विभाग, संस्कृति-विभाग, विज्ञान-विभाग और शिक्षा-विभाग के चार सज्जन उपस्थित थे । विमान-पत्तन पर ही भोजन का प्रबन्ध था । ग्लास नामक फल (cherries) और संतरे तथा चाए से हमने उदरपूर्ति की । साढ़े ग्यारह आगे चलने का समय हुआ । शी-आन् की जनसंख्या दस लाख के लगभग है । पिछले १५०० वर्षों से यह नगर बौद्ध केन्द्र रहा है ।

ठीक डेढ़ बजे डोलते डोलते, हिलते जुलते मिट्टी की पहाड़ियों को पार करते हुए कान्-सू प्रान्त की राजधानी लान्-चाओ में हमारे विमान ने अपनी आज की यात्रा समाप्त की । चारों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ लान्-चाओ सुन्दर दृश्य है । पहाड़ियां रेत और मिट्टी की बनी हुई हैं । नगर के चारों ओर बहुत मोटी भित्ति है । यहां मुसलमानों की अच्छी बस्ती है । फिर भी चीनियों की अधिक संख्या है । लिखने और पढ़ने के लिए चीनी ही एकमात्र भाषा है । नगर की भित्ति के साथ साथ मटियाले रंग की पीत-नदी बहती है । नदी के पार उच्चतम शिखर पर सप्तभूमि बौद्ध स्तूप विराजमान है । उसके नीचे गुफा-रूप में घर भी बने हुए हैं । आज इन घरों में वीगूर् और सिन्-क्याङ के मुसलमान रहते हैं । वीगूर् मुसलमान कई रंगों से निकली हुई टोपी पहनते हैं, किन्तु सिन्-क्याङ के मुसलमान केवल श्वेत टोपी ।

पौने चार बजे हम लोगों ने दोपहर का भोजन किया । चीनी प्रतिवार हमको नया निरामिष भोजन देते हैं । किन्तु स्वाद में सदा रुचिकर नहीं होता । उबले हुए चावल और मक्खन में भुने हुए आलू यही दो पदार्थ हैं जो हम स्वयं कह कर अपने लिए बनवाते हैं, और जो हमारे लिए रुचिकर होते हैं । जिह्वारस भी प्रत्येक जाति का विभिन्न है । चीनी भोजन के पीछे सहस्रों वर्षों का इतिहास है । उसी प्रकार से हमारा भोजन भी हमारे इतिहास का अंग है । हम तो भला शाकाहारी ठहरे, मांसाहारी भी कष्ट अनुभव करते हैं । हमारे प्रधान मन्त्री को तो सांप का रस पिलाया गया था । उस रस का आस्वादन हमारे राजदूत श्री राघवन् और परामर्शदाता श्री गोवर्धन ने भी किया था किन्तु बिना जाने हुए ।

लान्-चाओ की सड़कों पर गाड़ी पीत-नदी का मटियाला पानी बांटती फिरती है । इसी पानी को तपा कर लोग पीते हैं । मिट्टी नीचे बिठाने के लिए सम्भवतः फटकरी का प्रयोग करते हैं ।

चीन में ठण्डा पानी नहीं पिया जाता । प्रातः से सायं तक दो चार चाए की पत्तियां डाल कर सभी लोग उष्ण जल का सेवन करते हैं ।

लान्-चाओ के अधिकारियों ने सुदर्शना के लिए एक सखी भेजी । मार्ग में शीत का निवारण करने के लिए नीले स्विद्र (sweater) तथा लम्बे बालों वाले दो कोट भेजे ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२८-५-५५

आज प्रातः कुछ विलम्ब से उठे। साढ़े छः बजे होंगे। स्वागत-मण्डल के तीन सज्जन और एक महिला आठ बजे प्रातराश में हमारे साथ सम्मिलित हुए। प्रातराश के लिए सूखी जलेबियों जैसी मिठाई बनाई गई।

लान्-चाओ में कोमल नाख और सुगन्धित सेब बहुत अच्छे होते हैं। यहां के कालिन्द और दशांगुल भी प्रसिद्ध हैं। किन्तु आजकल उनका ऋतु नहीं। श्रीमती गोवर्धन ने चलते समय विशेष रूप से कहा था कि यदि भार अधिक न हो तो मेरे लिए लान्-चाओ से दशांगुल लाइएगा। विपणि में हरे रंग की सूखी द्राक्षा स्थान स्थान पर मिल रही थीं। सेब के रस के पापड़ भी।

प्रातः ६ बज कर १० कला पर चू-च्यान् से विमान चला था। हमको सूचना मिली कि यही विमान लौट कर जाएगा। हम साढ़े आठ बजे विमानक्षेत्र पर पहुंच गए। चू-च्यान् से विमान पौने नौ बजे आया और तब पता लगा कि यह विमान आज लौट कर न जाएगा। दूसरा विमान पूर्व की ओर से ९ बजे पहुंचा। सवा घण्टा प्रतीक्षा करनी पड़ी। सवा दस पर विमान उड़ा। और ढाई घण्टे में चू-च्यान् पहुंचा। मार्ग में दृश्य सुन्दर था। मिट्टी की पहाड़ियां और उन पहाड़ियों पर यत्र तत्र गेहूं के हरे खेत। कहीं पर घर भूमि पर बने हुए थे और कहीं पर केवल भूमि में छिद्र थे। पूछने पर पता लगा कि शीत से बचने के लिए यहां लोग भूमि के अन्दर रहते हैं ऊपर घर बना कर नहीं।

हमारे बाईं ओर अर्थात् दक्षिण में हिमाच्छादित पर्वत की चोटियां बहुत दूर तक दिखलाई पड़ती रहीं।

दृश्य की दृष्टि से यह यात्रा जितनी रमणीय थी उतनी ही कष्टकारी भी रही। लान्-चाओ से कुछ दूर चण्डवात चलने लगा और विमान तथा वायु के संघर्ष से घरघर की ध्वनि लगातार डेढ़ घण्टे तक होती रही। विमान का डोलना और ऊंचे नीचे होना अति-कष्टदायी था। विमान में हम केवल १२ यात्री थे। यदि वास्तव में गणना की जाए तो हम ही दो यात्री थे। शेष तो कुछ हमारे साथ और कुछ शासन की डाक आदि लेकर जा रहे थे। इस विमान में आसन्दियां न थीं केवल फट्टे लगे हुए थे। १२ में से ६ बैठ गए और ६ लेट गए। दो तो नीचे भूमि पर ही। भूमि पर केवल दरी बिछी हुई थी। विमान के गन्त्र-कोष्ठ में चार रूसी चालक थे। चीनियों के सामने उनका मुखवर्ण पीला और फीका दिखाई पड़ता था।

चीन में विमान के यात्रियों को खाने पीने के लिए कुछ नहीं मिलता। वास्तव में जहां दो दो तीन तीन घण्टे की यात्रा हो वहां भोजन के प्रबन्ध की विशेष आवश्यकता भी नहीं। चू-च्यान् पर जब विमान उतरा तो ऐसा प्रतीत हुआ कि विमान का अग्रभाग भूमि पर गिर रहा है किन्तु सौभाग्य से कुछ दुर्घटना न हुई। विमानपत्तन की भूमि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सर्वथा प्राकृतिक है। मिट्टी और घास। और कुछ नहीं। तीव्र वायु चल रही थी। यहां भी हमारा स्वागत करने के लिए विदेश-विभाग के कान्-सू प्रान्त के उपाध्यक्ष हमारा प्रबन्ध करने के लिए कई दिन से आए हुए हैं। इनके साथ अनेक कार्यकर्ता हैं। चार गाड़ियां आई हैं। चारों गाड़ियां रूसी हैं। तीन जीप हैं और एक सामान्य सुन्दर वहित्र (motor)। कार्यकर्ताओं की एक मण्डली चू-च्यान् से आगे आन्-शान् और तुन्-ह्वाङ गई हुई है। शासन का प्रबन्ध बहुत अच्छा है। चू-च्यान् से आए हुए कार्यकर्ताओं में सुदर्शना के लिए चार सखियां भी हैं।

विमान-पत्तन से चू-च्यान् नगर तक आने में सवा घण्टा लगा। मार्ग में भूमि पथरीली मरुस्थली है। धूल के बादल उड़ते रहते हैं। इनसे जी घबराता है। कपड़े, सम्भार और विशेष कर बाल धूल से भर जाते हैं। हमारी गाड़ी के तीन कांच सर्वथा बन्द थे। एक कांच चालक ने थोड़ा सा खोला हुआ था।

पिघली हुई हिम के कुछ नाले चू-च्यान् के आसपास आते हैं। उन्हीं के सहारे यहां गेहूं और एक प्रकार के राजमाष की खेती होती है।

चू-च्यान् में कोई विश्रान्तिगृह नहीं। हमको पाठशाला में ठहराया गया। बीच में बड़ा प्रकोष्ठ और उसके दोनों ओर पांच साधारण कोष्ठ अच्छी प्रकार सजाए हुए थे। नाना सुन्दर दरियां, गद्दों वाली आसन्दियां, पटल, बिजली। बारह अंगुल मोटे गद्दे बिस्तरों पर बिछे हुए थे। वैसे कोष्ठ सब कच्चे बने हुए थे। पहला काम हाथ मुंह धोना, कपड़े झाड़ना था। वायु में सर्वत्र छोटे छोटे श्वेत रोम वाले बीज उड़ रहे थे। इनको उतारना समस्या बन गई।

भोजन और कुछ विश्राम के पश्चात् पांच बजे हम फिर निकल पड़े। मदिरानिर्झर नामक स्थान पर चारों ओर हरियावल ही हरियावल थी। डेढ़ घण्टे तक आसपास के खेतों में घूमने के पश्चात् हम लोग लौटे। मार्ग में छिङ-कालीन भवन का निरीक्षण किया। इस पर तीन छतें थीं। सुन्दर गोल पूर्ग वृक्ष-स्तम्भों के स्तम्भ लगे हुए थे। पहले इसमें क्या था सो पता न लगा। अब यहां वाचनालय है। रूसी और चीनी नेताओं के चित्र टंगे हैं। ऊपर के कोष्ठ में नए भवनों की नींव खोदते समय निकली प्राचीन वस्तुएं रखी हैं। इनमें बौद्ध मूर्तियां प्रमुख हैं। मूर्तियां मिट्टी, पत्थर और धातु की बनी हुई हैं।

छिङ-राजा भवनों और मन्दिरों के निर्माता रहे हैं। उनके शिलालेख और अन्य कृतियां स्थान स्थान पर विद्यमान हैं।

चू-च्यान् की जनसंख्या १५ सहस्र है। लिखने पढ़ने की भाषा यहां भी केवलमात्र चीनी देखने में आई। यहां मुसलमानों की संख्या पर्याप्त है। मुसलमान स्त्रियां अपने सिर को श्वेत कपड़े से ढांके रखती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आज रात्रि को श्री छाङ लान्-चाओ से आए। पहले तो पता न चला कि आप कौन हैं। किन्तु कुछ समय के वार्तालाप के पश्चात् आभास हुआ कि आप तुन्-ह्वाङ की अनुसंधान-संस्था के अध्यक्ष होंगे। पूछने से निश्चय हो गया। आप हमारी मण्डली में सम्मिलित होने के लिए और हमारा पथ-प्रदर्शन करने के लिए आए हैं।

कार्यक्रम के अनुसार हमको सात बजे प्रस्थान कर देना चाहिए था। किन्तु अब सवा आठ बज गए हैं। चार जीप, एक बड़ी रूसी गाड़ी और एक भारी यान हमारे साथ चलेगा। हमारी मण्डली की जनसंख्या २९ हो गई है। बिस्तरे, पलंग, भोजन बनाने और खाने का पात्र, भृत्य, कान्-सू प्रान्त के अधिकारी, एक वैद्य और एक परिचारिका, चाए बनाने वाले और भोजन पकाने वाले, आवश्यकता पड़ने पर गाड़ी को ठीक करने के लिए यान्त्रिक, तथा रक्षक आदि।

सत्तर अस्सी कोस तक हिमावृत पर्वत-माला साथ चलती रही। हमारी गाड़ियों ने प्रसिद्ध गोबी मरुस्थल में प्रवेश किया। प्रारम्भ में मोटे पत्थरों और कंकरों का प्राधान्य रहा। आगे जाकर पत्थर और कंकर छोटे हो गए। कहीं कहीं पर बहुत छोटी झाड़ियां और नीले फूल वाला घास। किसी वन्य पशु अथवा पक्षी के दर्शन कहीं पर न हुए। १५०, २०० कोस में छः सात से अधिक ग्राम न मिले। जहां कहीं थोड़ा सा पानी मिलता है वहां खेती और ग्राम खड़े हो जाते हैं। सड़क के दोनों ओर कहीं प्राचीन खण्ड भी देखने में नहीं आए। चू-च्यान् से बाहर निकल कर थोड़े समय के पश्चात् ही प्राचीन भित्ति के पश्चिम द्वार के दर्शन हुए। किन्तु हमारी सड़क इस द्वार के भीतर से न निकलती थी। महाभित्ति को बड़ी निर्दयता से, अशिष्टता से तोड़ कर सड़क के लिए मार्ग बनाया हुआ था। महाभित्ति के साथ यह दुर्व्यवहार देख कर क्षोभ हुआ।

मार्ग में पर्याप्त ठण्ड थी। कई लोगों ने तो अन्दर लम्बे बालों के अस्तर वाले कोट पहन लिए। किन्तु हमने आवश्यकता न समझी। धूप निकली हुई थी। हमारे वहित्र की सब खिड़कियां सर्वथा बन्द थीं। रात्रि को वर्षा हो चुकी थी, अतः मार्ग में हम धूल से बचे रहे। हम पेइ-चिङ से चलते समय वर्षा अपने साथ लेकर चले थे किन्तु किसी को यह आशा न थी कि लान्-चाओ से आगे भी वर्षा साथ चलेगी। चू-च्यान् में यह इस वर्ष का प्रथम वर्षापात था।

जब मार्ग में कहीं कहीं धूल उड़ने लगी, तो इन्द्र देवता ने अपने जलकुम्भ दूर दूर तक छिड़क दिए। सायंकाल को आन्-शी के समीप जाकर दाएं बाएं दूर दूर तक मृगमरीचिका के जीवन में प्रथम बार दर्शन हुए। यहां बादल तो थे पर वर्षा न हुई थी इसलिए २०,२५ कोस तक धूल के मेघ साथ चलते रहे। आन्-शी में हमको बताया गया कि यहां वर्ष में केवल एक वायु चलती है। जब हमने प्रश्न किया कब, तो उत्तर मिला पहली जनवरी से ३१ दिसम्बर तक। यह स्थान वायुप्रवाह के लिए प्राचीन समय से प्रसिद्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

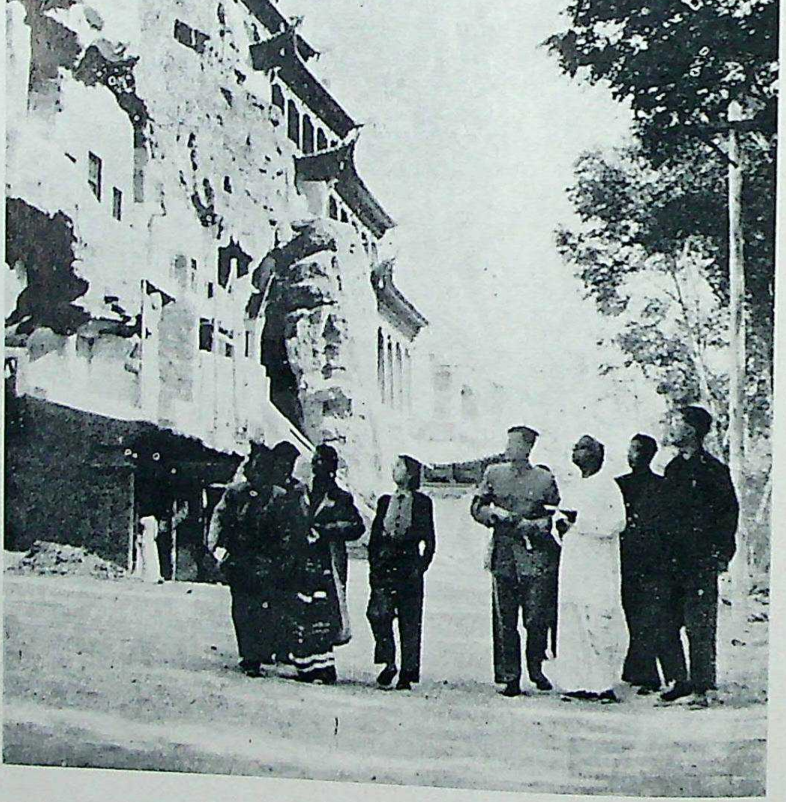

तुन-ह्वाङ की मुख्य गुहा के सम्मुख भव्य नवभूमिक काष्ठमण्डप। तुन्-ह्वाङ की ४६९ गुहाएं विश्व की प्राचीनतम कला-वीथि है जिसमें शतियों तक कलामय हाथों ने अन्तर्हृदय की श्रद्धा को भित्तिचित्रों के वर्णवैभव और मृण्मय मूर्तियों में साकार कर दिया।

The main wooden façade leading to the gigantic Buddha at the Tun-huang Caves (220-1367 A.D.).

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। श्वेन्-च्वाङ भी आन्-शी हो कर भारत गए थे। वे जाते समय तुन्-ह्वाङ न ठहरे थे। केवल आते समय ठहरे थे।

आन्-शी से पूर्व दोपहर का भोजन हमने युङ-मन् में किया था। यह स्थान पहले कभी मन्दिर रहा था। कितने वर्ष पूर्व यह पूछने का हमने साहस नहीं किया।

आन्-शी में हम सायंकाल को साढ़े छः बजे पहुंचे। यह छोटा सा ग्राम है। आजानुदग्ध धूलि का चारों दिशाओं में पूर्ण साम्राज्य है। पानी में तेल का स्वाद अथवा दुःस्वाद है। सुन्दरतम स्थान में हमको ठहराया गया। लान्-चाओ, चू-च्यान् और आन्-शी तथा मार्ग में युङ-मन्, इन सभी स्थानों में और इन्हीं भवनों में और इन भवनों के इन ही कोष्ठों में जिनमें मैं और सुदर्शना ठहरते आए हैं कुछ मास पूर्व भारत के राजदूत श्री राघवन् और उनकी पत्नी तथा श्रीमती गोवर्धन ठहरी थीं। आन्-शी में आकर सुदर्शना रुग्ण हो गई। दो दिन की शरीर को हिला देने वाली विमान-यात्रा और आज की सारे दिन की वहित्र-यात्रा उसके लिए कुछ कठिन रही। तुरन्त ही अपने सार्थवाह के वैद्य और परिचारिका आ गए। समस्त सायं और रात्रि उन्होंने देखभाल की।

३०-५-५५

यहां दिन १६ घण्टे का है। सायंकाल के दस बजे तक प्रकाश रहता है। कल सायंकाल विलम्ब से सोए। मार्ग की थकान भी थी इसलिए आज प्रातः ६ बजे सूर्योदय के साथ न उठ कर हम लोग आठ बजे उठे। केवल हम ही नहीं किन्तु समस्त मण्डली ही को अधिक विश्राम की आवश्यकता थी। कार्यक्रम के अनुसार ९ बजे न चल कर हमारा प्रस्थान १० बजे आरम्भ हुआ। अब तुन्-ह्वाङ पहुंचने में केवल ११९ क्रोशक (kilometer) शेष थे। ३ घण्टे का मार्ग था। पर चार बार हमारी गाड़ी ठहरी और दो बार अमरीका की बनी हुई जीप। हमारी गाड़ी वारसावा (पोलॅण्ड) की बनी M20 थी। इस का गंन्त्र बारंबार तप जाता था। और जीप को बारंबार प्यास लगती थी। इस लिए छः बार ठहरना पड़ा। तीन बजे हम तुन्-ह्वाङ पहुंचे।

३१-५-५५

तुन्-ह्वाङ म ४७६ गुहाएं हैं। ये नई संख्या के अनुसार हैं। इनमें से आज प्रातः साढ़े नौ बजे कुछ गुहाओं का सामान्य निरीक्षण किया। अनेक गुहाओं में किवाड़ और ताले लगे हुए हैं। किवाड़ और ताले गुहाओं के चित्रों और मूर्तियों की रक्षा करने के लिए हैं। किवाड़ रेत से रक्षा करते हैं और ताले मनुष्यों से। असंख्य मनुष्यों का गुहाओं के अन्दर आना जाना भी उनके जीवन को छोटा कर देगा। इस आशंका से जहां जहां सम्भव हो सका है वहां वहां ताले लगाए गए हैं। केवल विशेष अतिथियों के लिए तुन्-ह्वाङ-गवेषणालय के रक्षी ताले खोलते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समीप ही बहता हुआ छोटा सा नाला इस स्थान की रमणीयता और शोभा को द्विगुणित कर देता है। प्राचीन काल में यह महती नदी रही होगी। आधे दिन में हम पहाड़ी के दक्षिण सिरे से आरम्भ करके मध्य तक पहुंचे। ९ भूमि ऊंचे मन्दिर के शिखर तक पहुंचते हुए पहाड़ी शिखर आ गया। वायु में मन्दिर की घण्टियां मधुर गान कर रही थीं। पास ही विमान उतरने के लिए प्राकृतिक समतल स्थान बना हुआ है। पहाड़ी से उतरते हुए पञ्चवंश-काल का स्तूप और उसके भीतर की मूर्तियां देखीं। हमारे देश में तो यह स्तूप दो चार वर्षाएं भी न काट सके। और यहां पर यह शताब्दियों से खड़ा हुआ है। इस प्रकार के २६ स्तूप हैं। इनमें से चार टूट फूट चुके हैं। २२ खड़े हैं। चार पांच के अन्दर भित्ति-चित्र हैं। सामने ताओ मतावलम्बी वाङ का समाधि-स्तूप है। २२ मिट्टी के स्तूपों में से हम एक में गए। यह भी पञ्चवंश के समय का है। इसके अन्दर ४, ५ जन खड़े हो सकते हैं। मिट्टी की मूर्तियां अभी तक विद्यमान हैं। मुख्य मूर्ति के सामने भारतीय प्रकार का मिट्टी का दीप है।

आज हमारा काम सब गुहाओं पर सामान्य दृष्टिपात करना और यह निश्चय करना है कि किन गुहाओं में भित्ति और छत के किन किन चित्रों तथा मूर्तियों के रंगीन चित्र लिए जाएं। दो भाचित्रक हमारे साथ हैं। वे भाचित्रण की दृष्टि से हमारे निश्चय तक पहुंचने में सहायक हैं।

तुन्-ह्वाङ की पहाड़ी बजरी और रेत की बनी हुई है। इस पहाड़ी में से कोई मूर्ति काटी नहीं जा सकती थी। इसके तीन परिणाम हुए।

(१) छोटी और बड़ी गुफाएं बिना विशेष कष्ट के भारी संख्या में खोदी गईं।
(२) छतों और भित्तियों पर गारे का लेप करके भारी संख्या में चित्र बनाए गए।
(३) मूर्तियां पत्थर की न बनाई गईं। लकड़ी और फूस के ऊपर गारा लीप कर उन पर रंग कर दिया गया।

एक बजे लौट कर भोजन और विश्राम मिला और फिर साढ़े ३ से ६ बजे तक कुछ गुहाओं का निरीक्षण किया।

गुहा-संख्या ३४२– ताओ सम्प्रदायी वाङ यहां रहा करता था। गुहा धुएं से काली हो गई है।

गुहा १७– छोटा सा कोष्ठ है। इसमें गवेषणालय के चित्रकारों ने अपना सम्भार फैलाया हुआ है। वे इस गुहा के भित्ति-चित्र की अनुकृति कर रहे हैं। बिजली का चण्ड प्रकाश सूर्य का कार्य कर रहा है।

यह गुहा तुन्-ह्वाङ की अद्भुत निधि है। इसमें एक सहस्र वर्ष तक अथवा उस से भी अधिक ३०,००० वलिताएं अर्थात् गोल लपेटी हुई पत्रमयी पुस्तकें बन्द थीं। एक दिन पास बहती हुई छोटी सी नदी का पानी इस गुहा तक पहुंच गया। भित्ति में तेड़ आ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

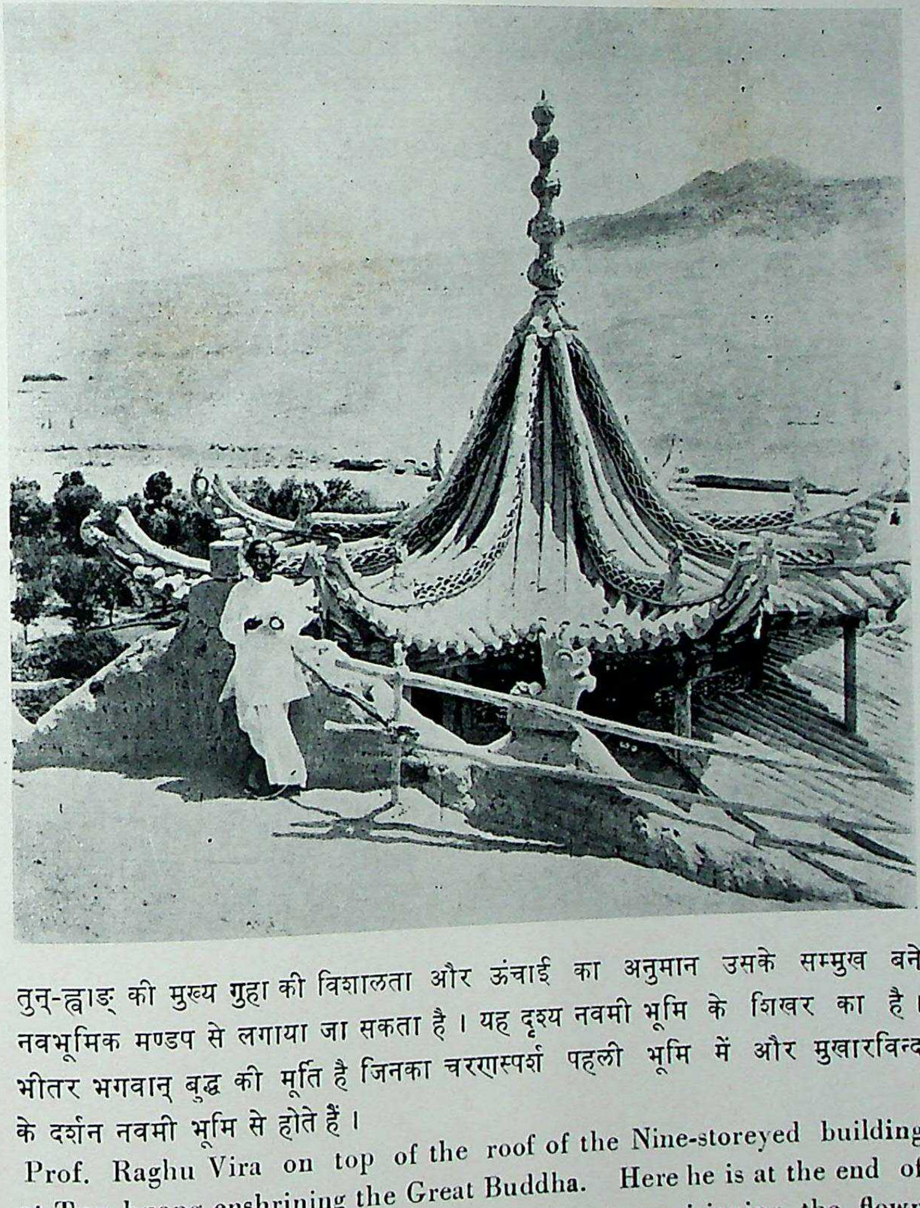

तुन्-ह्वाङ् की मुख्य गुहा की विशालता और ऊंचाई का अनुमान उसके सम्मुख बने नवभूमिक मण्डप से लगाया जा सकता है। यह दृश्य नवमी भूमि के शिखर का है। भीतर भगवान् बुद्ध की मूर्ति है जिनका चरणस्पर्श पहली भूमि में और मुखारविन्द के दर्शन नवमी भूमि से होते हैं।

Prof. Raghu Vira on top of the roof of the Nine-storeyed building at Tun-huang enshrining the Great Buddha. Here he is at the end of his architectonic ascension of the nine *bhūmis* envisioning the flown centuries with their humming of mantras and consubstantiation with the Supreme.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन्-ह्वाङ् गवेषणालय में १०८९ खण्डित अंश और वलिताएं हैं। अध्यक्ष छाङ् आचार्य रघुवीर को ये प्राचीन लिपियां दिखा रहे हैं। इनमें एक पूरा संस्कृत ग्रन्थ है। यह लान्छा लिपि में हैं जो कि भारतीय रञ्जना लिपि है।

Mr. Chang showing to Prof. Raghu Vira the newly discovered rolls and fragments in Chinese, Tibetan, Uigur and other Central Asian languages. Prof. Raghu Vira filmed a complete Sanskrit manuscript in the Lantsha script containing over a hundred folios.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गई । ताओ सम्प्रदायी वाङ को कुतूहल हुआ । उसने तेड़ में छड़ी डाली । छड़ी अन्दर घुसती चली गई । प्रतीत हुआ कि यह पहले द्वार था पीछे बन्द कर दिया गया । यह चीनी चान्द्र पञ्चांग के पञ्चम मास की २६ वीं तिथि थी । विक्रम संवत् १९५७ था । वाङ ने धीरे धीरे ईटें निकालीं । डरते डरते १० वलिताएं बाहर निकाल कर कोष्ठ बन्द कर दिया । इनमें से एक वलिता सिन्-क्याङ के आंगल व्यापार-दूत के पास पहुंच गई । उसने स्टाइन् (Sir Aurel Stein) को दिखाई । स्टाइन् यहां पहुंचा । गुहा के बाहर बने हुए श्वेन्-च्वाङ के चित्र की ओर संकेत कर के स्टाइन् ने वाङ को कहा यह मेरे गुरु हैं । मैं इनका शिष्य हूं । मुझे वलिताएं दो । डरते डरते वाङ ने स्टाइन् का दिया हुआ धन स्वीकार किया और उसकी मांग को बहुत अंश तक पूरा किया । स्टाइन् चित्रमयी तथा अन्य सहस्रों वलिताएं छांट कर ले गया । पश्चिम देशों के विद्वानों में हलचल मच गई । पैरिस् से प्राध्यापक पेलियो (P. Pelliot) आए और छः मास यहां ठहरे । वलिताओं का बहुत बड़ा अंश वे ले गए । जब सूचना पेइ-चिङ पहुंची तब हाहाकार मच गया । बची खुची आठ सहस्र वलिताएं पेइ-चिङ पुस्तकालय में गईं । वे आठ दस बड़े लकड़ी के डिब्बों में सुरक्षित हैं । चीनी में इनका सूचीपत्र भी छप चुका है किन्तु यह सूचीपत्र केवल चीनी विद्वान् ही प्रयोग कर सकते हैं । यह सूचीपत्र हिन्दी में छपना चाहिए । ग्रन्थों के नाम चीनी के साथ साथ मूल संस्कृत में देने चाहिएं ।

वलिताएं थाङ काल की हैं ।

तुन्-ह्वाङ गवेषणालय में अब केवल कुछ खण्डित अंश शेष हैं । ये इन्होंने आस पास की जनता से इकट्ठे किए हैं । इन खण्डित अंशों की संख्या १०८९ है । इनमें से हमने ४०० से अधिक पत्रों का भाचित्रण किया है । इनमें से कुछ अर्वाचीन भोट के ग्रन्थ भी हैं ।

वाङ के आने से पूर्व तुन्-ह्वाङ की गुफाओं में एक और चीनी भिक्षु निवास करता था । वाङ का देहान्त हो चुका, किन्तु यह चीनी भिक्षु अभी तक जीवित है– यी-छान्-चू । इसकी आयु ८३ वर्ष है । इसके साथ एक और चीनी भिक्षु तथा भिक्षुणी हैं । भिक्षुणी का नाम सोउ-चिन्-ल्येन् है । आयु ६७ वर्ष । तीसरे भिक्षु चू-हान्-चिन् हैं । इनकी आयु ५५ वर्ष है ।

भिक्षु यी के पास कुछ भोट धारणियां और सूत्र भी हैं । ये अब गुहाओं में नहीं रहते । इनको गवेषणालय की ओर से गुहाओं के सामने ही कार्यालय के समीप स्वतन्त्र भवन दे दिया गया है जहां ये यथासमय पूजा पाठ करते हैं । इनकी आजीविका का आधार शाकभाजी उगाना और गेहूं आदि की खेती करना है । तुन्-ह्वाङ का छोटा सा नाला इनकी कृषि का आधार है ।

गुहा १७– इसमें लेखयुक्त शिला थी । यह शिला बाहर निकाल दी गई है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुहा १६– इसी के अन्दर १७वीं गुहा है। १६वीं गुहा का भूमिस्तर नीचा है। १७वीं गुहा में प्रवेश करने के लिए नई सीढ़ी बनाई गई है। इस गुहा के मूल चित्र पञ्च-वंश के काल में बनाए गए थे किन्तु जो चित्र अब विद्यमान हैं वे सुङ वंश के हैं।

गुहा ३– यही एक गुहा है जिसमें गीले गारे के लेप पर चित्र बनाए गए। रंग बहुत हलके हैं। सहस्र-हस्त अवलोकितेश्वर का अनुपम चित्र है। प्रत्येक हथेली पर एक आंख है। विश्व में जहां कहीं किसी को कष्ट हो उसके पास एक हाथ पहुंच जाता है और आंख के द्वारा कष्ट स्थान को पहचान कर समुचित निवारण करता है।

गुहाओं में मूर्तियां अधिकांश छिङ वंश की हैं। इनका ढांचा लकड़ी का है। गारे में भूसा और घोड़े के बाल आदि मिले हुए हैं।

गुहा ३५१– यह छिङ वंश की गुहा है। वाङ ने इस गुहा में घूमने वाले दो निधाय बनाए थे। स्टाइन् आदि को वलिताएं देने के पश्चात् कुछ बची खुची वलिताओं के रखने के लिए उसने ये घूमने वाले निधाय बनाए थे। किन्तु धीरे धीरे एक एक कर के ये वलिताएं भी बेच दी गईं। चीन के अनेक पुस्तकालयों, विश्वविद्यालयों, मन्दिरों और व्यक्तियों के पास तुन्-ह्वाङ के ग्रन्थ हैं। हम चीन में जहां कहीं भी प्रसिद्ध स्थानों पर गए हैं वहां प्रायः तुन्-ह्वाङ की वलिताएं देखने को मिली हैं। कहीं एक कहीं दो। लान्-चाओ से अन्तिम बार चलते समय हमको पता चला कि यहां अभी तक तुन्-ह्वाङ की वलिताएं किसी न किसी व्यक्ति के पास मिलती रहती हैं। किन्तु शासन जागरूक है। इसलिए यह सम्भव नहीं कि वे व्यक्ति किसी विदेशी के साथ सम्पर्क कर सकें और वलिताएं बेच सकें।

चीन देश के बाहर ८० वर्ष से पुरानी ऐतिहासिक अथवा कलात्मक वस्तुएं नहीं जा सकतीं। नियम कठोर है। इसका उल्लंघन करना किसी स्वदेशी अथवा विदेशी के लिए न ही उचित है और न ही भय से रहित है।

गुहा ३४६– यह गुहा रेत से ढकी थी। इसका पता १९४९ में लगा।

गुहा ३३५– अमरीकी विद्वान् डा. वार्नर् (Warner) ने तुन्-ह्वाङ के अनेक भित्तिचित्रों को बिगाड़ा है। आज भी २६ स्थान ऐसे हैं जहां उसके बिगाड़े हुए चित्र विद्यमान हैं। उसकी पद्धति यह थी कि विशेष गोंद लगे हुए कपड़े से भित्ति का चित्र-मय लेप उतार लेता था। किन्तु अधिकांश स्थानों पर गोंद के सूख जाने से सफलता न हुई और भित्तिचित्र सदा के लिए बिगड़ गए। चीनी जनता और चीनी शासन, चीनी विद्वान् और चीनी कलाकार वार्नर् से बहुत खिन्न हैं, रुष्ट हैं और उसको गालियां देते हैं। वार्नर् का यह कार्य अविस्मरणीय और अक्षम्य है।

गुहा ३३२– तुन्-ह्वाङ गुहाओं के प्रथम निर्माण का शिलालेख इस गुहा में है।

गुहा ३२९ और ३२८– इन दोनों गुहाओं में भी वार्नर् द्वारा विकृत चित्रों को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन्-ह्वाङ् की गुहा संख्या २८८ में चित्रानुकृति सम्भार पड़ा है । कोई
भी ऐसी आवश्यक गुहा नहीं है जिसका पूरे परिमाण में चित्र न बनाया
जाएगा । भाचित्र बड़े करने पर भी मूल की अपेक्षा बहुत छोटे रहते हैं ।
हाथ से पत्र पर अनुकृति करने से चित्र की मूल विशालता जनता के
सम्मुख आती है । तुन्-ह्वाङ आधुनिक चीन की राष्ट्रीय कला का प्रतीक
बन गया है ।

Prof. Raghu Vira with an artist in Cave no. 288, where precise copying of the murals was in progress in their imposing original sizes.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन-ह्वाङ् की गुहा २८५ में चित्रकार अनुकृति कर रहा है ।

Prof. Raghu Vira and his daughter look at an artist engaged in copying a mural in Tun-huang Cave no. 285. Meticulous care is taken to retain the original colour tones with their aging patina, for which the artists go to the length of sometimes preparing more than two dozens of colour combinations. The dimension of the minutest segment of a mural corresponds to the original.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देखा। दोनों गुहाओं में चित्रकार लगे हुए थे और बड़े परिश्रम से समान परिमाण के पत्र पर चित्र बना रहे थे। ये चित्र प्रदर्शनियों के लिए बनाए जाते हैं। प्रदर्शनी साम्यवादी शासन के जनता-शिक्षण का प्रिय साधन है। तुन्-ह्वाङ चीनी जनता को प्रिय है। राष्ट्रीय कला की निधि है।

गुहा ३२८– इसमें थाङ काल की सुन्दरतम मूर्तियां हैं।

गुहा ३२७– इसमें उन्मग्नार्द्र वेष का अच्छा निदर्शन है। (जलोन्मज्जनवस्त्रकला-शैली–चीनी में थाओ-चुङ-त-थाओ-इ-थ्सु-श्वी) प्राचीन काल में सचैल स्नान अर्थात् सम्पूर्ण वस्त्र पहन कर स्नान की प्रथा थी और जब नदी में डुबकी लगाने के पश्चात् कपड़ों सहित मनुष्य बाहर निकलता था तब वस्त्र शरीर के साथ चिपके हुए होते थे। इस प्रकार के वस्त्रों के चित्रण को चीनी भाषा में उन्मग्नार्द्र वेष कहा जाता है।

गुहा ३२३– इसमें भी चित्रानुकृति-कार्य चल रहा है। महाराज वू-ती के स्वप्न का अमूल्य चित्र, भारत और चीन के प्रथम सम्बन्धों का अनुपम चित्र, वार्नर् ले गया। अब वह तुन्-ह्वाङ में नहीं रहा।

गुहा ३१४– यह बहुत प्राचीन गुहा है। यह स्वी 隋 वंश में बनी। गारे के लेप पर रक्तवर्ण पृष्ठभूमि बनाई गई और उस पर काले और नीले रंग से चित्रों का आलेखन किया गया।

गुहा ३१०– यह १२वीं, १३वीं शताब्दी की शी-श्या गुहा है।

गुहा ३०३– यह स्वी वंश की गुहा है।

गुहा २९४– धुएं से सब काली हो चुकी है।

गुहा २८८ और **२८५–** यहां चित्रानुकृति-सम्भार पड़ा हुआ था। कोई भी ऐसी आवश्यक गुहा नहीं जिसका पूरे परिमाण में चित्र न बनाया जाएगा। भाचित्र बहुत छोटे छोटे होते हैं। बड़े करने पर भी उनका आकार मूल की अपेक्षा बहुत छोटा रहता है। हाथ से पूरे परिमाण के पत्र पर अनुकृति करने से चित्र की मूल विशालता जनता के सम्मुख आती है। जहां मूल चित्र अस्पष्ट और हलका पड़ गया है, छोटे मोटे धब्बे लग गए हैं अथवा लेप उखड़ गया है उसके स्थान में अनुकर्ता चित्रकार सरलता से ही पूर्ति कर देता है। वैज्ञानिक दृष्टि से यह उचित न हो किन्तु जनता के लिए यह अधिक रुचिकर और प्राणवान् चित्र बन जाता है।

तुन्-ह्वाङ के आधुनिक अनुकर्ता चित्रकारों का दृष्टिकोण मुख्यतया जनता का दृष्टिकोण है।

प्राध्यापक वार्नर् ने गुहा २८५ से भी चित्र उतारने की चेष्टा की थी। सफल न हुआ। गवेषणालय के अध्यक्ष श्री छाङ ने बतलाया कि आसपास की जनता ने उसको भगा दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस गुहा में तिथि दी हुई है, जो ५९२ विक्रम के तुल्य है ।

गुहा ५०– यह ठण्डी है । भित्तिचित्र बहुत अच्छी प्रकार से सुरक्षित हैं । इस गुहा का काल पञ्चवंश और सुङ है ।

गुहा ६१– इस गुहा में भी अनुकृति का कार्य चल रहा है । एक चित्र में गालों पर फूलों की पंखड़ियां बनी हुई हैं ।

इसमें वू-थाइ पर्वत के दृश्य चित्रित हैं ।

अनेक अन्य गुहाओं के समान यहां की मूर्तियां भी उठाई जा चुकी हैं ।

गुहा २५४– यह उत्तर वेइ 北魏 काल की है । इसमें गान्धार प्रभाव स्पष्ट है ।

यहां की मूर्ति में कला की पराकाष्ठा है । तीन बोधिसत्त्व, तीन भूखे व्याघ्रों के लिए आत्मसमर्पण कर रहे हैं । इसमें शुद्धोदन-जातक भी है ।

चीन की पुरातनतम वास्तुकला अर्थात् पांचवीं, छठी शताब्दी की काष्ठ-वास्तुकला अन्यत्र कहां मिलेगी ।

उत्तर वेइ कला की एक विशेषता नेत्र, नासिका और ऊर्णा का श्वेत वर्ण है । चीनी कलाकार नेत्र और नासिका में श्याओ 小 अक्षर की कल्पना करते हैं ।

गुफाओं के बीच के मार्ग बहुत छोटे और संकीर्ण हैं । एक गुहा से दूसरी गुहा में जाने के लिए अधिकतम झुकना पड़ता है ।

गुहा २५७– यह भी उत्तर वेइ की गुहा है ।

गुहा २७५– यह बहुत प्राचीन गुहा है किन्तु इसकी मूर्तियां छिङ वंश की हैं । एक स्त्री अपना पांव बच्चे के पांव से नाप रही है । बच्चा बाएं घुटने पर खड़ा किया हुआ है और बच्चे के पांव के पास अपना दाहिना पांव रखा हुआ है । यह उस समय का आदर्श था । अपनी चीन-यात्रा में हमने भी वृद्धा स्त्रियों के पांव देखे हैं और बच्चों के पांव से नापे हैं । इनके पांव बच्चे के पांव जितने अथवा कुछ ही बड़े होते हैं ।

गुहा ४४५ तथा ४३१– इनमें भी चित्रों की अनुकृति की जा रही है ।

तुन्-ह्वाङ जनता की आंखों से कभी ओझल नहीं हुआ । प्रति वर्ष बुद्ध-जन्म के उपलक्ष में एक सप्ताह तक सहस्रों की संख्या में यात्री आते हैं । इस वर्ष भी हमारे जाने से दो तीन दिन पूर्व एक सप्ताह तक १० सहस्र के लगभग यात्री आए थे ।

गुहा ४२८– डा. छाङ का कहना है कि उनको आज तक थाङ काल से पूर्व छाप द्वारा बनाए हुए चित्र किसी भित्ति पर नहीं मिले ।

गुहा ३७२– इस गुहा में से भी भित्ति के एक भाग का चित्र वार्नर् ले गया ।

तुन्-ह्वाङ से मिले हुए वीगूर के पांच क़ाष्ठमुद्र (type) गवेषणालय में रखे हुए हैं । इनका चित्र आगामी पृष्ठ पर दिया गया है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन्-ह्वाङ् की गुहा २७५ में छिङ् वंश की मूर्ति। एक स्त्री अपना पांव बच्चे के पांव से नाप रही है। उस समय का आदर्श था कि नारी के पांव शिशु की भांति छोटे-छोटे रहें जिससे कि वह लीलागमना हो।

In Tun-huang cave no. 275 of the Ch'ing Dynasty, where a lady measures the smallness of her feet with those of an infant.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

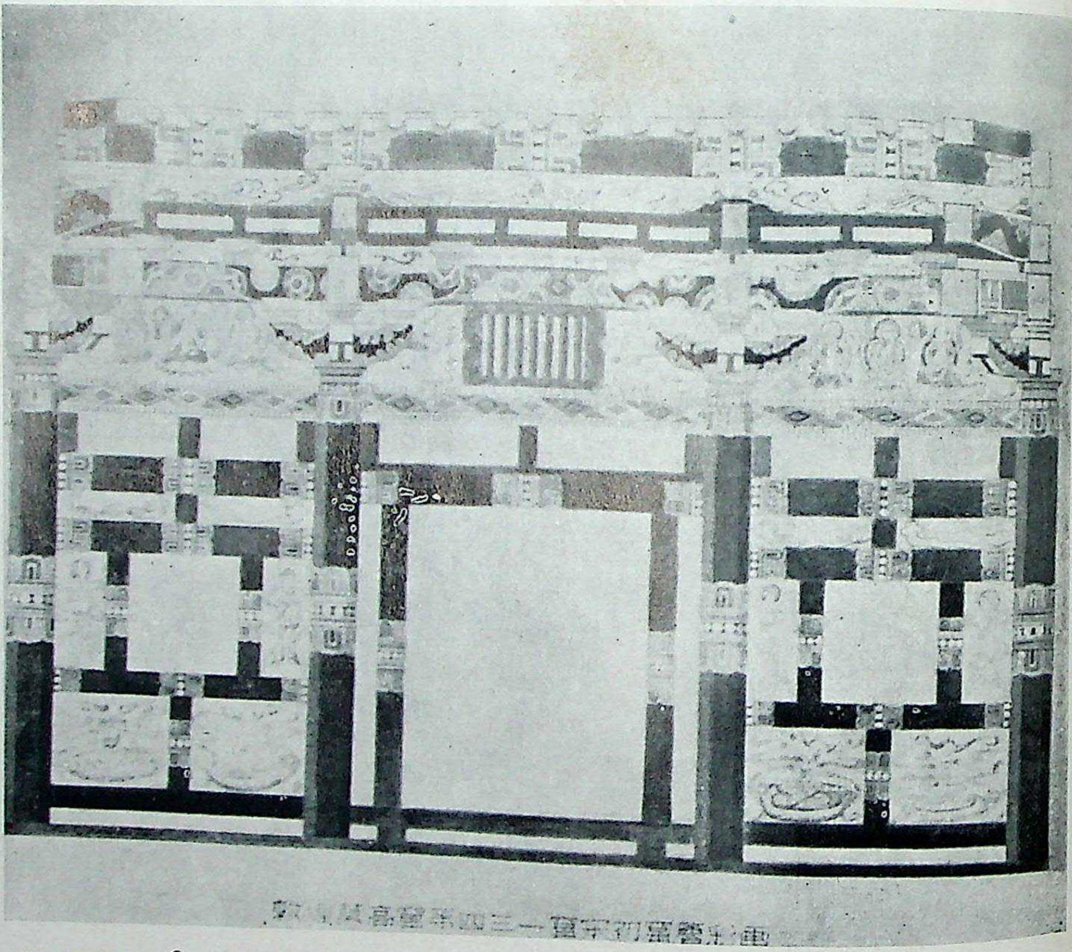

तुन्-ह्वाङ् आधुनिक चीन का परम प्रेरणा-स्रोत है। छतों के चित्रों का प्रयोग नए भवनों में किया जा रहा है। शी-आन् के विशाल विश्रान्तिगृह की छतों पर तुन्-ह्वाङ् के बेलबूटों और अप्सराओं का अनुकरण बहुत सुन्दर रूप से किया गया है।

The use of Tun-huang art motifs in modern China, as illustrated by a sketch kept at the Tun-huang Institute.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन्-ह्वाङ् से प्राप्त वीगूर के पांच काष्ठमुद्रों का चित्र
(प्रत्येक मुद्र चार चार बार चित्रित है)

गुहाओं वाली पहाड़ी लगभग भित्ति के समान है। जहां से भी यह टूटती है वहां से गुहाएं नष्ट होती हैं। पिछले दस वर्षों में ही इस प्रकार से बहुत सी गुहाओं का नाश हुआ है। सौभाग्यवश इनमें चित्र तथा मूर्तियां न थीं। ये प्राचीन गुहाकारों और चित्रकारों की निवास-गुहाएं थीं।

प्राध्यापक पेलियो ने तुन्-ह्वाङ के सब से अधिक चित्र प्रकाशित किए हैं। पेलियो ने छत और मूर्तियों के चित्र छोड़ दिए। पेलियो के पश्चात् और भी कई नई गुफाएं मिली हैं। इनके चित्र आज तक प्रकाशित नहीं हुए। पेलियो के चित्र छोटे छोटे हैं और सूक्ष्म तथा विस्तृत अध्ययन के लिए अपर्याप्त हैं। पेलियो ने काले रंग में चित्र प्रकाशित किए इससे भी उनका महत्त्व बहुत अधिक नहीं रहा।

तुन्-ह्वाङ आधुनिक चीन का परमप्रिय पात्र है। छतों के चित्रों का प्रयोग नए भवनों में किया जा रहा है। हम शी-आन् 西安 में गए। वहां के विशाल विश्रान्तिगृह की छतों और भित्तियों पर तुन्-ह्वाङ के बेल-बूटों और अप्सराओं का अनुकरण बहुत सुन्दर रूप से किया गया है।

तुन्-ह्वाङ ने आधुनिक चीनी कला में क्रान्ति उत्पन्न की है।

मिङ 明 के पश्चात् चीनी राज्य तुन्-ह्वाङ में नहीं रहा, फिर भी तुन्-ह्वाङ चीन की श्रद्धा का स्थान बना रहा। प्राचीन स्थानों का संरक्षण और संधारण ही नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

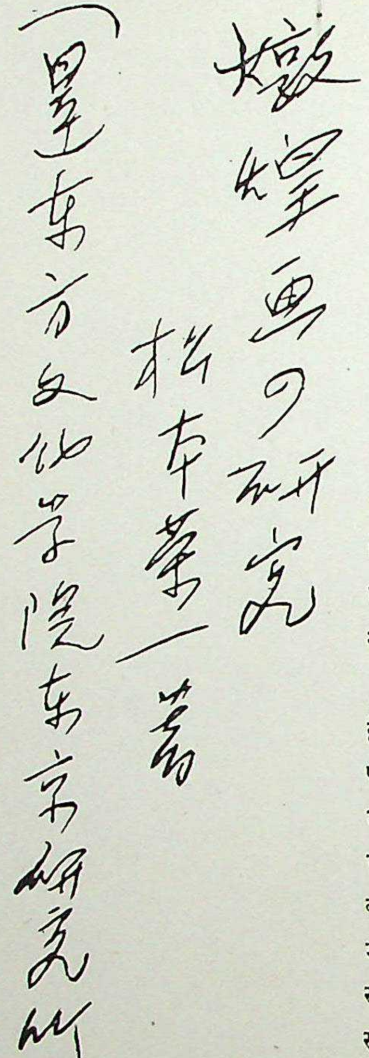

तुन्-ह्वाङ्ग पर लिखित
बृहत् जापानी पुस्तक का नाम
(श्री छाङ्ग के हस्तलेख में)

किन्तु पुनर्निर्माण चीन की विशेषता है। इसी कारण आज चीन में इतने प्राचीन स्थल अवशिष्ट हैं। भारत में भी ऐसा होना चाहिए। केवल पुरावशेष-विभाग यह कार्य नहीं कर सकता। उसका उद्देश्य संरक्षण और संधारण अवश्य है परन्तु पुनर्निर्माण नहीं। इस सम्बन्ध में मतभेद हो सकता है किन्तु यह सर्वथा निश्चित है कि पुनर्निर्माण के बिना प्राचीन वस्तुएं बहुत काल तक नहीं बच सकतीं।

चीनी साहित्य में तुन्-ह्वाङ का वर्णन नहीं मिलता। दो चार उद्धरण भले ही इधर उधर मिल जाएं किन्तु अन्य धार्मिक स्थानों के समान यहां के विस्तृत और विशद ऐतिहासिक विवरण नहीं मिलते। स्टाइन् और पेलियो के पश्चात् चीनी, और चीनी से भी अधिक जापानी में, आधुनिक पुस्तकें लिखी गई हैं। इनमें से सब से बड़ी पुस्तक जापानी भाषा में है।

पहाड़ी की उत्तर दिशा में अनेक छोटी बड़ी गुहाएं हैं। यहां चित्रकार रहते थे। १९४७ में इस ओर से पहाड़ी का कुछ भाग नीचे गिरा और उसमें अनेक गुहाएं भी नष्ट हो गईं। यहां य्वेन् 元 वंश में कुछ लामा रहते रहे हैं। यहां य्वेन् वंश का शिलालेख भी है। य्वेन् वंश की प्रिय चारों भाषाएं भोट, मोंगोल, मञ्जु और चीनी में लिखे हुए मन्त्र अभी सुरक्षित हैं। इतना ही नहीं, संस्कृत भी यहां सर्वोपरि रूप से विद्यमान है। ४६५ संख्या की गुहा भोट और तान्त्रिक है। तुन्-ह्वाङ गवेषणालय ने अभी तक इस पर काम आरम्भ नहीं किया।

पिछले वर्ष छः नई गुहाएं मिलीं। इनकी संख्याएं ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४ और ४७५ हैं।

तुन्-ह्वाङ में अन्तिम चित्र १९२९ में बने।

गुहा १४४– इसमें भोट, शी-श्या और मोंगोल के लेख हैं।

तुन्-ह्वाङ में बारंबार जीर्णोद्धार होता रहा। कोई भी ऐसा युग नहीं जिसमें थोड़ा बहुत जीर्णोद्धार न हुआ हो। इसके परिणामस्वरूप अनेक लेख अवशिष्ट हैं। उदाहरण के रूप में १९१६ का सूचना-फलक है जिस पर जीर्णोद्धारकों के नाम दिए हैं।

गुहा १४८– इसमें नवीं शताब्दी का शिलालेख है। इसमें दाताओं के नाम तथा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संस्कृत, भोट, मोंगोल, फाग्स्पा, शीश्या और चीनी—छः लिपियों में ॐ मणिपद्मे हूँ का शिलाचित्र । यह शिलालिपि मो-गाओ-कू नामक गुहा में है जोकि गान्धार-स्थित बामियान की विराट् प्रतिमाओं की प्रेरणा से ३६६ खृष्टाब्द में एक भारतीय भिक्षु ने बनाई थी । थाङ-कालीन शिलालेख के अनुसार यह तुन-ह्वाङ् के गुहा-कलाप की प्रथम गुहा थी ।

Oṁ maṇi-padme hūṁ in six scripts, namely, Lantsha, Tibetan, Mongolian, Ḥphags-pa, Hsi-hsia, and Chinese at the 'Cave of Unequalled Height' or *Moa Kao k'u*, which was the earliest chapel to be constructed in 366 A. D. by an Indian bhikṣu whose name is preserved as Lo-ts'un in the stone inscription of the T'ang Dynasty.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

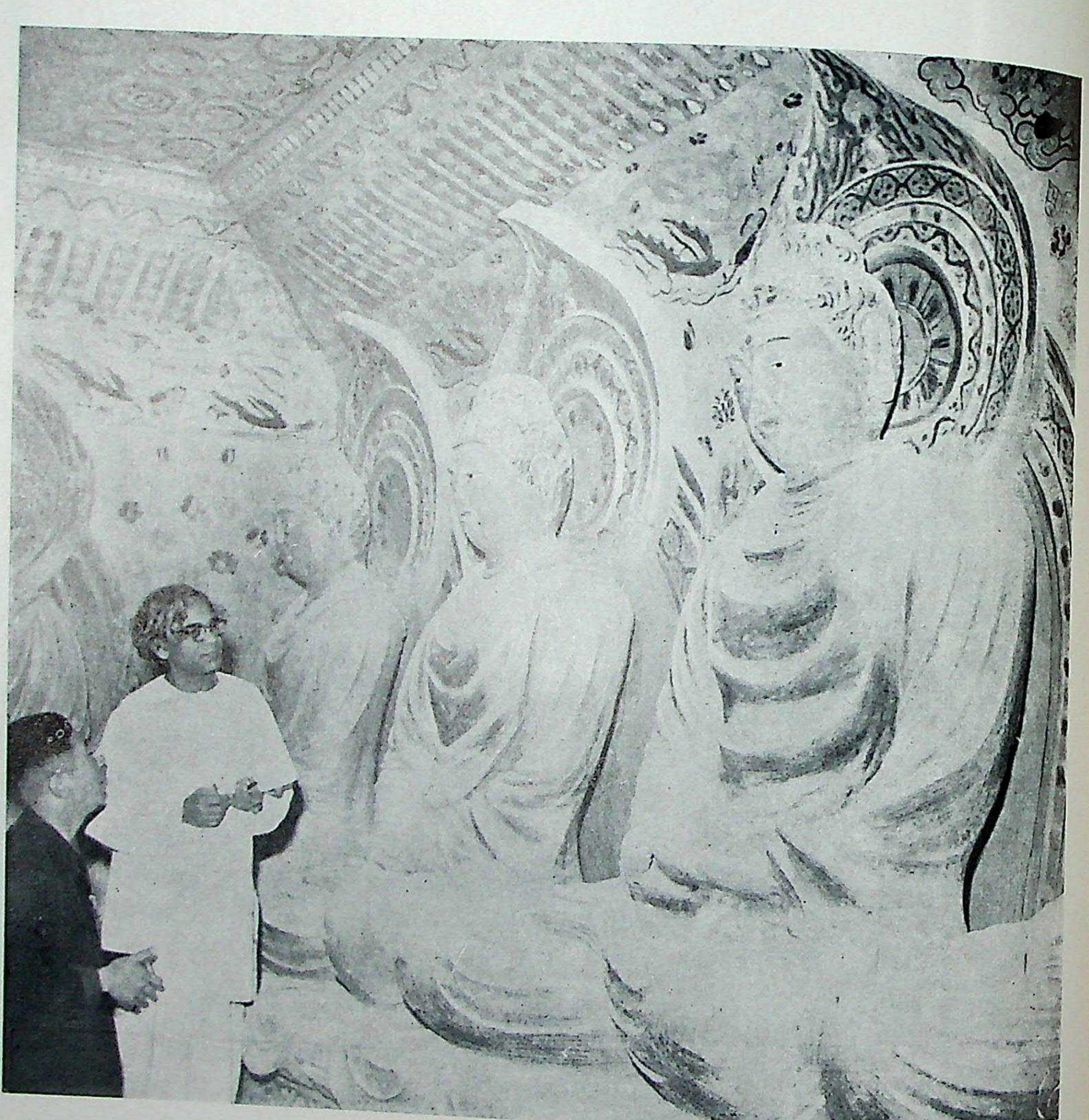

आचार्य रघुवीर स्वी वंश की मूर्तिकला से नेत्रों को आप्यायित करते हुए। स्वी वंश (५८६ से ६१८ खृष्टाब्द) के समय तुन्-ह्वाङ की गुहाओं में बहुत कार्य हुआ। तुन्-ह्वाङ् गवेषणालय के अनुसार ६४ गुहाएं इसी काल में कलाकारों द्वारा प्राणमयी हो गईं। इनमें उड़ती हुई अप्सराओं में गति और शान्ति का अनुपम चित्रण दर्शक को विभोर कर देता है।

Prof. Raghu Vira in a Tun-huang cave of the Sui dynasty (589-618 A. D.) which was the period of most prolific creativity: as many as 94 caves were executed. Some of the best work may be assigned to this age.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्रों का वर्णन है । सारी गुहा लेटे हुए बुद्ध से भरी हुई है । छत में ५०, ५० बुद्ध-मूर्तियों की २२ पंक्तियां हैं । इनके अतिरिक्त अमिताभ-सूत्र का चित्रण भी सुन्दर है ।

गुहा ४६८– पेलियो ने इस गुहा को नहीं देखा । यह उत्तर थाङ काल की है ।

गुहा १३०– यह पूर्व थाङ काल की है । इसकी महती मूर्ति के निर्माण में २५ वर्ष लगे थे ।

गुहा १५४– रूसी सेना का यह निवास स्थान थी । धुएं से चित्रों को बड़ी हानि पहुंची । मो-गाओ-कू का प्रसिद्ध षड्-भाषा शिलालेख इस गुहा से मिला है । मो का अर्थ है "मरु", गाओ का "उच्च", और कू का "गुहा" ।

थाङ काल तक धार्मिक विषयों का चित्रण ही चित्रकारों का प्रधान कार्य था । किन्तु थाङ के पश्चात् जनता के सामान्य जीवन का भी चित्रण आरम्भ हुआ ।

गुहा १५८– यहां भी लेटे हुए बुद्ध हैं । विभिन्न जातियां बुद्ध-चरणों से अपने मस्तक का स्पर्श करके अपने को धन्य मान रही हैं।

गुहा १७२ और १७३– ये सातवीं, आठवीं शताब्दी की गुहाएं हैं । इनका महत्त्व वास्तु की दृष्टि से है । प्रभामण्डल पारदर्शी है । यहां प्राचीन परिदृशा (perspective) का भी निदर्शन है । बोधिसत्त्व अति सुन्दर है ।

गुहा १८०– यहां छोटे छोटे चित्र छाप से बनाए गए हैं, चित्रण से नहीं ।

गुहा १९६– जब हम पहुंचे तो श्रीमती छाङ सीढ़ी पर चढ़ी हुई चित्रों का अनुकरण कर रही थीं ।

गुहा १९७– वृक्ष की प्रत्येक डाली पर फलों के स्थान में बुद्ध बैठे हैं।

तुन्-ह्वाङ में गान्धार के समान संचूर्ण (stucco) अर्थात् चूने और रेत की कोई मूर्ति नहीं मिली ।

गुहा १११– यहां श्वेत्-च्वाङ का चित्र है । यह छिङ काल में बना ।

गुहा २१७ और २२०– यहां चित्रानुकरण हो रहा है । अवलोकितेश्वर कष्टों का निवारण करने के लिए ऊपर से नीचे आ रहे हैं । २२०वीं गुहा का निचला भाग रेत में दबा हुआ था । इसमें एक लेख है जिसमें तिथि दी हुई है ।

गुहा ११२– इसमें मुख तथा शरीर के उत्तर भाग पर सिप्पी का श्वेत रंग जगमगा रहा है ।

गुहा ९८– इसमें भी चित्रानुकृति हो रही है । बिजली के बड़े बड़े दीप लगे हैं । इस गुहा का निर्माण पञ्चवंश-काल में "होता" के राजा ने किया था। गुहा बहुत बड़ी है। गाड़ी घोड़े आदि के मनोहर चित्र हैं । रंग अभी तक स्पष्ट हैं ।

गुहा ९६– बैठी हुई बुद्ध की मूर्ति पर्वत के नीचे से ऊपर तक बनी है । इसकी ऊंचाई ६६ हाथ है । चारों ओर की भित्तियां चित्रों से हीन हैं । इस पर ९ भूमि ऊंचा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लकड़ी का स्तूप बना है। १९२८ से १९३५ तक नौ की नौ भूमियों का निर्माण तुन्-ह्वाङ के एक बढ़ई ने किया था। उसके अनेक सहायक थे। इस गुहा में जीर्णोद्धार के सम्बन्ध में १९३६ का शिलालेख है।

तुन्-ह्वाङ की गुहाओं के सामने नदी के पार य्वेन् काल के मिट्टी के २२ स्तूप हैं। चार स्तूप नाश हो चुके हैं। २२ में से ३ के अन्दर रंगीन भित्तिचित्र हैं। स्टाइन् के मित्र वाङ की समाधि भी अलग बनी है।

गुहा ९८– यहां महती मूर्ति में ग्रीवा में तीन रेखाएं बड़ी स्पष्ट और आकर्षक हैं। कम्बु-ग्रीवा थाङ वंश में आरम्भ हुई और सुङ वंश तक चली। य्वेन् में यह नहीं मिलती।

इस पहाड़ी के साथ ही रेतीली और बजरीमय विस्तृत समभूमि है। यह प्राकृतिक विमानपत्तन है। इससे आगे रेत की बड़ी पहाड़ी है। थोड़ीसी भी वायु चलने पर मनों रेत गुहाओं की पहाड़ी पर आता है। रेत को रोकने के लिए पहाड़ी पर खाई बनाई हुई है। खाई कुछ समय के पश्चात् भर जाती है। रेत को रोकने और आए हुए रेत को हटाने का कार्य मासानुमास और वर्षानुवर्ष करने का है। गुफाओं के सामने यदि चौड़ी पक्की सड़क बन जाए तो नीचे की गुहाओं में रेत का प्रवेश थोड़ा हो जाए।

गुहाओं से कुछ दूर तुन्-ह्वाङ नगर है। गुहाओं की पहाड़ी से यह हरा भरा प्रतीत होता है किन्तु पास जाकर मरुभूमि का भाग ही दिखाई पड़ता है। हरियावल इतनी थोड़ी है कि रेत की तुलना में वह अगण्य हो जाती है।

तुन्-ह्वाङ के गवेषणालय में ३९ कर्मचारी हैं। इनमें से १० प्रशासक, १५ चित्रकार, एक वास्तु-विशेषज्ञ, एक बिजली वाला, एक वहित्र-चालक और शेष श्रमिक हैं। अध्यक्ष श्री छाङ का वेतन २१० युआन् प्रतिमास है। वास्तु-विशेषज्ञ का १३० युआन् प्रतिमास। बिजली और वहित्र-चालक का १०० युआन् तथा सामान्य श्रमिकों का ६० युआन् प्रतिमास है। चित्रकारों को लगभग १२० युआन् प्रतिमास मिलते हैं। वर्ष में वेतन के अतिरिक्त संरक्षण संधारण आदि पर डेढ़ लाख युआन् व्यय हो जाता है। इस प्रकार इस गवेषणालय का पूरा व्यय दो लाख युआन् प्रतिवर्ष है।

गवेषणालय का मुख्य कार्य चित्रों की अनुकृति है। पिछले आठ वर्षों में १५०० चित्रों की अनुकृति हुई है। भाचित्रण का कार्य सितम्बर १९५४ से आरम्भ किया गया है। पहले छः मास में १००० भाचित्र लिए गए हैं। चित्रों का परिमाण ६ वर्ग शतिमान (sq. cm.) है। चित्र सामान्य रूपित्र से लिए जाते हैं। विस्तृत कोण (wide angle)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन्-ह्वाङ् की कला के श्रेष्ठतम निदर्शन स्वी-कालीन हैं । सातवीं शताब्दी का पूर्वार्ध तुन्-ह्वाङ कला का
सुवर्णिम युग था । इस गुहा की छत का केन्द्रबिन्दु पद्मालंकृत है । चारों ओर चार पंक्तियों में सहस्र-
बुद्ध हैं । गुहा में मुख्य मूर्ति भगवान् बुद्ध की है ।

Prof. Raghu Vira in Tun-huang cave no. 319 which belongs to the Sui dynasty, the golden period of Tun-huang art.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन्-ह्वाङ् की गुहा २३८ में आचार्य रघुवीर को श्री छाङ् भित्तिचित्रों के आधुनिक पुनरालेखनों की विशेषताओं से परिचित करा रहे हैं। वास्तविक भित्तिचित्रों के मुख्य कथांशों को कलाकार ठीक उसी परिमाण और सर्वथा उन्हीं रंगों में चित्रित कर रहे हैं। फलत: जातकों का प्रत्येक प्रकरण स्पष्ट और सुबोध हो जाता है। तुन्-ह्वाङ् गुहाओं की भित्तियों पर साधक कलाकारों ने सूत्रों को कलारूप में परिवर्तित कर दिया है और दर्शनशास्त्र बुद्धि एवं हृदय तक ही सीमित न रह कर दृश्य रूप में जनमानस पर अंकित हो जाता है।

Prof. Raghu Vira studying the reproductions of Tun-huang murals with the Director Mr. Ts'ang, while his interpretor and daughter look on.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का प्रयोग नहीं किया जाता। न ही विश्वतोमुख रूपित्र (panorama camera) का प्रयोग किया जाता है। चीन में प्रतिवर्ष नए बनते हुए भवनों को सजाने के लिए तुन्-ह्वाङ आदर्श माना जाता है। इस कारण सजावट के लिए जिन भी चित्रों का प्रयोग हो सकता है उनका भाचित्रण पहले किया जा रहा है। आधुनिक राष्ट्रीय निर्माण के लिए नृत्य और वाद्य के चित्रों का भी प्रथम स्थान है।

गुहाओं की रक्षा करना गवेषणालय का परम कर्तव्य है। गवेषणालय इस दिशा में अच्छा कार्य कर रहा है। केवल चित्रों और मूर्तियों की रक्षा ही नहीं किन्तु गुहा की छतों और भित्तियों की रक्षा करना भी आवश्यक है। पहाड़ी में दराड़ न पड़ें। पहाड़ी सुगठित रहे इसके लिए थोड़े से स्थान पर वज्रलेप (cement) का प्रयोग किया गया है। गुहाओं और भिन्न भूमियों के बीच में सीढ़ी आदि मार्ग बनाना भी गवेषणालय का कार्य है।

पानी का बिजलीघर बनाने की योजना है जिससे पीने के लिए शुद्ध पानी तथा अधिक बिजली मिल सके। अब भी छोटासा बिजलीघर है, परन्तु शुद्ध पानी का प्रबन्ध नहीं। जितने दिन हम तुन्-ह्वाङ में ठहरे, हमने स्नान का नाम तक न लिया। नदी का पानी न पीने के लिए उपयुक्त है, न स्नान के लिए। नदी क्या है– २ पाद चौड़ा और १०, १२ अंगुल गहरा पानी का नाला है। इसके सहारे दक्षिण भाग की गुहाओं के सामने कुछ वृक्ष तथा कुछ एकड़ खेती होती है। कुछ फलों के वृक्ष भी लगे हैं। मरुभूमि के छोटे से अंश को स्वर्गभूमि बना दिया है। इन वृक्षों और खेती के कारण गुहाओं की भी रक्षा होती है। आंधी के समय रेत रुकता तो नहीं किन्तु थोड़ा अवश्य हो जाता है।

ऐतिहासिक और कलात्मक गवेषणा के लिए अभी तक इस संस्था में विशेष प्रबन्ध नहीं। इस दिशा में थोड़ा बहुत काम अवश्य हुआ है किन्तु वह अभी अन्तिम रूप में नहीं आया। इसको अन्तिम रूप देने और प्रकाशित करने के लिए अनेक वर्ष लगेंगे।

सर्वप्रथम हम गवेषणालय की गुहा रेखाचित्र पञ्जिका का उल्लेख करेंगे। यह पञ्जिका हाथ से लिखी हुई है। प्रत्येक गुहा की रूपरेखा के एक दो अथवा अधिक चित्र बनाए हुए हैं। ये चित्र नाप कर नहीं बनाए गए। केवल स्मृति और आंख के सहायक हैं। उदाहरण-स्वरूप हम १५४वीं गुहा को लेते हैं। इसमें ११ रेखाचित्र हैं।

प्रथम रेखाचित्र ... द्वार, पूर्वाभिमुख (आभ्यन्तर रूप), भित्तिचित्र।
द्वितीय रेखाचित्र ... दक्षिणाभिमुख भित्ति (आभ्यन्तर), भित्तिचित्र।
तृतीय रेखाचित्र ... पश्चिमाभिमुख भित्ति (मूर्त्यालय आभ्यन्तर), भित्तिचित्र।
चतुर्थ रेखाचित्र ... उत्तराभिमुख भित्ति (आभ्यन्तर), भित्तिचित्र।
पञ्चम रेखाचित्र ... गुहा-मुख (façade), कोई भित्तिचित्र नहीं।
षष्ठ रेखाचित्र ... मूर्त्यालय– उत्तर, पश्चिम, दक्षिण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सप्तम रेखाचित्र . . . मूर्त्यालय की अन्दर की छत ।

अष्टम रेखाचित्र . . . सामान्य अन्दर की छत, इसमें बहुत कुछ विकार हो चुका है।

नवम, दशम, एकादशम रेखाचित्र . . . द्वार के तीन पार्श्व– इन सब में कुछ न कुछ विकार हुआ है । जहां जहां आवश्यकता समझी गई है वहां वहां माप दिया गया है ।

जहां जहां भित्तिचित्र शब्द लिखा गया है वहां रेखाचित्र में भित्तिचित्र नहीं दिए गए किन्तु केवल निर्देश किया गया है कि यहां भितिचित्र हैं ।

गुहाओं के रेखाचित्रों की दो पञ्जिकाएं हैं ।

प्रत्येक गुहा का वर्णन प्रायः एक दो पृष्ठ में समा जाता है ।

यह वर्णन-पञ्जिका अभी प्रारम्भिक अवस्था में है। इसमें बहुत कुछ विस्तार और आवृत्ति की आवश्यकता है ।

गुहाओं में लेख– लेखों की भी दो पञ्जिकाएं हैं । लेखों की अनुकृति आंख से की गई है रूपित्र से नहीं । लेखों का क्रम वंशानुसार है ।

गुहाओं के चित्रों और मूर्तियों का वर्णन– यह पञ्जिका भी प्रारम्भिक रूप में है।

गुहाओं की अन्तर्वस्तु-पञ्जिका– इस पञ्जिका में गुहाओं की तीनों संख्याएं (पेलियो की, छाङ की और अन्तिम गवेषणालय की संख्या), गुहा के परिमाण का निर्देश (छोटा परिमाण, मध्य परिमाण, बड़ा परिमाण), गुहा के बनने तथा जीर्णोद्धार का समय, गुहा में क्या क्या है (कितनी मूर्तियां और कहां कहां पर कितने चित्र और किस किस भित्ति, छत, पार्श्व, मूर्त्यालय, द्वार के अन्दर बाहर आदि किस स्थान पर), क्या इस गुहा में कोई लेख है तथा अन्य विशेषताएं (वास्तु-कला, धर्म तथा इतिहासादि की दृष्टि से) । पिछले दस वर्षों में इस पञ्जिका की दो बार आवृत्ति हो चुकी है। अब भी यह पञ्जिका प्रकाश्य रूप में नहीं ।

शिलोत्कीर्ण लेखों की पञ्जिका

तुन्-ह्वाङ गुहाओं के सम्बन्ध में आज तक की समालोचनाएं– यह कार्य अभी प्रारम्भिक अवस्था में है ।

तुन्-ह्वाङ में बौद्ध कला का आरम्भ और विकास– यह पुस्तक तुलनात्मक दृष्टि से लिखी जा रही है । यह भी पूर्वावस्था में है ।

तुन्-ह्वाङ की गुहाओं की रक्षा के लिए पहाड़ी के उपरि स्तर पर मोटा वज्रलेप होना चाहिए । यदि यह लेप बजरी से खचित कर दिया जाए तो पहाड़ी की रूपाकृति में परिवर्तन न होगा, देखने में पहाड़ी प्राकृतिक प्रतीत होगी ।

गुहाओं में मिट्टी की बनी हुई बड़ी मूर्तियां, जो पहले भित्ति के साथ लगी हुई थीं, अब परे होती जा रही हैं । इन मूर्तियों को सहारा देने की आवश्यकता है ।

तुन्-ह्वाङ में ४७६ गुहाएं हैं । और छोटे बड़े चित्रों की संख्या सहस्रों में है । यह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन्-ह्वाङ् संस्था के अध्यक्ष श्री छाङ् आचार्य रघुवीर को थाङ् वंश (६१८-९०५ खृष्टाब्द) के भित्तिचित्र दिखा रहे हैं। इनमें सुखावती स्वर्ग और राज्ञी वैदेही चित्रित हैं।

Prof. Raghu Vira inspecting murals in Cave 217 (P. 70) of the T'ang dynasty (618-905 A. D.) which depict a paradise scene and the meditations of Queen Vaidehī.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन्-ह्वाङ् की एक थाङ्-कालीन गुहा में आचार्य रघुवीर तथागत की प्रतिमा के विषय में टिप्पण लेते हुए।

Prof. Raghu Vira musing over a sculpture of the T'ang dynasty in a Tun-huang cave.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आवश्यक है कि विद्वानों तथा जनता को प्रतिवर्ष तुन्-ह्वाङ के सम्बन्ध में कोई न कोई विशेष-विषय-प्रतिपादक ग्रन्थ मिलता जाए । उदाहरण के लिए हम कुछ शीर्षक नीचे देते हैं—

(१) लिखित और उत्कीर्ण लेख—इन लेखों में कुछ ऐतिहासिक हैं किन्तु बहुत बड़ी संख्या दाताओं के नामों की है ।
(२) वाद्य
(३) हस्तमुद्राएं
(४) वास्तुकला
(५) जातक-कथाएं
(६) वेष-भूषा
(७) विभिन्न रंग और उनका प्रयोग
(८) गुहाएं कैसे खोदी गईं
(९) प्रत्येक युग की विशेषताएं
(१०) फूल और बूटे
(११) सामान्य जीवन के चित्र
(१२) अप्सराएं
(१३) देवगण
(१४) बोधिसत्त्व
(१५) अर्हत्
(१६) बुद्ध
(१७) मञ्जुश्री
(१८) समन्तभद्र
(१९) अवलोकितेश्वर 觀音
(२०) दातृगण
(२१) तुन्-ह्वाङ का अन्य गुहाओं के साथ सम्बन्ध
(२२) मूर्तियां
(२३) गुहाओं के जीर्णोद्धार का इतिहास ।

चीनी शासन तुन्-ह्वाङ की कला को राष्ट्रीय कला मानता है और इस के द्वारा चीनी कला में नए जीवन के संचार के लिए यत्न कर रहा है ।

हमने युन्-काङ 雲岡 में भी देखा कि उद्धार का कार्य चला हुआ है । पिछले शासनों में इन राष्ट्रीय कला-केन्द्रों की अवहेलना और उपेक्षा की गई । अब शासन जागरुक है । हम आशा करते हैं कि कुछ वर्षों में चीन का प्राचीन कलावैभव जनता के सामने आ सकेगा । व्यय की दृष्टि से केवल एक कठिनाई है कि ऐतिहासिक स्थान अत्यधिक हैं । सभी में उद्धार की आवश्यकता है । शासन की पद्धति यह है कि स्थानीय जनता के प्रतिनिधि केन्द्रीय शासन को सुझाव देते हैं और वहां से अनुमति मिलने पर उद्धार का कार्य आरम्भ करते हैं । विहारों और मन्दिरों के उद्धार में पुजारियों के सुझाव के अनुसार कार्य होता है ।

किन्तु एक बड़ी भारी न्यूनता है कि जीर्णोद्धारकों के हृदय में सौन्दर्य की भावना तो है किन्तु यह वैज्ञानिक भावना नहीं कि परिवर्तन न किया जाए, केवल मूल रूप को रखा जाए । वैज्ञानिक भावना के अभाव से जीर्णोद्धार में कितनी प्राचीन वस्तुएं नाश हो जाएंगी यह जानना सरल न रहेगा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन्-ह्वाङ के शिलालेख

मो-गाओ-कू ("मरु-महा-गुहा") का शिलालेख– च-चन् युग का आठवां वर्ष = १४०५ विक्रम। यह ख्वेन् वंश का लेख है। इस पर छः भाषाएं लिखी हुई हैं। सबसे ऊपर संस्कृत है। उसके नीचे और आसपास शेष पांच भाषाएं। ऊपर संस्कृत, उसके नीचे भोट। दाएं हाथ चीनी और शी-श्या, बाएं हाथ फाग्स्पा और वीगूर।

दक्षिण पार्श्व में संरक्षकों के नाम दिए हैं। एक राजा, उसकी गणिका तथा पांच पुत्र। वाम पार्श्व में भिक्षुओं के नाम हैं।

दूसरा शिलालेख– यह खण्डित है। ऊपर गान्धार शैली में कुछ मूर्तियां हैं और नीचे संस्कृत तथा चीनी में लेख हैं। कुछ पुरुषों के नाम भी दिए हैं।

तीसरा शिलालेख– यह भी खण्डित है। सातवीं शताब्दी के चोउ वंश के समय का है। इस काल में चन्द्रमा के लिए केवल गोल चक्र लिखा जाता था तथा सूर्य के लिए गोलचक्र के बीच में ३ के अंक जैसा चिह्न। इस लेख में गुहा के निर्माण का वर्णन है।

चौथा शिलालेख– तिथि ता-चुङ का पञ्चम वर्ष पञ्चम मास = ९०८ विक्रम।

यह शिलालेख महाराज की ओर से है। महाराज श्वेन्-चुङ ने भिक्षु वू-जङ को आदेश दिया कि तुम सा-चाओ मण्डल में (आधुनिक तुन्-ह्वाङ) भिक्षुओं और मन्दिरों का नियन्त्रण करो। श्वेन्-चुङ के पिता ने बौद्धों पर बहुत अत्याचार किए थे। इसने बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार किया।

४-६-'५५

आज प्रातः तुन्-ह्वाङ की दर्शक-पञ्जिका में अपने स्नेह को हमने इन शब्दों में प्रकट किया—

"भारत तथा चीन अनेक शताब्दियों के आध्यात्मिक सखा हैं। अमितायु, अमिताभा, मैत्री, शान्ति, सर्वकल्याण हमारे ध्येय तथा लक्ष्य रहे हैं।

"मैं और सुदर्शना तुन्-ह्वाङ आए। दर्शन पाकर अत्यन्त संतोष हुआ। जीवन, भारत-चीन का जीवन, यहां १६०० वर्षों से मूर्तिमय खड़ा है।

"पहाड़ी ने अपना अमरत्व मूर्तियों तथा चित्रों को दिया। मूर्तियों तथा चित्रों ने अपना मूक सन्देशवाहक पहाड़ी को बनाया। अन्योन्याश्रय से भारत की लुप्त संस्कृति और चीन की अद्भुत तथा निरुपम कला की रक्षा हुई।

"प्यासे मेघ के समान हम तुन्-ह्वाङ की कला तथा सन्देशभरी निधि में निमज्जन करके, अपने को आप्यायित तथा तृप्त करके, अब भारत लौट रहे हैं कि अपनी भूली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन्-ह्वाङ् में ब्राह्मी का ध्वजस्तम्भ-लेख, जिसपर प्रतीत्यसमुत्पादसूत्र उत्कीर्ण है । यह सूत्र नालन्दा से प्राप्त इष्टकालेख से मिलता है ।

A dhvaja-stambha from Tun-huang with Gandhara sculptures and a Brāhmī inscription which may be assigned to the fifth century on palaeographic grounds. It is a fragment of the Pratītyasamutpāda-sūtra, identical with that on the Nalandā bricks [Epigraphia Indica 21(1932):193-204].

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जनता, अनभिज्ञ जनता को भी इस सांस्कृतिक अमृतपान से मंगलमय बना सकें।

"आतिथ्य के लिए हम श्रीमान् तथा श्रीमती छाङ के आभारी हैं।"

"India and China have been comrades in spirit from centuries. Immortal life (Amitāyu), brilliance and glory in unlimited measure (Amitābha). friendliness Maitrī), Peace (Śānti), Good to all (Sarva-Kalyāṇa) have been our goal and as-(piration.

"I and my daughter Sudarshana wended our way to the hills of Tun-Huang. We have seen the sight, imbibed it, assimilated it, into our blood-stream, and that has ennobled us. Sixteen centuries have receded to give us an intimate view of how China and my country made a steel bond of love that has endured.

"The hill has imparted its immortality to the figures and paintings, while the latter have made the hill the silent but ever-aetive messenger of their sweatness, vividness, and a life that transcends itself in the service of truth and toleration, progress and realisation of visions.

"Here some of the last threads and strands of my own land's fabric are seen in their prime youth. Here is the proud treasure of the ancient Han and other races, commingled, convibrant, harmonious, symphonic, a marching together shoulder to shoulder.

"We two, the specks of a thirsty cloud, came to replenish ourselves at the ocean of plenty that is Tun-Huang. Replenished we return to our land, eager to shower on our compatriots, who are equally eager, the cultural sap of which we have drunk deep.

"We have had the hospitality of two unrivalled hosts Dr. and Mrs. Chang, artists and scholars. To them goes our friendly warmth and gratitude".

श्री छाङ ने लगातार तीन दिन दो दो घण्टे बैठ कर सुदर्शना का तैलचित्र पूरा किया। यह अभी सूखा नहीं। इसको कैसे ले जाया जाए यह भी एक समस्या बन गई। पीछे से भेज देंगे सो हमको रुचिकर नहीं। अन्त में तैलपत्र बीच में लगा कर चित्र लपेट कर बांध दिया गया। अभी सूखने में तीन चार दिन लगेंगे।

आठ से पौने नौ तक पैंतालीस कला में श्री छाङ ने मेरा अंकनी-चित्र बनाया।

तत्पश्चात् दस बजे के लगभग ४६५ संख्या की तान्त्रिक गुफा देखने गए। यह गुफा पहाड़ी के उत्तर कोने के समीप है। इस गुफा के आसपास की गुफाओं पर भी बाहर लाल अक्षरों में— ओम् मणि पद्मे हूं— अनेक भाषाओं में लिखा हुआ है। सदा ही सबसे ऊपर संस्कृत सिद्धम् अक्षरों में, फिर चीनी, भोट, तथा मोंगोल अक्षरों में। ४६५ संख्या की गुफा छोड़ कर अन्य में न चित्र हैं न मूर्तियां। इन गुफाओं की संख्या १०० के लगभग है। श्री छाङ का कहना है कि ये गुफाएं चित्रकारादि के लिए निवास-स्थान का काम देती रही थीं। इस आशय के लेख कुछ गुफाओं में मिले हैं। हमने स्वयं ये लेख नहीं देखे। इन लेखों में वास्तविक शब्दप्रयोग क्या है सो भी हमको नहीं बताया गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४६५ संख्या की गुफा में चार बल्लियों की सीढ़ी बनी है। यह सीढ़ी सदा यहां पर ही लगी रहती है। एक एक करके हम लोग ऊपर चढ़े। गुफा का अग्रिम भाग वराण्डे के समान है। अन्दर के भाग में ऊंची वेदी बनी है। इस वेदी पर पहले मूर्तियां रखी हुई थीं पर आज कुछ नहीं। वेदी गोल है। वास्तव में चार वेदियां हैं जो एक दूसरे के ऊपर बनाई गई हैं। प्रत्येक ऊपर की वेदी, नीचे की वेदी से, डेढ़ पाद के लगभग छोटी है। मूर्तियां रखने के लिए ये सुन्दर पीठ का काम देती होंगी।

पूर्व की ओर द्वार है। समस्त तुन्-ह्वाङ की गुफाएं पूर्वाभिमुख हैं। सामने एक शैलशिखर है जिसके सम्बन्ध में यह सम्प्रदाय है कि सायंकाल अस्त होते हुए सूर्य की किरणों में यह स्वर्ण के समान चमकता है। इस स्वर्णप्रभास को देख कर ही इसके सामने गुफाओं की रचना की गई थी।

४६५ की आभ्यन्तर गुफा की दक्षिण भित्ति पर यब्-युम् अथवा नद्धयुग शैली के बहुत से चित्र हैं। प्रत्येक देव के साथ उसकी शक्ति ने आलिंगन किया हुआ है। इनको अश्लील मान कर किसी ने स्थान स्थान पर खुरच दिया है।

प्रत्येक भित्ति के तीन भाग हैं। पूर्व भित्ति का एक भाग मध्य का द्वार है। दोनों ओर के दो भाग चित्रों से भरे हैं।

छत के पांच भाग हैं। इनमें से पूर्व भित्ति का भाग सुन्दरतम और सुरक्षिततम है। अन्य गुफाओं में भी प्रायः यही स्थिति है। इसका कारण स्पष्ट है। यहां न आंधी का प्रकोप चित्रों को बिगाड़ता है और न ही मनुष्यों का प्रकोप। इस गुफा में हम बहुत से चित्र लेना चाहते थे किन्तु स्फुरदीपों के अभाव में केवल सात ही चित्र ले पाए।

यही एक गुफा है जिसमें भोट चित्र बने हैं। इस कारण इस गुफा का विशेष महत्त्व है।

तुन्-ह्वाङ का प्रदेश सूखा और रूखा है। केवल थोड़े से भाग में (और यह भाग वह है जिसके सामने गुफाओं में चित्र बने हैं) पिछले ४०, ५० वर्षों में बहुत से वृक्ष लगाए गए हैं। गेहूं आदि की खेती भी होती है। यद्यपि इस ऋतु में नाला बहुत छोटा है किन्तु कभी कभी इस नाले में पर्याप्त पानी आता है। आजकल यह पानी पहाड़ी से कुछ पग दूर बह रहा है किन्तु जब यह पानी पहाड़ी के साथ बहता है तो कुछ रेत और बजरी अपने साथ बहा ले जाता है। १९४७ में पहाड़ की भित्ति के सामने का कुछ भाग, जिसमें चित्रकारों के रहने की गुफाएं भी थीं, नीचे टूट कर गिर गया।

यहां यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि पूर्व की ओर से यह पहाड़ी भित्ति के समान है। इसलिए नीचे से बजरी का निकलना ऊपर तक की पहाड़ी को गिरा देता है।

शीत ऋतु में अधोभूमिगत जल ऊपर निकल आता है और जम कर हिम बन जाता है। यह दृश्य अति रमणीय होता होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पानी की धार ४६५ गुफा से बहुत आगे नहीं जाती । रेत में विलीन हो जाता है । रेत कितना पानी चूसता है इसका अनुमान इस बात से लग सकता है कि दो कोस ऊपर जाकर ही नाला पर्याप्त बड़ा दिखाई पड़ता है । इसकी घरवर ध्वनि पर्याप्त दूर तक गूंजती है । श्री छाङ से विदित हुआ कि २०, २५ कोस ऊपर जाकर बिजली का जनित्र लगाने की योजना है ।

तुन्-ह्वाङ में आकर हमने केवल एक बार ही बड़ी बड़ी गुफाओं का अवलोकन किया । इसमें हमको पूरा डेढ़ दिन लगा । डेढ़ दिन में हम केवल इतना ही निश्चय कर पाए कि किन किन का रंगीन भाचित्र लेवें । हमने पेलियो के चित्र देखे । ये काले रंग में हैं । परिमाण इतना छोटा है कि मूल चित्रों का अध्ययन इनके द्वारा नहीं किया जा सकता । इनमें सौन्दर्य भी नहीं और पूर्णता भी नहीं । पेलियो के ग्रन्थ प्रकाशित होने से लाभ यही हुआ कि संसार को तुन्-ह्वाङ की सत्ता और महत्ता का भास हुआ ।

आज तुन्-ह्वाङ संस्था का मुख्य कार्य चित्रों की अनुकृति करना है । अनुकृति करने के लिए गुफाओं में बिजली का प्रकाश करते हैं । बिजली उत्पन्न करने के लिए विशेष जनित्र लगाया हुआ है । दस बारह गुफाओं में हमने चित्रकारों को अनुकृति करते हुए अथवा उनका सम्भार लगा हुआ देखा । यद्यपि धब्बे आदियों को अनुकृति नहीं करते किन्तु जहां पुराना रंग उड़ गया उसे उड़ा हुआ रहने देते हैं । अनेक चित्रों में मूल रूप के निर्माण का भी यत्न किया गया है । जिन चित्रकारों ने इन गुहाओं में वर्षों व्यतीत किए हैं वे ही मूल रूप का अनुमान कर सकते हैं ।

काले चित्र सामान्य परिचय के लिए अच्छे हैं । इनकी अपेक्षा रंगीन भाचित्र कहीं अच्छे हैं । किन्तु इनकी भी अपेक्षा कुशल चित्रकारों द्वारा अनुकृत मूल परिमाण के चित्रों से ही गुफाओं की विशालता, रमणीयता और प्रभाव का ज्ञान हो सकता है ।

हमारा विचार है कि हाथ से अनुकृति किए हुए मूल परिमाण के रंगीन चित्र और रंगीन छोटे परिमाण के भाचित्रों को साथ रख कर अध्ययन होना चाहिए ।

रंगीन भाचित्र इतने स्पष्ट होने चाहिएं कि उनमें कोई भी रेखा अस्पष्ट न हो और यथासम्भव रंगों की सब छटाएं भी जैसी की तैसी आई हुई हों ।

चित्रों की परस्पर स्थिति दिखाने के लिए घूमने वाले रूपित्र से काले चित्र लेने चाहिएं ।

हमारी अपनी योजना के अनुसार २० भाचित्रक अवश्य होने चाहिएं । ये दो तीन मास में अपना कार्य पूरा कर सकते हैं । प्रत्येक भाचित्रक के साथ एक वर्णन लिखने वाला व्यक्ति भी चाहिए । चित्रपट्टियां यदि साथ साथ धुल सकें तभी काम पूरा हो सकेगा । धुलने के लिए प्रतिसप्ताह अथवा सप्ताह में दो बार विमान द्वारा चित्रपट्टियां बर्लिन्, बम्बई अथवा पैरिस् जानी चाहिएं । अपने साथ प्रबन्ध हो सके तो और भी उत्तम ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र लेते समय एक पाद-श्रेणी (footscale) अथवा कोई अन्य वस्तु जिसकी निश्चित लम्बाई हो, तथा अनेक रंगछटाओं वाली पट्टी मूल चित्र के साथ रख देनी चाहिए। जब भाचित्र धुल जाए तब इस पट्टी की छटाओं के भाचित्रण को देख कर सरलता से और पूर्णरूप से निश्चय हो जाया करेगा कि हमारा भाचित्र कितना सफल हुआ है। रेखाओं की सूक्ष्मता मूल चित्र के परिमाण पर भी निर्भर रहेगी।

तुन्-ह्वाङ में तीन लामा रहते हैं। इनमें से एक भिक्षुणी है। बड़े लामा प्रसिद्ध वाङ के समकालीन हैं। किन्तु इनसे बात करना और प्रश्नों का उत्तर लेना बहुत समयापेक्षी है। भिक्षुणी बहुत श्रद्धाशीला प्रतीत हुई। अपने निर्वाह के लिए तीनों खेती का काम करते हैं। वर्ष में केवल एक बार बुद्ध जन्मदिवस पर यात्री दर्शन करने आते हैं। भेंट के रूप में वे रुपया नहीं लाते किन्तु छोटे मोटे प्राणी ले आते हैं सो भी सहस्रों में से एक दो।

इस वर्ष बुद्ध का जन्मोत्सव २७ मई को समाप्त हो चुका था। हमारे पहुंचने से दो दिन पूर्व। इस वर्ष दस सहस्र के लगभग दर्शक आए थे।

तुन्-ह्वाङ में सीढ़ियां मिट्टी की कच्ची ईंटों की बनी हुई हैं। यदि सीढ़ियों पर दस सहस्र व्यक्ति चढ़ने उतरने लगें और प्रत्येक दर्शक हस्तगम्य चित्रों को एक एक बार छूने लगे अथवा उनके कपड़े भित्तिचित्रों से रगड़ खाने लगें तो तुन्-ह्वाङ का कितना ही नाश हो जाएगा। इसलिए यात्रियों का आना जाना बड़ी मूर्ति के दर्शनों और धूपादि जलाने तक ही सीमित है।

आज हम तुन्-ह्वाङ से दोपहर दो बजे चले। आते समय हम अपने साथ पेइ-चिङ से वर्षा लाए थे, सो धूल का वैभव पता न चला था। इस बार हमारी यात्रा का आरम्भ-बिन्दु तुन्-ह्वाङ था। धूल और वायु अपने यौवन पर थे। यद्यपि हमारी गाड़ी चारों ओर से ढकी थी फिर भी धूल का अनुभव मुख और नासिका कर रहे थे। सायं आन्-शी पहुंचे। यात्रा लगभग साढ़े तीन घण्टे रही। इस बार हमारी गाड़ियां आनन्द से चलती रहीं। वायु विरुद्ध दिशा से आ रही थी अतः गन्त्र शीघ्र उष्ण नहीं होता था। मार्ग में एक जलकूप के समीप गाड़ियों को पानी पिला कर हम यथापूर्व अपने स्थान पर आ गए। इस कूप के साथ एक कथा सम्बद्ध है कि यहां एक वृद्ध भिक्षु भेड़ियों को पानी पिलाता है। इसी के समीप कुछ मिट्टी के खण्डहर खड़े हैं। इनमें से एक में पांच मूर्तियां हैं, बिना सिर की। ओम् मणि पद्मे हूं भोट भाषा में लिखा है।

५-६-५५

प्रातः आठ बजे आन्-शी से चले। १४० क्रोशक के पश्चात् एक छोटे से गांव में मुंह हाथ धोकर भोजनादि किया। लगभग दो घण्टे ठहर कर डेढ़ बजे हम फिर आगे बढ़े।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुन्-ह्वाङ् के बड़े लामा, श्रद्धाशीला भिक्षुणी, एक और लामा, तुन्-ह्वाङ् गवेषणालय के अध्यक्ष श्री छाङ्, आचार्य रघुवीर, उनकी पुत्री तथा अन्य लोग ।

Prof. Raghu Vira and the members of his expedition at Tun-huang, with Mr. Ts'ang the Director of the Tun-huang Institute, his wife, two Lamas and a Lamaist nun.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

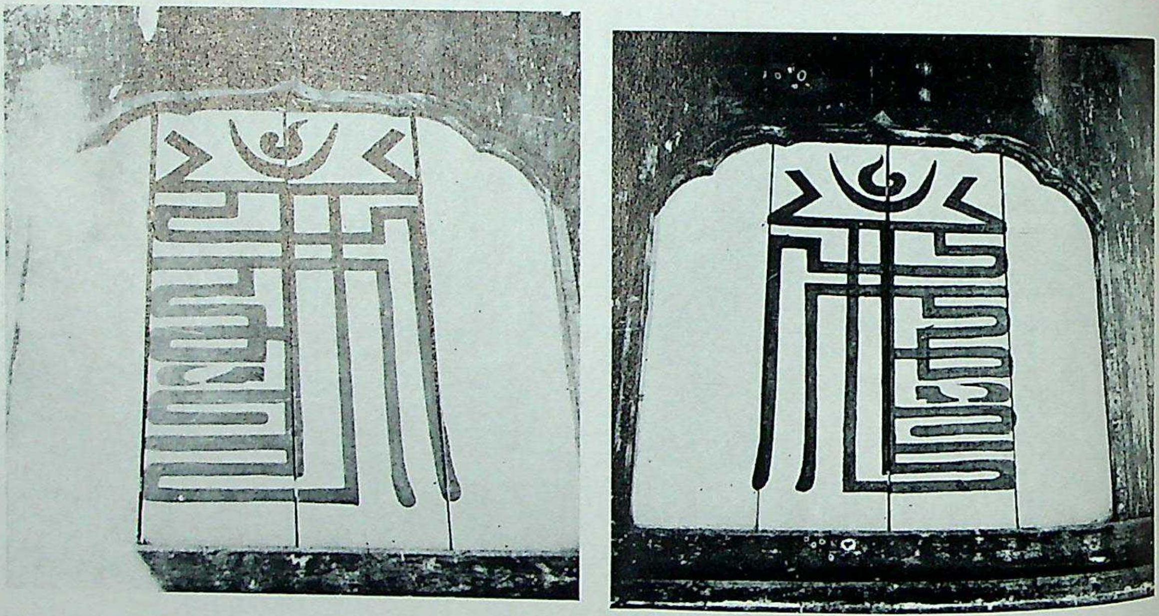

कान्-सू प्रान्त की राजधानी लान्-चाओ के रमणीय स्थान पञ्चोत्स के मन्दिर के द्वारपट कालचक्र मन्त्र से अलंकृत हैं।

The normal and inverted monogrammatic Kālacakra bījas on the two doors of the Five Spring Temple at Lanchow.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस बार हमें हिमशिखर कहीं दिखाई न पड़े। बड़ा आश्चर्य हुआ कि ५, ६ दिन में ही इतनी हिम लुप्त हो गई। सम्भवतः कोसों तक फैली हुई धूल की आंधी इसका कारण थी।

सायंकाल लगभग पांच बजे चीन की प्रथित महाभित्ति के पश्चिमी द्वार पर पहुंचे। धूप खिली थी। रंगीन चलचित्र साथ लिया और नाले के जलमय पांच स्थानों को पार कर हमारी चार गाड़ियां पश्चिमी द्वार पर पहुंचीं। भित्ति पर्याप्त ऊंची है। यह द्वार सेना के ठहरने अथवा रहने के लिए बनाया गया है। बीच का स्थान दो पक्की भित्तियों और एक कच्ची भित्ति से घिरा है। समीप बसाए गए हरे भरे गांव ने इस स्थान को और भी रमणीय बना दिया है। यहां आध घण्टे तक हम लोग इधर उधर घूमते रहे और रंगीन चित्र लेते रहे।

सायंकाल साढ़े छः बजे २८० क्रोशक की दिनभर की यात्रा पूरी कर हम चू-च्यान् पहुंचे।

६-६-५५

आज प्रातः सात बजे उठे। नौ बजे रसोइए ने हमारे कथनानुसार खीर, और आलू एवं साग मिला कर भाजी बनाई। कई दिनों के पश्चात् आज पेटभर भोजन किया। चू-च्यान् से हमारे साथ जो व्यक्ति तुन्-ह्वाङ गए थे उन सबका धन्यवाद किया। विमान साढ़े ग्यारह बजे चलेगा। इस सूचना के अनुसार हम दस बजे विश्राम-स्थान से चले। मार्ग कच्चे और संकीर्ण हैं। घोड़ा गाड़ियों का एक के पश्चात् एक तांता बंधा हुआ था। हम, लोगों के कुतूहल का केन्द्र, बने हुए थे। बच्चे उत्सुकता और आश्चर्य से हमें देख रहे थे। साढ़े ग्यारह हम विमानपत्तन पर पहुंचे। पता चला कि विमान पौने एक बजे आएगा और पौन घण्टा यहां ठहरने के पश्चात् लान्-चाओ जाएगा।

हम विमानपत्तन के विश्रान्तिगृह में पहुंचे। यह एक क्रोशक की दूरी पर है। घण्टा भर विश्राम करने के पश्चात् हम प्रस्थान करेंगे। पूरे एक बजे विमान उड़ा। चार से दस कला पूर्व हमारा विमान भूमि पर उतरा। वहां चार सज्जन स्वागत के लिए उपस्थित थे। उनमें एक विदेश-विभाग के कान्-सू प्रान्त के अध्यक्ष थे। सुदर्शना के लिए कुमारी छाङ आई हुई थी।

लान्-चाओ ह्वाङ-हो अर्थात् पीत नदी के तट पर बसा हुआ है। हमारे विश्राम-स्थान के सर्वथा सम्मुख नदी के ऊंचे पर्वत-शिखर पर मिट्टी का स्तूप दृष्टिगोचर होता है।

यहां का सर्वाधिक रमणीय स्थान पञ्चोत्स है जो कभी कभी अथवा विशेषोत्सवों पर खुलता है। पहले यहां मन्दिर था अब जनता के लिए केवल दर्शनीय स्थान के रूप में इसका प्रयोग होता है।

लान्-चाओ कान्-सू प्रान्त की राजधानी है। यह स्थान फलों के लिए प्रसिद्ध है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कालिन्द, द्राक्षा और आलू-बुखारा तथा सुगन्धि वाले सेब यहां की विशेषता हैं । अभी कालिन्द का ऋतु नहीं है । पर सुगन्धि वाले कोमल भुरभुरे सेब यहां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं ।

हम शाक-विपणि देखने गए । यहां सर्वप्रथम हमें स्वच्छ और धुला हुआ अदरक दिखाई पड़ा । मटर, मूली, गाजर और विभिन्न प्रकार के शाक थे । सरसों की गंदलें भी थीं । इस विपणि में बच्चों के खेलने के लिए कौशेय के कोड़े बिक रहे थे ।

७-६-५५

आज प्रातः साढ़े नौ बजे प्रातराश के पश्चात् दस बजे शी-निङ के लिए चले । ह्वाङ-हो के पुल को पार कर हम नदी के साथ साथ बढ़ने लगे । इस नदी का रंग पीला नहीं, मटमैला है । हम मिट्टी की पहाड़ियों पर से होते हुए आए । लान्-चाओ से शी-निङ २०० क्रोशक से अधिक है । समस्त मार्ग में धूलि का अखण्ड साम्राज्य है । दोनों ओर जहां कहीं भी थोड़ा सा समतल स्थान है हरी भरी खेती है । परन्तु हम इस सुन्दर दृश्य का आनन्द धूलि की अधिकता के कारण न ले सके । अधिकांश गेहूं के खेत हैं । मार्ग में वर्षा के दो चार छींटे भी पड़ गए पर उससे धूलि का शमन नहीं हुआ ।

कई स्थानों पर पत्थरों में खेती की गई है । पहले मिट्टी और फिर उस पर पत्थर के टुकड़े सर्वथा बिछा दिए गए हैं । यही एक मार्ग था जिसमें हमको पक्षी दिखाई दिए– कपोत, कौए और चिड़ियां ।

शी-निङ चिङ-हाइ प्रान्त की राजधानी है । चारों ओर घर मिट्टी के हैं । जिस स्थान पर हम ठहरे हैं वह सबसे बड़ा स्थान है । यहां विदेशी ठहराए जाते हैं ।

शी-निङ से भोट-भाषा आरम्भ हो जाती है । भोट-लिपि भारतीय लिपि से निकली है । उसके १,२,३,५,९,१० संख्या के अङ्क अपने ही समान हैं ।

यहां बहुत शीत है । यद्यपि यह स्थान ३८ अक्षांश पर है पर यहां मोंगोल-देश की अपेक्षा भी कहीं अधिक शीत है । यहां से १०० क्रोशक की दूरी पर घासभूमियां हैं जहां शीत की अधिकता के कारण वृक्षों का उगना सम्भव नहीं । शी-निङ की ऊंचाई ८००० पाद है ।

८-६-५५

रात्रि को दस बजे हमारा अभिनन्दन करने के लिए भोट और मोंगोल नृत्य हुए ।

प्रथम नृत्य–– हमारी प्रिय घास-भूमि । लड़के लड़कियां धीरे धीरे पोले पोले पग रखते हुए हाथ डेढ़ हाथ बाहर निकली हुई कुर्तों की बाहों को हिलाते हुए नृत्य करते और गाते हैं । गीत का आशय है– घर का काम समाप्त करके घासभूमि से पशुओं को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

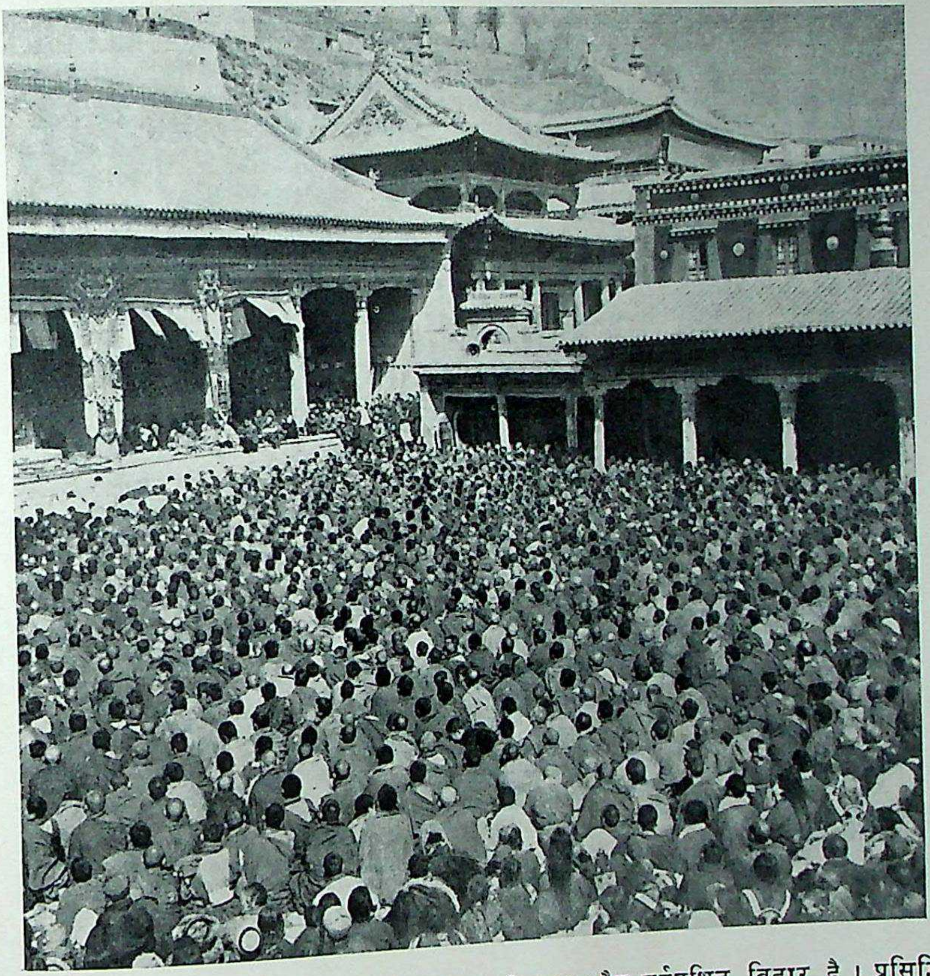

कुम्-बुम् अर्थात् लक्ष-बुद्ध-मन्दिर आम्दो का सब से बड़ा और सर्वप्रथित विहार है। प्रसिद्धि है कि मन्दिर के मध्य में बोधिवृक्ष है जिसके प्रत्येक पत्ते पर बुद्ध की मूर्ति है। यह बोधिवृक्ष मन्दिर से पूर्णतः ढका हुआ है। यहां दो सहस्र लामा निवास करते हैं। यह मन्दिर पीतोष्णीष सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य चोंखापा सुमतिकीर्त्ति की जन्मनगरी होने के कारण सब भोटयानियों के लिए विशेष रूप से पुण्यतीर्थ है।

A view of the congregation at the Kumbum Temple (Sku-ḥbum Byams-pa gliṅ) in the birth-place of Tsoṅ-kha-pa, the founder of the Yellow School of Tibetan Buddhism.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुम्-बुम् के जीवित बुद्धों के साथ आचार्य रघुवीर और उनकी पुत्री सुदर्शना ।
Prof. Raghu Vira and his daughter with the two eminent Living Buddhas of Kumbum.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लाना। लड़के नाचते हुए सीटियां बजाते हैं।

द्वितीय नृत्य—— एक सैनिक की पत्नी अपने पति को पत्र लिखती है कि साम्यवादी राज्य में हम बहुत प्रसन्न हैं। चतुर्मुखी उन्नति हो रही है।

तृतीय नृत्य—— काज़क् जाति के लोग प्रसन्न हैं कि साम्यवादी शासन आया। बूढ़े भी युवकों के समान काम में लग गए हैं। मध्य में कुक्कुट का हास्यास्पद अभिनय था।

चतुर्थ नृत्य—— माओ त्स-तुङ की प्रशंसा में दू जाति के लोग गाते और नाचते हैं।

पञ्चम नृत्य—— चिङ-हाइ चीनी में चिङ-हाइ प्रान्त की जनता गाती है कि १९५३ में हमने अपने प्रतिनिधि स्वयं चुने हैं।

षष्ठ नृत्य—— पेइ-चिङ राजधानी की प्रशंसा में भोटिए नाचते और गाते हैं— पेइ-चिङ हमारी सुन्दर राजधानी है। गीत का नाम है— वाला पेइ-चिङ।

९-६-'५५

कुम्-बुम् སྐུ་འབུམ་བྱམས་པ་གླིང་ अथवा ता-अर् स्स

ता-अर् स्स चोङ-ख-प का जन्म-स्थान है। यह आम्-दो का सबसे बड़ा विहार है। आधुनिक पञ्छेन्-लामा པཎ་ཆེན་བླ་མ चोङ-ख-प ཙོང་ཁ་པ के १७वें उत्तराधिकारी हैं। इन्होंने यहां बहुत वर्ष व्यतीत किए हैं। साम्यवादी शासन के शक्ति-सम्पादन के पश्चात् पञ्छेन्-लामा और दलाइ-लामा इकट्ठे भ्रमण करने लगे हैं। पहले दोनों में अनबन थी और पञ्छेन्-लामा ल्हा-सा न जाते थे।

ता-अर् स्स चीनी नाम है। इसका भोट नाम कुम्-बुम् अर्थात् 'लक्ष-बुद्ध-मन्दिर' है। प्रसिद्ध है कि मन्दिर के मध्य में बोधिवृक्ष है जिसके प्रत्येक पत्ते पर बुद्ध की मूर्ति है। यह बोधिवृक्ष दृष्टिगोचर नहीं होता। सर्वथा मन्दिर से ढका हुआ है। यदि मन्दिर को तोड़ा जाए तभी परीक्षा की जा सकती है कि अन्दर बोधिवृक्ष और उसके पत्तों पर लाख बुद्ध मूर्तियां हैं अथवा नहीं।

हमको बताया गया कि यहां दो सहस्र लामा निवास करते हैं। किन्तु जब हमने कहा कि हम इनको देखना चाहते हैं तो बताया गया कि केवल विशेष अवसरों पर सब लामा इकट्ठे होते हैं। कुछ काल पूर्व दलाइ-लामा यहां आए थे। उनका उपदेश सुनने के लिए छः सात सहस्र लामा उपस्थित हुए थे।

हमारे साथ चिङ-हाइ प्रान्त के संस्कृति और शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष सुङ-रे-जाम्छो གསུང་རབ་རྒྱ་མཚོ कुम्-बुम् आए। ये चीनी के अच्छे लेखक हैं किन्तु शासन की नीति के अनुसार हमारे साथ दो दुभाषियों द्वारा बातचीत होती थी। चीनी न बोल कर ये केवल भोट बोलते थे। एक दुभाषिया भोट का अनुवाद चीनी में करता था, दूसरा चीनी से अंग्रेज़ी में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुम्-बुम् में अनेक भवन हैं। इन भवनों में अपना अपना पुस्तकालय है। इनके पास कञ्जूर और तञ्जूर के विभिन्न संस्करण हैं।

कञ्जूर का वर्ष में आठ नौ बार पाठ होता है और तञ्जूर का तीन बार।

कुम्-बुम् में चार विद्यालय हैं– धर्म-विद्यालय, तन्त्र-विद्यालय, औषध-विद्यालय और ज्यौतिष-विद्यालय।

धर्म-विद्यालय में १००० भिक्षु विद्यार्थी हैं। २५ वर्ष का अध्ययन-क्रम है।

तन्त्र-विद्यालय में १०० भिक्षु विद्यार्थी हैं। २० वर्ष तक पाठन होता है।

आयुर्वेद- और ज्यौतिष-विद्यालय में दो दो सौ भिक्षु विद्यार्थी हैं और पढ़ाई पूरी करने में १५, २० वर्ष लगते हैं।

आयुर्वेद में दुल्वा འདུལ་བ་ के अतिरिक्त चार विशेष पुस्तकों का अध्ययन होता है। दुल्वा में दी हुई करोटि-विद्या का जानने वाला यहां कोई नहीं।

ऑस्ट्रिया के प्रसिद्ध भूगोलविद् हारर् मेरे लिए ल्हा-सा से दलाइ-लामा का चित्र लाए थे। यह चित्र मैंने कुम्-ब्रुम् के दोनों जीवित बुद्धों और बड़े लामाओं को दिखाया। इन्होंने चित्र को सस्नेह माथे से लगाया। मैंने धारणियां पढ़ कर सुनाईं और अर्थ समझाए– जीवित बुद्धों की प्रसन्नता का पारावार न रहा।

आइए, कुम्-बुम् के कुछ बड़े बड़े भवनों का भ्रमण करें– प्रथम सूत्रपाठ-भवन। भोट में इसका नाम इस प्रकार है ཚོགས་ཆེན་འདུ་ཁང । वर्ष में चार बार विशेष उत्सव होता है। १३ श्रेणियां हैं। अनेक विषयों पर चर्चा होती है। सन्देहास्पद स्थलों की व्याख्या करने और कठिन प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए वर्षों तक शास्त्रार्थ चलते हैं और अन्त में सबका सन्तोष और समाधान हो जाता है।

इस भवन का वैभव देख कर ही समझ में आ सकता है। बहुत मोटे मोटे सुन्दरतम ऊन के बने हुए कालीन स्तम्भों को ढके हुए हैं। इन पर मोंगोल भाषा के शब्द बुने हैं। चित्रों की भरमार है। काष्ठमय, मृण्मय, ताम्रमय और कांस्यमय मूर्तियां स्थान स्थान पर अधिकाधिक संख्या में शोभायमान हैं। ताम्र तथा कांसे की मूर्तियां शी-काङ में बनती हैं। पेइ-चिङ भी इनके बनने का बड़ा केन्द्र था।

सर्वत्र मक्खन के दीपक जल रहे हैं। घण्टों नहीं किन्तु सप्ताहों तक मनुष्य इस मन्दिर की एक एक वस्तु का निरीक्षण पूरा नहीं कर सकता।

རྒྱལ་བ་བསོད་ནམས་རྒྱ་མཚོ་འི་སྐུ་གདུང་མཆོད་རྟེན । यह दूसरा महत् भवन है। यहां शाक्यमुनि की एक सहस्र मूर्तियां हैं। सब समान हैं। स्तूप के ऊपर चन्द्रकला और सूर्य बने हैं। उसके सम्मुख १०० जल-भरे पात्र और एक मक्खन का दीपक है।

"ओं मणि पद्मे हूं" लिखे हुए सात बड़े बड़े गोल ढोल हैं। आते जाते लामा इनको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुम्-बुम् का उपदेश भवन । व्यासपीठ के पीछे पीतोष्णीष सम्प्रदाय के अग्रणी आचार्यों की परम्परा चित्रित है ।

A view of the preaching throne at Kumbum monastery with a magnificent *tshogs-śiṅ* at the back depicting the masters of the Yellow School of Lamaism.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

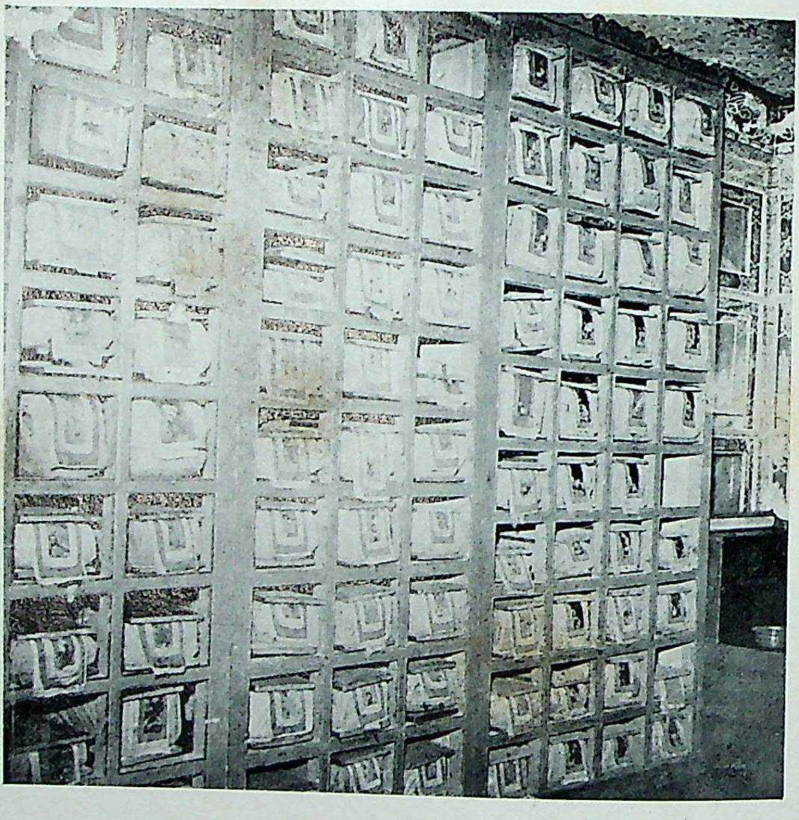

कुम्-वुम् के जाम्याङ्-कुन्सिक्-खाङ् भवन में कन्जूर तन्जूर के ल्हासा, देर्गे, पेइ-चिङ् और नार्थाङ् संस्करण हैं। कन्जूर का चोने संस्करण भी है। यह कुम्-वुम् के अनेक भवनों में से है। विशेष बात यह है कि इन भवनों में अपना-अपना पुस्तकालय है। इनके पास कन्जूर और तन्जूर के विभिन्न संस्करण हैं। कन्जूर का वर्ष में आठ-नौ बार पाठ होता है और तन्जूर का तीन बार।

A view of the Ḥjam-dbyaṅs-kun-gzigs Hall at Kumbum, flanked by imposing stands of the Holy Kanjur and Tanjur.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घुमाते हैं। दो छोटे छोटे घर बने हैं जिनमें पुस्तकें चिनी हुई हैं। इनको घुमाने से पुस्तकें पढ़ने का पुण्य मिलता है। बाहर दो शिलालेख हैं। एक पर इतिहास और दूसरे पर दाताओं के नाम हैं।

འཛམ་དབྱངས་ཀུན་གཟིགས་ཁང | यह तीसरा भवन है। इसके मध्य में चोङ-ख-प की मूर्ति है। दाहिनी ओर महाकाल की विकराल मूर्ति है। दाहिनी ओर ही हाथों में सूत्र लिए बुद्ध धर्म के पांच प्रचारकों की मूर्तियां हैं। दूसरी ओर कालरव और तीन अन्य सूत्रहस्त मूर्तियां हैं। कालरव मूर्ति का मुख भयानक रूप से खुला हुआ है। इस भवन में ल्हा-सा, देर्गे, पेइ-चिङ और नार्थाङ संस्करण हैं। हमने यहां पहली बार कञ्जूर का चो-ने संस्करण देखा। ल्हा-सा से प्रकाशित नए कञ्जूर को लामा सर्वश्रेष्ठ और प्रामाणिक मानते हैं।

लोकेश्वर, मञ्जुश्री और वज्रपाणि की मनोहर मूर्तियां विशाल हैं। मञ्जुश्री के सम्मुख पांच घृतदीप जले हुए हैं। कालिन्दी अथवा कालिदेवी की मूर्ति के पीछे सरस्वती की मूर्ति है। सरस्वती के हाथ में वीणा है। दोनों मूर्तियां त्रिनेत्र हैं।

འབུམས་ཁང་ में लाञ्छा और वर्तुल दोनों लिपियों का प्रयोग हो रहा है। मैत्रेय की विशाल मूर्ति के सामने मक्खन के बने हुए छोटे छोटे आठ स्तूप हैं।

གསེར་སྡོང་ཆེན་མོ | यहां बोधिवृक्ष के ऊपर स्तूप बना है। बोधिवृक्ष सर्वथा अदृश्य है। इस स्तूप के सामने लामा दण्डवत् प्रणाम करते हैं।

इस भवन में हमने सबसे सुन्दर दीपपात्र देखे।

स्तूप के ऊपर चोङ-ख-प की मूर्ति है। प्रसिद्धि है कि चोङ-ख-प भारतवर्ष चले गए और माता ने उनके दर्शन की अभिलाषा की तो चोङ-ख-प ने अपनी मूर्ति भेजी। यह मूर्ति कांच में रखी हुई है। इस भवन में नार्थाङ का तञ्जूर और ल्हा-सा का कञ्जूर दोनों हस्तलिखित हैं। इनके अतिरिक्त पेइ-चिङ का कञ्जूर भी है।

ये पुस्तकें स्तूप के तीन ओर रखी हुई हैं। पुस्तकालय नीचे की भूमि में है।

चोङ-ख-प के तीन और पांच वर्ष की आयु के पाद-चिह्न वस्त्र पर बने हुए हैं।

हमने बोधिवृक्ष-स्तूप की प्रदक्षिणा की और तीनों भूमियों का निरीक्षण किया। यहां असंख्य कटोरियां हैं जिनमें पानी भर कर बुद्ध के सामने रखते हैं। दूसरी भूमि के किवाड़ों पर ह्क्ष्म्ल्व्र्यँ विराजमान है।

ཇོ་ཁང | इस भवन में मैत्रेय और शाक्यमुनि की मुख्य मूर्तियां हैं। शाक्यमुनि सुन्दर शिर:परिधान पहने हैं।

ཇ་ཁང | इस भवन में लामाओं की चाय बनती है। आठ दस पाद व्यास के तीन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महापात्र हैं। घास से इन्धन का काम लेते हैं। भवन के बाहर खुले स्थान पर घास का भवनों से भी अधिक ऊंचा स्तूप बना है।

དཔར་ཁང। कुम्-बुम् का मुद्रणालय प्रसिद्ध है। चोङ-ख-प की पुस्तकें यहां विशेष रूप से प्रकाशित होती हैं। आयुर्वेद, ज्यौतिष के ग्रन्थ भी।

एक लामा एक दिन में लगभग १००० पृष्ठ छाप लेता है। १५, २० लामा सदा इसी कार्य में लगे रहते हैं। काष्ठफलकों का बहुत बड़ा संग्रह है। हमने इनका सूचीपत्र मांगा सो बताया गया कि सूचीपत्र नहीं है।

སྨན་པ་གྲྭ་ཚང། यह आयुर्वेद-विद्यालय है। यहां भी नार्थाङ और ल्हा-सा के कन्जूर के संस्करण हैं। आयुर्वेद की पांच श्रेणियां हैं। चोङ-ख-प तथा उनके शिष्यों ने भी आयुर्वेद के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है।

དུས་འཁོར་གྲྭ་ཚང། ज्यौतिष की पुस्तकें अधिकांश ल्हा-सा से आती हैं। उष्णीष-धारणी कपड़े पर छपी हुई ऊंचे स्तम्भ पर ऊपर से नीचे तक लटकी हुई है।

ཞབས་བརྟན་ལྷ་ཁང། इस भवन के द्वार पर निम्न संस्कृत श्लोक लिखा है–

शासनधृच्छ्भिकेन सुपंक्तिः कामगंवोऽमृतधीरपदश्रीः।
आतमभुन्मिणसंविधपूजानुत्तरहर्म्यमनन्तं जयेयम्॥

मध्य में शाक्यमुनि, एक ओर आनन्द, दूसरी ओर काश्यप तथा १८ अर्हत्।

བཙན་ཁང། स्तम्भ सिंहचर्मावृत हैं। एक ओर मरे हुए पशु पड़े हैं। दूसरी ओर हथियार। ये मरे हुए पशु और हथियार आखेटक लोग यहां छोड़ गए हैं। यह उनके प्रायश्चित्त और व्रतरूप में हैं कि अब आगे प्राणिहिंसा न करेंगे। इस भवन में एक व्यक्ति གསོལ་ཀ་ नामक पुस्तक पाठ करता हुआ ढोल तथा करताल बजा रहा था।

भवनों का निरीक्षण करने के पश्चात् हम स्वागत-कोष्ठ में आए। दोनों जीवित बुद्धों ने हमारे लिए लवण तथा मक्खन वाली चाए मंगाई। इसके साथ भुने हुए जौ के सत्तू और भारतीय प्रकार की भूरी शर्करा देख कर परम आश्चर्य हुआ। चीन के मध्य में भारत से सैंकड़ों कोस दूर यह शुद्ध भारतीय भोजन भोट और मोंगोल लामाओं के जीवन का अंग है।

लामा बनने के लिए किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं। कुम्-बुम् में प्रवेश करते ही बालक अथवा युवा लामा बन जाते हैं। यहां सब से छोटे लामा पांच वर्ष की आयु के हैं। इनका हमने रंगीन चित्र लिया।

लामा बनने के पश्चात् जीवन भर अध्ययन करते हैं। शास्त्रार्थ में भाग लेने के लिए २५ वर्ष के अध्ययन की आवश्यकता है। २५ वर्ष के अध्ययन के पश्चात् गम्भीर शास्त्रार्थ होता है। इस शास्त्रार्थ में उत्तीर्ण श्रेष्ठ लामाओं को उपाधि दी जाती है। अब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

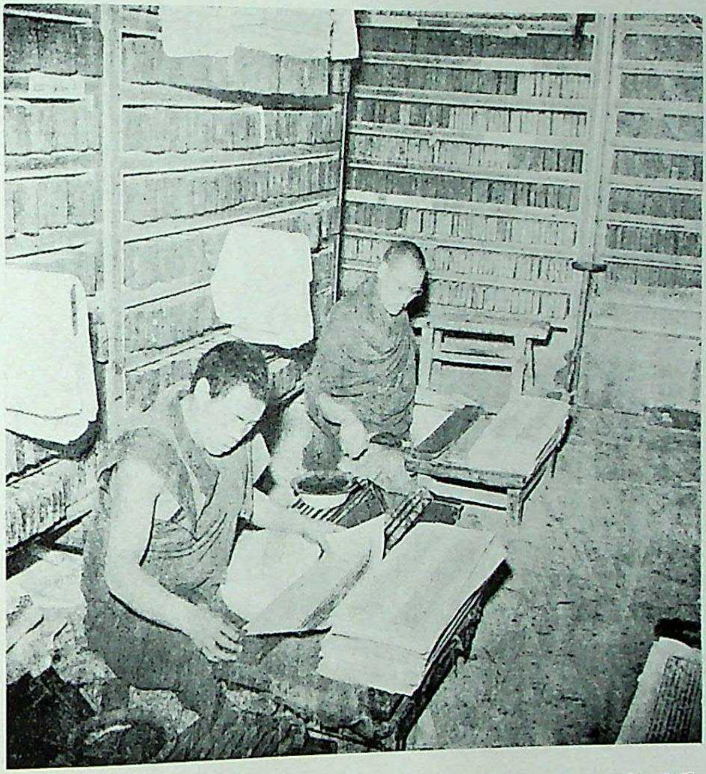

कुम्-बुम् के मुद्रणालय में छपाई हो रही है। चोङ्-खा-पा सुमतिकीर्त्ति की पुस्तकें यहां विशेष रूप से प्रकाशित होती हैं। आयुर्वेद और ज्योतिष के ग्रन्थ भी। १५, २० लामा सदा मुद्रण में लगे रहते हैं। एक लामा एक दिन में लगभग १००० पृष्ठ छाप लेता है। काष्ठफलकों को विशेष परिमाण के निधायों में सुरक्षित रखा जाता है।

The printery of Kum-bum which is famous for its xylographic edition of the Collected Works of Tsoṅ-kha-pa. The wood-blocks are stacked on shelves prepared to size. Two monks are seen xylographing the works of Tsoṅ-kha-pa.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

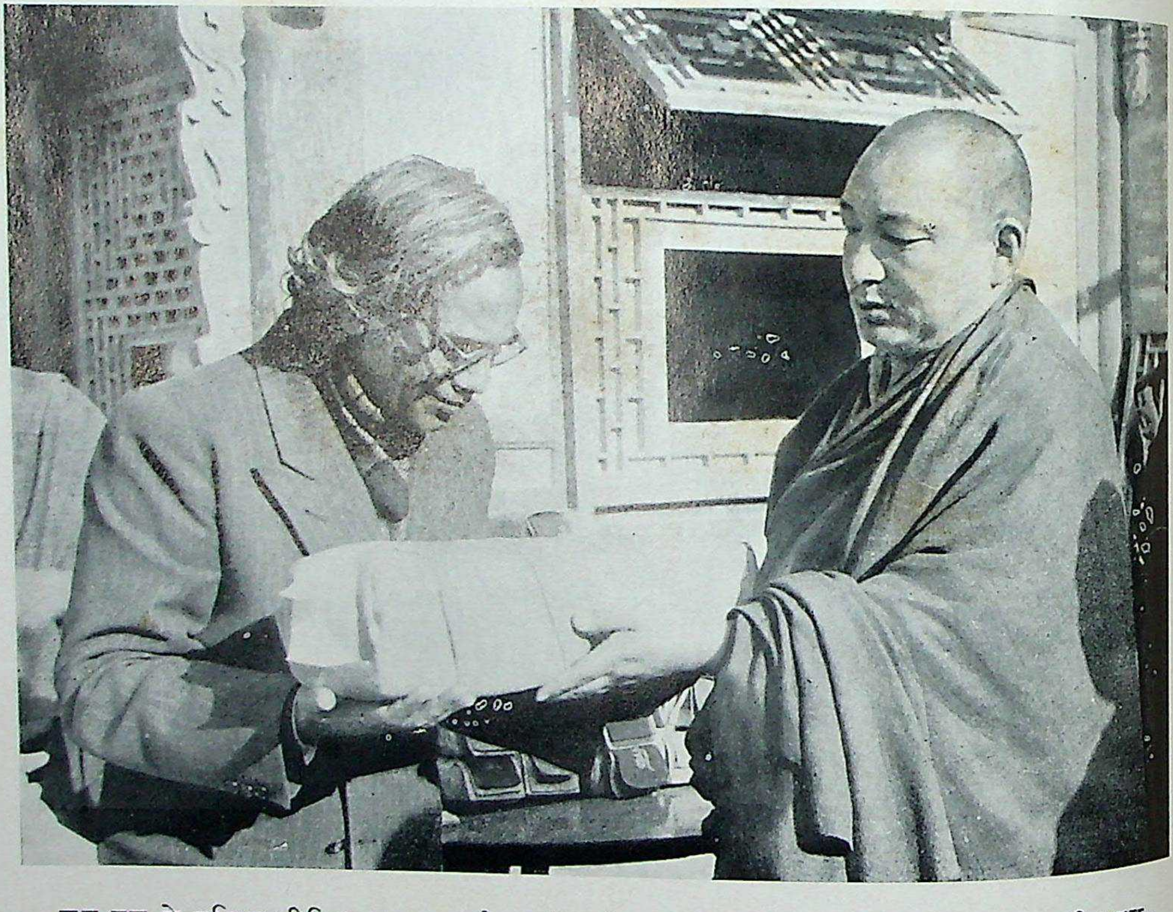

कुम्-बुम् के वरिष्ठ जीवित बुद्ध आचार्य रघुवीर को आयुर्वेद का सचित्र ग्रन्थ, चोङ्-खा-पा की ग्रन्थावली और उनके दो पट्टशिष्यों की ग्रन्थावली का विद्योपहार देते हुए। तथा च, इस प्रेमोपहार को गद्गद हृदय से स्वीकार करते हुए आचार्य रघुवीर।

Venerable An Chia-szu the Living Buddha of the Kumbum monastery presenting a volume of the works of Tsoṅ-kha-pa to Prof. Raghu Vira.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तक ४०० के लगभग लामाओं को यह उपाधि मिल चुकी है। भोट भाषा में इस उपाधि का नाम དགེ་བཤེས་ ("कल्याणमित्र") है। चीनी में इसको पो-श कहते हैं।

हमने ज्येष्ठ जीवित बुद्ध से प्रश्न किया कि क्या आपने शाक्यमुनि की आत्मा का साक्षात् किया है। उन्होंने उत्तर दिया– जब हम ध्यानमग्न होते हैं तब हमारी आत्मा का शाक्यमुनि की आत्मा से साक्षात् होता है। ऐसा हमारा विश्वास है। यह सम्भव है कि भिन्न जीवित बुद्धों की आत्माओं का साक्षात्कार भिन्न प्रकार से होता हो।

हमने दूसरा प्रश्न किया कि सूत्रों को समझने में जो सन्देह और कठिनाइयां पड़ती हैं, क्या उनका समाधान और व्याख्या जीवित बुद्ध शाक्यमुनि से साक्षात् नहीं पूछ सकते। उत्तर मिला– जब हम ध्यानमग्न होते हैं तो हमारी आत्मा इस शरीर से ऊपर उड़ जाती है। और शाक्यमुनि से साक्षात् करती है। फिर लौट कर नहीं आती। उसके स्थान में दूसरी आत्मा आती है। अतः प्रश्न का उत्तर शाक्यमुनि से प्राप्त नहीं होता। शास्त्रार्थ द्वारा ही उत्तर पाना सम्भव है।

दोनों जीवित बुद्धों का हमारे से बहुत स्नेह हो गया। उन्होंने चलते समय हमको घण्टी, वज्र और डमरु तथा प्रतिष्ठित लामाओं के परिधान प्रेमोपहार में दिए। चोङ-ख-प और अमिताभ की मूर्तियां धर्मोपहार दीं। आयुर्वेद का सचित्र ग्रन्थ विद्योपहार दिया।

चोङ-ख-प के १९ ग्रन्थ और उनके दो पट्टशिष्यों के २४ ग्रन्थ उनका महोपहार था। काले और रंगीन भाचित्र खींचने के पश्चात् हमने गद्‌गद् हृदय से कुम्-बुम् से प्रस्थान किया।

ज्येष्ठ जीवित बुद्ध का अन्तिम वाक्य था– आपका शुभागमन और हमारे प्रेमोपहार प्राचीन सांस्कृतिक सम्बन्धों का पुनरारम्भ है। ये फलें और फूलें, बढ़ें और विकसित हों।

१०-६-'५५

ता-अर् स्स की संस्मरणीय यात्रा पूरी कर लान्-चाओ पहुंचे। इच्छा हुई कि भारतीय नभोवाणी द्वारा भारतीय समाचार सुनें। उत्तर मिला– मार्ग में हिमालय पर्वत है, इसलिए सुनना सम्भव नहीं।

हमारे विश्रान्तिगृह में ठहरे हुए एवं भारत से लौटे हुए एक चीनी सज्जन ने कहा– "आप भारतीय श्वेन्-च्वाङ हैं" (You are the Indian Hiuan-tsang)।

शी-निङ के विदेश-विभाग के अध्यक्ष ने भी कहा था कि आप पहले भारतीय हैं जो ता-अर् स्स आए हैं।

चीन में जहां कहीं निर्माण-कार्य के लिए खुदाइ की जाती है वहां पुरावशेष-विभाग के व्यक्ति भी पहुंच जाते हैं और भूमि में से निकली हुई प्राचीन वस्तुओं का संग्रह कर लेते हैं। भारत में भी इस पद्धति का अनुकरण करना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११-६-५५

मेघों के कारण विमान चू-च्यान् से न आया। संयान के मार्ग में भी पहाड़ी गिर गई है। आज से लान्-चाओ में विमानपत्तन का उद्धार आरम्भ हुआ है। अब एक सप्ताह तक यहां न विमान आ सकता है और न जा सकता है। कितने दिन हमको लान्-चाओ में ठहरना पड़ेगा यह अनिश्चित है। पेइ-चिङ को दूरभाष किया है। वे प्रबन्ध कर रहे हैं।

१२-६-'५५

आज भी लान्-चाओ से न चल सके।

लान्-चाओ में पञ्चोत्स के स्थान पर बना बहुत पुराना मन्दिर देखने गए। पर्व दिनों पर धूपबत्ती जलाने के लिए एक भिक्षु रह गया है। हमको दिखाने के लिए मन्दिर विशेष रूप से खोला गया। मन्दिर पहाड़ी के नीचे से लेकर शिखर तक बना हुआ है। जब यहां पूर्ण रूप से पूजा पाठ होता होगा तब सैंकड़ों भिक्षु निवास करते होंगे और सहस्रों जन उपासना के लिए आते होंगे।

प्राचीन वस्तुओं में से गजदन्त की छोटी सी मूर्ति है। सामने दो किवाड़ लगे हैं। बाहर हाथी और अन्दर शाक्यमुनि के जीवन-वृत का चित्रण है। यह मूर्ति एक सहस्र वर्ष प्राचीन है। इसमें गान्धार प्रभाव अभिव्यक्त है। कोई आश्चर्य नहीं यदि यह भारत से आई हो।

पञ्चधातु का बना २० पाद ऊंचा मैत्रेय। यह मिङ-वंश का है। सुवर्ण, रजत, ताम्बे, लोहे और रांगे से बना है।

लान्-चाओ में बौद्ध सभा के ३०० के लगभग सदस्य हैं। २५० गृहस्थ तथा ५० लामा और भिक्षु। इनके पुस्तकालय में सम्पूर्ण मिङ वंश का त्रिपिटक है।

लान्-चाओ में मन्दिरों की संख्या २० के लगभग है।

आज सायं २०, २२ कोस दूर वनावृत पर्वत के शिखर पर ताओ मन्दिर तथा स्वास्थ्याश्रम देखने गए। साम्यवादी शासन में सुन्दर स्थानों पर स्वास्थ्याश्रम बनाए जा रहे हैं।

१३-६-५५

आज प्रातः दस बजे गाड़ी में बैठे।

१४-६-'५५

२६ घण्टे की यात्रा के पश्चात् दोपहर बारह बजे शी-आन् 西安 आए। लान्-चाओ के धूलि और मिट्टी के पहाड़ों के पश्चात् शी-आन् की हरी भरी भूमि देख कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

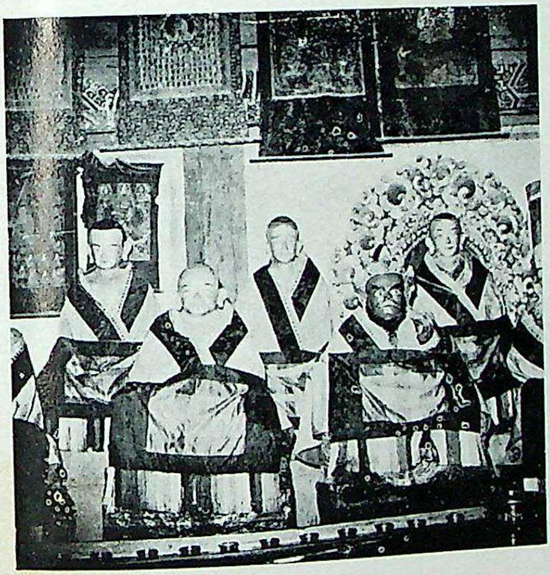

कुम्-बुम् के दिवंगत आचार्यों के सुरक्षित शरीर

Mummies of the Incarnate Lamas of Kumbum preserved in a hall of this vast monastic complex.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शि-आन् में ता-यन्-था नामक सप्तभूमिक श्वेन्-च्वाङ् स्तूप। चीन-सम्राट् ने धर्माचार्य श्वेन्-च्वाङ् की कामना-पूर्ति के लिए १०८ हाथ ऊंचा स्तूप बनवाया। इसका उद्देश्य भारतीय सूत्रों और मूर्तियों को अग्नि और लूट से सुरक्षित रखना था। यह स्तूप भारतीय शैली का था और प्रत्येक भाग के मध्य में आचार्यों के शरीरावशेष रखने के लिए स्थान था। इसका नाम ता-यन्-था अर्थात् 'वनहंस महामन्दिर' है। यह नाम मगध की शक्रेन्द्र गुहा के पूर्ववर्ती मन्दिर से लिया गया था।

The reconstructed Ta-yen t'a 'Great Wild Goose Pagoda' or the 108 cubit high stūpa which was erected by the Chinese Emperor to house the sūtras and images brought by the famous pilgrim Hsüan-chuang from India. It was modelled as well as named after the Wild Goose Pagoda, east of the Śakrendra Grotto in Magadha. It is popularly known as the 'Hsüan-chuang Stūpa'.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आंखों में ठण्डक पहुंची। शी-आन् में सूर्य चण्डता से तप रहा था। पसीना छूटने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ कि नागपुर के ग्रीष्म में पहुंच गए। तापमान अधिक न था। केवल ३७ शतिक (centigrade) था। किन्तु मानसिक और शारीरिक प्रतिक्रिया सर्वथा नागपुर के ग्रीष्म के समान थी।

जिस विश्रान्तिगृह में हमको ठहराया गया यह शी-आन् का सबसे बड़ा विश्रान्ति-गृह है। अभी आधा बन पाया है। तुन्-ह्वाङ के चित्रों से पूर्ण है। शी-आन् को शिङ-आन् भी कहते हैं। इसका प्राचीन उच्चारण छाङ-आन् था। यह शेन्-सी 陝西 प्रान्त की राजधानी है।

शी-आन् के कुछ प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानों का आज भ्रमण किया।

दुन्दुभि-भवन– यह १४३७ विक्रम में बना था। तीन वर्ष हुए इसका पुनरुद्धार किया गया। पुनरुद्धार के समय भवन के अन्दर भित्तियों और छतों में सर्वथा नए चित्र बना दिए गए हैं। उदाहरण के रूप में, छतों में शान्ति के दूत कपोत उड़ रहे हैं। यहां वहां तुन्-ह्वाङ के बेलबूटे बने हैं। पहली भूमि पर अद्भुतागार है। विक्रम से १००, १५० वर्ष पूर्व की डेढ़ दो हाथ लम्बी ईंटें रखी हुई हैं। ये अन्दर से खोखली हैं। ऊपर उभरे हुए नाग और कश्यप बने हुए हैं। दूसरी भूमि पर सुन्दर उपस्करों का संग्रह है।

घण्टा-भवन– इसका निर्माण भी मिङ वंश में हुआ था। पिछले वर्ष इस पर पुनः रंग किया गया। क्वो-मिन्-ताङ के समय सेनाओं ने इसका उपयोग किया था।

थ्स-अन् स्स 慈恩寺– यह विहार आधुनिक शी-आन् नगर से दक्षिण की ओर
आठ ली की दूरी पर स्थित है। ७०५ विक्रम में सम्राट् काओ-त्सुङ 高宗 ने अपनी माता
की स्मृति में इसका निर्माण किया था। इस विहार में दस बारह भवन-समूह थे। इनमें
सब वैभव की सामग्री उपस्थित थी। भवनों की समाप्ति पर सम्राट् के आदेश से ३००
भिक्षुओं को दीक्षा दी गई और ५० विद्वान् आचार्य विशेष रूप से विहार में निवास करने
के लिए आमन्त्रित किए गए।

प्रसिद्ध यात्री श्वेन्-च्वाङ 玄奘 के अधीन अनुवाद का कार्य आरम्भ किया गया
और तब से थ्स-अन् स्स चीन के इतिहास में अमर हो गया।

विहार की भूमि में श्वेन्-च्वाङ ने भारतीय आकार का विशाल मन्दिर बनवाया
और इसमें भारत से लाए हुए संस्कृत ग्रन्थों को सुरक्षित रखा। वे स्वयं भी यहां दस
वर्ष तक निवास करते रहे। यद्यपि पीछे जाकर श्वेन्-च्वाङ शी-मिङ स्स 西明寺 विहार
में तथा कुछ और दिनों के पीछे यू-ह्वा प्रासाद 玉華宮 में चले गए, तब भी वे सदा
थ्स-अन् स्स को स्मरण करते रहे। चीनी इतिहास में श्वेन्-च्वाङ की "थ्स-अन् स्स के
महान् त्रिपिटक-धर्माचार्य" 大慈恩寺三藏法師 की उपाधि सुविख्यात है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

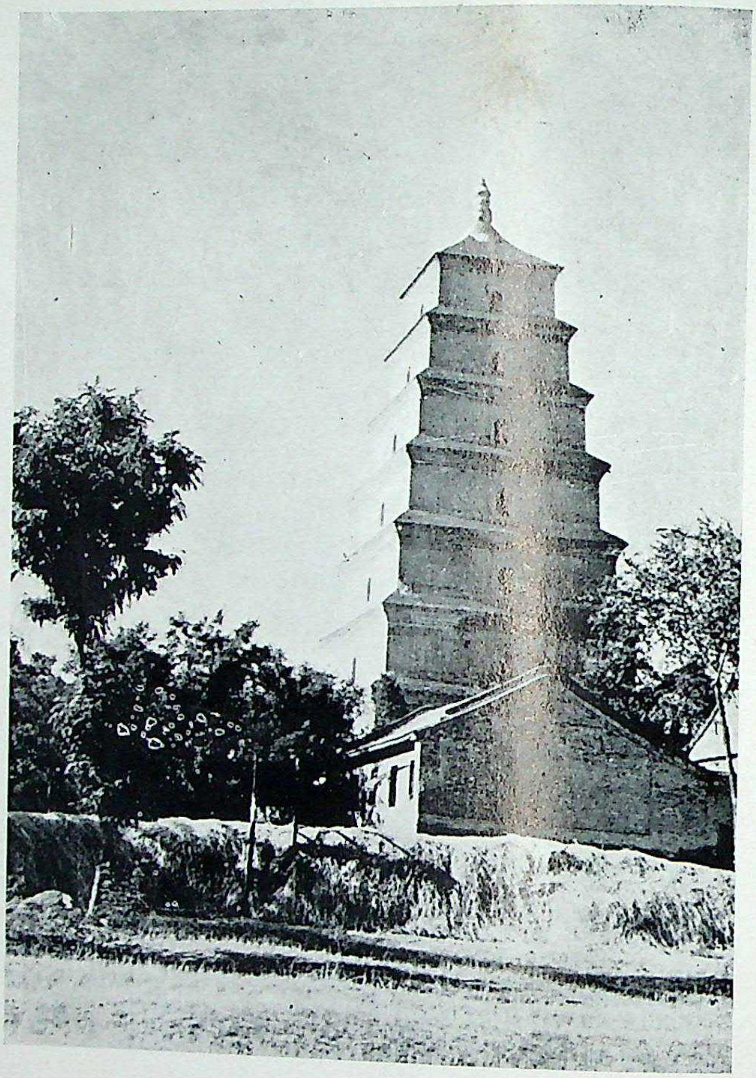

शि-आन् में ता-यन्-था नामक सप्तभूमिक श्वेन्-च्वाङ् स्तूप। चीन-सम्राट् ने धर्माचार्य श्वेन्-च्वाङ् की कामना-पूर्ति के लिए १०८ हाथ ऊंचा स्तूप बनवाया। इसका उद्देश्य भारतीय सूत्रों और मूर्तियों को अग्नि और लूट से सुरक्षित रखना था। यह स्तूप भारतीय शैली का था और प्रत्येक भाग के मध्य में आचार्यों के शरीरावशेष रखने के लिए स्थान था। इसका नाम ता-यन्-था अर्थात् 'वनहंस महामन्दिर' है। यह नाम मगध की शक्रेन्द्र गुहा के पूर्ववर्ती मन्दिर से लिया गया था।

The reconstructed Ta-yen t'a 'Great Wild Goose Pagoda' or the 108 cubit high stūpa which was erected by the Chinese Emperor to house the sūtras and images brought by the famous pilgrim Hsüan-chuang from India. It was modelled as well as named after the Wild Goose Pagoda, east of the Śakrendra Grotto in Magadha. It is popularly known as the 'Hsüan-chuang Stūpa'.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आंखों में ठण्डक पहुंची। शी-आन् में सूर्य चण्डता से तप रहा था। पसीना छूटने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ कि नागपुर के ग्रीष्म में पहुंच गए। तापमान अधिक न था। केवल ३७ शतिक (centigrade) था। किन्तु मानसिक और शारीरिक प्रतिक्रिया सर्वथा नागपुर के ग्रीष्म के समान थी।

जिस विश्रान्तिगृह में हमको ठहराया गया यह शी-आन् का सबसे बड़ा विश्रान्ति-गृह है। अभी आधा बन पाया है। तुन्-ह्वाङ के चित्रों से पूर्ण है। शी-आन् को शिङ-आन् भी कहते हैं। इसका प्राचीन उच्चारण छाङ-आन् था। यह शेन्-सी 陕西 प्रान्त की राजधानी है।

शी-आन् के कुछ प्रसिद्ध दर्शनीय स्थानों का आज भ्रमण किया।

दुन्दुभि-भवन– यह १४३७ विक्रम में बना था। तीन वर्ष हुए इसका पुनरुद्धार किया गया। पुनरुद्धार के समय भवन के अन्दर भित्तियों और छतों में सर्वथा नए चित्र बना दिए गए हैं। उदाहरण के रूप में, छतों में शान्ति के दूत कपोत उड़ रहे हैं। यहां वहां तुन्-ह्वाङ के बेलबूटे बने हैं। पहली भूमि पर अद्भुतागार है। विक्रम से १००, १५० वर्ष पूर्व की डेढ़ दो हाथ लम्बी ईंटें रखी हुई हैं। ये अन्दर से खोखली हैं। ऊपर उभरे हुए नाग और कश्यप बने हुए हैं। दूसरी भूमि पर सुन्दर उपस्करों का संग्रह है।

घण्टा-भवन– इसका निर्माण भी मिङ वंश में हुआ था। पिछले वर्ष इस पर पुनः रंग किया गया। क्वो-मिन्-ताङ के समय सेनाओं ने इसका उपयोग किया था।

थ्स-अन् स्स 慈恩寺– यह विहार आधुनिक शी-आन् नगर से दक्षिण की ओर आठ ली की दूरी पर स्थित है। ७०५ विक्रम में सम्राट् काओ-त्सुङ 高宗 ने अपनी माता की स्मृति में इसका निर्माण किया था। इस विहार में दस बारह भवन-समूह थे। इनमें सब वैभव की सामग्री उपस्थित थी। भवनों की समाप्ति पर सम्राट् के आदेश से ३०० भिक्षुओं को दीक्षा दी गई और ५० विद्वान् आचार्य विशेष रूप से विहार में निवास करने के लिए आमन्त्रित किए गए।

प्रसिद्ध यात्री श्वेन्-च्वाङ 玄奘 के अधीन अनुवाद का कार्य आरम्भ किया गया और तब से थ्स-अन् स्स चीन के इतिहास में अमर हो गया।

विहार की भूमि में श्वेन्-च्वाङ ने भारतीय आकार का विशाल मन्दिर बनवाया और इसमें भारत से लाए हुए संस्कृत ग्रन्थों को सुरक्षित रखा। वे स्वयं भी यहां दस वर्ष तक निवास करते रहे। यद्यपि पीछे जाकर श्वेन्-च्वाङ शी-मिङ स्स 西明寺 विहार में तथा कुछ और दिनों के पीछे यू-ह्वा प्रासाद 玉華宮 में चले गए, तब भी वे सदा थ्स-अन् स्स को स्मरण करते रहे। चीनी इतिहास में श्वेन्-च्वाङ की "थ्स-अन् स्स के महान् त्रिपिटक-धर्माचार्य" 大慈恩寺三藏法師 की उपाधि सुविख्यात है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ता-यन्-था 大雁塔 – आज यह मन्दिर सात भूमि का है किन्तु आरम्भ में केवल पांच भूमि था। थ्स-अन् स्स के इतिहास भाग ७ के अनुसार श्वेन्-च्वाङ की कामना थी कि १८० हाथ ऊंचा पत्थर का मन्दिर बनाया जाए जिसमें वे अपने साथ लाए हुए भारतीय सूत्रों और मूर्तियों को अग्नि और लूट से सुरक्षित रख सकें। जब यह बात सम्राट् तक पहुंची तो उन्होंने अपने सभ्य ली-ई-फ़् 李義府 को श्वेन्-च्वाङ के पास भेजा और कहा कि पत्थर का मन्दिर बनाना अतिमहद् और कष्टसाध्य है। ईंट से भी काम चल जाएगा। धर्माचार्य को चिन्ता और कष्ट से बचाने के लिए सम्राट् ने मन्दिर के लिए स्वर्गारूढ सभ्यों की वेषभूषा दान में दी। इस प्रकार से जो मन्दिर निर्माण किया गया वह १०८ हाथ ऊंचा था। यह मन्दिर सर्वथा भारतीय प्रकार का था। प्रत्येक भूमि में, मध्य भाग में, से-ली 舍利 अर्थात् सन्तों के शरीरावशेष रखने का स्थान था। से-ली की संख्या दस सहस्र से अधिक कही जाती है। से-ली का अर्थ शरीर-दाह के पश्चात् बचे हुए अस्थि-खण्ड, केश, दन्त, नख आदि हैं।

उपरितम भूमि में पत्थर का बना हुआ वेश्म था और दक्षिण भित्ति के साथ सम्राडादेश से लिखे और उत्कीर्ण हुए लेखों की दो ऊर्ध्वस्थायी शिलाएं थीं।

जिस समय मन्दिर बन रहा था उस समय प्रतिदिन प्रातःकाल श्वेन्-च्वाङ स्वयं सामान्य श्रमिक के सदृश गारा और ईंटें ढोकर ले जाया करते थे। वे स्वयं कुछ समय तक पत्थरों पर चित्र बनाते और श्रमिकों का साथ देते और तत्पश्चात् अपने अनुवाद-कार्य में रत होते। मन्दिर के पूरा होने में दो वर्ष लगे।

ता-यन्-था का प्रथम जीर्णोद्धार पञ्चवंश के काल में ९८८ से ९९० विक्रम तक हुआ। सुङ वंश के राज्य में शी-निङ युग में आग लगी। मिङ वंश के थ्येन्-शुन् 天順 युग तथा छिङ वंश के काङ-शी 康熙 युग में मुख्य जीर्णोद्धार हुए।

ता-यन्-था का अर्थ है "वन्य हंस का महामन्दिर"। यह नाम मगध की शक्रेन्द्र-गुहा के पूर्ववर्ती मन्दिर से लिया गया था।

संस्कृत ग्रन्थों को सुरक्षित रखने के लिए बनाए गए स्तूप में आज एक भी संस्कृत ग्रन्थ नहीं। ये ग्रन्थ स्तूप के किस भाग में रखे गए थे यह भी लोग भूल चुके हैं।

श्वेन्-च्वाङ के दो शिष्य कुछ सूत्र ले गए किन्तु कहां ले गए सो पता नहीं।

यहां आधुनिक चीनी शासन ने लिख कर विज्ञापन लगाया हुआ है कि यह सूत्र-रक्षा-मन्दिर भारत और चीन के सम्बन्धों का प्रतीक है। साथ में श्वेन्-च्वाङ द्वारा अनूदित ग्रन्थों की सूची दी है। इस मन्दिर का उद्धार भी शासन ने इसी वर्ष किया है। प्रान्तीय शासन की प्रार्थना पर केन्द्रीय शासन ने इसके जीर्णोद्धार का आदेश दिया था। मन्दिर का जीर्णोद्धार द्वार के समीप दिए हुए चित्र के अनुसार किया गया है। मन्दिर की सातवीं भूमि पर छः मूर्तियां हैं। बीच में भैषज्यगुरु 藥師, बाईं ओर समन्तभद्र, और दाईं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ता-यन्-था नामक श्वेन्-च्वाङ् के सप्तभूमिक स्तूप की उपरितम भूमि में मूर्तियों के साथ आचार्य रघुवीर। मध्य में भैषज्यगुरु, बाईं ओर समन्तभद्र तथा दाईं ओर मञ्जुश्री हैं।

Image of Bhaiṣajyaguru with Samantabhadra on the left and Mañjuśrī on the right. It is on the topmost, i.e. the seventh storey, of the Ta-yen-t'a.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

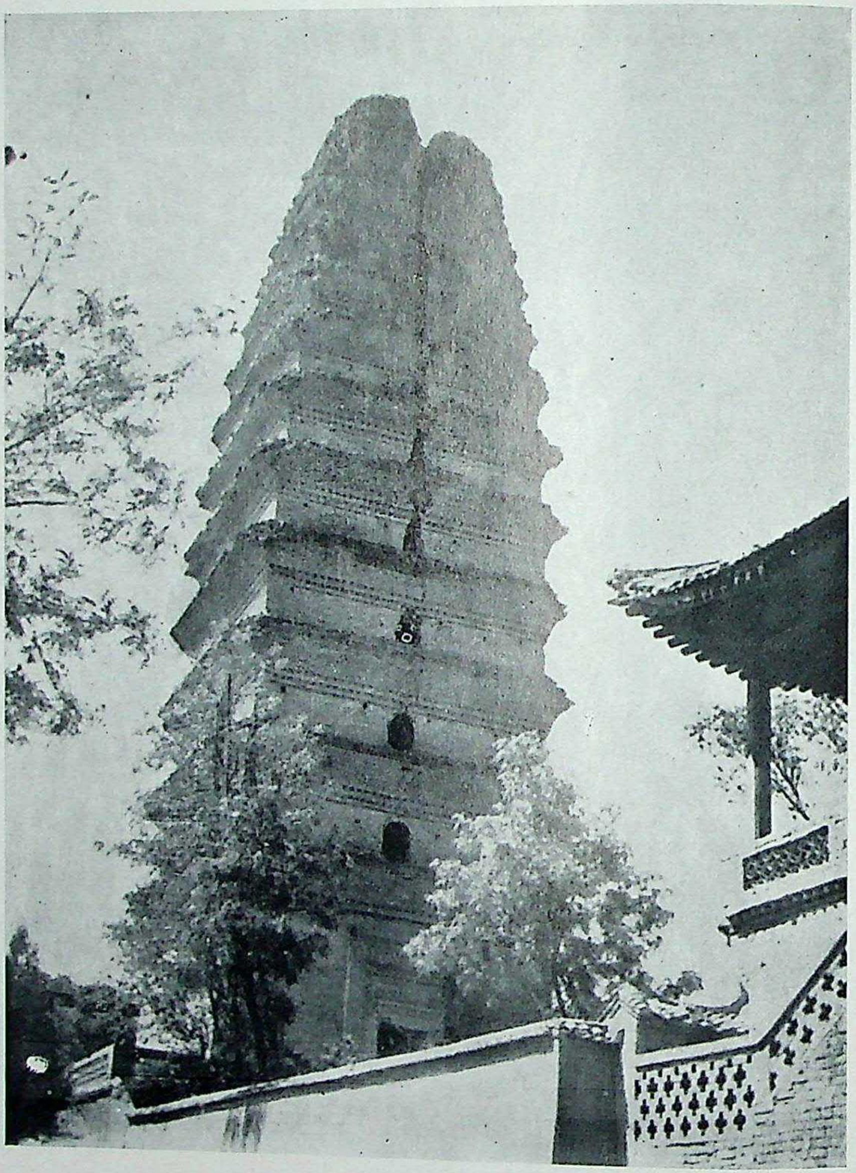

यह पञ्चदशभूमिक स्तूप 'श्याओ-यन्-था' प्रथित यात्री ई-च्चिङ् का मन्दिर है। यह स्तूप ता-च्येन्-फ़ू स्स विहार के प्रांगण में है जहां ई-चिङ् की अध्यक्षता में अनुवाद कार्य होता रहा।

The fifteen-storied pagoda Hsiao-yen-t'a which was erected in 707-709 A. D. in the premises of the Ta-chien-fu ssŭ Monastery, where the translations of Sanskrit texts were carried out under the supervision of I-tsing. It is also known as the Hsiao-yen-t'a 'Small Wild Goose Pagoda' in contradistinction to Ta-yen-t'a 'Great Wild Goose Pagoda' dedicated to Hsüan-chuang. Colloquially it is referred to as the 'I-tsing Stūpa'.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओर मञ्जुश्री 文殊師।

जीर्णोद्धार पर लगभग ७०,००० युआन् व्यय हुआ कहा जाता है। युद्ध के दिनों में यहां और अधिकांश मन्दिरों में सेनाएं निवास करती रही हैं। कई स्थानों पर सैनिकों ने बहुत अधिक नाश किया है। तुन्-ह्वाङ गुफाओं में भी सेनाएं रह चुकी हैं।

ता-च्येन्-फ़ू स्स 大薦福寺 और **श्याओ-यन्-था** 小雁塔– शी-आन् नगर के याङ-निङ द्वार 永寧門 से तीन ली की दूरी पर च्येन्-फ़ू विहार है। इसकी नींव सम्राट् काओ-त्सुङ की मृत्यु के पूरे सौ वर्ष पश्चात् ७४१ विक्रम में पड़ी थी। २२ वर्ष के पश्चात् प्रसिद्ध यात्री ई-चिङ 義淨 की अध्यक्षता में यहां अनुवाद-कार्य आरम्भ किया गया और एक राजसभ्य ने यहां पञ्चदश-भूमिक मन्दिर बनाया। ता-यन्-था 大雁塔 की तुलना में इसको श्याओ-यन्-था कहा जाता है। ता 大 का अर्थ बड़ा और श्याओ 小 का अर्थ छोटा। नीचे से ऊपर तक इस मन्दिर में दराड़ पड़ा हुआ है। इसके ऊपर चढ़ना निषिद्ध है। १३ भूमिओं में से ऊपर की दो भूमियां गिर चुकी हैं। शी-आन् के अधिकारी इसका उद्धार करने की चिन्ता में हैं। सम्भवतः एक दो वर्ष में उद्धार कार्य आरम्भ होगा किन्तु यदि न हुआ तो शीघ्र ही यह मन्दिर ऊपर से नीचे तक शीर्ण और छिन्न भिन्न हो जाएगा। यहां पर छिङ का शिलालेख है जिसमें स्तूप का इतिहास है।

शी-आन् विश्वविद्यालय– यह विद्यालय १८ वर्ष पूर्व बना। यहां १५०० विद्यार्थी हैं जिनमें से ३७५ लड़कियां हैं। श्री ग्वे ने गर्व के साथ कहा कि हमारे यहां श्रमिक और किसान कुलों से आए हुए २०० विद्यार्थी हैं। अध्यापक संख्या २७० है। उनमें से ३५ स्त्रियां हैं।

विश्वविद्यालय में दस विभाग हैं। हमारे पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि राजनीति का कोई विभाग नहीं। राजनीति समस्त विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है। प्रथम वर्ष में प्रत्येक विद्यार्थी सप्ताह में चार घण्टे राजनीति की शिक्षा प्राप्त करता है।

हमको बतलाया गया कि प्रयोगशालाएं १८ लाख रुपए के व्यय से बनाई गई हैं। अधिकांश यन्त्र शाङ-हाइ में बने हैं। केवल कुछ थोड़े से साम्यवादी भ्रातृदेशों से मंगाए गए हैं।

श्री ग्वे वैज्ञानिक हैं। विश्वविद्यालय के अध्यक्ष हैं। पैरिस में छः वर्ष शिक्षा प्राप्त की है। पैरिस में इन्होंने भारतीय वैज्ञानिक रमण के भाषण सुने थे। उनके संक्षेप अभी तक इनके पास हैं। भारतीय वैज्ञानिक श्री मेघनाद साहा को भी जानते हैं।

पुस्तकालय में २ लाख ७० सहस्र ग्रन्थ हैं। पुस्तकालय देख कर तो यह विश्वास नहीं होता कि यहां इतने ग्रन्थ होंगे किन्तु इनका कथन भी असत्य नहीं होना चाहिए। सम्भवतः गणना करने की पद्धति भिन्न है। छोटी छोटी पुस्तकों की, विशेष कर साम्यवादी पुस्तिकाओं की, अनेक प्रतियां हैं। फिर भी २ लाख ७० सहस्र संख्या बड़ी है। इस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्बन्ध में अधिक सन्देह प्रकट करना और बारंबार प्रश्न पूछना अशिष्ट होता ।

विश्वविद्यालय में रूसी भाषा का विशेष स्थान है। प्रत्येक विद्यार्थी को दो वर्ष तक इसका अध्ययन करना पड़ता है।

प्राध्यापकों में से दस अध्यापक विदेशों में पढ़े हुए हैं। कुछ और भी आंगल, जर्मन अथवा फ्रांसीसी जानते हैं। कुछ अध्यापक जापानी पुस्तकों से विषय पढ़ाते हैं। किन्तु विद्यार्थियों को जापानी पढ़ने की सुविधा नहीं।

रूसी पुस्तकों का उपयोग अध्यापक तथा विद्यार्थी सभी करते हैं। १९५२ तथा १९५३ में सब अध्यापकों ने रूसी भाषा पढ़ी। इनका कहना है कि रूसी पुस्तकों में विषय का प्रतिपादन और व्याख्या अधिक अच्छी होती है।

पुस्तकालय में मञ्जु के भी कुछ ग्रन्थ हैं। तुन्-ह्वाङ की छः वलिताएं देख कर हमको आश्चर्य हुआ। केवल हमको ही वलिताएं न मिल सकीं। इसका हमको खेद है।

यहां त्रिपिटक भी है। साम्यवादी शासन से पूर्व यहां भोट आदि बौद्ध साहित्य का अध्ययन होता था पर अब बन्द है। यहां के पुस्तकाध्यक्ष ने बतलाया कि तुन्-ह्वाङ के चौथी शताब्दी की तिथि वाले ग्रन्थ जापान में प्रकाशित हुए हैं।

भारतीय भाषा में प्रकाशित एक भी ग्रन्थ इस पुस्तकालय में नहीं है।

विद्यार्थियों को भोजन और शिक्षा निःशुल्क मिलते हैं। श्रमिकों को, परिवार की सहायता के लिए, पृथक् धन मिलता है।

चलने से पूर्व एक सज्जन बुद्ध की त्रिभंग मूर्ति लाए। यह मिट्टी की मुद्रा पर बनी है। यह सातवीं शताब्दी की है। इसके पीछे लिखा है कि यह मूर्ति भारत से आई। बुद्ध भूमिस्पर्श मुद्रा में हैं। भारतीय मूर्तियों का चीन में विशेष आदर था।

फ़ू-क्वो-शिङ-च्याओ स्स– सवा घण्टा वहित्र में चल कर इस पर्वतस्थ मन्दिर में आए। मार्ग में सैनिक शिक्षणालय भी देखा। यहां श्वेन्-च्वाङ की पांच भूमि ऊंची समाधि है। समीप ही दोनों ओर दो पट्टशिष्यों की त्रिभूमि समाधियां हैं। १९३१ में इनका जीर्णोद्धार किया गया। श्वेन्-च्वाङ की मिट्टी की मूर्ति बहुत पुरानी नहीं।

श्वेन्-च्वाङ के समाधि-लेख की छाप लेने के लिए हमारे साथ बीस वर्ष का अनुभवी व्यक्ति आया था। उसने छाप हमारे सामने ली। पहले शिलालेख को कूर्च से धोया और कपड़े से पोंछा। तत्पश्चात् एक दिन पूर्व भिगाए हुए पतंग जैसे पतले पत्र को धीरे धीरे सावधानी से खोल कर शिलालेख पर पोले पोले कूर्च से लगाया। फिर पानी से छींटे दिए। छींटे देने के लिए भी कूर्च का प्रयोग किया। धीरे धीरे कठोर बालों वाले दूसरे कूर्च से पत्र को थपका। एक दो स्थान पर पत्र फट गया। ऊपर से दूसरा पत्र-खण्ड लगा दिया। लकड़ी के फलक पर काली मसी लगाई और फिर चावल के तुषों से भरे हुए कौशेय के ठप्पे से मसी-फलक को थपथपाया। तत्पश्चात् यह मसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्वेन्-च्वाङ् समाधि के समीप का विहंगम दृश्य

A bird's-eyeview of the Hsüan-chuang t'a or Pagoda enshrining the mortal relics of the pilgrim.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

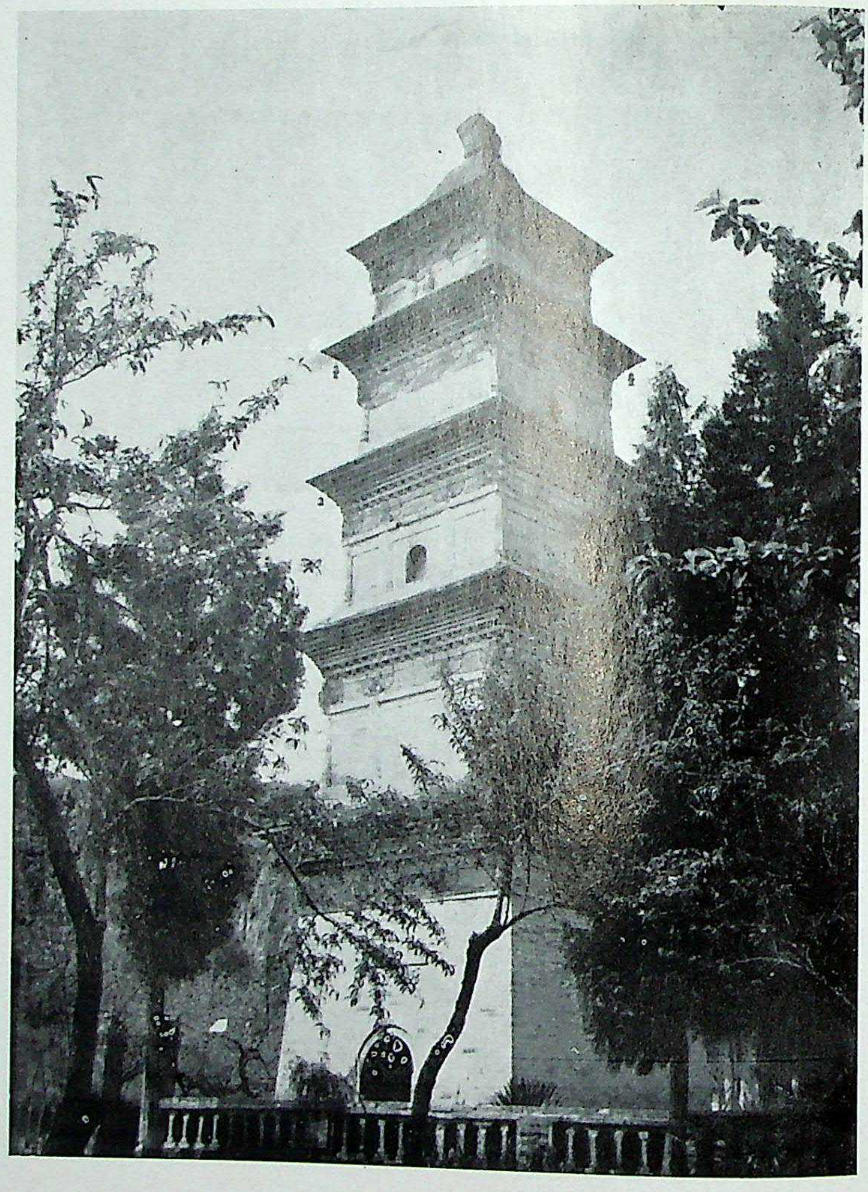

फ़ू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स में श्वेन्-च्वाङ् की पञ्चभूमिक समाधि ।

A close-up of the Hsüan-chuang T'a where the mortal remains of Hsüan-chuang were buried in 669 A. D. by Imperial Order, and a temple erected. The temple was named as Hsing-chiao ssŭ by Emperor Su-tsung as a homage to the pilgrim (*hsing* 'establisher of the' *Chiao* 'Doctrine').

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र पर थपथपाई गई । एक एक अक्षर पत्र पर स्पष्ट दिखाई देने लगा ।

यही कार्य भारतवर्ष में भी होता है, किन्तु चीनी स्वच्छता दर्शनीय है और अनुकरणीय भी ।

शिलालेखों की छापें लेना प्राचीन कला है । तुन्-ह्वाङ में एक सहस्र वर्ष प्राचीन छापें मिली हैं । साम्यवादी शासन से पूर्व छाप लेने वाले प्रत्येक बड़े नगर में मिल जाया करते थे । अब ये लोग दूसरे कामों में लग गए हैं । प्राचीन छापों का प्रयोग केवल ऐतिहासिक अनुसन्धान के लिए ही नहीं किन्तु विद्यार्थी तथा विद्वान् अपने हस्तलेख को सुधारने के लिए सुलेख-निदर्शन के रूप में भी करते थे ।

श्वेन्-च्वाङ की समाधि के साथ पुस्तकालय है । यहां शून्यवाद के प्रसिद्ध प्रवक्ता भिक्षु रहते हैं । इन्होंने सर्वप्रथम तुन्-ह्वाङ के दो वलिता-सूत्र दिखाए और तत्पश्चात् चावलों में रखा हुआ श्वेन्-च्वाङ का मोती सदृश अस्थि-अवशेष दिखाया ।

बाहर निकलने पर लू चल रही थी ।

कनेर और मोतिए के रमणीय पुष्प सर्वत्र शोभायमान थे ।

तू-शू-क्वान्– यह शान्-सी प्रान्त का पुस्तकालय है । पुस्तकाध्यक्ष ने बौद्ध त्रिपिटक के विषय में कहा– यह हमारी प्राचीन बहुमूल्य निधि है ।

इनके यहां भी तुन्-ह्वाङ की तीन वलिताएं हैं । एक सम्पूर्ण है । दो अन्य खण्डित हैं ।

चीन में हस्तलिखित ग्रन्थ बहुत थोड़े हैं । दसवीं शताब्दी से ग्रन्थ-मुद्रण की प्रथा सामान्य बन गई और विरले ही ग्रन्थ ऐसे छूटे होंगे जो मुद्रित न हुए हों । थाङ वंश के कुछ हस्तलिखित ग्रन्थ इस पुस्तकालय में हैं ।

पुस्तकाध्यक्ष के अनुसार यहां त्रिपिटक के छः संस्करण हैं । उनमें से ची-सा सम्पूर्ण है । इसके ७००० से अधिक खण्ड हैं । एक भिक्षुणी ने काष्ठ-फलक खोदने आरम्भ किए थे । अन्य भिक्षुओं ने उसकी सहायता की । १३८ वर्ष में समस्त मुद्रण-काष्ठफलक पूरे हुए । अन्तिम भाग में काष्ठ-मुद्रणफलक खोदने वालों की सूची दी हुई है ।

भाचित्रण द्वारा १९३५ में इसका प्रकाशन किया गया ।

यहां दो मिङ संस्करण हैं । एक के अक्षर बहुत मोटे और सुन्दर हैं । उसके लगभग दो सहस्र खण्ड हैं ।

शी-श्या का भी एक ग्रन्थ यहां विद्यमान है । आजकल बौद्ध ग्रन्थों पर कोई अनुसन्धान नहीं हो रहा है । केवल पुस्तकें सुरक्षित हैं ।

ची-सा संस्करण चार सुन्दर नाग-चित्रित निधायों में रखा हुआ है । इनमें से हमने दो का रंगीन भाचित्र लिया है । पुस्तकालय में ५०० वर्ष पुरानी एक बुद्ध-मूर्ति भी है । समस्त पुस्तकों की संख्या ३ लाख ३० सहस्र कही जाती है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अद्भुतागार– छठी सातवीं शताब्दी की खड़े बुद्धों की छः मूर्तियां हैं। इनमें भारतीय प्रभाव स्पष्ट है।

माइ-ची-सान् गुहाओं की मूर्तियों के प्रतिरूप इस अद्भुतागार में रखे हुए हैं। यहां की मूर्तियों में गान्धार का प्रभाव है।

चीन में तीन सहस्र वर्षों से लगातार कांस्य-पात्रों का प्रयोग मिलता है।

इस अद्भुतागार की विशेषता शिलालेख-संग्रह है। इनकी संख्या चार सहस्र से अधिक है। ये शिलाएं प्राचीन काल में पुस्तकें छापने के काम आती थीं। इनमें से अधिकांश शिलाएं पहले अन्य मन्दिर में थीं। उस मन्दिर के टूट जाने पर इनको यहां लाकर रखा गया।

क्वान्-जन् स्स– दलाइ और पन्छेन्-लामा यहां आ चुके हैं। शी-आन् में यही एक लामा मन्दिर है। तीन वर्ष हुए, २००० युआन् लगा कर शासन ने इस मन्दिर का पुनरुद्धार किया। मन्दिर में एक कोष्ठ आधुनिक साम्यवादी साहित्य के लिए है। यहां आधुनिक पत्र पत्रिकाएं आती हैं। लामा तथा जनता दोनों ही इनको पढ़ते हैं।

छिङ वंश में प्रकाशित भोट कन्जूर के १०० भाग हैं। इस मन्दिर का नाम काङ-शी राजा ने स्वयं लिखा था। शिल्पकार ने उसको पत्थर पर खोदा। थाङ वंश की चन्दनमय बुद्ध मूर्ति है। कांस्य की बुद्ध-मूर्ति भारतवर्ष से आई है किन्तु आने की तिथि का पता नहीं। शंख भी भारतवर्ष से आए हैं। धूपपात्र सीसे के बने हैं।

मन्दिर के सामने छोटा सा अक्षय-दीप-गृह है। कुण्ड में २०, २५ सेर तेल भरा है। बीच में बत्ती जल रही है। ढाई सौ वर्ष से ज्योति सतत चली आ रही है।

आंगन में वृक्षों की टहनियों को काट छांट कर पन्चभूमि स्तूप का रूप दिया गया है।

साम्यवादी शासन से पूर्व मन्दिरों के पास पर्याप्त घर और खेत हुआ करते थे। साम्यवादी शासन ने भूमि का बंटवारा किया। इसमें मन्दिरों की बहुत सी भूमि चली गई। इस मन्दिर के पास अब ४०४ माओ भूमि बची है। उपज का चौथाई भाग मन्दिर को मिलता है और तीन चौथाई भाग किसानों को। पिछले वर्ष मन्दिर को १६ सहस्र कट्टी गेहूं मिला। इसमें से दो सहस्र कट्टी कर के रूप में शासन को दिया गया। शेष से मन्दिर का निर्वाह चलाया गया (छः माओ का एक एकड़, तथा दो कट्टी का एक सेर होता है)।

श्वेन्-च्वाङ भारतवर्ष की लम्बी यात्रा के पश्चात् चन्-क्वान् 貞觀 के १९वें वर्ष अर्थात् ७०२ विक्रम में चीन लौटे। उस समय चीन की राजधानी शी-आन् थी। आते ही वह हुङ-फू स्स 弘福寺 नामक विहार में ठहरे। जब तीन वर्ष के पश्चात् योगाचारभूमिशास्त्र 瑜伽師地論 के चीनी अनुवाद के सौ खण्ड पूरे हो चुके तब सम्राट् थाइ-त्सुङ 太宗皇帝 ने स्वयं इसकी भूमिका लिखी जिसमें ७८१ अक्षर हैं। स्वयं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

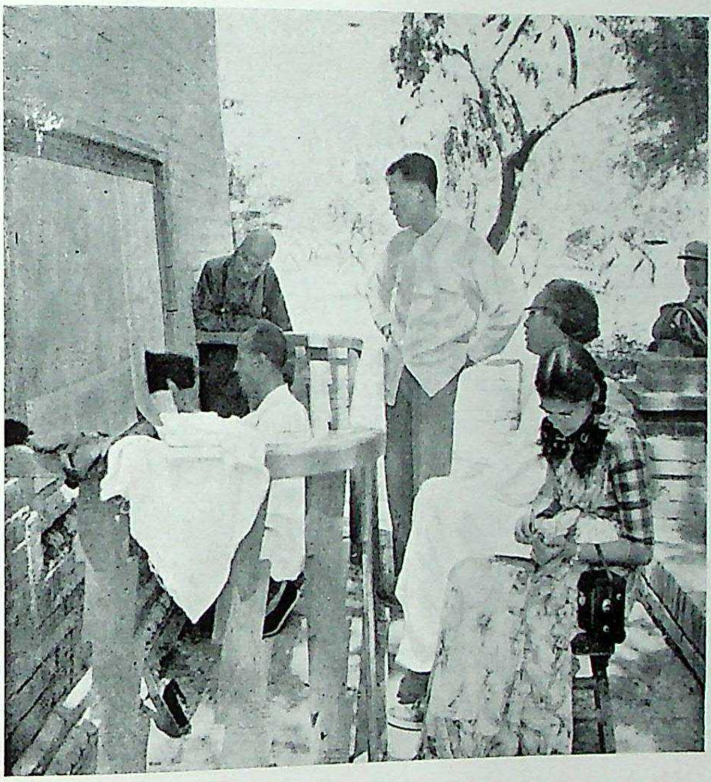

श्वेन्-च्वाङ् के समाधि-लेख की छाप लेते हुए। यह समाधि-लेख शिङ्-च्याओ स्स (धर्मोद्धार विहार) में है।

A rubbing expert takes an estampage of the epitaph inscription of Hsüan-chuang at the Hsing-chiao ssŭ temple, while Prof. Raghu Vira studies the ancient art of estampaging. A thousand-year old estampages have been found at Tun-huang.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चीन-सम्राट् के भतीजे एवं श्वेन्-च्वाङ् के शिष्य क्वि-चि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही सुन्दर और स्वच्छ प्रति बनाई और राष्ट्र के मन्दिरों, सभ्यों और अधिकारियों को सुना कर श्वेन्-च्वाङ के हाथ में सौंप दी। इस समय काओ-त्सुङ राजकुमार था। उसने इस भूमिका के वर्णन रूप में उपभूमिका लिखी।

हुङ-फ़ू स्स के अधिपति भिक्षु य्वेन्-तिङ 圓 定 तथा राजधानी के अन्य भिक्षुओं ने दोनों भूमिकाओं को शिलान्यस्त करने की अनुमति मांगी। यह अनुमति दे दी गई।

जब ध्स-अन् स्स का निर्माण हुआ तब श्वेन्-च्वाङ ने इन भूमिकाओं को शिलाओं पर खुदवाया और मन्दिर की उपरितम भूमि में रखवाया। सम्राट् और राजकुमार की भूमिकाओं से चीन के विद्वानों में बुद्ध-धर्म की प्रगति बहुत बढ़ गई।

सम्राट् की भूमिका की शिला कृष्ण राजाश्म की बनी है। यह वर्गाकार पीठ पर खड़ी है। इसके ऊपरी भाग पर बुद्ध शाक्यमुनि की मूर्ति है जिसके आसपास दो अर्हत्, दो बोधिसत्त्व और दो द्वारपाल हैं। नीचे के भाग में तीन अप्सराएं हैं। दाएं बाएं प्रान्त फूलों से सुशोभित हैं। शिला का नाग-मण्डित शिखर-भाग, थाङ कला का उत्कर्ष है। शिला के नीचे एक और पत्थर है जिस पर सामने की ओर उड़ती हुई अप्सराएं पुण्य स्तूप को उपहार के रूप भेंट कर रही हैं। मन्दिर को नागों ने पकड़ा हुआ है। दो सिंह और द्वारपाल भी उत्कीर्ण हैं।

एक और भी शिला है जिस पर दोनों भूमिकाएं खुदी हैं। यह शिला पेइ-लिन् 碑 林 में सुरक्षित है। भूमिकाओं के अतिरिक्त इस शिला पर प्रज्ञा-पारमिता-हृदय-सूत्र 般 若 波 羅 蜜 多 心 經 भी खुदा हुआ है।

मिङ-लुङ भवन 明 倫 堂 में एक तीसरी शिला विद्यमान है जिस पर दोनों भूमिकाएं खुदी हैं।

शिङ-च्याओ स्स 興 教 寺 – यहां ईंटों के तीन स्तूप हैं। एक श्वेन्-च्वाङ का, दूसरा ची-कुङ 基 公 का, तीसरा य्वेन्-त्स 圓 測 का। इनमें तीनों की समाधियां हैं। इनमें से दो त्रिभूमि स्तूप हैं और ११ हाथ ऊंचे हैं। पर श्वेन्-च्वाङ का स्तूप पञ्चभमिक और ४० हाथ ऊंचा है। तीनों में शिलालेख हैं।

जिस समय श्वेन्-च्वाङ ७२१ विक्रम में परलोक सिधारे तब छान् नदी 滻 水 के पूर्व में उनको दबाया गया। पांच वर्ष के पश्चात् सम्राट् के आदेश से यह मन्दिर बनाया गया और यहां उनके अवशेष लाए गए।

ची-कुङ संस्कृत के महापण्डित थे और श्वेन्-च्वाङ के मुख्य अनुवाद-सहायकों में थे। ये योगाचार दर्शन में निष्णात थे और इन्होंने इसी विषय पर सौ खण्डों की सुप्रसिद्ध टीका लिखी है। ७३९ विक्रम में ध्स-अन् स्स के अनुवाद-भवन में इनका देहान्त हुआ। ८८६ विक्रम में इनके एक अनुयायी ने इनके अस्थिशेषों को निकाला और भारतीय पद्धति के अनुसार दाह-संस्कार किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिलालेख के अनुसार य्वेन्-त्स कोरिया के महाराज के पौत्र थे। श्वेन्-च्वाङ जब भारत से लौट कर आए तब ये उनके भक्तिमान् शिष्य बन गए और जो ग्रन्थ श्वेन्-च्वाङ भारत से लाए थे उनके चीनी अनुवाद करने में अपना जीवन बिता दिया।

य्वेन्-त्स ने भारतीय पण्डित दिवाकर के साथ भी अनुवाद का काम किया था। ७५३ विक्रम में ८४ वर्ष की आयु में इनका देहान्त हुआ। इनके शरीर का दाह-संस्कार किया गया और शरीर-भस्म कई स्थानों पर बांटी गई।

आधुनिक मन्दिर सुङ वंश में ११७२ विक्रम में बनाया गया।

ता-शिङ-शान् स्स 大興善寺 – इस विहार की स्थापना चिन् वंश 晉 के महाराज वू 武帝 के दिनों में हुई थी। इस विहार का नाम समय समय पर परिवर्तन होता रहा। आधुनिक नाम स्वी वंश 隋 में पड़ा। जब नरेन्द्रयशस् और ज्ञानगुप्त भारत से आए और इस विहार को अपना निवास और कार्य-स्थान बनाया तब यह विहार बौद्ध विद्या का केन्द्र बन गया। थाङ वंश में अमोघवज्र, जिनके नाम का चीनी अनुवाद पू-खुङ 不空 है, उनका भी यह निवासस्थान रहा है। अमोघवज्र का नाम चीनी साहित्य और इतिहास में अमर है। इनकी मृत्यु के पश्चात् इनका समाधि-मन्दिर स्थापित किया गया। स्थापना की तिथि ता-ली 大曆 का दशम वर्ष अर्थात् ८३१ विक्रम है। छः वर्ष के पश्चात् अमोघवज्र के शिलालेख की स्थापना हुई। इस शिलालेख के अनुसार अमोघवज्र पश्चिम भारत से आए थे और इन्होंने थाङ वंश के तीन सम्राटों का अभिषेक किया था। राजसभा में इनका बड़ा सम्मान था। मृत्यु से पूर्व सम्राट् ताइ-त्सुङ 代宗 ने इनको विशेष सम्मानोपाधि दी थी। मृत्यु पर सम्राट् ने तीन दिन तक शोक मनाया था। इनके से-ली अर्थात् शरीर के अवशेषों को सुरक्षित रखने के लिए समाधि बनाई गई। यद्यपि शिला पर इनकी मृत्यु की तिथि मिट गई है तथापि जापानी शिंगोन्-सम्प्रदाय के प्रवर्तक कूकाइ 空海 के ग्रन्थ से हमको सूचना मिलती है कि इनकी मृत्यु ता-ली के नवम वर्ष अर्थात् ८३१ विक्रम में हुई थी।

काइ-य्वेन् स्स 開元寺 – यह शी-आन् नगर की परिधि में ही है। यहां थाङ समय के दो धारणी-स्तम्भ हैं। इनमें से एक पर उष्णीषविजय-धारणी 佛頂尊勝陀羅尼 है जो ९२३ विक्रम में खोदी गई। इनके अतिरिक्त एक महत्त्वपूर्ण शिलालेख १३७६ विक्रम का है। शिला पर गरुड, दो नागिन और पुष्पालंकार लामा शैली के बने हुए हैं। नीचे सम्राट् श्वेन्-त्सुङ तथा धर्माचार्य चङ-क्वाङ के मिलने का चित्र है। इस चित्र के नीचे लेख है। धर्माचार्य चङ-क्वाङ का सम्राट् श्वेन्-त्सुङ से मिलना इतिहास की बड़ी घटनाओं में से है। बुद्ध की करुणा और कृपा के प्रति आभार रूप में प्रत्येक मण्डल में एक बौद्ध मन्दिर की स्थापना की जाए, ऐसी प्रार्थना धर्माचार्य ने सम्राट् से की। इस शिला के दूसरी ओर विश्वसागर का चित्र है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

य्वेन्-त्स कोरिया के महाराज के पौत्र थे। ये श्वेन्-च्वाङ् के अनन्य भक्त शिष्य थे। इन्होंने श्वेन्-च्वाङ् द्वारा लाए भारतीय ग्रन्थों के चीनी अनुवाद करने में अपना सारा जीवन लगा दिया। भारतीय पण्डित दिवाकर के साथ भी इन्होंने अनुवाद किया। शिङ्-च्याओ स्स में श्वेन्-च्वाङ् के पञ्चभूमिक स्तूप के साथ इनका भी त्रिभूमिक स्तूप है।

Yüan-ts'ê, the outstanding disciple of Hsüan-chuang who took a leading part in the translation of Sanskrit texts brought back from India by his pilgrim Master. His memorial pagoda stands alongwith that of his guru Hsüan-chuang and his co-disciple Chi-kung in the precincts of the Hsing-chiao ssŭ temple, the three forming a triad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

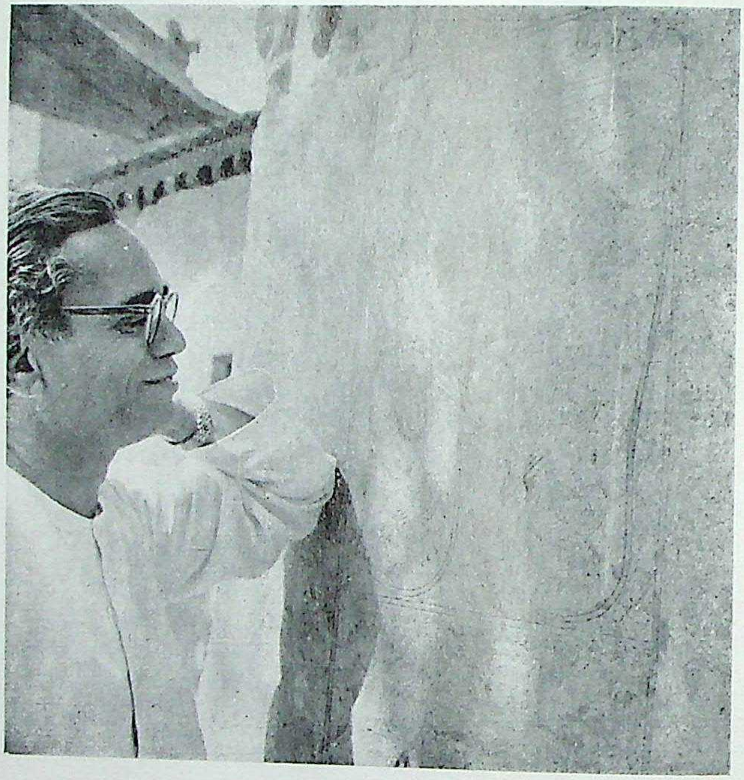

वो-लुङ् स्स विहार में उत्कीर्ण बुद्ध-पाद। श्वेन्-च्वाङ् द्वारा पाटलिपुत्र से लाई बुद्ध-चरणों की प्रतिकृति को सम्राट् ताइ-त्सुङ् ने शिला पर उत्कीर्ण कराया—ऐसी परम्परा-श्रुति है।

The stele in the Wo-lung ssŭ temple with Buddha's foot-prints. It was engraved in the 20th year of Hung-wu (1387 A. D.) of the Ming dynasty. These prints were copied in several places in China. According to tradition, these prints were copied by Hsüan-chuang from the original at Pāṭaliputra in Magadha. When the Pilgrim presented them to Emperor Tai-tsung, he had them engraved on stone.

अवतंसक-सूत्र की एक गाथा के सात चीनी अक्षर शीर्षक के रूप में दिए गए हैं। अवतंसक-सूत्र में जो विश्व की कल्पना दी गई है उसका चित्रण इस शिला पर किया गया है। इसके अनुसार विश्व का आधार वायुमण्डल है जिसके ऊपर ११ मण्डल हैं। इसके ऊपर परिमल का विशाल सागर जिसमें एक महाकाय कमल तैर रहा है। इस कमल पर भवसागर ठहरा हुआ है। इसके चारों ओर पुष्पालंकार बने हैं। कमल-स्थान वज्रमण्डल पर्वतों से घिरा है। परिमल की नदियां दश दिशाओं में बह रही हैं। बुद्ध-क्षेत्रों के प्रतिनिधि छोटे छोटे बीस और कमल हैं। दस रत्ननिधि हैं। इनके समीप पुण्यवृक्ष है। बड़े कमल से छोटे छोटे कमलों का विकास हुआ है। इन छोटे कमलों पर बीस तल का स्थाम है। प्रत्येक तल भिन्न रूप और एक बुद्धाधिष्ठित है। १३वां तल सहलोक है। यहां वैरोचन बुद्ध 毗盧舍那 विराजमान है। जैसे जैसे हम ऊपर के तल पर जाते हैं वैसे वैसे तल की परिधि बढ़ती जाती है।

वो-लुङ् स्स 臥龍寺 – यह विहार भी शी-आन् नगर के अन्दर ही वर्तमान है। इस विहार में त्रिपिटक के मुद्रण और वण्टन का वर्णनात्मक ऐतिहासिक शिलालेख है।

इस विहार में एक और शिलालेख है जिस पर बुद्ध के चरण उत्कीर्ण हैं। इसकी छाप जो हम स्वयं लाए हैं सामने पृष्ठ पर पाठक देखेंगे। सम्प्रदाय यह है कि श्वेन्-च्वाङ मगध देश की राजधानी पाटलिपुत्र से बुद्ध-चरणों की प्रतिकृति लाए थे जो उन्होंने सम्राट् ताइ-त्सुङ को भेंट की थी। उन्होंने इसको पत्थर पर खुदवा लिया था। इन बुद्ध-चरणों की अनुकृति जापान में नारा और कोन्दो आदि स्थानों में मिलती है। नारा के शिलालेख के अनुसार यह बुद्धचरणों की अनुकृति पू-क्वाङ स्स 普光寺 से लाई गई थी और ८०९ विक्रम में याकुशि-जी मन्दिर में खोदी गई थी।

पेइ-लिन् अर्थात् शिला-वन। शी-आन् के वन्-म्याओ 文廟 में अनेक ऐतिहासिक शिलालेखों का संग्रह है। कोष्ठ सैंकड़ों उत्कीर्ण शिलाओं से भरे हैं। इसका आरम्भ सुङ वंश में हुआ। ऐतिहासिक लेखों की रक्षा करने के लिए समय समय पर यहां उत्कीर्ण शिलाएं इकट्ठी की गईं। हमने स्वयं ५०० से अधिक देखीं। इनमें प्रसिद्ध कला-त्मक लेखकों की लिखित शिलाएं तथा विहारों और बौद्ध आचार्यों के इतिहास सम्मिलित हैं। इनमें से हम दो चार का उल्लेख करेंगे।

धर्माचार्य यिन् 因法師 **की शिला**–श्वेन्-च्वाङ के चीनी अनुवाद की आवृत्ति करने के लिए बारह चोटी के विद्वान् थे। इनमें से ताओ-यिन् 道因 अग्रणी थे। इनका कार्य था कि अभिव्यक्ति की यथार्थता और अर्थ की शुद्धता में दोष न आने पाए। ताओ-यिन् सात वर्ष की आयु से शास्त्रों का अध्ययन करने लगे थे। ये योगाचार-दर्शन के परम विद्वान् थे।

ध्यान-सम्प्रदाय के आचार्य ता-च 大智, पू-छी 普寂, आदि अनेक आचार्यों का वर्णन इन शिलालेखों में मिलता है। पू-छी अथवा ई-फू 義福 के गुरु शन्-श्यू सम्राट् के राजगुरु थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विक्रम की आठवीं और नवीं शताब्दी ध्यान-सम्प्रदाय के उत्कर्ष का युग थी। ध्यान-सम्प्रदाय के प्रभाव से अध्ययन की प्रतिष्ठा कुछ नीची चली गई थी। धर्माचार्य ता-ता 大達 ने पुनरपि विद्या की प्रतिष्ठा को उठाया। ये स्वयं योगाचार, विनय और सुखावती के महापण्डित थे। इनका शिलालेख ८९८ विक्रम में प्रतिष्ठापित किया गया।

फ़न्-क्वो-कुङ 邠國公 – यह शिलालेख ८७९ विक्रम में प्रतिष्ठापित किया गया। फ़न्-क्वो-कुङ श्रद्धालु बुद्धभक्त सेनापति थे। सम्राट् मू-त्सुङ 穆宗 इन पर मुग्ध थे। राष्ट्र और धर्म तथा जनता के लिए निःस्वार्थ भाव से लगे रहते थे।

ह्वा-यन् स्स 華嚴寺 – यह टूटा फूटा विहार है। यह अवतंसक-सम्प्रदाय के प्रवर्तक तू-शुन् 杜順 की स्मृति है। ६९७ विक्रम में तू-शुन् ने अपने जीवन का कार्य इस लोक में समाप्त किया और परलोक सिधारे।

थ्साओ-थाङ स्स 草堂寺 –शी-आन् नगर से दक्षिण दिशा में आठ ली की दूरी पर यह विहार स्थित है। कुमारजीव के अनुवाद-कार्य का यह मुख्य स्थान रहा है। कुमार-जीव के कार्य के और भी अन्य स्थानों का ऐतिहासिक ग्रन्थों में वर्णन है। इस विहार में ध्यानाचार्य क्वेइ-फ़ङ-त्सुङ-मी का शिलालेख विद्यमान है। क्वेइ-फ़ङ ध्यान और अवतंसक-दर्शन के प्रसिद्ध आचार्य थे। इन्होंने अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। इनका देहान्त ८९८ विक्रम में ध्यानावस्था में हुआ था। मृत्यु के पश्चात् इनको समाधि-प्रज्ञा-ध्यानाचार्य की उपाधि तिङ-ह्वी-छान्-श 定慧禪師 दी गई।

१६-६-५५ की रात्रि को शी-आन् में चीनी छाया-नाटक देखा। यह छाया-नाटक जावा के छाया-नाटक से बहुत भिन्न है। जावा में अधिकांश रामायण और महाभारत के दृश्यों का अभिनय होता है। डालम् अर्थात् पुतलियों को चलाने वाला व्यक्ति जनता के सामने बैठता है। जनता पुतलियों को देखती है तथा पुतलियों की छाया को भी। जब १७ अगस्त १९५१ को हमने सुभद्राहरण नामक छाया-नाटक जयकर्ता के राष्ट्रपति-भवन में देखा था तब नाटक-भवन के दो भाग किए हुए थे। पुतलियों का रंगमंच भवन के मध्य में था। रंगमंच के एक ओर राष्ट्रपति तथा "क्षत्रियगण" बैठे हुए थे, दूसरी ओर "स्त्री और शूद्र"। क्षत्रिय, स्त्री और शूद्र इन तीनों शब्दों का प्रयोग अभी तक किया जाता है। क्षत्रियगण डालम् और पुतलियों को देखते थे और स्त्री-शूद्र-गण पुतलियों की छाया को देख सकते थे। पुतलियों की छाया श्वेत यवनिका पर पड़ती थी। मुझे तो स्त्री-शूद्रों की ओर से दृश्यमान छाया-नाटक कहीं अधिक सुन्दर लगा।

चीनी छाया-नाटक में पुतलियों को चलाने वाला व्यक्ति दिखाई नहीं पड़ा। पुत-लियों की संख्या भी आठ दस से अधिक न थी। नाटक बहुत रोचक था। चलते समय हमको शी-आन् के अधिकारियों ने निदर्शन रूप में तीन पुतलियां भेंट कीं। पुतलियां भैंस के चमड़े की बनी हुई हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

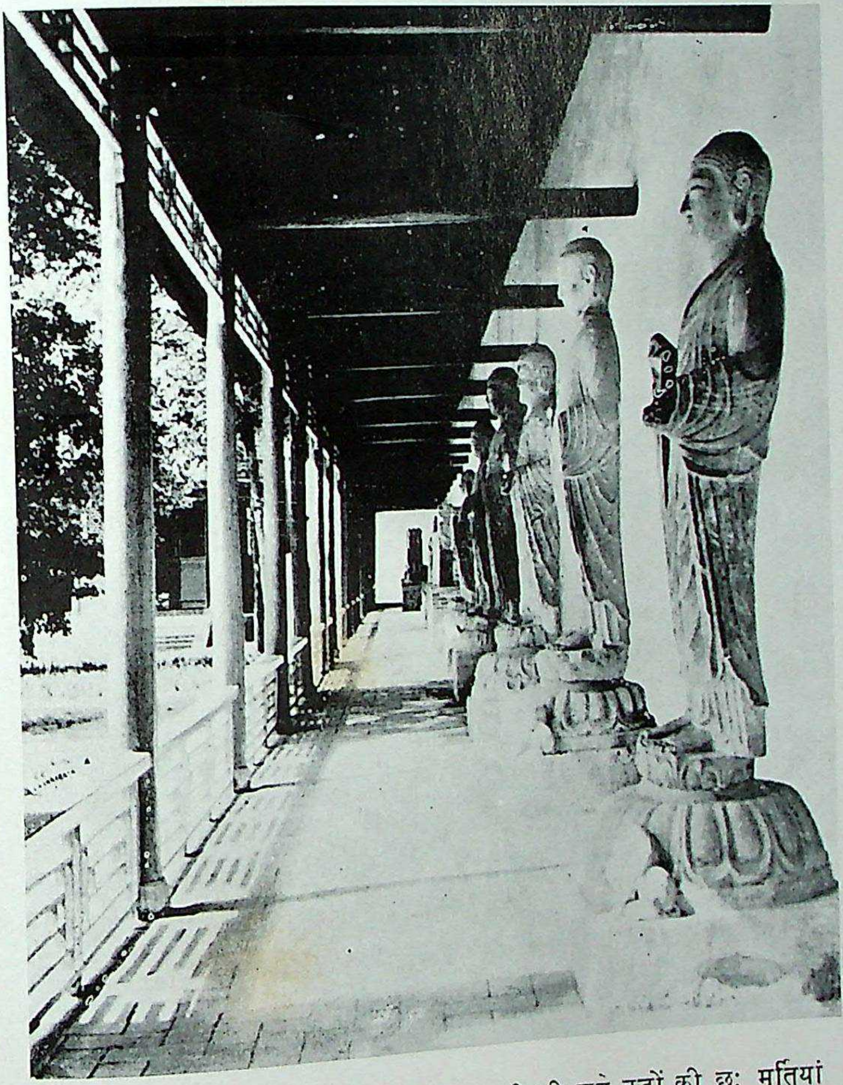

शी-आन् के अद्भुतागार में छठी-सातवीं शताब्दी की खड़े बुद्धों की छः मूर्तियां हैं। इनमें भारतीय प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है।

Six Buddha images at the Hsi-an Museum, belonging to sixth-seventh centuries which bear conspicuous Indian influence.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

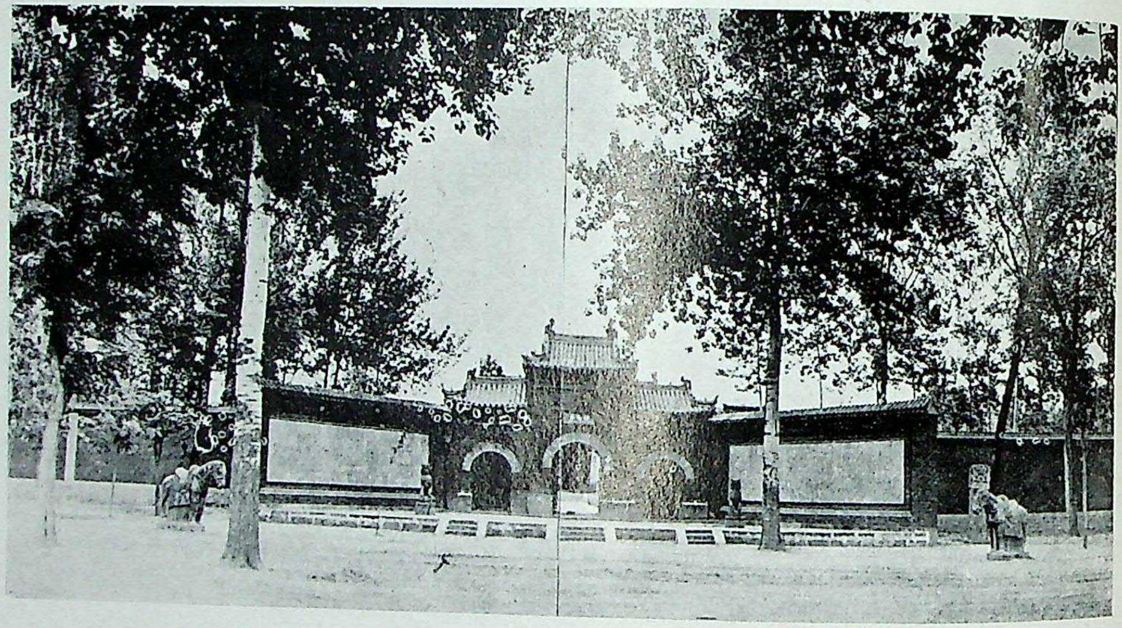

१२४ विक्रम में चीन-सम्राट् मिङ्-ती के निमन्त्रण पर दो भारतीय धर्माचार्यों, काश्यप मातंग और धर्मरक्ष, ने श्वेताश्व विहार में भारत-धर्म के बीज का रोपण किया। यह प्रथम बौद्ध विहार का प्रवेशद्वार है। दोनों पार्श्वों में खड़े हुए श्वेत घोड़े उन अद्भुत क्षणों के स्मारक हैं जब धर्माचार्य श्वेताश्वों पर सूत्रग्रन्थ लाए थे। इसी कारण विहार का नाम पो-मा स्स अर्थात् श्वेताश्व विहार रखा गया।

The main entrance of Po-ma ssŭ near Loyang, founded in the eleventh year of Yang-ping, i.e. 67 A. D. It is the first Buddhist monastery where two Indian teachers Kāśyapa Mātaṅga and Dharmarakṣa brought Sanskrit sūtras on white horses whence the monastery came to be known as the White (*po*) Horse (*ma*) Monastery (*ssŭ*). Stone images of two horses greet the visitor as he enters the precincts.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चीन में बौद्ध धर्म का विकास और प्रचार स्वी 隋 तथा थाङ 唐 राजाओं के काल में शिखर पर था। हमारे पास ऐतिहासिक सामग्री के दो महान् स्रोत हैं– चीनी साहित्य और पुरावशेष। चीनी साहित्य में वंशानुवंश, स्थानानुस्थान, इतना ही नहीं, विहारानुविहार विशाल और विस्तृत वर्णन हैं कि किस प्रकार से और किन प्रयोजनों को दृष्टि में रखते हुए किन विहारों का निर्माण हुआ। वहां पर किन किन विद्वानों ने विद्या-सेवा में अपना जीवन बिताया, इत्यादि।

ऐतिहासिक साहित्य में सुकीर्तित स्थान नष्ट हो चुके। इसके विपरीत ऐसे स्थान विद्यमान हैं जिनका पुस्तकों में विशेष अथवा कोई भी वर्णन नहीं, पर वे अभी तक अच्छी दशा में हैं।

फिर भी ऐसे पुरावशेषों की न्यूनता नहीं जिनके सम्बन्ध में ऐतिहासिक सामग्री तथा अवशेष इतनी प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं कि दोनों का सम्बन्ध जोड़ा जा सके और बौद्ध धर्म के इतिहास की शृंखला संतत और अविच्छिन्न जीवित रूप में जानी जा सके।

राजवंशों का उदय और अस्त होता रहा। नाना प्रकार के परिवर्तन राष्ट्र ने देखे। अनुमान कीजिए कि पूर्व चिन् 東晉 वंश के ह्वी-य्वेन् 慧遠 के दिनों से लेकर आज तक लू-शान् 廬山 का तुङ-लिन् 東林 विहार विद्यमान है। इसके नाम और स्थान वही हैं। उत्तर वेइ 北魏 के राज्यकाल में भारत के महान् आचार्य बोधिधर्म चीन में आए और सुङ-शान् 嵩山 में जिस शाओ-लिन् 少林 विहार को अपना निवास और कार्यस्थान बनाया वह अब भी उसी भूमि पर खड़ा है।

महत्त्वपूर्ण अवशेष अधिकांश चौथी से बारवीं शताब्दी तक के हैं। चाहे आठ सौ वर्ष व्यतीत हुए हों चाहे १५ सौ, और चाहे सन्त और महात्मा, विद्वान् और आचार्य, सम्प्रदाय-प्रवर्तक तथा शास्त्रों और सूत्रों के अनुवादक विचक्षण पण्डित इस संसार से चल बसे हों, ये स्मारक अभी तक उनके पुण्य कार्य की घोषणा कर रहे हैं। जब हम साक्षात् इन स्थानों पर खड़े होकर इनके वैभवकाल का चिन्तन करते हुए प्राचीन मूलचित्र अपने मन में निर्माण करते हैं तो श्रद्धा भक्ति का आप्लाव उमड़ आता है। बीच की बीती हुई शताब्दियां क्षणभर के लिए मूर्तिमती हो जाती हैं।

हमने जो स्थान और वस्तुएं देखी हैं उनका महत्त्व भारत और चीन के सम्बन्धों के लिए अपरिमित है। भारत का इतिहास इनके बिना अधूरा है।

पुरावशेष, पत्थर, ईंट, मिट्टी, लकड़ी, लोहे, ताम्बे और पीतल के हैं। सर्वप्रथम पहाड़ों में बनाई गुफाएं, शिलाओं पर लिखे हुए सूत्रोद्धरण, दो तीन अंगुल से लेकर सौ हाथ तक की ऊंची विशाल और मनोभिभावी मूर्तियां, प्राचीन सिद्धम् लिपि में लिखे हुए तथा समस्त देश में फैले हुए धारणी-स्तम्भ।

इनके अतिरिक्त ईंट के बने हुए स्तूप, छोटे से छोटे और बड़े से बड़े।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किन्तु कला की दृष्टि से अथवा इतिहास की साक्षिरूपता की दृष्टि से पर्वत-गुहाएं प्रथम श्रेणी में आनी चाहिएं। ४२३ विक्रम से इन गुहाओं का आरम्भ होता है। वंशानुवंश और प्रान्तानुप्रान्त वेषभूषा, वास्तु और चित्रकला, दर्शन और सम्प्रदाय में जो भेद होते गए उनका चित्रण इन गुहाओं में मिलता है। भारत में इन गुहाओं का प्रारम्भ हुआ, चीन में इनका विकास पराकाष्ठा तक पहुंचा। भारत से सम्बद्ध और प्रभावित किसी और देश में इतनी गुहाएं नहीं हैं और न ही उनमें इतनी कलाकृतियां विद्यमान हैं। यदि हम संसार के सभी देशों पर दृष्टिपात करें तब भी चीन की बौद्ध गुहाएं, प्राचीन कला और शिल्प की महत्तम गुहाएं हैं। बौद्ध धर्म ने किस प्रकार साम्राज्य-प्रवर्तकों और सामान्य जनता के जीवन को अनुप्राणित किया था इसका अनुमान इन पुरावशेषों तथा साहित्यानुशीलन दोनों के मिश्रण से ही यथार्थ रूप में हो सकता है।

चीन देश, जिसमें आज उत्तरपूर्व में मञ्जु प्रदेश और मोंगोल राष्ट्र तथा पश्चिम में वीगूर आदि तुर्क जातियों की भूमि, कुस्तन अथवा खोतान् और विशाल भोटभूमि (तिब्बत) सम्मिलित हैं, का एक एक प्रान्त और प्रदेश बौद्ध अवशेषों से समाकीर्ण है।

लो-याङ 洛陽 में आइए। यह आधुनिक हो-नान् 河南 प्रान्त में स्थित है। यह प्राचीन काल में चीन की राजधानी रहा है। आज १८८८ वर्ष व्यतीत हो चुके जब **पो-मा स्स** 白馬寺 की स्थापना याङ-पिङ 永平 के ११वें वर्ष में हुई थी। १२४ विक्रम से लेकर आज तक अनेक बार इस विहार का जीर्णोद्धार हुआ।

यह विहार आधुनिक लो-याङ नगर से २५ ली की दूरी पर है। मार्ग कच्चा है। धूलिपूर्ण है। चारों ओर ऊंची भित्ति बनी है। प्रवेश-द्वार के सामने दो पत्थर के घोड़े खड़े हुए हैं। यद्यपि ये बहुत पुराने नहीं तो भी इन घोड़ों का यहां खड़ा होनां सार्थक है। ये घोड़े स्मारक हैं उस अद्भुत क्षण के जब भारत से पहले धर्मदूत चीन के महाराज ने निमन्त्रित किए थे और वे यहां आकर उतरे थे। जिस घोड़े पर वे अपने साथ सूत्रग्रन्थ लाए थे उस घोड़े का रंग श्वेत था। इसी कारण विहार का नाम पो-मा स्स अर्थात् श्वेताश्व-विहार रखा गया (पो=श्वेत, मा=अश्व, स्स=विहार)।

विहार में प्रवेश करते ही दाईं और बाईं ओर प्रथम भारतीय धर्मदूतों की समाधियां हैं। इन समाधियों के साथ शिलालेख भी हैं। ये शिलालेख १२४ विक्रम के तो नहीं बहुत पीछे के हैं किन्तु ऐतिहासिक सम्प्रदाय के अभिव्यञ्जक हैं।

इन समाधियों के दर्शन करना और अपने श्रद्धापुष्प स्वर्गारूढ आत्माओं को एक दो अञ्जलि भर कर दो चार अश्रुओं के साथ अर्पण करना किस भारतीय का कर्तव्य नहीं। ये शूर वीर साहसी धर्मप्रचारक, शान्तिप्रचारक, भारत का पुनीत सन्देश लिए हुए पर्वतों, मार्गहीन पर्वतों, उनसे भी दुर्गम जलहीन दिग्व्यामोहकारी, शतशः क्रोशपर्यन्त विस्तारी और भूख एवं प्यास की असह्य यातनाओं से पूर्ण, साक्षात् यमप्रदेशभूत मरुमार्गों को पार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

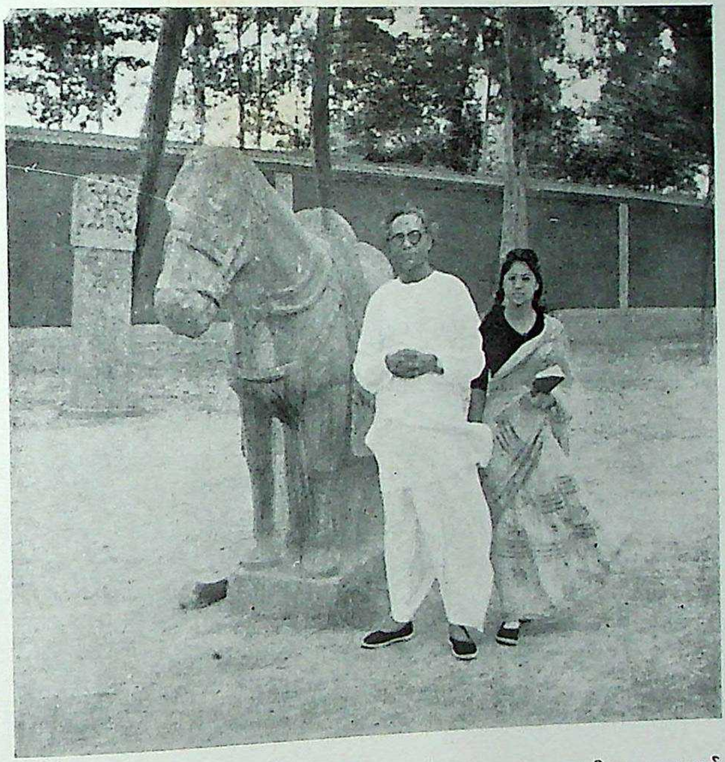

श्वेताश्व विहार के प्रवेशद्वार पर श्वेत घोड़ा। भारतीय आचार्य श्वेताश्व पर अपने साथ सूत्र ग्रन्थ लाए थे। यह घोड़ा उन ऐतिहासिक क्षणों का स्मारक है।

The image of the horse at the entrance of the Po-ma ssŭ or White Horse Monastery is reminiscent of the historic introduction of Buddhism in China.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

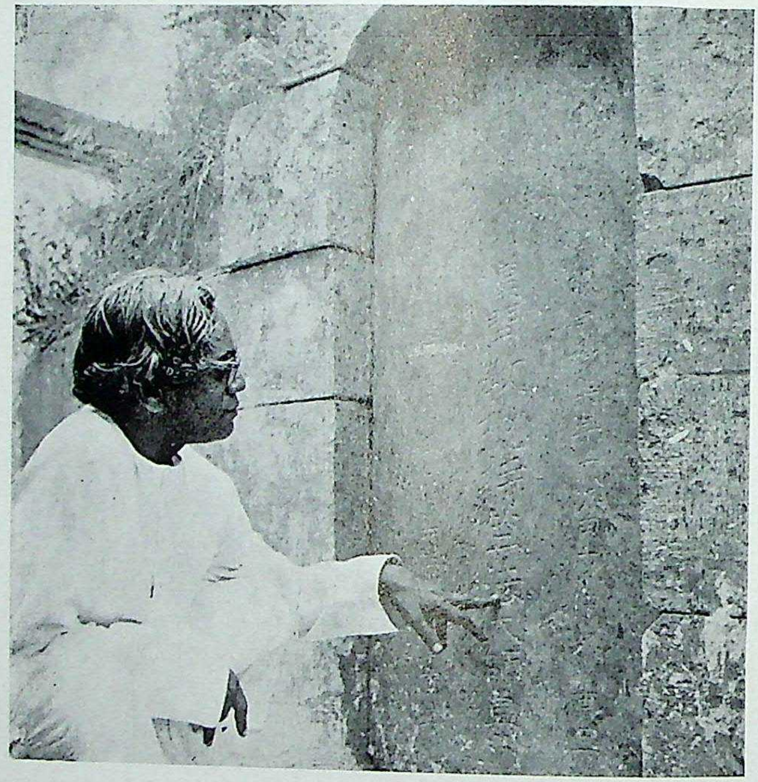

पो-मा स्स विहार में प्रवेश करते ही भारती के प्रथम धर्माचार्य काश्यप मातंग और धर्मरक्ष की समाधियां हैं। इन समाधियों पर खुदे शिलालेख समसामयिक न होते हुए भी ऐतिहासिक घटना के अभिव्यञ्जक हैं।
The epitaph stele at Po-ma ssŭ on the tomb of Dharmarakṣa, one of the two ācāryas who introduced the Dharma in the Celestial Empire.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करते हुए भारत के धर्म-बीजों को यहां लाए और उनका श्वेताश्व-विहार में रोपण किया ।

पो-मा स्स संयान-स्थात्र है । यहां के अध्यक्ष ने हमको बताया कि धर्मरक्ष की मूर्ति थाङ काल की बनी है । धर्मरक्ष के सामने ही मातंग की मूर्ति है । दोनों के दोनों ओर चीनी शिष्य खड़े हैं । मातंग के पास खड़े हुए एक शिष्य के हाथ में संस्कृत का ग्रन्थ था । वह अब नष्टप्राय हो चुका है । मूर्तियों का काला रंग, नितान्त काला रंग क्या धर्मरक्ष और मातंग के वर्ण का द्योतक है? क्या ये लोग सर्वथा कृष्णवर्ण के थे?

आज लो-याङ में नौ भिक्षु रहते हैं । मन्दिर संख्या छः है । थाङ राजाओं के काल में लो-याङ में १८०० मन्दिर थे ।

मातंग-मूर्ति वाले कोष्ठ के बाहर भित्तिलेख हैं जिसमें भारत से आए भिक्षुओं और ताओ-सम्प्रदाय के श्रद्धालुओं में हुए संघर्ष का वर्णन है । बौद्ध और ताओ में से कौन सत्य है एवं कौन अधिक प्रभावी बलशाली है इसकी परीक्षा करने के लिए दोनों के ग्रन्थों को अग्नि में डाल दिया गया । अग्नि बौद्ध सूत्रों को जलाने में समर्थ न हुई किन्तु ताओ-ग्रन्थों को उसने भस्मसात् कर दिया । इस अग्नि-परीक्षा के परिणाम-स्वरूप श्वेताश्व-विहार का निर्माण हुआ ।

श्वेताश्व-विहार में बीस वर्ष हुए, राजाश्म की बुद्धमूर्ति बर्मा से शाङ-हाइ द्वारा लाई गई । मस्तक के तिलक स्थान पर रत्न लगा है । बौद्ध परिभाषा में इसको ऊर्णा कहते हैं । मूर्ति कम्बुग्रीव है । कम्बु-रेखाओं पर सोने का पानी फिरा है । इससे मूर्ति की शोभा अद्वितीय हो गई है ।

१२२ विक्रम में चीन के पूर्वीय हान्-वंश के सम्राट् मिङ-ती को स्वप्न आया कि सुवर्ण-पुरुष प्रासाद में उड़ता हुआ आ रहा है । बुद्ध का स्वर्ण-वर्ण चीन में भी उस समय तक प्रसिद्ध हो चुका था । सम्राट् के पूछने पर राजसभा के व्यक्ति ने झट बतलाया कि ये तो बुद्ध हैं । राजा ने अपने दूत भारतवर्ष में बौद्ध सूत्र और भिक्षु लाने के लिए भेजे । परिणाम-स्वरूप धर्मरक्ष और काश्यप मातंग तथा अनेक सूत्र और मूर्तियां घोड़ों पर लाद कर लाई गईं । सूत्र-ग्रन्थ श्वेत घोड़े पर थे । इनके लिए राजधानी में सम्राडादेश से श्वेताश्व नामक प्रथम बौद्ध विहार बनाया गया । धर्मरक्ष और मातंग ने अपना समस्त जीवन चीन में बिता दिया । आजीवन संस्कृत ग्रन्थों का चीनी में अनुवाद करते रहे और चीनी जनता को धर्मोपदेश देते रहे । इनके अनूदित ग्रन्थों में से केवल द्वाचत्वारिंशद्-अध्याय सूत्र बचा है । इसमें बौद्ध शब्दों की व्याख्या तथा विनय आदि के नियम दिए हुए हैं ।

चीनी ग्रन्थों में धर्मरक्ष और मातंग के चीन आने की कथा का संक्षेप इस प्रकार है ।

छा-यिङ और चिङ-छिङ को चीन के महाराज ने भारत भेजा। ये अपने साथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४२ अध्याय का सूत्र ग्रन्थ तथा मातंग और धर्मरक्ष को लाए। इनके साथ शाक्यमुनि की मूर्तियां भी थीं । सूत्रग्रन्थ शीतमण्डप अर्थात् जिस स्थान में अब मातंग और धर्मरक्ष की मूर्तियां हैं लाकर रखे गए ।

काश्यप और धर्मरक्ष की मूर्तियों वाले फी-लू-को 毗盧閣 नामक द्विभूमिक भवन के आंगन में हमने यहां के भिक्षुओं के रंगीन चित्र लिए । सौभाग्यवश यहां दक्षिण प्रदेश से एक और चीनी भिक्षु आए हुए थे । ये तपस्वी हैं । इन्होंने १८ वर्ष की समाधि लगाई थी । अन्य भिक्षुओं के समान ये परिग्रहशील नहीं । इनके जूते और कपड़े फटे हुए थे । उपवास से इनका शरीर कृश है । ये वयोवृद्ध हैं । भारत से आए हुए दो व्यक्तियों को देख कर इनके हर्ष की सीमा न रही । हमारे वस्त्रों को इन्होंने बुद्ध के वस्त्र माना । आज श्वेताश्व विहार के अध्यक्ष भिक्षु ची-लू हैं । जो हमने चित्र लिए उनकी प्रति इनको भेजनी है । समाधि लगाने वाले भिक्षु भी चित्र चाहते हैं । वे बड़ी उत्सुकता से चित्र खिचाते समय हमारी पंक्ति में सम्मिलित हुए ।

इस भवन में अनेक शिलालेख हैं । इनमें से दो चार की हमने छापें लीं ।

समीप ही त्रयोदश-भूमिक स्तूप खड़ा है। इस स्थल को छी-युङ था 齊雲塔 अथवा पूर्वीय पो-मा स्स 東白馬寺 कहते हैं। छी-युङ था का अर्थ है मेघ-चुम्बी स्तूप। सामने ही लेख-धारिणी शिला खड़ी है । इस शिला की स्थापना १२३२ विक्रम में हुई थी । इसके अनुसार उत्तर थाङ वंश के सम्राट् च्वाङ-त्सुङ 莊宗 ने इस स्तूप का निर्माण किया था। उस समय यह नौ भूमि ऊंचा था । लकड़ी का बना हुआ था और तीन सौ हाथ से अधिक ऊंचा था । सुङ काल में चिङ-हाङ के प्रथम वर्ष (११८३ विक्रम) में यह स्तूप अग्नि-सात् हुआ और १२३२ विक्रम में य्वेन्-कुङ नामक भिक्षु ने इसी स्थान पर ईंटों का त्रयोदश-भूमिक स्तूप बनवाया। ६२३ वर्ष के पश्चात् छिङ काल में च्या-छिङ 嘉靖 के तृतीय वर्ष में य्वेन्-लाङ 圓朗 ने इसका जीर्णोद्धार किया। इसके ऊपर चढ़ने के लिए जनसाधारण के लिए कोई प्रबन्ध नहीं ।

स्तूप के चारों ओर पाठशाला के लड़के और लड़कियां खेल रहे थे । आसपास गेहूं के खेत कट रहे थे । हमको देख कर किसान अपना काम छोड़ कर चले आए । लड़के लड़कियों ने भी खेल छोड़ा । चारों ओर अच्छी भीड़ इकट्ठी हो गई । हमने सोचा क्या कभी ये किसान और बच्चे अनुभव करते होंगे कि ये कितने महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थान के निवासी हैं। पर इनको यह बात विशेष रूप से अनुभव करने की आवश्यकता कैसे प्रतीत हो सकती है। इनके तो रक्त और अस्थियों में ये विहार और स्तूप समाए हुए हैं।

जब हम स्तूप पर पहली बार पहुंचे तो दोपहर ढल चुकी थी । मन्द समीर चल रहा था और एक ओर के कोनों की घण्टियां धीरे धीरे अलग अलग स्वर में मधुर ध्वनि वायु की दिशा में फैला रही थीं । जिस ओर वायु चलती है उसी ओर की घण्टियां बजती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छी-युङ् था अर्थात् मेघचुम्बी स्तूप का निर्माण उत्तर थाङ् वंश के सम्राट् च्वाङ्-त्सुङ् ने किया था। आज भी कोनों पर लगी हुई घण्टियों की मनमोहक मधुर ध्वनि यात्री को आकृष्ट करती है।

The Thirteen-storied Pagoda at Ch'i-yün ssŭ to the East of the main monastery of Po-ma ssŭ. The Ch'i-yün ssŭ Monastery was founded by Emperor Chuang-tsung, who also erected a nine-storied wooden pagoda. It was burnt in 1126 A. D. In 1175 the monk Yen-kung restored the monastery and erected a 13-storied brick pagoda instead. It was repaired by Yüan-lang in 1798.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहती हैं। यदि स्थान निर्जन हो तो इनकी ध्वनि और भी अधिक मनोमोहक और प्राचीन स्मृतिबोधक बन जाती है।

कुछ और दूर जाकर अष्टकोण स्तम्भ है। प्रसिद्धि है कि इस पर खुदे हुए अक्षर देवताओं के लिखे हुए हैं। पुरावशेष-विभाग के जो व्यक्ति हमारे साथ थे उन्होंने बताया कि इस स्तम्भ का लेख आज तक किसी ने नहीं पढ़ा और न ही इसका प्रकाशन हुआ है। हमने इसकी छाप ली है। १३ पंक्तियां हैं। चीनी के समान पंक्तियां ऊपर से नीचे तथा दाईं से बाईं ओर चलती हैं। अक्षर भारतीय हैं। हमको भी इनके पढ़ने में दो ढाई घण्टे लग गए।

धारणी से पूर्व चीनी भाषा में भूमिका है कि यह स्तम्भ ११६१ विक्रम में (चुङ-निङ के तृतीय वर्ष के अष्टम मास का १९ वां दिन) अपने निस्सन्तान चाचा के स्मारक के रूप में उपासक चङ-कू ने लो-याङ मण्डल के श्वेन्-वू ग्राम में स्थापित किया था। चाचा का नाम शी-यन् था।

शिलालेख का चित्र और उसकी देवनागरी प्रतिलिपि इस प्रकार है—

१ पंक्ति...नमो भगवते त्रैलोक्यप्रतिविशिष्टाय बुद्धाय भगव(ते त)
२ पंक्ति...द्यथा ओं विशोधय सम-सम-भाव-भास-स्फरण-गति गह(न)
३ पंक्ति...स्वभाव-शुद्धे अभिषिंच मा सुगत वरवचनामृताभिषेकै
४ पंक्ति...आहर आहर आयुसन्धारणि शोधय गगनविशुद्ध उष्णी
५ पंक्ति...ष-विजय-विशुद्धे सहस्ररश्मि-संचोदिते सर्वतथागताधि-
६ पंक्ति...ष्ठानाधिष्ठितमुद्रे बज्रकायसंहत न शुद्धे सर्ववरण वि-
७ पंक्ति...शुद्धे प्रतिनिधते य आयु शुद्ध समयाधिष्ठिते मणिमणि-त-
८ पंक्ति...थता-भूतकोटि-परिशुद्धे विस्फुट-बुधि-शुद्धे जय जय विज-
९ पंक्ति...य विजय स्मर स्मर सर्वबुद्धाधिष्ठित-शुद्धे वज्रावज्रागर्भे
१० पंक्ति...वज्राम्भवतु मम सर्वसत्वानां च कायविशुद्धे सर्वगति-
११ पंक्ति...परिशुद्धे सर्वतथागतसमाश्वासाधिष्ठिते बुध्य बुध्य बोध-
१२ पंक्ति...य बोधय समभपरिशुद्धे सर्वतथागताधिष्ठानाधिष्ठित
१३ पंक्ति...महामुद्रे स्वाहा

हम पहले वयोवृद्ध भिक्षु का वर्णन कर आए हैं जिन्होंने १८ वर्ष तक समाधि लगाई थी। ये कभी रुग्ण नहीं हुए और न ही कभी इनको पसीना आया। इन्होंने अपना उपाधिपत्र खोल कर दिखाया जिसका हमने चित्र लिया। चीन में भिक्षुओं के अध्ययन अध्यापन का नियमित प्रबन्ध है। बिना पढ़ा लिखा कोई भिक्षु नहीं रह सकता। भारत में स्थिति उलटी है कि जो साधु संन्यासी बनता है उसके लिए पढ़ना लिखना आवश्यक नहीं समझा जाता। गृहस्थ से संन्यास लिया तो विद्या से भी संन्यास लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१७-६-५५

लुङ-मन् 龍 門 —१७ जून को हम लुङ-मन् की प्रसिद्ध गुहाएं देखने के लिए गए। लो-याङ से ये ४० ली दूर हैं। हमसे दो चार दिन पूर्व जर्मन विद्वान् एर्कस् और उनकी पत्नी यहां जा चुके थे। उन्होंने हमको डरा दिया था कि मार्ग बहुत ऊंचा नीचा और धूलिमय है किन्तु अन्तिम दो तीन ली छोड़ कर कोई विशेष धूल मार्ग में न मिली। लुङ-मन् के समीप ही एक कोयले की खान खुद रही है। घोड़ागाड़ियां, खच्चर और गधे कोयला ले जाते हुए मार्ग में मिलते रहे। पूछने पर यह निश्चय न हो सका कि कोयला खोदने वाले लुङ-मन् की गुहाओं पर आक्रमण करेंगे अथवा नहीं।

दो खड़ी हुई पहाड़ियों के बीच में से छोटा सा नाला निकलता है। पहाड़ी असितवर्ण राजाश्म की बनी है। मूर्तियां बनाने के लिए यह पत्थर सुन्दर है। उत्तर वेइ वंश के आरम्भ से यहां गुहाएं और मूर्तियां बनने लगीं और स्वी तथा थाङ वंश में इनका विस्तार हुआ।

५५० विक्रम में जब राजधानी लो-याङ बनी और उत्तर वेइ के महाराज तथा उनके सामन्त लो-याङ में आए तो उन्होंने लुङ-मन् में दूसरा युन्-काङ 雲 岡 बनाना आरम्भ किया। इनके पश्चात् पूर्वी वेइ, उत्तरीय छी, स्वी और थाङ राजाओं ने एक दूसरे से बढ़ कर गुहाएं और मूर्तियां बनवाईं। महाराज काओ-त्सुङ 高 宗 तथा महाराणी वू 武 后 के समय में कला पराकाष्ठा पर पहुंची।

महाराज श्वेन्-त्सुङ 玄 宗 के काल में ह्रास आरम्भ हुआ। ई-नदी 伊 水 के दोनों ओर की पहाड़ियां गुहाओं से भरी हैं किन्तु वाम तट पर ही लुङ-मन् की कला का वैभव है। वाम तट की गुहाएं दो भागों में बांटी गई हैं उत्तर और दक्षिण। उत्तर भाग में प्रथम ६ गुहाएं हैं और दक्षिण में शेष १५।

युन्-काङ गुहाओं में बहुत थोड़े शिलालेख मिले हैं। इनसे केवल तीन तिथियों का निश्चय होता है। किन्तु लुङ-मन् में अनेक गुहाओं की तिथि, दाताओं के नाम और उनकी खुदाई का वर्णन दिया हुआ है। इससे ऐतिहासिक अध्ययन में बहुत सहायता मिली है। सबसे पहली तिथि ५४० विक्रम है। जिसका अर्थ स्पष्ट है कि लो-याङ को राजधानी बनाने से कुछ पूर्व ही गुहाओं का कार्य लुङ-मन् में आरम्भ हो चुका था।

थाङ वंश में खोदी हुई गुहाएं—सम्भवतः एक संख्यांकित गुहा थाङ वंश में ही बनी हो। यहां बैठे हुए बुद्ध की विशाल मूर्ति है।

गुहा २ री, १५ वीं और १८ वीं की खुदाई का काम थाङ वश में पूरा हुआ था।

गुहा ५— चिङ-शान् स्स 敬 善 寺।

गुहा ६— बुद्ध त्रिमूर्ति पर्वत में से ही खोदी गई है।

गुहा ७— इस गुहा में सर्वथा गोल प्रभामण्डल है। यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

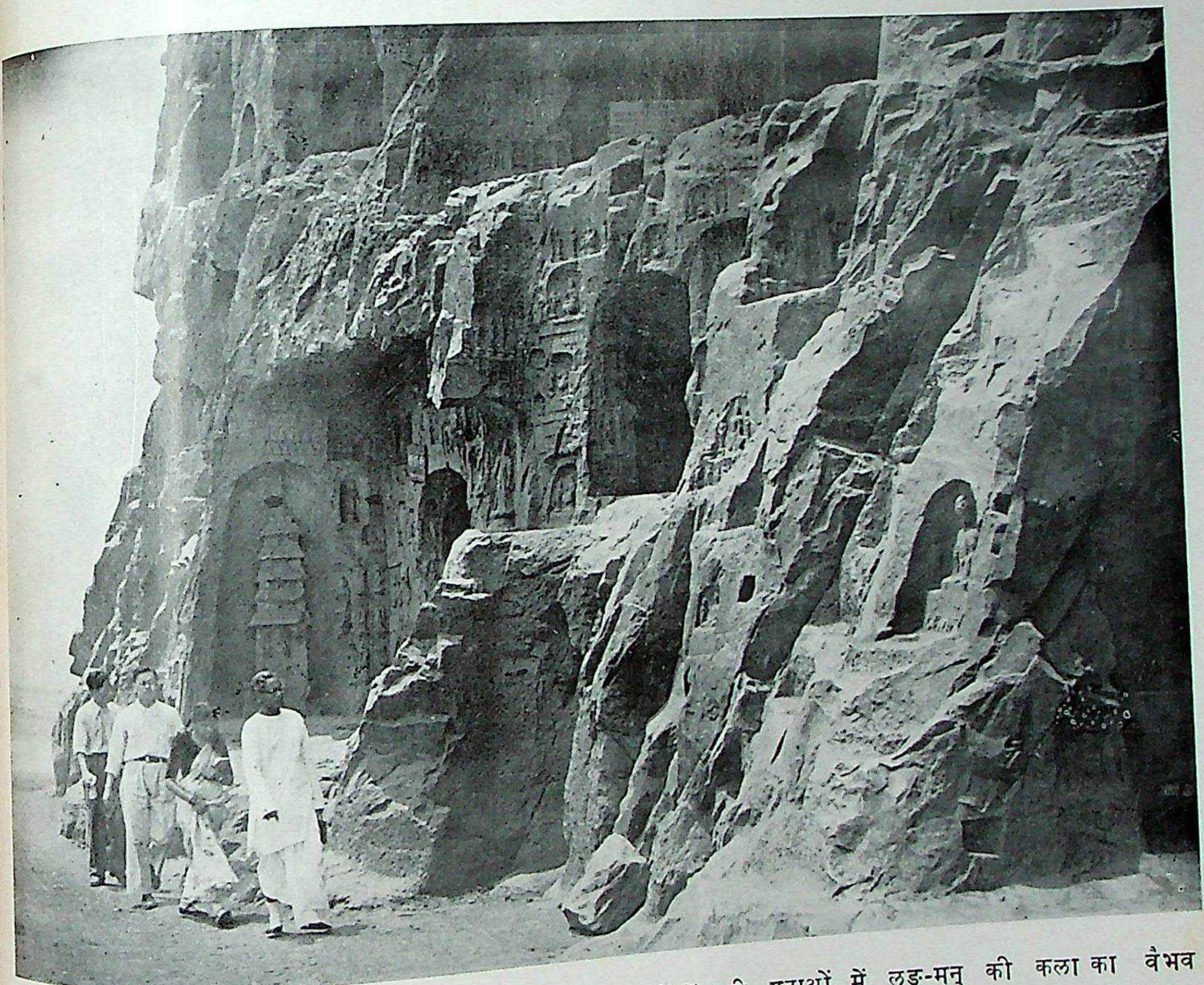

हो-नान् प्रान्त में ई नदी के तट पर असितवर्ण राजाश्म की पहाड़ियों में बनी गुहाओं में लुङ्-मन् की कला का वैभव अविस्मरणीय है। उत्तर वेइ वंश के सम्राट् ने ५४० विक्रम में इनका निर्माण प्रारम्भ करवाया। सम्राट् काओ-त्सुङ् तथा सम्राज्ञी वू के समय लुङ्-मन् की कला पराकाष्ठा पर पहुंच गई। थाङ् वंश के समय गुप्त-कला भोट द्वारा चीन पहुंची। फलत: लुङ्-मन् की थाङ्-वंशीय गुहाओं में भारत की गम्भीर कला से चीनी कला अनुप्राणित हुई।

Prof. Raghu Vira entering the Lung-mên Caves in Honan province. They are situated to the south of the ancient metropolis of Lo-yang. The stone sculptures in the Caves range from the Wei to the T'ang dynasty, spread over twentyone caves.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लुङ्-मन् से बुद्ध त्रिमूर्ति के शिलाचित्र की छाप। प्रभामण्डल की अप्सराएं विशेष आकर्षक हैं।

Estampage of a Buddha Trinity at the Lung-mên Caves, whose halo is constituted by elegant *apsaras*'.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुहा ८– छ्येन्-फ़ो अर्थात् सहस्रबुद्ध-गुहा। इसमें एक भी सिर पूर्ण नहीं।

गुहा ९– इसका सामान्य नाम अयुत-बुद्ध-गुहा 萬佛洞 है। इसमें ८१४० बुद्ध हैं। छत में सुन्दर रंग दूर से ही दिखाई पड़ने लगते हैं।

गुहा १०– इसको नत-जानु-सिंह-गुफा 跪獅窟 कहते हैं।

गुहा १२– इसका नाम महती गुहा 大洞 है।

गुहा १६– इसका नाम खण्डित-गुहा 破洞 पड़ गया है।

गुहा १९– पर्वत में से महान् बुद्ध की मूर्तियां घड़ी हुई हैं। ये मूर्तियां अति विशाल और मनोरम हैं। मध्य बुद्ध की बैठी हुई मूर्ति ३६ हाथ ऊंची है। बुद्ध और उसके शिष्य कम्बुग्रीव हैं।

वास्तव में यह गुहा नहीं है। ऊपर से खुली है। शासन मूर्तियों के ऊपर छत बनाने का विचार कर रहा है।

छोटी बड़ी मिला कर लुङ-मन् में एक सहस्र के लगभग गुहाएं हैं।

वेइ वंश के इतिहास 魏書釋老志 के बुद्धधर्म सम्बन्धी अध्याय के अनुसार राजा श्वेन्-वू 宣武帝 ने पहले एक गुहा अपने माता पिता की स्मृति में खुदवाई थी और तत्पश्चात् एक और गुहा अपने लिए। खुदाई का कार्य ५५७ विक्रम में आरम्भ हुआ था और ५८० विक्रम में समाप्त हुआ था। आठ लाख शिल्पी और श्रमिक लगे थे।

युन्-काङ 雲岡 में पर्वतभित्ति की बनावट एक दूसरे पर सीधे रखे हुए स्तरों की है। ये स्तर रेतीले पत्थर के बने हुए हैं। सभी स्तर क्षैतिज हैं। यहां बड़ी बड़ी गुहाएं खोदना कठिन नहीं। किन्तु लुङ-मन् कठोर राजाश्म का बना हुआ है। पत्थर के स्तर क्षैतिज नहीं। किन्तु तीस अंश के प्रावण्य पर हैं। यहां गुहाओं का खोदना अत्यन्त कठिन है। अतः लुङ-मन् की गुहाएं युन्-काङ की अपेक्षा बहुत छोटी हैं। युन्-काङ में छतें क्षैतिज हैं। युन्-काङ में पत्थर कठोर नहीं। इसलिए टंककर्म सरल है। परन्तु साथ में कोमल होने के कारण पत्थर शीघ्रता और सरलता से ही विरूप और शीर्ण हो जाता है। लुङ-मन् में पत्थर की कठोरता के कारण कला अधिक सूक्ष्म है। वर्षा और धूप मूर्तियों को उतना नहीं बिगाड़ पाईं जितना युन्-काङ में। मूर्तियों की रेखाएं गहरी और तट स्पष्ट हैं।

विदेशियों ने चीन की कला में रुचि ली उसका अनिष्ट परिणाम यह हुआ कि व्यापारियों ने १९१२, १९१३ के लगभग से लुङ-मन् की मूर्तियों के सिर काट कर विदेशियों के हाथ बेचना आरम्भ किया। आज लुङ-मन् की मूर्तियों के सुन्दर ऐतिहासिक शीर्ष लुङ-मन् में नहीं किन्तु यूरोप और अमेरिका के अद्भुतागारों और कलाप्रिय समृद्ध-जनों के गृहों की शोभा बने हुए हैं।

केवल छ्येन्-शी स्स के आसपास की मूर्तियां इन लोलुप व्यामूढ व्यापारियों के हाथ से बची हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो मूर्तिकला उत्तर वेइ में आरम्भ हुई, वह पूर्व वेइ, उत्तर छी तथा स्वी में चलती रही। थाङ वंश में महदन्तर उपस्थित हुआ। इसका कारण चीनी राज्य की समृद्धि है। चीन का राज्य पारस देश के समीप तक पहुंचा। भोट चीन के अधीन हुआ और भोट द्वारा थाङ कला और साहित्य का मगध से सम्बन्ध हुआ। समुद्र-मार्ग से लंका का प्रभाव चीन पर पड़ा। इन्हीं दिनों श्वेन्-च्वाङ 玄奘 और ई-चिङ 義淨 जैसे बौद्ध यात्री और वान्-श्वेन्-थ्स 王玄策 जैसे चीनी अधिकारी और दूत भारत में आते रहे। एवं भारत और चीन के सम्बन्ध बढ़ते गए।

गुप्तकला चीन में पहुंची। इन्हीं दिनों पारस देश की कला का भी चीन को ज्ञान हुआ।

परिणाम-स्वरूप भारत की उच्च और गम्भीर कला से चीनी कला अनुप्राणित हुई। उत्तर वेइ से लेकर थाङ तक की कला के निदर्शन लुङ-मन् में सुरक्षित हैं।

अब हम एक एक गुहा को लेंगे–

पहली गुहा– मुख्य मूर्ति शाक्यमुनि की है। दोनों ओर काश्यप 迦葉 और आनन्द 阿難 हैं। उपासक रूप में बोधिसत्त्व दक्षिण उत्तर भित्ति पर खड़े हुए हैं। सब पद्मासनों पर आरूढ हैं। सामने दो देव पापात्माओं को कुचल कर उन पर खड़े हुए हैं।

इस गुहा की मूर्तियां अच्छे बड़े आकार की हैं। इनमें थाङ वंश के प्रारम्भिक काल की ओजस्विता भरी है। आज अन्दर की चारों भित्तियां सर्वथा अनावृत और कोरी हैं। किन्तु सम्भवतः इन पर रंगीन चित्र रहे होंगे।

दूसरी गुहा– पद्मासन लगाए हुए बुद्ध की १२ हाथ ऊंची मूर्ति है। शरीर सुडौल है। रूपाकृति मनोमोहिनी और तेजस्विनी है। प्रभामण्डल नावाकार है। इस पर पद्म और अन्य पुष्प बने हैं। प्रभामण्डल के चारों ओर ज्वालाएं हैं। उपासक अर्हत् ग्यारह हाथ ऊंचे हैं। बोधिसत्त्वों की ऊंचाई भी १२ हाथ से ऊपर है। सभी में स्वी कला का चमत्कार है।

अन्दर की छत अर्धचन्द्राकार है। मध्य में पद्म। उसके चारों ओर उड़ती हुई अप्सराएं। छत और भित्तियों के बीच में पुष्पित यवनिकाएं। चारों भित्तियां छोटे छोटे बुद्धमूर्ति पूर्ण आलयों और स्तूपों से खचित हैं। उत्तर भित्ति पर चङ-क्वान् 貞觀 के २२वें वर्ष का शिलालेख है (विक्रम संवत् ७०५)। इस लेख के अनुसार मैत्रेय की मूर्ति स्स-शुन् वीथि 思順坊 निवासी युवक और वृद्धों ने मिल कर खोदी थी। स्स-शुन् वीथि हो-नान् 河南 नगर की वीथि थी। इस शिलालेख के नीचे ही आसन्दी पर मैत्रेय विराजमान हैं। उनके साथ दो अर्हत्, दो बोधिसत्त्व और दो वज्रयोद्धा हैं।

तीसरी गुहा– पिङ-याङ-तुङ 賓陽洞 – इस गुहा में कोई लेख नहीं मिला। लुङ-मन् की यह सबसे वैभवशाली गुहा है। गुहा में मुख्य मूर्ति शाक्यमुनि की है। यद्यपि मूर्ति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समविभक्तांगा है फिर भी औरों की अपेक्षा मुख कुछ लम्बा है और नेत्र पतली इन्दुकला के समान हैं।

भित्ति पर महाराजा और महारानी तथा उनके अनुचर उपासक के रूप में खड़े हैं। उनका रूप वास्तविकता और उदात्तता से पूर्ण है। कुछ जातकों की कथाएं भी प्रदर्शित हैं। एक में आत्माहुति करते हुए बोधिसत्त्व दिखाए गए हैं और दूसरे में सागर से चिन्तामणि की उपलब्धि का चित्रण है।

अन्दर की छत कुछ अण्डाकार है। मध्य में बड़ा पद्म। उसके चारों ओर उड़ती हुई अप्सराएं और मेघ। छत की परिधि यवनिका रूपों से अलंकृत है। गुहा-कुट्टिम पर बड़े परिमाण के उत्पल कुसुम, और वीचि-मालाएं उत्कीर्ण हैं। दर्शकों के पांव से कुट्टिम में उभरे हुए चित्र न घिस जाएं इसलिए चटाई बिछाई हुई है। शाक्यमुनि के चरणों पर सिंहयुग्म हैं।

इस गुहा में से अमेरिका के सज्जन भित्ति का एक मूर्तिमय भाग काट कर ही ले गए। इस भाग का भाचित्र शासन ने गुहा के बाहर लगाया हुआ है।

छिङ वंश में इस गुहा के सामने द्वार बनाया गया।

चौथी गुहा– इस गुहा का आरम्भ भी उत्तर वेइ काल में हुआ प्रतीत होता है
किन्तु इसकी पूर्ति स्वी काल में हुई। भित्तियों के छोटे छोटे बुद्ध थाङ वंश में बनाए
गए। यह सर्वाधिक सुरक्षित गुहा है किन्तु रंग केवल प्रभामण्डलों पर ही दृष्टिगोचर होता
है। बुद्धमूर्ति के निर्माण के विषय में थाङ वंश का शिलालेख पूर्व भित्ति पर अभी
तक स्पष्ट और सुपाठ्य है। शाक्यमुनि कम्बुग्रीव हैं। कम्बुग्रीव मूर्तियां थाङ के पश्चात्
लुप्त सी हो गईं।

तीसरी और चौथी गुहा के बीचमें शिलालेख है जो अब सुपाठ्य नहीं रहा। इसके
अनुसार वेइ के राजकुमार थाइ 魏王泰 ने अपनी माता महाराणी वन्-त 文德 के कल्याण
के लिए बुद्ध की मूर्ति निर्माण कराई थी। तिथि ६९८ विक्रम प्रतीत होती है।

पांचवीं गुहा– चिङ-शान् स्स 敬善寺 – सामने भित्ति पर ली-श्याओ-लुन् 李孝倫
ने चिङ-शान् स्स की मूर्तियों के खोदने का वर्णन दिया है किन्तु तिथि नहीं दी। इस
लेख के अनुसार थाङ वंश के राजा थाइ-त्सुङ की महाराणी वेइ 韋妃 ने इस गुहा को
खुदवाया था। और लेखों से तुलना करने पर यह निःसन्देह ७१५ विक्रम से पूर्व का लेख
प्रतीत होता है।

छठी गुहा– यहां पर्वतानीक की चौड़ाई ३२ हाथ के लगभग है। इसको सम और
मसृण बना कर बुद्ध त्रिमूर्ति पर्वत में से उत्कीर्ण की गई है।

मूल योजना के अनुसार बोधिसत्त्व-युग्म और वज्रदेव-युग्म खोदे जाने चाहिएं थे।
दो बोधिसत्त्वों में से बाएं बोधिसत्त्व का सिर ही पूरा हो सका। दायां बोधिसत्त्व भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपूर्ण दशा में है। उसका सिर लुप्त हो चुका। वज्रदेवों की तो केवल रूपरेखा ही बनी है। तिथि का कोई निर्देश नहीं।

सातवीं गुहा– द्वार के दोनों ओर वज्रदेव खुदे हैं। और इनमें से दक्षिण वज्रदेव के पार्श्व पर छ्विव-कुङ 乾封 के तीसरे वर्ष के चौथे मास का शिलालेख है। विक्रम संवत् ७४४ में अथवा उससे पूर्व यह गुहा बनी थी।

आठवीं गुहा– बाईं और दाईं भित्ति पर एक सहस्र छोटी छोटी बुद्ध की मूर्तियां बनी हैं। द्वार के समीप दक्षिण भित्ति पर खुदे हुए शिलालेख पर थ्येन्-शोउ 天授 का द्वितीय वर्ष अर्थात् विक्रम संवत् ७४८ तिथि दी हुई है।

नवीं गुहा– सहस्र-बुद्ध-गुहा–वान्-फ़ो-तुङ– मध्य में शाक्यमुनि अष्टकोण आसन पर विराजमान हैं। दोनों ओर दो अर्हत् और दो बोधिसत्त्व हैं। प्रत्येक बोधिसत्त्व से एक कोना भरा हुआ है। शाक्यमुनि और इनका आसन गुहा की पीछे की भित्ति में से खोदे गए हैं।

शाक्यमुनि के प्रभामण्डल में अनेक बोधिसत्त्व उत्कीर्ण हैं।

दाईं और बाईं ओर भित्तियों पर एक सहस्र बुद्ध की छोटी छोटी मूर्तियां बनी हैं। इनके उत्तमांग तोड़ दिए गए अथवा बिगाड़ दिए गए हैं। छत में पद्मपुष्प की परिधि पर शिलालेख है कि युङ-लुङ 永隆 के प्रथम वर्ष में (७३७ विक्रम) भिक्षु च-युन् 智運 ने इस गुहा को बनवाया था।

दसवीं गुहा– स्तूप-गुहा। इसका प्रचलित नाम नत-जानु-सिंह-गुहा है।

इस गुहा में बुद्ध और बोधिसत्त्वों के प्रभामण्डल चिन्तामणि आकार के हैं। यहां कई शिलालेख हैं जिनमें तिथियां दी हुई हैं। इनमें प्रथम तिथि ७३५ विक्रम है और अन्तिम ७४९ विक्रम है।

भित्तिस्थ छोटे बुद्धों के समस्त उत्तमांग तोड़ दिए गए हैं। सौभाग्यवश नतजानु-सिंह अविकलांग बच गए हैं। इनकी अप्रतिम शोभा है। बाहर की भित्ति पर पञ्चभूमिक स्तूप खुदा हुआ है। इसकी ऊंचाई चार हाथ से ऊपर है।

ग्यारवीं गुहा– इसकी तिथि श्येन्-हङ 咸亨 का चतुर्थ वर्ष अर्थात् ७३० विक्रम है।

बारवीं गुहा– इसका नाम ता-तुङ अर्थात् महती गुहा है। इस गुहा का अगला भाग नाश हो चुका है। निचला भाग अपूर्ण छोड़ दिया गया है तथा बाहर की भित्ति अनघड़ी रह गई है। गुहा की ऊंचाई १६ हाथ है। पिछली भित्ति के शिलालेख में तिथि ७४८ विक्रम तथा उत्तर की भित्ति पर ७१३ विक्रम तिथि उत्कीर्ण है। आलयों में खुदे हुए बुद्ध छः हाथ तक ऊंचे हैं।

तेरवीं गुहा– ई-च्वे-तुङ 伊闕洞 अथवा **ल्येन्-ह्वा-तुङ** 蓮華洞 अर्थात् नीलो-त्पल-गुहा। इसकी छत अन्दर से पद्मरूप है। अतः इसे पद्म-गुहा कहते हैं। मध्यस्थित बुद्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लुङ्-मन् की १३वीं गुहा की छत में विराट् पद्म। इस गुहा का नाम ई-च्वे तुङ् अथवा ल्येन्-ह्वा तुङ् अर्थात् पद्म-गुहा है। इस गुहा की पूर्वतम तिथि ५४७ विक्रम है।

The lotus in the ceiling of the I-chüeh Tung, the thirteenth cave at Lung-mên. It is popularly known as the Lien-hua Tung or Lotus Flower Cave because of its graceful lotus ceiling. It is one of the most important caves belonging to Northern Wei.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आचार्य रघुवीर और उनकी पुत्री लुङ्-मन् गुहाओं की महाप्रतिमाओं की अधिच्छाया में

Prof. Raghu Vira and his daughter in the interior of the Lung-mên Caves with gigantic images overlooking them.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का प्रभामण्डल भी पद्माकार है। पद्म के चारों ओर अप्सराएं हैं। यह गुहा उत्तर वेइ के काल में आरम्भ की गई थी। इस गुहा में अनेक तिथियां दी गई हैं। इनमें से पूर्वतम तिथि ५४८ विक्रम और उत्तरतम ७७० विक्रम है। इस गुहा के अनेक उत्तमांग टूटे हुए हैं।

गुहा की मुख्य मूर्ति शाक्यमुनि का मुख पूर्णचन्द्र के समान गोल न होकर कुछ लम्बा है जिससे उसकी शोभा बढ़ गई है। परिधान की रेखाएं ओजस्विनी हैं। यह मूर्ति उत्तर वेइ की परिपक्वता, तेजस्विता, महत्ता और उदात्तता का सुन्दर निदर्शन है।

चौदवीं गुहा– इसमें दो शिलालेख हैं। एक ५८८ विक्रम का दूसरा ५९४ विक्रम का। प्रवेशद्वार पर सिंह-युग्म रक्षा कर रहे हैं। छत छः हाथ ऊंची है। छत में पद्मपुष्प खोदने का विचार था पर वह अधूरा ही रह गया है।

पन्द्रवीं गुहा– गुहा की पिछली भित्ति में से मुख्य बुद्ध, दो अर्हत् और दो बोधिसत्त्व उत्कीर्ण किए गए हैं। कला की दृष्टि से मूर्तियां साधारण हैं। दाईं और बाईं भित्ति पर बनी हुई बौद्ध पञ्चमूर्ति की तिथि शिलालेख में ७१७ विक्रम दी हुई है। इस गुहा के सामने का भाग अपूर्ण छोड़ा हुआ है।

सोलवीं गुहा– खण्डित गुहा। यह गुहा भी अपूर्ण ही बनी हुई है। मैत्रेय को छोड़ कर अन्य सब मूर्तियों के उत्तमांग नष्ट हो चुके हैं। छत और कुट्टिम ठीक प्रकार से नहीं बने। ऐसा प्रतीत होता है कि काम बीच में ही छोड़ दिया गया। भित्तियों पर तीन तिथियों के शिलालेख हैं। ७१६, ७१८, ७२६ विक्रम संवत्।

सतरवीं गुहा– वेइ-अक्षर-गुहा [illegible]। यद्यपि यह गुहा विशाल नहीं किन्तु उत्तर वेइ की कला की सुन्दर प्रतिनिधि है। प्रभामण्डल अति हृदयंगम है। इस गुहा में भी अनेक तिथि वाले शिलालेख हैं। ५८०, ५८३ तथा ७३२ विक्रम।

अठारवीं गुहा– इस गुहा का निर्माण उत्तर वेइ में हुआ और जोर्णोद्धार थाङ काल में। गुहा कुछ लम्बी है। बुद्ध की मूर्ति का आसन अपूर्णघटित है। इस गुहा के शिला-लेखों में तीन तिथियां हैं। ५९४, ७१८, ७३६ विक्रम। द्वार पर गरुड की मूर्ति उत्कीर्ण है।

उन्नीसवीं गुहा– फ़ङ-श्येन् स्स [illegible] –वैरोचन बुद्ध की सुमहती मूर्ति। इस गुहा के सम्बन्ध में शिलालेख का वर्णन है– थाङ वंश के श्येन्-हङ के तृतीय वर्ष में (७२९ विक्रम) महाराज काओ-त्सुङ ने अर्हद्-युग्म, बोधिसत्त्व-युग्म, देव-युग्म और वज्रधर-युग्म सहित सुविशाल वैरोचन बुद्ध-मूर्ति के उत्कीर्ण करने का आदेश दिया। शाङ-य्वेन् [illegible] के द्वितीय वर्ष में (७३२ विक्रम) द्वादश मास के ३०वें दिन यह महत्कार्य समाप्त हुआ। इसके लिए महारानी वू ने २० सहस्र क्वान् [illegible] अपने पास से दान किए। पांच वर्ष के पश्चात् महान् (ता-[illegible]) फ़ङ-श्येन् स्स [illegible] की स्थापना हुई। इस विहार में १४ महा-पण्डित, जिनकी प्रज्ञा गम्भीर और शील उदात्त था, इस विहार में लाए गए। शिलालेख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में आगे वर्णन है– "जब से यह उत्तम धर्म पूर्व में आया है तब से अब तक सात सौ वर्ष के ऊपर हो चुके । बुद्ध-विहार बनाने का पुण्य अग्रगण्य है ।"

१९वीं गुहा चीन की बौद्ध कला की पराकाष्ठा है । इस विहार-निर्माण के महत्कर्म में श-ची स्स 實際寺 के ध्यानाचार्य शान्-ताओ 善導, फ़ो-हाइ स्स 法海寺 के धर्माचार्य ह्वी-च्येन् 惠暕 सम्मिलित थे । शान्-ताओ निर्माण-कार्य के अध्यक्ष थे । ये पुनीत-भूमि 淨土教 सम्प्रदाय के महाप्रवर्तकों में से हैं ।

मूर्तियां पर्वत में से खोदी गई हैं । यहां पहाड़ी की चौड़ाई ६८ हाथ की है और गहराई ८० हाथ । वैरोचन बुद्ध की ऊंचाई २२ हाथ से ऊपर है । केवल आसन ६ हाथ ऊंचा है । प्रभामण्डल के शिखर से भूमि तक ऊंचाई ३० हाथ है । आसन वर्गाकार है । प्रत्येक कोने पर रक्षक खड़ा है । दोनों ओर योद्धा खुदे हुए हैं । उत्तर पार्श्व में तिथि खुदी हुई है– खाइ-य्वेन् दशम वर्ष, द्वादश मास, पञ्चम दिन 開元十年十二月五日牒 (७८४ विक्रम) । इस लेख में वैरोचन की विशाल मूर्ति का भी वर्णन है– सहस्रदल कमलपुष्प के तीन दल-स्तर हैं । प्रत्येक दल पर एक बुद्ध खुदा है ।

बुद्ध की महती मूर्ति महत्ता, वैभव और शान्ति की भावना उत्पन्न करती है । शरीर ओजःपूर्ण है । खेद है कि दोनों हाथ नष्ट हो चुके और दोनों घुटने भी बहुत शीर्ण हो चुके हैं । प्रभामण्डल नावाकार है । मध्य में कमल, कमल के चारों ओर बौद्ध मूर्तियां और अग्नि-ज्वालाएं इसके अद्भुत अलंकार हैं ।

यह निस्सन्देह और निर्विवाद है कि बलशालिनी ओजस्विता में यह वैरोचन-मूर्ति न केवल लुङ-मन् में किन्तु थाङ वंश की समस्त कला के क्षेत्र में उत्कृष्टतम मूर्ति है ।

वैरोचन के बाईं ओर काश्यप हैं और दाईं ओर आनन्द । दोनों की ऊंचाई २० हाथ के ऊपर है । मुखमुद्रा शान्ति और भद्रता लिए हुए है । काश्यप और आनन्द के साथ के दोनों बोधिसत्त्व भी सौम्यता की मूर्ति हैं । किन्तु इनमें भी उत्तमांग कुछ अधिक भारी और शरीर कुछ छोटा पड़ता है । यह भेद मूर्तिकारों की दक्षता का भेद है ।

दक्षिण और उत्तर की भित्ति में खुदे हुए दोनों वज्रधरदेव १८ हाथ ऊंचे हैं । इनके साथ दोनों देवराज, जो दो पापात्माओं के शरीरों पर खड़े हैं, २२ हाथ ऊंचे हैं । यह महती मूर्तियां अजेय, अदम्य भावनाओं की व्यञ्जक हैं । किन्तु जो कला-कौशल वैरोचन के निर्माण में दिखाई पड़ता है वह न अर्हतों में, न बोधिसत्त्वों में और न इन मूर्तियों में है ।

प्राचीन समय में मूर्तियों के ऊपर वितान रहे होंगे । भित्ति में बड़े स्तम्भों के लिए छिद्र बने हुए हैं ।

तीनों भित्तियों में अनेक मूर्तियां बनी हैं । इनकी ऊंचाई चार हाथ के लगभग है । इनका कला-कौशल अति सुन्दर है ।

बीसवीं गुहा– य्वे-फ़ाङ-तुङ 藥方洞 अर्थात् औषध-योग-गुहा । द्वार के दोनों ओर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृ. ११७ के समक्ष चित्रित लुङ्-मन् की गुहा के अभ्यन्तर में दो विशाल प्रतिमाओं का समीप-चित्र

A close view of two gigantic images in the Lung-mên Cave depicted opposite p. 117.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लुङ्-मन् की गुहाएं मूर्तियों और शिलालेखों के लिए प्रसिद्ध हैं। ये शिलालेख तिथियों और ऐतिहासिक सूचनाओं के साथ-साथ लेख-सौष्ठव के लिए भी प्रथित हैं।

Prof. Raghu Vira admiring a Buddhist sculpture in the Lung-mên Caves.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

औषधों के योग दिए हुए हैं। ये लेख उत्तर वेइ के काल के हैं। हमनें इन औषधयोगों की छापें लीं।

इक्कीसवीं गुहा– कू-याङ-तुङ 古陽洞 अथवा लाओ-चुन्-तुङ 老君洞। यह लुङ-मन् की प्राचीनतम गुहा है। इस गुहा में अनेक शिलालेख हैं। प्राचीनतम लेख ५५२ विक्रम का है। दूसरी तिथियां ५५५, ५५९, ५६० विक्रम आदि हैं।

इस गुहा का निर्माण ५४० विक्रम में आरम्भ हो चुका था। और ५५२ विक्रम में लगभग खुदाई पूरी हो चुकी थी। शिलालेख के अनुसार राष्ट्र की समृद्धि के लिए इस गुहा का निर्माण किया गया था। इस गुहा में अन्तिम तिथि ६०६ विक्रम है। गुहा आयताकार है। छत २० हाथ ऊंची है। कुट्टिम पर दो हाथ मिट्टी भरी गई। चार हाथ ऊंचे आसन पर बैठे हुए शाक्यमुनि की रंगीन मूर्ति विराजमान है। आसन स्वयं भूमि से छः हाथ ऊंचा है। आसन को सिंहों ने उठाया हुआ है। पुरानी मूर्ति का जीर्णोद्धार करते हुए इतना अधिक लेप और रंग चढ़ाया गया है कि इसकी मौलिक शोभा सर्वथा मारी गई। मुख्य बुद्ध की ऊंचाई नौ हाथ है। मुख और परिधान की रेखाओं में मौलिक शोभा है। यदि मिट्टी का लेप ऊपर न किया जाता और उस पर रंग न पोते जाते तो मूर्ति की आभा पूर्ण रूप में दृष्टिगोचर हो सकती। पास दो बोधिसत्त्व खड़े हैं।

इस गुहा में उत्तर वेइ कला का सुन्दर रूप उपस्थित है।

इस गुहा की भित्तियों में इतनी मूर्तियां और लेख हैं कि यहां उनका वर्णन करना असम्भव है।

इस गुहा के शिलालेख केवल तिथियों और अन्य ऐतिहासिक सूचना के लिए ही प्रसिद्ध नहीं किन्तु सुलेख के लिए भी प्रथित हैं। हमने परस्पर भिन्न सौन्दर्यमय सुलेख की दृष्टि से ही २० लेखों की छापें ली हैं। चीनी लेख-सौन्दर्य-विशारदों की दृष्टि से इनका मूल्य बहुत अधिक है।

श-खू स्स 石窟寺 – यह गुहा पूर्वीय पहाड़ी में बनी है। बुद्ध आसन्दी में बैठे हैं। रूपाकृति भव्य है। यह मूर्ति थाङ कला की उत्तम कृति मानी जाती है। बुद्ध की पीठ के पीछे एक यवनिका बनी हुई है जिसमें भारत की गुप्त-कला की छाया झलक रही है। गुहा की भित्तियों पर वज्रछेदिकासूत्र उत्कीर्ण है तथा एक सहस्र छोटी छोटी बुद्ध मूर्तियां बनी हुई हैं। छत में कमल, उड़ती हुई अप्सराएं और मेघ शोभायमान हैं।

नीच, कला के शत्रु, व्यापारियों की लोलुपता से मूर्तियों के उत्तमांग लुप्त हैं। हमको लुङ-मन् में जितना समय लगाना चाहिए था उतना तो न लगा सके किन्तु जो भी थोड़ा समय मिला उसमें लुङ-मन् की मनोरमता को नेत्रों द्वारा लगातार एकाग्रध्यान से पान करते गए, और हृदय में बद्धप्रतिष्ठ करते गए कि जीवन के शेष वर्षों तक इस रमणीयता का परिमल साथ रहे। यद्यपि लुङ-मन् चीन की भूमि पर स्थित है और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसका श्रेयस् और गर्व चीनियों को है और होना चाहिए तथापि लुङ-मन् भारत की आत्मा का ही तो खण्ड है। यहां चीनी प्रभाव और परिवर्तन अवश्य हैं किन्तु मूल और स्थूल दृष्टि से, आध्यात्मिक तथा कला की दृष्टि से, भारत का भी तो इसमें हाथ है। लुङ-मन् में भारतीय वैभव के जो दर्शन हमको हुए उनसे हम कृतकृत्य होकर कोयले की खान की काली धूल से बचते हुए अपने निवासस्थान पर लौट आए।

जिस रस और आनन्द का अनुभव, जिस प्राचीन और नवीन काल की एकता की भावना आज हुई वह पहले कभी न हुई थी। हमको ऐसे लगा जैसे कि हम पन्द्रह सौ वर्ष पार कर पार्थिव शरीर और नेत्रों सहित गुप्त काल में और गुप्त राष्ट्र में पदार्पण कर गए हों। यह अद्भुत और अविस्मरणीय है और रहेगा।

२२-६-५५

आज नागपुर लोकेश को दूरभाष किया।

प्रातः का समय पेइ-चिङ के प्रसिद्ध लामा मन्दिर में व्यतीत किया था।

युङ-हो-कुङ में धारणियों का चार भाषाओं में विशाल ग्रन्थ देखा। इसके एक से दस तक भाग हैं जिनमें से आठवां लुप्त है। ग्रन्थ का भोट नाम इस प्रकार हैं—
དཔའ་བར་འགྲོ་བ་འདེས་བྱ་བ་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་འོ་མདོ་བ་བམ་པོ་ལྔ་པ་བཞུགས་སོ །

युङ-हो-कुङ में चार विद्यालय हैं। एक धर्मपाठ, द्वितीय तन्त्र, तृतीय आयुर्वेद और चतुर्थ ज्यौतिष तथा भूगोल।

युङ-हो-कुङ के बड़े लामा स्वयं अनुभवी वैद्य हैं। नाड़ी देख कर रोग को पहचान लेते हैं। मन्दिर में से हमको अपने घर ले गए और वहां आयुर्वेद के १३ मानचित्र दिखाए। इनमें शरीर के अंगों, वनस्पति तथा प्राणियों आदि के सुन्दर चित्र हैं। इनका अपना आयुर्वेद-ग्रन्थ-संग्रह है। अनेक ग्रन्थों के आरम्भ में संस्कृत दी हुई है। हम दो उदाहरण देते हैं।

(१) उपदेश-गुणतन्त्रस्य गण्डूषिक—शल्योष्णतापनान्त कृताकृत पाराकाल मृत-पाश्यच्छोदस्य खङ्ग विहरति स्म ॥

(२) शुद्धौषधि शक्ति विशेषाख्यात काशदेशनामलोऽर्क-वल्लरीर्नाम माररोगहः प्रतिभक्षं विहारं। नमो गुरुभैषज्याय। लक्षणं व्यन्जनः श्र्यस्ति सम्बुद्धच चा। मेघदर्शीज-ग्रन्ति कृपेभिर्महा ॥ गुहच निश्चिन्त्य कायं विशुद्धस्त्रीभिः। श्चीपरोध्रिक् प्रभाकान्त शास्त्रे नमः ॥

महन्त बहुत सौम्यप्रकृति हैं। इन्होंने अपने संग्रह में से कई ग्रन्थ भेंट किए। महन्त का नाम यिशि-कावा བླ་མ་ཡེ་ཤེས་དགའ་བ་ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

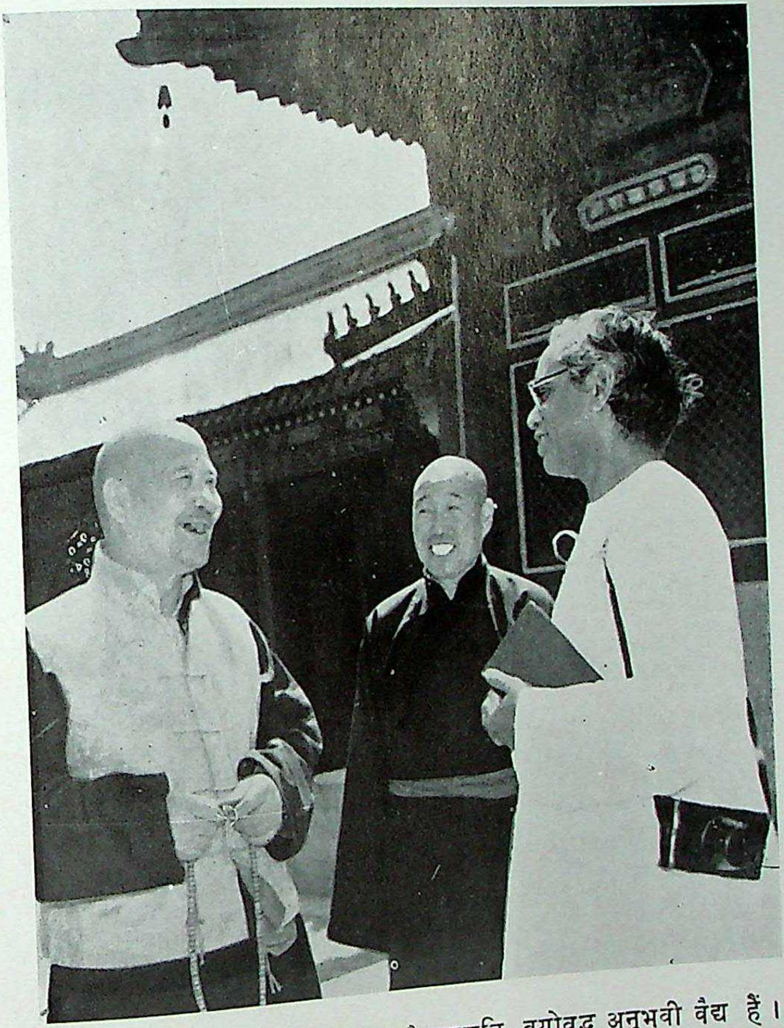

युङ-हो-कुङ के अध्यक्ष यिशिकावा सौम्यप्रकृति वयोवृद्ध अनुभवी वैद्य हैं। आचार्य रघुवीर उनसे भारतीय-भोट आयुर्वेद पर बातचीत कर रहे हैं। युङ-हो-कुङ् के चार विद्यालयों में से आयुर्वेद-विद्यालय एक है। श्री यिशिकावा का निजी आयुर्वेद-ग्रन्थसंग्रह अनुपम है। अनेक ग्रन्थों के आरम्भ में संस्कृत शीर्षक दिए हुए हैं।

Prof. Raghu Vira conversing with Venerable Ye-śes-dgaḥ-ba, Abbot of the Yung-ho-kung Monastery, who is a famous Mongol scholar and specialist in Indian medicine (*āyurveda*) as it was carried to Tibet and thence to the Mongols.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२३-६-५५

आज मुक्देन् के लिए प्रस्थान किया।

२४-६-५५

मुक्देन् के समीप ता-चिङ ग्राम में कृषि-उत्पादक-सहकारी मण्डल देखने गए। यह मुक्देन् से ३५ मील दूर है। यहां की भूमि उर्वरा नहीं मानी जाती। हमको बतलाया गया कि साम्यवादी शासन से पूर्व प्रत्येक कृषक की उपज का मांध्य ११५५ सेर प्रतिवर्ष था। अब माध्य ४१५५ सेर प्रतिवर्ष हो गया है।

ता-चिङ ग्राम (अर्थात् महान् हरेभरे ग्राम) में १३४ परिवार हैं। इनमें से १०३ कृषक हैं। शेष श्रमिक हैं। १०३ में से ८३ सहकारी मण्डल के सदस्य हैं। इन्होंने ४०० सूअर पाले हुए हैं।

साम्यवादी राज्य के आते ही भूमिपतियों की भूमि छीन ली गई। भूमिपति से अभि-प्राय उन लोगों का है जो हल स्वयं नहीं चलाते थे। पांच वर्ष तक भूमि खोकर भी इन लोगों को चुनाव में भाग लेने का अधिकार न होगा। प्रायः भूमिपति अपने ग्रामों से भाग गए हैं।

भूमिपतियों के अतिरिक्त कुछ धनी किसान थे। ये अपनी भूमि और हल आदि देकर दूसरों से खेती कराते थे। ये भी समाप्त हो चुके हैं।

तीसरी श्रेणी में मध्यम वर्ग के कृषक हैं। इनके पास निर्वाह के लिए पर्याप्त भूमि है और इस भूमि को स्वयं जोतते हैं।

चौथी श्रेणी निर्धन किसानों की है। इनके पास भूमि पर्याप्त न थी। इनको दूसरों के लिए काम करना पड़ता था।

अन्तिम श्रेणी भूमिहीन श्रमिकों की थी।

साम्यवादी शासन ने निर्धनी किसानों और भूमिहीन श्रमिकों को भूमि दी है जिससे वे अपना निर्वाह कर सकें। खेती के लिए बीज तथा रुपया भी उधार दिया है। एक एक व्यक्ति को २.९ माओ भूमि मिली है। ६ माओ का एक एकड़ होता है। २.९ माओ का अर्थ हुआ लगभग आधा एकड़। भूमि बच्चों और बूढ़ों को नहीं मिलती। केवल उन्हीं को जो स्वयं खेती करने में समर्थ हैं।

पांच वर्ष पूर्व सहकारी मण्डल की स्थापना हुई। प्रतिवर्ष सदस्यों की संख्या बढ़ती जा रही है। शासन के अधिकारियों ने बतलाया कि किसानों को बलपूर्वक सहकारी मण्डल का सदस्य बनाने का यत्न नहीं किया जा रहा है।

ग्राम की जनसंख्या ४५० है। इनमें से ११७ कार्यकर्ता हैं। ग्राम में भूमि की मात्रा १७८६.७ माओ है। ३५ वाहक पशु हैं। १३ गाड़ियां हैं। इनके पहिए वहित्र (motor)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाले हैं। गांव में गेहूं, मक्की, चावल, ज्वार, आलू, मूंगफली और चौड़ी सेम की उपज होती है। ज्वार से मदिरा भी बनाई जाती है। चीन में मदिरा का सर्वत्र प्रचार है।

१९५३ में बाढ़ आई थी। लोगों ने नाले खोद कर गांव को बचाया था।

सहकारी मण्डल बनने से पूर्व अन्योन्य-सहायता-वर्ग बने हुए थे। सहकारी मण्डल बनने पर ५७ परिवार पहले वर्ष में सम्मिलित हुए। आशा है अगले वर्ष तक सभी परिवार सम्मिलित हो जाएंगे। सहकारी मण्डलों को शासन नाना प्रकार की सहायता देता है। सर्वप्रथम श्रेणियां खोली जाती हैं। हमको बतलाया गया कि श्रेणियां दिन के समय होती हैं। अतः सहकारी मण्डल के अतिरिक्त दूसरे लोग नहीं आ सकते। इन श्रेणियों में नए उपकरणों का प्रयोग सिखाया जाता है।

हमको बताया गया कि साम्यवादी शासन से पूर्व जीवन-स्तर इतना नीचा था कि व्यक्ति अपना समस्त सम्भार पीठ पर उठा कर दूसरे स्थान पर ले जा सकता था। अब यह दशा नहीं रही।

गांव में १०० नए घर बने हैं। लगभग प्रत्येक व्यक्ति को एक एक सूअर दिया गया है।

दरिद्र लोग पहले बोरी के कपड़े पहनते थे। अब ऐसा कहीं देखने में नहीं आता।

पहले छोटी सी पाठशाला थी। केवल एक अध्यापक था और ऊंचे घरों के ५० बच्चे। अब ९ अध्यापक हैं और सब घरों के मिला कर २३० बच्चे पाठशाला में जाते हैं।

प्रौढ-शिक्षा का भी प्रारम्भ हो चुका है। बच्चे घरों में जाकर माता पिता को पढ़ाते हैं। ग्राम में पंचायत घर, वाचनालय और नाटक-मण्डप हैं। सहकारी विक्रयालय की स्थापना की गई है जिसमें खेती के उपकरण, खाद, औषधें, कपड़े तथा प्रतिदिन के प्रयोग की वस्तुएं मिलती हैं।

ग्राम में दाइयों का अच्छा प्रबन्ध है। जब विशेष काम नहीं होता तब वे खेती बाड़ी का काम करती हैं अथवा नगर में शिक्षा के लिए जाती हैं।

किसानों की सहायता के लिए उधार सहकारी मण्डल बन गया है। रुपया समस्त ग्राम का ही होता है। आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रीय अधिकोष से सहायता मिल जाती है। ब्याज एक मास में १.२ प्रतिशत देना पड़ता है अर्थात् वर्ष में १४.४ प्रतिशत।

स्वास्थ्य के लिए शासन विशेष रूप से जागरूक है। घोड़ों तथा सूअरों के लिए भी अलग रहने का स्थान निश्चित है। घरों में नए शौचगृह बनाए गए हैं।

२५-६-५५

मुक्देन् में चार प्रसिद्ध मन्दिर हैं। इनमें से हमने दो मन्दिरों के दर्शन किए। पहले मन्दिर में चार बड़े भिक्षु और ५० साधारण भिक्षु हैं। लांछा लिपि में लिखा हुआ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लम्बा पत्र लटका हुआ है–

।। आर्य उष्णीषविजयधारणी नमो ।।

इस मन्दिर के दर्शन के पश्चात् हम पीत मन्दिर में गए । पीली खपरैलों के कारण इसका ऐसा नाम पड़ा है । मन्दिर का वास्तविक नाम श-सङ स्स है । यहां के अध्यक्ष पेइ-क्वाङ-वू हैं । यहां २८ मोंगोल लामा रहते हैं ।

३१८ वर्ष से इस मन्दिर में अद्भुत धारणी-ग्रन्थ की पूजा होती आई है । यहां अपूर्व घटना हुई । ज्योंही हमने इस धारणीग्रन्थ को देखा त्योंही यह हमको मिल गया । दृष्टं पृष्टं प्राप्तं च । हमने केवल मात्र पूछा ही था कि यह अद्भुत धारणी-संग्रह कहां मिलेगा कि लामा पाइ-शन्-चन् ने कहा– भारत और चीन की मैत्री को पुनः दृढ करने के लिए हम यह अपना महामान्य ऐतिहासिक धारणी-संग्रह आपको भेंट देते हैं ।

ग्रन्थ को बांधा गया । ऊपर लकड़ी के फट्टों पर नीवार लपेटी गई और १०, १५ कला के दोनों ओर के औपचारिक भाषणों के पश्चात् विधिपूर्वक ग्रन्थ हमको भेंट में दिया गया । ग्रन्थ का भार इतना अधिक है कि उठाने के लिए तीन लामा लगे । इन्होंने स्नेह से हमारी गाड़ी में लाकर रखा । यह मुक्देन् की भेंट सदा के लिए अविस्मरणीय रहेगी ।

छिङ्. राजाओं के प्रासाद में– १६७३ विक्रम में पहले छिङ राजा ने इस प्रासाद का निर्माण कराया । प्रासाद में अष्टध्वज सेना का मुख्य कार्यालय था । एक ध्वज में १५०० सैनिक हुआ करते थे ।

अब प्रासाद अद्भुतागार के रूप में है । छिङ राजाओं के संगीतवाद्य, घण्टे, ढोल, कुठार, मुद्राएं, परिधान, आसन्दी, पटल, शय्या, कवच, खड्ग, चित्र, मूर्तियां सभी कुछ विद्यमान हैं । भिन्न भार के पत्थर के टुकड़े टंगे हुए हैं । आघात करने पर प्रत्येक में से भिन्न स्वर निकलता है । संगीत प्रारम्भ और अन्त करने के लिए बड़ा ढोल है । वाद्य सामान्य रूप से नहीं रखे हुए हैं। इनके स्थाम् कलामय हैं । १६७३ से १६६८ विक्रम तक का छिङ इतिहास बहुत बड़े आकार के पत्रों पर लिखा हुआ सम्पूर्ण तथा सुरक्षित है । वृक्षों की टेढ़ी मेढ़ी जड़ों से नाना मूर्तियां बनी हुई हैं । छिङ राजा आस्थावान् बौद्ध थे । अनेक बुद्ध, बोधिसत्त्वों की मूर्तियों से एक पूरा कोष्ठ सजा हुआ है । एक बुद्ध मूर्ति के बाहर भोट, मोंगोल, मञ्जु और चीनी में व्याख्या लिखी है । भारतवर्ष के सम्पर्क से बौद्धों में चन्दन-पात्रों और चन्दन-मूर्तियों का विशेष आदर था । सो यहां भी चन्दन के पात्र रखे हुए हैं । ताम्बे और अन्य धातुओं की रत्नखचित तथा अरत्नखचित मूर्तियां विद्यमान हैं । निवासकोष्ठों के ताप को घटाने के लिए छिङ राजा हिममञ्जूषा का प्रयोग करते थे । थाङ वंश के अन्त में ल्याओ लिपि का शिलालेख जेहोल् प्रान्त से लाकर यहां रखा गया है । अभी तक यह लेख पढ़ा नहीं गया ।

नगर पुस्तकालय– २००५ विक्रम में इस पुस्तकालय की स्थापना हुई। इसमें पुराने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुस्तकालय सम्मिलित कर लिए गए। जापानी मुक्देन् में लगभग ६ लाख पुस्तकों का संग्रह छोड़ गए थे। वह भी इसमें सम्मिलित है। सुङ और मिङ से लेकर आधुनिक काल तक का यह सुविशाल समुच्चय है। पुस्तकों की समस्त संख्या १२ लाख है। प्रतिवर्ष एक लाख के लगभग पुस्तकें जुड़ जाती हैं। एक एक साम्यवादी पुस्तक की सौ सौ प्रतियां ली जाती हैं। पुस्तकें प्रायः बहुत छोटे परिमाण की हैं। विदेशी पुस्तकें बहुत थोड़ी हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या जापानी पुस्तकों की है। बौद्ध पुस्तकें अलग रखी हुई हैं। ये तथा अन्य प्राचीन पुस्तकें सामान्य जनता के लिए नहीं हैं। हम भी बौद्ध संग्रह न देख पाए। केवल २०, २५ बौद्ध पुस्तकें हमारे लिए निकाल कर लाई गईं और एक विशेष अलग कोष्ठ में हमको दिखाई गईं। हमको बतलाया गया कि सुङ, य्वेन् तथा छिङ त्रिपिटक के यहां बहुत से अंश हैं किन्तु सम्पूर्ण नहीं। त्रिपिटक के अनेक भाग नगरपालिका-पुस्तकालय में भी हैं। इस पुस्तकालय की कुछ प्राचीन पुस्तकें प्रासाद में हैं। तीस सहस्र भाग का एक विश्वकोष है जो १७वीं शताब्दी में बना। इसका नाम है– स्स-कू-चुन्-शू। इसके बनने में दस वर्ष लगे थे। वास्तव में इसको उद्धरणों का संग्रह कहना चाहिए।

छिङ महाराज ने आर्य अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता को विशेष प्रेम से काष्ठमुद्रण-फलकों पर खुदवा कर छपवाया था। प्रत्येक पृष्ठ की लम्बाई ३६ प्रांगुल है। पहले पृष्ठ पर कौशेय से ये अक्षर निकाले गए हैं–

॥ ओं स्वस्ति सिद्धम् ॥

पुस्तकालय में शिलालेखों की छापों का बहुत बड़ा संग्रह है। छापों की संख्या लाखों में है। चीन शिलालेखों का देश है। यह भी संग्रह हम देख न पाए।

जिस विश्रान्तिगृह में हम ठहरे हुए हैं उसमें ही भारतीय संगीत-मण्डली आकर ठहरी है। मण्डली में ५० के लगभग स्त्री पुरुष हैं। इस मण्डली के नेता श्री अनिल-कुमार चन्दा हैं। आप पहले कविसम्राट् रवीन्द्रनाथ ठाकुर के आत्मीय सचिव रहे हैं। आज आपने बतलाया कि कविसम्राट् हमारी कृति Vedic Mysticism के अनन्य भक्त थे। अन्तिम समय तक उन्होंने इस पुस्तक को अपने साथ रखा।

२६-६-५५

आज हम आन्-शान् आए। यहां लोहे की सबसे बड़ी निर्माणियां हैं। एक निर्माणी में पिघले लोहे की बहती हुई नदी और संयानों के लिए प्रतिदिन ४००० पटड़ियां बनती हुई देखीं। निर्माणियों का विस्तार एक दो दिन में नहीं देखा जा सकता। किन्तु जो कुछ भी हमने देखा उससे नए चीन की तीव्र प्रगति का अच्छा अनुमान हो सकता है। चीन में लोहा, पीतल, ताम्बा बहुत न्यून मात्रा में देखने में आता है। तार के खम्बे लकड़ी के हैं। कहीं लोहे के दिखाई नहीं पड़ते। कोई व्यापारी पीतल और ताम्बे आदि का प्रयोग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रस्तुत थंका में महाकाल के अनुचर क्षेत्रपाल का चित्रण है जो कभी युङ्-हो-कुङ् के विख्यात पेइ-चिङ् स्थित मोंगोल विहार की भित्ति को सुशोभित करता था। यह अब आचार्य रघुवीर के संग्रह में है।

Silken scroll painting (*thanka*) of Kṣetrapāla who is one of the retinue of Mahākāla. It stems from Yung-ho-kung the famous lamasery of Peking.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नहीं कर सकता जब तक शासन से विशेष अनुमति न मिले। सोने चांदी का तो आभूषणों तक के लिए मिलना अशक्य है।

मुक्देन्, आन्-शान् और आसपास की निर्माणियों का प्रारम्भ जापानियों ने किया था। इनका अब विस्तार किया जा रहा है। नई निर्माणियां भी बनाई जा रही हैं। मुक्देन् की यन्त्रोपकरण-निर्माणी में दो प्रवर्त (ton) भार की एक वर्तनी (lathe) बनाने का समय एक श्रमिक के २७० घण्टे हैं।

२८-६-५५

आज मध्याह्न पेइ-चिङ लौट आए। एक बार फिर युङ-हो-कुङ में गए। वहां से चारों विद्यालयों का पाठ्यक्रम लिया। पाठ्य-पुस्तकों के प्रकाशन का युङ-हो-कुङ सबसे बड़ा केन्द्र था। अब पुस्तकों का छपना बन्द है। अमृत-हृदयाङ्गाष्टगुह्योपदेश– यह ग्रन्थ हमने लेना चाहा किन्तु इसकी कोई प्रति न मिल सकी।

२९-६-५५

आज सायं महाभोज हुआ। चीन के प्रधान मन्त्री उसमें सम्मिलित हुए। यहां हमने विचित्र दृश्य देखा–भारत के प्रतिनिधि श्री चन्दा जी ने पहले हिन्दी में भाषण दिया फिर अंग्रेज़ी में। इसका परिणाम यह हुआ कि चीनी भाषणों का अनुवाद केवल पहली बार हिन्दी में किया गया। तदनन्तर अंग्रेज़ी चलती रही। भारतीय दूतावास के निमन्त्रण पत्र भी चीनी तथा अंग्रेज़ी में जाते हैं हिन्दी में नहीं।

३०-६-५५

आज पेइ-चिङ के क्वान्-ची मन्दिर में आए। यहां तथा अन्य बौद्ध मन्दिरों में साम्यवाद के शान्तिप्रचार की पुष्टि के लिए–जन्-वाङ-फ़ू-क्वो-चिङ का पाठ होता है। मन्दिर के महन्त कहने लगे यह संस्कृत से अनूदित प्रज्ञापारमिता का अंग है। अनुवादक का नाम पू-खुम् अर्थात् अ-शून्य है। यहां हमने देखा कि चीनी समाचारपत्रों पर चान्द्र मास तथा चान्द्र तिथि भी दी जा रही है।

१-७-५५

आज पेइ-चिङ पुस्तकालय में भारत और चीन के सांस्कृतिक सम्बन्धों की प्रदर्शनी देखने गए।

आज पेइ-चिङ में भारत-संगीत-मण्डल का विशेष कार्यक्रम था। राष्ट्रपति माओ-त्स-तुङ, प्रधान मन्त्री चोउ-अन्-लाइ तथा अन्य गण्यमान्य व्यक्ति विशेष रूप से निमन्त्रित थे। हम लोग इनके समीप ही बैठे थे। श्री माओ और चोउ ने हम से हाथ मिलाया और बड़े

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ध्यान से भारत की कला का रसास्वादन करते रहे।

देखते देखते अनेक विचार मन में उत्पन्न होते थे। भारतीयों को विदेश में जाकर अपने वाद्यों के लिए orchestra शब्द का उपयोग न करना चाहिए। इस शब्द के साथ जो अर्थ लोगों के मन में संयुक्त है वह वस्तु न देख कर उसका भारतीय रूप निराशा-जनक प्रतीत होता है।

चीन में पाश्चात्य गान का अथवा रूसी गान का बहुत प्रचार है। इस गान में गले और ध्वनि की विशेष शिक्षा दी जाती है। हमारे गायकाचार्यों में इसकी विशेष न्यूनता है। भारत के बाहर जाते समय हमको ध्यान रखना चाहिए कि हम उन गायकों को ले चलें जिनकी ध्वनि रसीली हो और गला स्वच्छ हो। ध्वनि मद्धम, मोटी अथवा खुरदरी न हो।

हमारे संगीत-मण्डल को चाहिए था कि वह कोई न कोई चीनी गान अथवा नृत्य भी चीनी जनता को दिखाते। जब चीनी कलाकार भारत में आए थे तो उन्होंने भारतीय गीत गाकर भारतीय जनता को मुग्ध किया था। इतना ही नहीं जब से भारतीय संगीत-मण्डल चीन में आया है तब से उसके साथ १०, १२ चीनी कलाकार विद्यार्थी के रूप में लग गए हैं और भारतीय कला का प्रतिदिन अभ्यास करते हैं।

श्वेन्-च्वाङ चीन में प्रसिद्ध हैं। श्वेन्-च्वाङ का ग्रन्थ "पश्चिम की यात्रा" चीन के राष्ट्रपति माओ का प्रिय ग्रन्थ है। यदि भारतीय संगीत-मण्डल श्वेन्-च्वाङ के जीवन का निरूपण करता तो चीनी आत्मा में प्राचीन दो सहस्र वर्षों का भारत-चीन-सम्बन्ध जागृत हो उठता। इसी प्रकार यदि बुद्ध के जीवन के किसी अंश को लेकर निरूपण किया जाता कि विश्व-शान्ति का विचार किस प्रकार भारत और चीन में प्राचीन समय में फैला था तो चीन की जनता गद्‌गद् हो उठती। एक नया उल्लास फैलता।

कविसम्राट् रवीन्द्रनाथ ठाकुर के एक छोटे से गान को ५, ६ कला तक सुना देने से चीनी जनता के पल्ले कुछ नहीं पड़ा। यदि रवीन्द्र के किसी नाटक को ले लेते तो जनता मुग्ध होती और उनकी भक्ति गहरी हो जाती।

आज पता चला कि पेइ-चिङ विश्वविद्यालय में भी मन्जु के कुछ ग्रन्थ हैं।

२-७-५५

आज पेइ-चिङ पुस्तकालय में शी-श्या सूत्रों के निरीक्षण के लिए गए। यह निङ-श्या प्रान्त से आए हैं। वहां एक मन्दिर में सुरक्षित थे। कोनों पर ग्रन्थों के चीनी नाम लिखे हैं। ये ग्रन्थ श्वेन् 元 युग में १४वीं, १५वीं शताब्दी में लिखे गए।

प्रत्येक पृष्ठ में छः पंक्तियां हैं। चीनी के समान पंक्तियां ऊपर से नीचे की ओर आ रही हैं। प्रत्येक पंक्ति में १७ अक्षर हैं। इनके काष्ठ-मुद्रण-फलक हाङ-चोउ 杭 州 में बने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थे। शी-श्या अक्षरों को पीतनदी के पश्चिम के अक्षर कहते हैं। यह विशेष सौभाग्य है कि कुछ पुस्तकों के अन्त में तिथि आदि की सूचना दी हुई है। शी-श्या अनुवाद सुङ-संस्करण से हुए हैं। आरम्भ में चित्र भी सुङ-संस्करण वाले हैं।

आज हमने दो शिरोधान मोल लिए। इन पर चार चीनी अक्षर हैं— कू-फ़ू-कुन्-नान्। कू-फ़ू का अर्थ पार करना और कुन्-नान् का अर्थ कठिनाइयां। जब दिन के परिश्रम और चिन्ताओं से थक कर मनुष्य शिरोधान पर सिर रखता है तो शिरोधान उसकी कठिनाइयां पार करने में सहायक हो। रात्रि का विश्राम मस्तिष्क को अभिनव शक्ति दे। नए सुझाव दे।

४-७-५५

साम्यवादी चीन में नवजात शिशुओं के लिए, विशेष कर जिनकी माताएं निर्मा-
णियों में काम करती हैं, अनेक शिशुशालाएं हैं। हमको बताया गया कि अकेले पेइ-
चिङ नगर में ६०० शिशुशालाएं हैं। प्रत्येक में न्यूनतम ५० और अधिकतम ३०० शिशु
हैं। जितने समय तक माताएं निर्माणियों में काम करती हैं उतने समय तक बच्चे इन
शालाओं में रहते हैं। निर्माणी में कार्य समाप्त करके माताएं बच्चों को अपने साथ ले
जाती हैं।

आज हम अपनी नाम-मुद्रा बनवाने के लिए अच्छा कलाकार ढूंढते ढूंढते गलियों में
जा पहुंचे। वहां एक आपणिक अपनी छोटी सी आसन्दी पर बैठा हुआ घास की डिबिया
में बन्दी किए हुए हरे टिड्डे का गान सुनने में मग्न था। ये हरे टिड्डे पेइ-चिङ की
गलियों में प्रतिदिन बिकते हुए दिखाई पड़ते हैं। इनके क्रन्दन को गान की उपाधि देना
चीन में ही सम्भव है। चीन की प्रतिभा और कला वैचित्र्यप्रिय है। जब उनको पक्षियों
का कूजन नहीं मिलता तो उसके स्थान में टिड्डों का क्रन्दन ही उनके लिए पर्याप्त है।

जिस पेइ-चिङ प्रासाद के विषय में एक अधिकारी ने हमको यह बतलाया था कि
प्रासाद तो राजाओं के भोग-विलास का स्थान है, यहां पुस्तकों का क्या प्रयोजन, उसी
प्रासाद में विशेष अनुमति मिलने पर आज दो लाख पुस्तकों के संग्रह के दर्शन हुए।
प्रत्येक प्रकार के ग्रन्थों के लिए अलग अलग भवन हैं। ताओ सम्बन्धी ग्रन्थों का विशाल
और उत्तम संग्रह है। लाख के रंग से रंगे हुए चमकते काले पत्रों पर सुनहरी मसी से बनाए
हुए अतएव चित्र और उत्कृष्टोत्कृष्ट सुलेखकों के लिखे हुए धार्मिक ग्रन्थों का यह अद्भुत
स्थान है। प्रायः इस पुस्तकालय में प्रवेश की आज्ञा नहीं मिलती।

५-७-५५

आज तीन बजे चीनी संसद् का सत्र आरम्भ हुआ। संसद् के लिए कोई विशिष्ट
भवन नहीं है। जिस ह्वाइ-जन्-थाङ भवन में भारतीय संगीत-नाटक का कला-प्रदर्शन था

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसी में आज संसद् का सत्र है। १२२६ में से १०६४ सदस्य उपस्थित हैं। राष्ट्रपति भी उपस्थित हैं। सर्वप्रथम Presidium अर्थात् प्रधान-वर्ग के नामों की सूची संसद् के सामने रखी गई और मत लिए गए। एक भी मत विरोध में न था। सभी पक्ष में थे। सर्वसम्मति से सूची पारित हुई। तत्पश्चात् पंचवर्षीय योजना सामने रखी गई। आय-व्ययक के स्थान में पूर्व तथा आगामी वर्ष का वित्तीय विवरण रखा गया। जब पूछा गया कि क्या कोई विरोध में है तो यथापूर्व मेइ याउ, मेइ याउ की ध्वनि हुई अर्थात् कोई विरोध में नहीं।

पंचवर्षीय योजना में ७६ अरब रुपया लगेगा। इस काल में कितनी उन्नति करने की आशा और योजना है सो इससे कुछ पता लगेगा कि पांच वर्ष की सीमा पूरे होने से पहले प्रतिवर्ष ३० सहस्र वहित्र बनने आरम्भ हो जाएंगे।

सत्र २९ जूलाई तक चलेगा। किन्तु अधिकांश दिन वर्ग-संवाद में लगेंगे, सत्र में नहीं। वर्ग-संवाद साम्यवादी शासन में विशेष महत्त्व की वस्तु है। छोटे छोटे वर्गों में सब बातों पर विचार किया जाता है। सदस्य अपने विचार इन वर्गों की बैठकों में प्रकट करते हैं। संसद् के सत्र में तो मुख्य वक्ता प्रस्तावों की पुष्टि ही करते हैं।

राजनैतिक जीवन का संचालन संयुक्त अग्रसंघ (United Front Organization) करता है। इसमें ९ राजनैतिक पक्ष हैं। इससे आगे चल कर जन-राजनैतिक-परामर्श-सम्मेलन है। इसमें देश का एक ही लक्ष्य तथा एक ही कार्यक्रम निश्चित किया गया है। साम्यवादी पक्ष के सिद्धान्त तथा उनकी योजनाएं इस सम्मेलन ने स्वीकार की हैं।

भारतवर्ष के लिए यह नई बात है कि आदर्श-श्रमिकों में से भी संसद्य चुने जाते हैं।

सायं छः बजे शासन-स्थापित पुरातन साहित्य विक्रय-शाला में गए। ६१ बन्धनों में ७११ खण्डों वाला २४ वंशीय इतिहास मोल लिया। यह इतिहास-माला चीनी इतिहास की आधारभूत वस्तु है। हमको एक ही दुःख रहा है कि इन ७११ खण्डों के लिए चीनी निधाय न मिला। कुछ दिन के पश्चात् जब हम शाङ-हाइ में पहुंचे तो वहां इतने ही मूल्य में सम्पूर्ण ७११ खण्डों में तथा ६ पाद ऊंचा, ४ पाद चौड़ा और १ पाद गहरा निधाय मिल रहा था। किन्तु इसको मोल लेना असम्भव हो गया था। हमारा सम्पूर्ण सम्भार बंध कर क्वाङ-चोउ जा चुका था। यदि हमने शाङ-हाइ में दो दिन भी ठहरना होता तो हम अपने साथ ले चल सकते थे। इस प्रकार के निधायों की विशेषता यह है कि प्रत्येक बड़े वंश के इतिहास के लिए अलग डिब्बा बना हुआ है। डिब्बों पर वंशों के नाम खुदे हुए हैं। तथा खुदे हुए नामों में हरा रंग भरा है। प्रत्येक वंश के डिब्बे का परिमाण भिन्न है किन्तु फिर भी सब इस प्रकार से निधाय में रखे हुए हैं कि सुन्दर प्रतीत हों और अलग अलग निकल सकें।

बौद्ध त्रिपिटक का चीनी परिशिष्ट १९८० विक्रम में शाङ-हाइ में प्रकाशित हुआ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। इसमें १५१ बन्धन हैं। प्रत्येक में ५ खण्ड हैं। मूल्य १४०० युआन्। इस परिशिष्ट में चीनी आचार्यों के रचित ग्रन्थ हैं। चीन में जो सम्प्रदाय बने, इनमें जो संघर्ष हुए, उन सबका विवरण यहां पूर्णरूप में मिलता है।

७-७-५५

भोट कन्जूर तन्जूर का डिब्बों में डलना आरम्भ हो गया सो अत्यन्त सन्तोष हुआ। ३३० बन्धन हैं। प्रत्येक बन्धन का परिमाण ३० प्रांगुल के लगभग है। इनके लिए विशेष बड़े बड़े लकड़ी के डिब्बे बने हैं। सात आठ व्यक्ति डिब्बे भरने आए हैं। डिब्बों में जला-प्रवेश-पत्र लगाना, सावधानी पूर्वक एक एक ग्रन्थ को बिठाना, डिब्बों के बाहर अन्तर्निहित पुस्तकों की संख्याएं लिखना आदि पर्याप्त समयापेक्षी कार्य है। हमने अपने सामने कार्य आरम्भ कराया है। तीन चार दिन में पूरा हो जाएगा ऐसी आशा है। तत्पश्चात् मोंगोल कन्जूर से डिब्बे भरने और बन्द करने होंगे।

दो तीन दिन से साम्यवादी मोंगोल सेना की संगीत-मण्डली आई हुई है। हमारे ही विश्रान्तिगृह में ठहरी हुई है। इसमें १५८ स्त्री पुरुष हैं। वेष सैनिक है। कल रात्रि को इनका प्रथम प्रदर्शन था। हम कार्यवश न जा सके थे। इसलिए आज गए। विशेष उल्लेखनीय चीन, मोंगोल और रूस को संयुक्त करने वाले संयान का स्वागत-गीत था। किस बल और उत्साह से गाया गया। नाटक-भवन गूंज उठा। जनता का हृदय भी उल्लास से बल्लियों ऊंचे नाचने लगा। क्या भारतवर्ष में भी हम जनता में देश की एकता के गीतों को राष्ट्रीय नवनिर्माण के साधन नहीं बना सकते।

८-७-५५

चीन की आर्थिक स्थिति पर बातचीत करते हुए पता लगा कि अर्थपत्र (currency notes) का पृष्ठपोषण स्वर्ण द्वारा किया गया है किन्तु स्वर्ण और अर्थपत्रों का कितना अनु-पात है यह कुछ पता न लग सका। हमको बताया गया कि जब पण्डित नेहरू चीन में आए थे तब उनको अर्थसम्बन्धी सब समंक दिए गए थे। अंग्रेज़ समंकविशारदों का विचार है कि जब कभी चीनी शासन समंक देता है तो ठीक ही देता है। जहां तक भारत और पण्डित जवाहरलाल नेहरू का सम्बन्ध है इसमें सन्देह नहीं कि समंक ठीक ही दिए होंगे किन्तु वे प्रकाशित नहीं किए गए। श्री चोउ-अन्-लाइ ने पण्डित नेहरू से कहा था कि आपके और हमारे बीच में कोई रहस्य नहीं, जो आप जानना चाहेंगे सो आपको बताएंगे।

अर्थपत्र पोषण के अतिरिक्त अनुपूरक अर्थव्यवस्था (supplementary economy) पर चर्चा हुई। चीन में एक विचार ऐसा रहा है कि जब रूस और चीन भ्रातृ-शासन हैं तो इनकी अर्थव्यवस्था भी एक दूसरे की सहायक होनी चाहिए। अर्थात् जो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उद्योग रूस में चल रहे हैं उनको चीन में चलाने की आवश्यकता न होनी चाहिए। इसके विपरीत दूसरा विचार है कि औद्योगिक क्षेत्र में चीन को स्वतन्त्र होना चाहिए। रूस पर सदा के लिए निर्भर रहना उचित नहीं। दूसरा विचार सर्वसम्मत है। तदनुसार चीन में भारी उद्योगों का प्रारम्भ और विकास किया जा रहा है। एक और भी पक्ष है कि चीन के प्रत्येक प्रदेशमण्डल को भी स्वावलम्बी होना चाहिए। इस बात की चर्चा संसद् में भी हुई थी।

जैसा हम पहले कह आए हैं आजकल भारत का केवल एक विद्यार्थी पेइ-चिङ विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहा है। वह केवल एक वर्ष के लिए चीन में भेजा गया है। वह चाहता है कि चीन में अधिक रहे। चीन की शिक्षापद्धति भारतीय पद्धति से बहुत भिन्न है। विद्यालय में प्रवेश करते ही विद्यार्थी से प्रश्न किया जाता है कि तुम किस उद्देश्य से पढ़ने आए हो। भारतीय विद्यार्थी निरुत्तर हो जाता है। उसको पता नहीं कि दुभाषिया बनेगा, चीनी का अध्यापक बनेगा अथवा चीनी भाषा और साहित्य के अनुसन्धान-क्षेत्र में अपना जीवन व्यतीत करेगा। यदि विद्यार्थी को अपने भविष्य का स्पष्ट ज्ञान नहीं तो चीनी विद्यालय उसको उपयुक्त शिक्षा देने में असमर्थ है। केवल यह कहना कि चीनी पढ़ूंगा पर्याप्त नहीं। चीन में भारतीय विद्यार्थियों को छः वर्ष की छात्रवृत्ति देनी चाहिए। तथा चीन में आने से पूर्व विद्यार्थी को भारतीय साहित्य और दर्शन, अर्थशास्त्र और राजनीति का सम्यग् ज्ञान होना चाहिए। चीन में हमारा विद्यार्थी हमारा प्रतिनिधि है। यदि वह अपने देश के साहित्य, दर्शन, अर्थनीति और राजनीति को ठीक प्रकार से नहीं समझता तो वह अपने देश के सम्बन्ध में वहुत कुछ भ्रम फैलाएगा। इतना ही नहीं वह लौट कर भारतवर्ष के आर्थिक और राजनैतिक तन्त्र में ठीक नहीं बैठेगा। चीन में प्रथम दो वर्ष प्रत्येक विद्यार्थी को मुख्यतया मार्क्सवाद की शिक्षा दी जाती है। नाना प्रकार के प्रश्न और उनके उत्तर सिखाए और रटाए जाते हैं। यदि भारतीय विद्यार्थी अपने देश की नीति से अनभिज्ञ है तो वह सरलता से ही प्रभाव में आ जाता है। यदि विद्यार्थी अपनी नीति से परिचित हो तो उसका चीनी विश्वविद्यालयों में मार्क्सवाद पढ़ना चीन की नीति को समझने के लिए लाभकारी हो सकता है।

प्रथम दो वर्ष के पश्चात् विद्यार्थी विशेष विद्या-विभाग में प्रवेश कर सकता है जैसे चीनी साहित्य, चीनी कला, चीनी इतिहास।

११-७-५५

चीन की महाभित्ति के उत्तर द्वार में विख्यात षड्भाषालेख और मूर्तियां हैं। द्वार की दोनों भित्तियां और छत लेखों और मूर्तियों से भरी पड़ी हैं। इस द्वार का नाम चू-युङ-क्वान् है। पेइ-चिङ और चाङ-च्या-खोउ 張家口 के मध्य में पा-ता-लिङ 八達嶺 के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीचे चू-युङ-क्वान् द्वार है ।

. दक्षिण से उत्तर जाते हुए राजमार्ग पर सुदृढ अश्ममय चापरूप द्वार है । भित्ति की ऊंचाई १९ हाथ है । द्वार की चौड़ाई १८ हाथ और गहराई ७० हाथ है । द्वार के ऊपर गरुड और नागकन्याएं बनी हुई हैं । प्रत्येक नागकन्या के सिर पर सात सर्प हैं । इनकी पीठ सर्पाकृति है और प्रत्येक नागकन्या की एक टांग गरुड के पञ्जे के नीचे है । नाग-कन्याएं हाथ जोड़े खड़ी हैं । द्वार के ऊपर पुरातन काल में भोट स्तूप बना हुआ था । यह अब सर्वथा नष्ट हो चुका है ।

यह द्वार य्वेन् 元 काल का है और ऐतिहासिक दृष्टि से इसका बहुत महत्त्व है । द्वार की दोनों ओर की भित्तियां मूर्तियों से भरी हुई हैं । भित्तियों के दोनों कोनों पर एक एक लोकपाल की मूर्ति है । चारों कोनों के चार लोकपालों के बीच में छः भाषाओं में धारणियां उत्कीर्ण हैं ।

(१) सर्वप्रथम लांछा लिपि में संस्कृत (२) भोट (३) फग्स्प (मोंगोल) (४)
वीगूर (तुर्की) (५) शी-श्या (ताङुत्) (६) चीनी

फग्स्प, जिन्होंने लिपि बनाई थी, उनका सम्राट् यिङ-त्सुङ 英宗 बहुत आदर करते थे । उनकी मृत्यु के ४१ वर्ष पश्चात् अर्थात् १३७८ विक्रम में सम्राट् ने अपने साम्राज्य के प्रत्येक प्रान्त में इनके स्मारक-भवन बनाने के लिए आदेश दिया ।

द्वार के अन्दर की छत में पांच विभिन्न प्रकार के मण्डल बने हुए हैं । भित्तियों पर, आमने सामने पांच पांच बुद्ध उत्कीर्ण हैं । आस पास और उनके ऊपर एक सहस्र छोटे छोटे बुद्ध बने हुए हैं ।

पश्चिम भित्ति पर उत्तर के लोकपाल वैश्रवण और दक्षिण के विरूपाक्ष । पूर्वी भित्ति के दक्षिण ओर विरूढक और उत्तर की ओर धृतराष्ट्र लोकपाल हैं ।

वैश्रवण के दाहिने हाथ में छत्र है। एक टांग को एक देवता सम्हाले हुए हैं। उनकी आगे की ओर पसरी हुई दूसरी टांग असुर को कुचल रही है ।

विरूपाक्ष के दक्षिण हस्त में सांप है । और उनका बायां पांव असुर के शरीर पर है ।

विरूढक के हाथ में तलवार है और धृतराष्ट्र वीणा बजा रहे हैं । विरूढक और धृतराष्ट्र के बाएं पांव असुरों के ऊपर हैं ।

चारों लोकपालों के दो दो उपासक हैं ।

विरूपाक्ष के बाईं ओर के शिलालेख में जीर्णोद्धार की तिथि १५०२ विक्रम दी है। सम्भवत: ये मूर्तियां १४०२ विक्रम में बनी हों ।

यह द्वार य्वेन् कला के उत्कर्ष का अवशेष है । चाप की विचित्र बनावट, द्वार की आभ्यन्तर भित्तियों पर कुशलता पूर्वक उत्कीर्ण मूर्तियां । वीरत्वपूर्ण लोकपाल, रौद्र रूप

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होते हुए भी ओजस्वी और कलात्मक हैं। आभ्यन्तर छत की मूर्तियां सौम्य होते हुए भी शक्तिशालिनी हैं। तथा प्रभामण्डलों के मृदुत्व आदि गुण इस द्वार को ऐतिहासिक द्वार बना देते हैं। चीनी भाषा में केवल धारणियां ही नहीं किन्तु उनके साथ सम्बद्ध कहानियां भी दी हुई हैं। पूर्व भित्ति पर सर्वदुर्गति-परिशोधनोष्णीष-विजय-धारणी है। और पश्चिमी भित्ति पर समन्तमुख-प्रवेश-रश्मि-विमलोष्णीष-प्रभा-सर्वतथागत-हृदय-समविरोचन-धारणी है।

पूर्व भित्ति की धारणी नांजो की त्रिपिटक-सूची की संख्या ८७१ की धारणी है। इसका चीनी अनुवाद सुङ वंश के फ़ा-थ्येन् 法 天 ने किया था। किन्तु द्वार पर दी हुई धारणी का त्रिपिटक से कुछ भेद है। धारणियों के पश्चात् आने वाला सूत्रभाग सुङ-अनुवाद से सर्वथा भिन्न है। भित्तिलेख बहुत कुछ विकृत हो चुका है। भित्तिलेख में इसके उत्कीर्ण करने का उद्देश्य भी वर्णित है।

दूसरी धारणी के पश्चात् १४०२ विक्रम की तिथि दी है। चीनी त्रिपिटक में इस धारणी का अनुवाद सुङ वंश के श-हू 施 護 का किया हुआ है। चीनी के दोनों अनुवाद य्वेन् वंश में किए गए हैं।

१२-७-५५

हमारी सरस्वती-विहार-ग्रन्थमाला के लिए फ़ान् गुलिक् ने चीन और जापान में सिद्धम् लिपि के प्रचार के सम्बन्ध में एक पूरा ग्रन्थ लिखा है। फ़ान् गुलिक् का मत है कि चीन में संस्कृत का कभी प्रचार नहीं रहा। जो चीनी भारतीय लिपि पढ़ जाता था वह यह मान लेता था कि मैं संस्कृत ही पढ़ गया हूं। पेइ-चिङ विश्वविद्यालय के संस्कृतज्ञ प्राध्यापक ची ने कहा कि यह मत थाङ और सुङ वंश के लिए तो सर्वथा अशुद्ध है। हां सम्भव है कि छिङ वंश में इस मत के लिए कुछ स्थान हो। छिङ काल अर्थात् १७वीं, १८वीं और १९वीं शताब्दियों में चीनियों का भारत आना जाना स्थगित हो चुका था। उससे पूर्व चीन में कई स्थान थे जहां भारतीय लिपि और संस्कृत भाषा दोनों का अध्ययन होता था और केवल बौद्ध भिक्षु ही नहीं किन्तु भारत से सम्पर्क रखने वाले राजनीतिविशारद तथा भारतगामी राजदूत भी संस्कृत अध्ययन करते थे।

क्वान्-ची मन्दिर में अनुसन्धान-कार्य हो रहा है कि जो बौद्ध सूत्र भारत से लुप्त हो गए किन्तु जिनके अनुवाद चीनी भाषा में बचे हुए हैं उनके अनुसार भारत की सामाजिक, राजनैतिक आदि स्थिति पूर्वकाल में किस प्रकार की थी। यह अध्ययन कई वर्षों में पूरा होगा। अभी इसका कोई खण्ड प्रकाशित नहीं हुआ। यदि अनुसन्धान में वैज्ञानिक रीति का पालन किया गया तो क्वान्-ची मन्दिर के ये प्रकाशन हमारे लिए भी बहुमूल्य होंगे और हम इनका हिन्दी अनुवाद निकालेंगे। इसके लिए क्वान्-ची मन्दिर का पूर्ण सहयोग होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१३-७-५५

पेइ-चिङ में केवल एक भारतीय व्यापारी है। यह २५ वर्ष से रह रहा है। इसने भयानक घटनाएं घटती देखी हैं। चोरों, डाकुओं और सेनापतियों के अत्याचार तथा शासनों के परिवर्तन देखे हैं। वर्तमान शासन से इसके अच्छे सम्बन्ध हैं। प्रतिमास ११०० रुपए भारतवर्ष भेजने की इसको अनुमति मिल चुकी है। कुछ मासों से जनता की क्रय-शक्ति बढ़ने लगी है ऐसा इसका अपना अनुभव है। पिछले वर्ष तक तो केवल रूसी सेना के अधिकारी तथा दूतावासों के नरनारी मंहगे कौशेय के कपड़े मोल लिया करते थे। अब चीनी अधिकारी भी आने लगे हैं। पहले रूसी सेना के अधिकारी सैनिक वेष में रहते थे। अब वे असैनिक वेष में ही आते जाते हैं।

चीन में अधिवक्ता (advocate) नहीं हैं। न्यायाधीश सीधा अभियुक्त से प्रश्न पूछता है। गुप्तचर अभियुक्त के सम्बन्ध में जांच पड़ताल करते हैं। अपराध का निश्चय करने के पश्चात् न्यायाधीश दण्डघोषणा करता है। कहीं लड़ाई झगड़ा नहीं होता। कोई एक दूसरे से गाली-गलौच नहीं करता। यदि कोई सड़क पर लड़ते झगड़ते दिखाई पड़ जाए तो उसको थाने में ले जाते हैं। समझा बुझा कर भेज देते हैं। कोई चोरी करने का साहस नहीं करता। सोने से लोग दूर भागते हैं। किसी चीनी घर में सोना नहीं मिलेगा। वह राष्ट्रनिधि में जा चुका है।

१४-७-५५

सायं ७ से १० बजे तक विद्यासभा की ओर से प्रस्थान-भोज हुआ। उपहार-सूची पढ़ी गई। भारत तथा चीन की मैत्री से संसार में शान्ति स्थापित हो रही है इस आशय के भाषण हुए। अन्त में हमने हिन्दी में अनियमित पद्य पढ़े। प्रत्येक पद्य का आंगल अनुवाद सुदर्शना देवी ने पढ़ कर सुनाया। इस आंगल अनुवाद का चीनी अनुवाद दुभाषिए ने किया। मूल हिन्दी तथा आंगल अनुवाद नीचे देते हैं—

१

कठोर अश्ममय पर्वतशिला को मूर्तिकार की कला ने स्मितमुखी बना दिया।
मूर्तिकार की कला शिला में आश्रय पाकर अमर हो गई।
पर्वत के नवरूपावतार में चित्रों का भी योगदान है,
और चित्रों के अमरत्व में शिला का अमरत्व है।
अब पत्थर जड़ नहीं रहा, चेतन बन गया।
पारलौकिक प्रकाश की रश्मिमाला का उद्भासन-पिण्ड बन गया।
अनन्त, अमितायु, शान्ति और पारमिता प्रज्ञा का सन्देशवाहक बन गया॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२

हिंसे, क्रूर हिंसे, डाकिनि हिंसे,
क्या तू मानव-जीवन-जाल के एक एक सूत्र को छिन्न भिन्न करेगी।
अथवा अहिंसा देवी के सामने साष्टांग नमन करके उसमें लीन हो जाएगी।
हिंसे, अब तुम्हारी उपासना का युग समाप्त हो गया है।
केवल भय अभी तक तुमको जातियों और राष्ट्रों के नेताओं के हृदय में
सुरक्षित सम्हाले हुए है।
तुम्हारा सखा भी तो अब कोई नहीं रहा–
केवल द्वेष और घृणा ॥

३

आपके देश चीन में भावी मैत्रेय की कल्पना जनता में बद्धमूल है।
जब विश्व में चारों ओर राक्षसी उत्पात मच रहा होगा,
तब सर्वकल्याण के लिए मैत्रेय प्रादुर्भूत होंगे।
हमारी दीन हीन दशा में भारत में भी एक मैत्रेय आए थे।
इनका प्रातःस्मरणीय नाम था गान्धी।
इनके हृदय में भय का लेश न था।
इनके हृदय में द्वेष का लेश न था।
यथार्थनामा गान्धी ने सुगन्ध-परिमल की समीर बहाई,
और मानवजनों की विचारसरणी प्रबुद्ध तथा विशुद्ध हुई ॥

४

भाई भाई के रुधिर की पिपासा ने मानव की गरिमा को
धूलिसात् कर दिया।
किन्तु अब ऐसा न होगा।
हम सब भाई बन कर रहेंगे।
दरिद्रता और अकिंचनता, व्याधि और अविद्या,
अब ये ही हमारे शत्रु रह गए हैं।
मानव को इकट्ठे होकर इनका सामना करना है।
एक एक जन समृद्ध होगा, स्वस्थ और गृहवान् होगा।
यथेष्ट ज्ञान की प्रभा उसके हृदय और मस्तिष्क को परिपूर्ण किए होगी ॥

५

सदाचार-सच्छीलहीन घने अन्धकारमय,
मानस के आदिकालागत जंगलों में,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आततायी मत्स्य-न्याय का अभी तक आधिपत्य है।
मैत्रेय का शुद्ध अवदात हासाट्टहास
तथा गान्धी का सौम्य परिमल
धुन्धले कोहरे के समान कुछ कुछ छा पाए हैं।
किन्तु प्रभात-वेला के दनदनाते हुए विजयाभियान को
कौन रोकेगा अथवा बांधेगा।
काली रजनी की सर्वाच्छादिनी कम्बली भाग निकलेगी।
साथ कुछ न ले जा सकेगी॥

६

हिंसा की परिधि संकीर्ण हो रही है।
भारत और चीन की पुनर्नवीभूता भ्रातृमत्ता का प्रथम फल पंचशील हैं।
घटनाचक्र का पथ प्रकृति की रचना है।
अनिच्छुकों को भी ये बहा ले जाता है।
हमारे और आपके पंचशील
इस घटनाचक्र के नियामक और अग्रणी बनेंगे।
और प्रवेश करेंगे
राष्ट्रनेताओं के हृदयों में,
उनके शूरवीरों और विद्याप्रवीणों के हृदयों में,
हृदयशून्य, अन्तःकरणहीन, करुणामैत्रीवियुक्त
मानवजाति के विध्वंसकारी वैज्ञानिकों के मन और बुद्धि में॥

तब,
वह तब दूर नहीं,
और तब वज्रचित्त, वज्रकाय, वज्रहस्त, वज्रवृत्ति नर
वेत्रवृत्ति होकर नमन करेंगे।
झुक कर दोहरे हो जाएंगे।
उनके पादपथ की दिशा परिवर्तित हो जाएगी
और यम के महाप्रलयकारी अस्त्रायुध
मंगल और कल्याण के परम ओजस्वी साधन बन जाएंगे॥

७

स्वस्ति, बन्धुवर्ग, स्वस्ति।
पड़ौसी हम,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भाई भाई हम
कन्धे से कन्धा लगाए खड़े हैं।
सुख हो दुख हो
कष्ट हो वैभव हो
हम शान्तिचक्र-प्रवर्तन करेंगे।
शान्ति बिन हमारा जीवन नहीं।
शान्ति बिन तुम्हारा निर्वाह नहीं।
शान्ति ही तो विश्व की मधुमत्तमा है।
विश्वशान्ति और विश्वविध्वंस,
इन दोनों में से आप और हम वरण करते हैं
शान्ति को, शान्ति को, शान्ति को ।।

।। ओम् शम् ।।

I

The rock smiles with the sculptured art,
The sculptured art attains the immortality of the rock.
The paintings too have their share to receive,
And their contribution to make to the rock's transformation.
Lo! the chiselled stone mass sheds effulgence
And imparts wisdom of ageless peace.

II

Violence, diabolic violence
Wilt thou shatter the fabric of human life,
Or pay thy homage to peace
And retire.
Violence, thou art honoured no more.
Fear alone keeps thee lodged in the hearts of leaders of men.
Hatred is thy ally.

III

You in China have the foreknowledge of a Milofo,
To come when the need be dire.
We have just had our Milofo.
His name was Gandhi.
He feared none.
He hated none.
True to his name, he radiated a fragrance,
That refreshed men's thinking processes.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

IV

Man's dignity can no longer suffer one sucking his brother's blood.
And brothers we all must be.
Paucity and poverty,
Disease and ignorance—
These alone must man fight in unison,
And make prosperity the lot of all.
Health and homes for all,
Light of knowledge for all, in unstinted measure.

V

In the primeval jungles of moral laissez-faire,
Lorded over by sturdy and wily sharks,
The laughter of a Milofo
Or the fragrance of a Gandhi
Are yet dimly perceived.
But who will restrain the triumphant march of a dawn.
Sombre shades must flee.

VI

The perimeter of violence is already decreasing.
The five principles,
The triumph of our rejuvenated fraternity,
Shall perforce,
Through the compelling path of events,
Of nature's own device,
Enter into the hearts of controllers of men.
Of their guides,
Of their heroes,
Of heartless men of science
Who decree the destruction of the race.
And the men of steel shall bend,
And reverse their steps.
Death's ultimate missiles shall be converted
Into engines of benevolent production.

VII

Hail, Comrades, Hail.
Neighbours we
Brothers we
Stand shoulder to shoulder
In woe and weal
To advance Peace,
Which you need

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Which we need
And which is also world's mead.
Peace ! Peace !! Peace !!!

१५-७-५५

भारतीय राजदूत श्री राघवन् ने हमारे प्रस्थान-प्रसंग में चाय का आयोजन किया। चीनी गण्यमान्य नरनारी उपस्थित हुए। भारत और चीन के सांस्कृतिक सम्बन्धों पर वार्तालाप चलता रहा। चाय के अन्त में श्री राघवन् ने समाचार दिया कि चीनी त्रिपिटक के परिशिष्ट के लिए भारतीय शासन से ५००० रुपए की स्वीकृति का तार आया है। यह अन्तिम घड़ी का चमत्कार है। हमारे जीवन में पहले भी इस प्रकार की अनेक घटनाएं हुई हैं। सायं के ६ बज गए थे। हम पुस्तक-विक्रेता के यहां गए, आदेश दिया कि परिशिष्ट हमारे पते पर क्वाङ-चोउ भेज दो।

कल प्रातः पेइ-चिङ से चलना है। चीन के प्रधान मन्त्री ने जिस स्नेह से हमारा आतिथ्य किया है उसके प्रति अपनी भावनाओं का प्रकट करना आवश्यक है। भावनाएं हृदय में सीमित नहीं रह सकी हैं। शब्दों में फूट पड़ी हैं। हिन्दी और चीनी में इस भावनामयी शब्दशृंखला को वलिता पर लिख कर प्रधान मन्त्री को समर्पण किया। हिन्दी तथा उसका आंगलानुवाद इस प्रकार है–

१

श्रद्धेय और स्नेहमय बन्धुवर चोउ-अन्-लाइ,
प्रस्थान-प्रभात सामने आया खड़ा है।
मेरी गोदी आपके अमूल्य रत्नोपहारों से भरी है।
और मेरा हृदय अपार हर्ष तथा कृतज्ञता से अभिभूत और समाप्लुत है।
मैं प्रस्थान-नमस्कार लेकर प्रस्तुत हूं।

२

भद्रता और सौम्यता, प्रज्ञा और दूरदर्शिता से
विश्वविश्वस्त और मानवमान्य
पण्डित जवाहरलाल नेहरू और आपने
सच्चे और शान्तिमय अन्ताराष्ट्रीय सहजीवन की नींव डाली।
आपने भारत और चीन के सांस्कृतिक आदान प्रदान के
पुनरपि प्रारम्भ का क्षेत्र खोला।
तभी तो मैंने अपने पग इस ओर उठाए
कि मैं उस संस्कृतिसरिता-प्रवाह की गवेषणा करूं
जिसने चीन और भारत के हृदयों को जोड़ा था

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किन्तु हा ! जो प्रवाह भारत-भूमि पर सूख गया,
लुप्त हो गया, अदृश्य होकर अतीत के साथ जा मिला।

३

भक्तिमय भ्रातृभाव से चीनी जनता ने
मुझे भारतीय श्वेन्-च्वाङ कह कर मेरा स्वागत किया है।
धन्य है वह नाम वह मान।
निःसन्देह जो प्रचण्ड ज्वाला श्वेन्-च्वाङ की आत्मा में प्रदीप्त थी
उसने मेरे अन्दर भी एक लम्बी लीख,
नहीं केवल लम्बी नहीं, किन्तु १३०० वर्ष लम्बी लीख
प्रज्वलित की है।

४

इसके प्रकाश में मैंने पुरातन घटनाओं को घटते देखा है
और अद्भुत रसों का आचमन किया है।
इसके सहारे १९ शताब्दियों के अतीत की यवनिका फट गई
आगे से हट गई।
मैंने पहली शताब्दी में ऐतिह्य-यात्रा प्रारम्भ की।
और काल के साहचर्य में १९ शताब्दियों की जीवन-लीला का साक्षात् किया।
अज्ञात और अज्ञेय ज्ञात और ज्ञेय बन गए।
चीनी और तुर्क, तिब्बती और मोंगोल
तथा मञ्जु जातियों और राष्ट्रों ने
जो आध्यात्मिक बौद्धिक कलात्मक धनधान्य का धीरे धीरे संग्रह किया था
उस में से एक मुट्ठी, छोटी सी मुट्ठी,
किन्तु निश्चित रूप से उत्तमोत्तम तथा सारवान् रत्नों से भरी हुई मुट्ठी,
मैंने आपसे ली है।
आपने स्निग्ध चित्त तथा उदार हस्त से दी है।
मेरी यह जीवन-प्रिय निधि है।

५

आज यह नव यात्रा की पुण्य घड़ी है।
यह भारत-चीन के नवजीवन की संजीवनी है।
आज नए पौधे का आरोपण है।
आज से अधिक कल, कल से अधिक परसों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हम प्रयत्नशील रहेंगे
कि संसार में मैत्रीभाव फैले
कि संसार में सहिष्णुता हो
कि संसार में निरन्तर शान्ति रहे ।

६

स्वस्ति, बन्धुवर, स्वस्ति
पुनर्दर्शनाय, पुनर्दर्शनाय ।
अब मेरे पग नहीं ठहरते, आज्ञा दो, अनुमति दो
मैं अपने देश को लौटूं, अविलम्ब लौटूं ।
मेरे देशवासी भी आपके उदार और विपुल उपहारों का दर्शन करें ।
और मेरे हर्ष और कृतज्ञता में साथी बनें ।
स्वस्ति, बन्धुवर, स्वस्ति,
त्साइ च्येन् त्साइ च्येन् ।

I

Worthy and Loving Comrade,
Chou-En-lai,
On the morn of my departure
With my arms full of gifts of rich treasure,
I bow my greetings,
Laden with unspeakable joy and gratitude.

II

When with sagely wisdom,
You and Nehru,
Both trusted and honoured
By their own people
And by the world,
Laid the foundations
Of true and peaceful co-existence,
And the interflow of culture
Was once again assured,
I wended my way hither
In search of the flow,
That on Indian soil,
Had ceased to flow.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चीनी यात्रि-सम्राट् एवं धर्माचार्य श्वेन्-च्वाङ् का शिलाचित्र। "भक्तिमय भ्रातृभाव से चीनी जनता ने मुझे भारतीय श्वेन्-च्वाङ् कह कर मेरा स्वागत किया है। धन्य है वह नाम वह मान। निःसन्देह जो प्रचण्ड ज्वाला श्वेन्-च्वाङ् की आत्मा में प्रदीप्त थी उसने मेरे अन्दर भी एक लम्बी ज्योति, नहीं केवल लम्बी ही नहीं, किन्तु १३०० वर्ष लम्बी ज्योति प्रज्वलित की है।" रघुवीर

"Lovingly have your people
called me the Indian Hsuan Chuang.
All glory to that name!
Indeed the intense flame,
That burned in Hsuan Chuang's breast
Has blazed a trail, a long trail
of 1300 years
Within me." Raghu Vira

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

III

Lovingly have your people
Called me the Indian Hsüan Chuang.
All glory to that name !
Indeed the intense flame,
That burned in Hsüan Chuang's breast
Has blazed a trail, a long trail
Of 1300 years
Within me.

IV

I have witnessed hoary sights
And have sipped wondrous saps.
Nineteen centuries have rolled back
And I have joined the marching caravan of time.
What the Han, the Uigur,
The Tibetan, the Mongol and the Manchu
Had garnered,
A part, a tiny part,
But withal a substantial part,
I carry as a cherished gift
Bestowed by your loving heart
And generous hands.

V

This day we have made a new start
We have cast a new ferment into Sino-Indian dough.
We have planted a sapling.
From day to day we shall strive harder
For a world of amity,
For a world of understanding,
For a world of ageless peace.

VI

Hail ! Comrade, Hail !
Tsai chien, Tsai chien.
Now I hurry back to my countrymen
To share with them the joy of your noble and ample gifts.
Hail ! Comrade, Hail !
Tsai chien, Tsai chien,
Adieu, revoir !

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६-७-५५

प्रात: ६-४० पर पेइ-चिङ को अन्तिम नमस्कार किया। भारतीय दूतावास से श्री गोवर्धन स्थात्र पर पहुंचे हुए हैं। इन्होंने और इनकी पत्नी श्रीमती कमला जी ने हमारे पेइ-चिङ निवास को सफल बनाने में अथक सहायता की है। इनका औपचारिक धन्यवाद करना तो विडम्बना होगा। चीनी शासन के अनेक भाषाविज्ञ और सांस्कृतिक सम्बन्धाधिकारी पेइ-चिङ की शुभकामनाएं लेकर स्थात्र पर आए हैं। बिना सीटी बजाए ठीक ६-४० पर गाड़ी धीरे धीरे चल पड़ी। और हमारे साथ केवल दुभाषिया और श्री छाङ रह गए। ये हमको चीन की सीमा तक पहुंचा कर आएंगे।

१७-७-५५

२८ घण्टे की यात्रा के पश्चात् हम दक्षिण चीन की राजधानी नान्-चिङ 南京 में (अंग्रेज़ी में इसको Nan-king लिखा जाता है किन्तु राष्ट्रभाषा का उच्चारण नान्-चिङ है) पहुंचे। नान्-चिङ पहुंचने से पहले याङ-त्स नदी है। इस पर अभी पुल नहीं बना। पुल के स्थान पर बड़ी नौका है। पूरा संयान नौका में चला जाता है और नौका उसको लेकर नदी को पार करती है। यात्री संयान में ही बैठे रहते हैं।

नान्-चिङ में पहुंचते ही सम्राड्-युग के समाप्त करने वाले राष्ट्रनेता डा० सुन्-यात्-सन् की समाधि पर फूल चढ़ाने गए। ४०० सीढ़ियां चढ़ कर समाधि पर पहुंचे। यहां नागपुर जैसी प्रचण्ड धूप थी। चारों ओर नगर का विहंगम दृश्य दृष्टिगोचर हुआ। इस ऋतु में भी नान्-चिङ हराभरा है।

नान्-चिङ में अच्छा अद्भुतागार है। इसमें वस्तुओं का क्रम साम्यवाद की विचार-धारा के अनुकूल है। भूमिसेचन के लिए कुल्याएं खोदते हुए अथवा सार्वजनिक भवन बनाने के लिए गहरी नींव खोदते हुए प्राचीन वस्तुएं निकलती हैं। इनका संग्रह अद्भुता-गारों में किया जा रहा है। हमारे देश में भी ऐसा ही होना चाहिए किन्तु खेद की बात है कि हमारे श्रमिक तथा भवन-निर्माता और उनके निरीक्षक इस दिशा में भावना और ज्ञान-शून्य हैं। उन्हें प्राचीन वस्तुओं से न प्रेम है और न ही वे जानते हैं कि ये देश की ऐतिहासिक निधि हैं।

देश में जहां कहीं भी खुदाई का काम हो और पुरानी वस्तुएं निकलने लगें तो वहां खुदाई रोक देनी चाहिए और पुरावशेष-विभाग के व्यक्तियों से परामर्श करने के पश्चात् उनके निरीक्षण में खुदाई करनी चाहिए जिससे ऐतिहासिक सामग्री नाश न होने पाए। कहीं पुरानी भित्ति है अथवा केवल घड़े आदि के टुकड़े ही मिलते हैं अथवा मुद्राएं और मूर्तियां अपनी लम्बी निद्रा से जगाई जा रही हैं, सभी अवस्थाओं में पुरावशेषज्ञ का देखना आव-श्यक है कि क्या ये किसी बड़े अथवा छोटे नगर, प्रासाद, मन्दिर, समाधि आदि के अवशेष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं। इस सावधानी के न होने के कारण भारतवर्ष में रेल बनाने वालों ने हड़प्पा की लाखों मन अवशिष्ट भित्तियों और भवनों की ईंटों को तोड़ कर रेल की पटड़ी के अर्पण कर दिया। इसी प्रकार अन्य स्थानों में भव्य मूर्तियां तोड़ कर कंकर बना दी गईं। भारतवर्ष में जो विध्वंस १९वीं और २०वीं शताब्दी में हुआ है वह आगे न हो, इसका राष्ट्रीय शासन और जनता को पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

अन्य अद्भुतागारों के समान यहां भी चीन के पुराकाल की नाना वस्तुएं संगृहीत हैं। उपाध्यक्षा ने हमको विशेष रूप से हान् वंश की मूर्ति दिखाई। यह मिट्टी की बनी हुई है। इसकी विशेषता यह है कि यह बौद्ध मूर्ति है। हान् वंश में अर्थात् आज से २२ सौ वर्ष पूर्व बुद्ध मूर्ति का मिलना भारत और चीन के सम्बन्धों को तीन शताब्दी पूर्व का सिद्ध करता है। अभी तक यह धारणा है कि बौद्ध धर्म चीन में पहली शताब्दी में पहुंचा। इस मूर्ति के मिलने से यह धारणा अशुद्ध निश्चित होती है। इस मूर्ति पर तो कोई तिथि नहीं किन्तु इसके साथ ही मिली हुई मिट्टी की ईंटें हैं जो निश्चित रूप से २२ सौ वर्ष पुरानी हैं। यह समाचार भारतवर्ष के विश्वविद्यालयों में सर्वत्र भेजना चाहिए।

शी-आन् में श्वेन्-च्वाङ की खोपड़ी का छोटा सा मोती जैसा अंश चावलों में सुरक्षित रखा हुआ था। १९४२ में जापानियों ने इसको ले जाने का यत्न किया। अब यह नान्-चिङ के अद्भुतागार में है।

चीन में नाना प्रकार की ईंटें बनती रही हैं। यहां हमारा ध्यान कुछ सुवर्ण-मण्डित बुद्ध-चित्रित ईंटों पर गया। इन ईंटों से किसी समय पूरा मन्दिर बना हुआ था।

चीन में एक सहस्र वर्षों से अर्थपत्र (currency notes) चले आ रहे हैं। आज चीन में पैसों, आनों, रुपयों के लिए किसी प्रकार के धातु का प्रयोग नहीं होता।

चित्रों के संग्रह में बांस और उसके पत्ते, सुवर्ण के बने हुए सूर्य तथा सूर्यपक्षी (phoenix), चन्द्र तथा शश उल्लेखनीय हैं।

एक कोष्ठ जनता की क्रान्तियों के प्रमाणों से भरा हुआ है।

अद्भुतागार से मन्दिर में आए। यहां ३२ भिक्षु हैं। सब छान्-त्सुङ अर्थात् ध्यान-सम्प्रदाय के हैं। दस सहस्र मृण्मय मूर्तियां हैं। इन पर सोने का पानी चढ़ा हुआ है।

नान्-चिङ में २०० भिक्षु और २५० भिक्षुणियां हैं।

मन्दिरों के बाहर हमने केवल एक बौद्धसूत्र-मुद्रणालय का निरीक्षण किया। इसका नाम चिङ-लिङ अर्थात् नान्-चिङ-बौद्धसूत्र-मुद्रणालय है। इसकी स्थापना १९२३ विक्रम में हुई थी। यहां छपाई सीसे के बने अक्षरों से नहीं होती किन्तु प्राचीन चीनी ढंग से खुदे हुए काष्ठमुद्रणफलकों से होती है। एक लकड़ी के फट्टे पर, जो लगभग एक अंगुल मोटा होता है, दोनों ओर एक एक पृष्ठ खोद दिया जाता है। इस मुद्रणालय में मुद्रणफलकों की संख्या ८८ सहस्र है। पिछले वर्ष नान्-चिङ की नगरपालिका ने इस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुद्रणालय के भवन का जीर्णोद्धार करने के लिए २० सहस्र युआन् की सहायता दी थी।

जितनी प्रतियों की आवश्यकता होती है उतनी ही छाप लेते हैं। पुस्तकें छाप कर संग्रह नहीं करते। यदि आज किसी पुस्तक का आदेश आया तो दस, पन्द्रह दिन में छाप कर दे देते हैं। यदि आदेश अधिक पुस्तकों का हुआ तो छपाई में अधिक समय लगता है। केवल प्रतिदिन बिकने वाली कुछ पुस्तकों की प्रतियां पहले से छाप कर रखते हैं। दैनिक प्रार्थना, उपासना के सूत्र, बौद्ध भिक्षुओं के जीवनचरित्र आदि कुछ ग्रन्थ हमको यहां मिल सके। जिस दिन हम गए वह दिन छुट्टी का था। सो केवल ११ मनुष्य नए काष्ठफलकों पर चीनी अक्षर खोद रहे थे। एक पृष्ठ लिखने और खोदने के लिए १२ युआन् व्यय पड़ता है।

एक कोष्ठ मसीकोष्ठ है। इसमें दो मसीकुण्ड हैं। इनमें मसी ४० वर्ष पुरानी है। मुद्रणालय के स्वामी ने कहा पुरानी मसी की गन्ध अच्छी रहती है। उसकी बात सच है। नई मसी में से तो दुर्गन्ध आती है।

छी-श्या स्स 棲霞寺– यह नान्-चिङ का प्रसिद्ध मन्दिर है। वहित्र में हमको एक घण्टा लगा। छोटी सी पहाड़ी है। पर्वत के अनेक शिखर हैं। इनमें से पूर्व और पश्चिम के नाग तथा व्याघ्र शिखरों के नीचे कोई गुहा नहीं। जहां मन्दिर हैं वहां गुहाएं ही गुहाएं बनी हैं। कई तो बहुत छोटी हैं जिनमें केवल एक छोटी सी मूर्ति बनी हुई है। समस्त मूर्तियों की संख्या ५४० है। ये सुङ, मिङ काल तक की हैं। इस मन्दिर की स्थापना दक्षिणी ची वंश में ५४० विक्रम में हुई थी।

मन्दिर पर्वत-पाद पर बना हुआ है और नान्-चिङ से ३० क्रोशक दूर है। नागार्जुन और उनके शिष्य आर्यदेव की कृतियों के आधार पर यहां नए सम्प्रदाय की स्थापना हुई थी। अतः यह चीन के इतिहास में सुविख्यात है।

मन्दिर में पंचभूमि स्तूप है और सहस्रबुद्धगिरि है। इस मन्दिर का संस्थापक बौद्ध पण्डित मिङ-सङ-शाओ 明僧紹 था। मिङ की विद्वत्ता तथा प्रतिष्ठा और उसके कार्य की महत्ता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि स्वयं सम्राट् काओ-त्सुङ 高宗 (थाङ वंश) ने मिङ के कार्य की प्रशस्ति शिलालेख के रूप में यहां लगवाई थी।

इस विहार का नाम कई बार परिवर्तन हो चुका है। किन्तु अधिकांश छी-श्या स्स ही इसका नाम रहा है। यह विहार चीन के चार प्रतिष्ठित विहारों 四絕 में से एक है। दूसरे तीन विहार ये हैं– चिङ-चोउ में यु-छ्वेन् 荊州玉, ची-नान् में लिङ-यन् 靈 और थ्येन्-थाइ में क्वो-छिङ।

जिस सम्प्रदाय का इस विहार में प्रारम्भ हुआ उसके तीन आधार ग्रन्थ हैं। इनमें से नागार्जुन का माध्यमिक शास्त्र प्रमुख है। ये शास्त्र महायान के शून्यता-सिद्धान्त के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मूल हैं। सर्वप्रथम कुमारजीव ने माध्यमिक शास्त्रों का अनुवाद किया था।

पञ्चभूमि स्तूप का निर्माण स्वी वंश के सम्राट् वन् ने ६५८ विक्रम में किया था। यह पञ्चभूमि शरीरस्तूप अनुपम शोभापूर्ण है। सम्राट् वन् ने अपने साम्राज्य में ८३ स्तूप बनवाए थे। इस स्तूप का जीर्णोद्धार अथवा पुनर्निर्माण दक्षिण थाङ वंश के काल में हुआ था। स्तूप ३० हाथ ऊंचा है और अष्टपार्श्व है। आठों पार्श्वों पर शाक्यमुनि के जीवन की आठ घटनाओं का चित्रण है। कोनों पर मल्ल तथा नाग उभरे हुए खुदे हैं।

प्रथम भूमि कमल के ऊपर प्रतिष्ठित है। प्रत्येक कमलदल पर देवता और पुष्प उत्कीर्ण हैं। स्तूप बहुत सुन्दर बना है। इसके उत्कीर्णालंकार बड़ी सावधानी तथा कौशल से बनाए हुए हैं। स्तूप के साथ ही सहस्र-बुद्धगिरि है। ३०० के लगभग गुहाओं की संख्या है। एक शिलालेख के अनुसार प्रथम गुहा ५४६ विक्रम में बनाई गई थी। यह वही समय है जब उत्तर वेइ के सम्राटों ने युन्-काङ [illegible] की छः महती गुहाएं बनवाई थीं। सबसे बड़ी गुहा जो पहाड़ी में से काटी गई है सोलह हाथ ऊंची और तेरह हाथ चौड़ी है। द्वार छः हाथ का है। मुख्य बुद्ध की मूर्ति आठ हाथ ऊंची है। मूर्ति के आसन की ऊंचाई भी दो हाथ है। पास दो उपासक बोधिसत्त्व खड़े हैं। इस पहाड़ी का पत्थर युन्-काङ के समान सुदृढ नहीं। बहुत खुर गया है। इस मूर्ति और दूसरी गुहाओं की अन्य मूर्तियों का उद्धार मिट्टी के लेप द्वारा किया गया था। पीछे आकर १३०८ तथा १९३१ में वज्रलेप से मूर्तियों का जीवन बढ़ गया और उनकी रूपाकृति सम्यक् रूपेण भक्तजनों की दृष्टि और मन को संतृप्त करने में समर्थ हुई। किन्तु साथ में यह भी सत्य है कि अब ऐतिहासिक विद्वानों को मूर्तियों का प्राचीन रूप दृष्टिगोचर न होगा। पत्थर के कोमल होने के कारण और उसमें पानी का प्रवेश हो सकने के कारण मूर्तिकार इस पत्थर में उतना सुन्दर और सूक्ष्म चित्रण न कर सके जितना युन्-काङ और लुङ-मन् में।

उत्तर चीन में सहस्रों पर्वतोत्कीर्ण बौद्ध मूर्तियां हैं। किन्तु दक्षिणी चीन में श-श्यान् [illegible] में ये गुहाएं और मूर्तियां मिलीं सो ही अत्यन्त सन्तोष की बात है। दूसरी गुहाएं और मूर्तियां बहुत छोटी हैं।

श-श्यान् में ऐसी कोई भी गुहा नहीं जहां भिक्षु आकर बैठ सकते और ध्यान लगा कर लीन हो जाते।

पर्वत का सान्निध्य, नगर से दूरस्थिति तथा मन्दिर में अहिंसा के पालन के कारण प्रवेश करते ही पक्षियों का चहचहाना यात्री का स्वागत करता है। पक्षी यहां प्रसन्नता-पूर्वक निवास करते और गाते हैं।

हमारे जाने पर भिक्षुओं ने किवाड़ खोले, धूप और चन्दन के छोटे छोटे टुकड़े जलाए।

ताइ-पिङ क्रान्ति में इस मन्दिर को बहुत हानि पहुंची थी। १९५२ और १९५४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में नान्-चिङ की नगरपालिका के निर्माण-विभाग ने मन्दिर के जीर्णोद्धार में सहायता की। हमको बताया गया कि लगभग बीस सहस्र युआन् व्यय किए। गुहाओं की संख्या ३०० के लगभग है और मूर्तियों की संख्या ५४०। मूर्तियां प्रायः नई नहीं हैं। मिङ काल के पश्चात् कोई मूर्ति नहीं बनी, ऐसा दिखाई पड़ता है।

उत्तर वेइ 北魏 के समान यहां की मूर्तियों में रत्नमालाओं, आभूषणों आदि का अभाव है।

कुछ गुहाएं पर्वतपाद पर पञ्चभूमि स्तूप के साथ हैं। और कुछ पर्वत शिखर पर।

सब मूर्तियां पत्थर की हैं। मिट्टी गारे की नहीं।

यहां केवल एक ही बड़ी गुहा है जहां दो चार व्यक्ति खड़े हो सकते हैं। सामने की दो मूर्तियां मूल रूप में हैं। इसका नाम है अमिताभ-गुहा। इसका निर्माण ५४३ विक्रम में हुआ था।

मन्दिर के सामने दो छोटे धारणी-स्तम्भ हैं। इनमें से एक पर उष्णीषविजय-धारणी चीनी अक्षरों में उत्कीर्ण है। स्तम्भ श्वेत पत्थर के हैं और १९३६ में खड़े किए गए हैं। इनके अतिरिक्त पुराने धारणी-स्तम्भ भी हैं जो अधिकांश विकृत हो चुके हैं।

मन्दिर में २२ भिक्षु रहते हैं।

१८-७-५५

नान्-चिङ से शाङ-हाइ ६, ७ घण्टे का मार्ग है। दोपहर को ११-४५ पर चल कर सायं ६-२४ शाङ-हाइ पहुंच गए। पहले शाङ-हाइ में अंग्रेज़, फ्रांसीसी, अमरीकी, जापानी आदि अनेक विदेशी जातियों का राज्य था। जिस भाग में हम ठहरे वह फ्रांसीसियों के अधीन था। इसमें Cathay Hotel सुप्रसिद्ध १४ भूमि ऊंचा भवन है। हम नवीं भूमि पर ९१५, ९१६ संख्या के कोष्ठों में ठहरे। यदि पैदल चढ़ना उतरना पड़ जाए तो फिर दिन भर और व्यायाम की आवश्यकता न रहे।

शाङ-हाइ चीन का बृहत्तम और समृद्धतम नगर है। जनसंख्या ६० लाख कही जाती है। उद्योगों से भरपूर है। यहां जलयान भी बनते हैं। विदेशों के साथ समुद्र व्यापार लगभग स्थगित है। वेइ-फ़ङ तथा त्सु-सुङ शाङ-हाइ के प्रसिद्ध भिक्षु हैं। वेइ-फ़ङ भारत बर्मा आदि होकर आए हुए हैं। इन्हीं के उद्योग से १९४५ में अशोक का प्रसिद्ध सिंहस्तम्भ इनके मन्दिर के सामने की सड़क के बीच में बनाया गया। इस पर हृदयसूत्र के वाक्य लिखे हैं।

भिक्षु वेइ-फ़ङ ने बतलाया कि अभी तक चीन में संस्कृत ग्रन्थ मिल सकते हैं किन्तु सरलता से नहीं। घोर परिश्रम करना होगा। इनके मन्दिर का नाम चिन्-आन् स्स है। ये त्रिवंश के समय का है अर्थात् १६, १७ सौ वर्ष पूर्व का है। यहां ३० भिक्षु रहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ताइ-शो, शाङ-हाइ और ची-सा ये तीनों चीनी त्रिपिटक के संस्करण यहां प्रयुक्त होते हैं।

आज प्रतिपदा है सो सूत्रपाठ चल रहा है। उपासक और उपासिकाएं पूजार्थ आए हुए हैं।

महाकाल की मूर्तियां हाथी की खाल को हाथों से ऊपर उठाए हुए हैं। सूंड लटक रही है। यह कृत्तिवासस् का अद्वितीय निरूपण है। चतुर्मुख ब्रह्मा हंसों पर आरूढ हैं। इस मूर्ति की विशेषता यह है कि चतुर्थ मुख सिर के ऊपर है।

त्रिशूलधारी शिव नन्दी पर आरूढ हैं।

दूसरी भूमि पर जाने के लिए हमको अपने जूते उतार कर कपड़े के कोमल जूते पह-
नने पड़े। चीनी कला, स्वच्छता, गहरे और चमकते रंगों का प्रेम यहां पदे पदे मनुष्य का
आकर्षण करता है। यह कृत्रिम सौन्दर्य किस प्रकार संसार की शून्यता में ध्यानावस्थित
होने के लिए सहायक होता होगा अथवा हो सकता है सो विचारणीय है। जिस प्रासाद-विलास
को, इन्द्रियों के मोहमाया-जाल को शाक्यमुनि ने त्याग कर जंगलों की शरण ली थी,
वही संसार का मोहन रूप बौद्ध देशों के पूजा-स्थानों का गौरव है। जनता का आकर्षण
है। महायान विद्वानों का कहना है कि अकिंचनता, दरिद्रता आदि नीचे स्तर की बातें
हैं। ये हीनयान अथवा स्थविरवाद के अनुकूल हैं किन्तु महायान इनसे ऊपर है। पर
महायान के विद्वानों का यह वचन हीनयान के देशों में भी लागू नहीं होता। वहां भी
भिक्षु सुख सम्पदा का जीवन व्यतीत करते हैं।

वेइ-फ़ङ ने बतलाया कि शाङ-हाइ में २०० मन्दिर हैं जिनमें २४०० भिक्षु और
८०० भिक्षुणियां रहती हैं। तथा अब भी प्रतिवर्ष ४००, ५०० भिक्षु दीक्षित होते
हैं। यह सूचना कहां तक ठीक है सो हमको सन्देह होता है। सम्भवतः उन्होंने हमारे
प्रश्न को नहीं समझा अथवा हमने उनके उत्तर को ठीक नहीं समझा।

चिन्-आन् स्स के पश्चात् हम एक और मन्दिर में गए। इसका नाम है यू-फ़ू स्स।
यहां दलाइ-लामा तथा पञ्छेन्-लामा के आसन रखे हुए हैं। यह मन्दिर है जहां ची-सा
की मूलप्रति सुरक्षित है। अच्छा बड़ा पुस्तकालय है। इसमें तुन्-ह्वाङ की भी द्रो
वलिताएं हैं। एक ग्रन्थ भारतीय सिद्धम् तथा चीनी दोनों लिपियों में लिखा है।

यहां ६० भिक्षु रहते हैं। मन्दिर के भवन विस्तीर्ण और ऊंचे है जिनका परिमाण
४०० कोष्ठों के समान बताया जाता है। एक कोष्ठ का परिमाण १४×१२ चीनी पाद
माना जाता है (एक चीनी पाद=लगभग १४ प्रांगुल inch)।

यद्यपि हमारे पास समय का अभाव सा है तथापि एक आधी निर्माणी देखनी ही
चाहिए। इस विचार से हम सूती कपड़ों की रंगने और छापने की निर्माणी संख्या एक
में गए। इस निर्माणी का संचालन शासन स्वयं करता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसका प्रारम्भ १९३१ में जापानियों ने किया था। उनके समय में श्रमिकों को १२ घण्टे तक काम करना पड़ता था। अब केवल ८ घण्टे।

समस्त कर्मचारियों तथा श्रमिकों की संख्या १३३० है। इनमें १७३ स्त्रियां हैं।

प्रतिदिन ३ लाख ६० सहस्र मान (meter) कपड़े की रंगाई अथवा छपाई होती है। रंगाई २ लाख ३२ सहस्र मान की और छपाई १ लाख २८ सहस्र मान की। छपाई में तीन चार अथवा पांच रंगों का प्रयोग होता है। दो सहस्र प्रकार के विभिन्न चित्र हैं जो थानों पर छपते हैं। ये चित्र इसी निर्माणी में पीतल के बेलनों पर खोदे जाते हैं। हमने स्वयं इनको खुदते हुए देखा है। चित्रों में कुछ पुराने हैं, कुछ नए हैं। उदाहरणार्थ, सूर्यपक्षी किसानों के पारिवारिक सुख का द्योतक है।

चीन में विभिन्न निर्माणियों में औद्योगिक अनुभवों का आदान-प्रदान किया जा रहा है। इससे देश के उत्पादन में वृद्धि हो रही है।

निर्माणी में आदर्श तथा अग्रिम कार्यकर्ताओं का बड़ा आदर है। पिछले वर्ष इनकी संख्या ९५ थी। श्री वाङ-च्यू-सङ इस निर्माणी के साधारण श्रमिक थे। अपने श्रम और बुद्धिमत्ता से ये मुख्य अभियन्ता तथा उपाध्यक्ष के पद तक पहुंच गए हैं। पिछले वर्ष ये राष्ट्रीय लोक-महासभा के सदस्य चुने गए। एक और श्रमिक ने समय तथा श्रम बचाने के लिए ३२ सुधार सुझाए। इनमें से २८ स्वीकार किए गए। अब इनको ऊंचा अधिकार दिया गया है।

श्रमिकों की रक्षा तथा स्वास्थ्य के लिए निर्माणी का अनेक बार निरीक्षण किया गया है। जिन भागों में तापमान अत्यधिक था उनमें ताप को थोड़ा करने के लिए यन्त्र लगाए गए हैं।

इस निर्माणी में नए श्रमिक का वेतन ४७ युआन् प्रतिमास होता है और उच्चतम वेतन १०५ युआन्। निर्माणी की अध्यक्षा को २०४ युआन् प्रतिमास मिलते हैं। इस महिला की आयु ३४ वर्ष है। उपाध्यक्ष महोदय को, जिनकी आयु २९ वर्ष है, १६५ युआन् मिलते हैं।

चीन की निर्माणियों में श्रमिकों की आयु का माध्य ३०, ३२ से ऊपर नहीं पड़ता। कइयों में तो २४, २५ ही पड़ता है। अनुभवी श्रमिक बहुत थोड़े हैं। १५, २० प्रतिशत होंगे।

निर्माणी के साथ पाठशाला, चिकित्सालय, गोष्ठी और विश्रामस्थान लगे हुए हैं।

निर्माणियों के पास नई बस्तियां बनाई जा रही हैं। इनमें से हम चाओ-याङ नवग्राम में गए। यहां ६००० परिवार रहते हैं। तीन तीन भूमि ऊंचे भवन हैं। छोटा परिवार एक कोष्ठ में तथा बड़ा दो कोष्ठों में रहता है। जो माताएं निर्माणी में काम करती हैं उनके बच्चों के लिए विशेष प्रबन्ध है। १४ मास तक के बच्चों के लिए निर्माणी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में ही शिशुशालाएं हैं। १४ मास से ४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए शिशुशालाएं अलग बनी हैं, निर्माणी में नहीं। जो महिला नवग्राम दिखा रही थी वह हमको अपने निवास कोष्ठ में ले गई। १४×१२ पाद का कोष्ठ, छोटी सी रसोई और छोटा सा एक और कोष्ठ जिसमें ४ बच्चे दो चौड़े फट्टों पर सोते थे। फट्टे एक दूसरे के ऊपर लगे हुए थे। स्थानाभाव से चीन में ऐसा प्रबन्ध किया जाता है। चीनी प्रथा का ही अंग्रेजों ने संयानों और जलयानों में प्रयोग किया है। उसकी ही अनुकृति हमारे देश में हुई है। हमने महिला से पूछा क्या आपके लिए यह स्थान थोड़ा नहीं, क्या आप अधिक स्थान लेने के लिए यत्न नहीं करतीं। इनके देशप्रेमपूर्ण उत्तर को सुन कर हृदय पसीज उठा– "हमारा देश अभी स्वतन्त्र हुआ है। हम अधिक नहीं मांग सकते।" गांव सुन्दर है। सभी प्रकार की सामान्य जीवन की वस्तुएं मिल जाती हैं। वायु स्वच्छ खुली है। रहन सहन के निरीक्षण के लिए वैद्य आते हैं। इस प्रकार के गांव भारत में भी बनने चाहिएं। किन्तु भारत में अधिक उष्णता होने के कारण घर अधिक खुले होने अभीष्ट हैं। सामान्य परिवार को तीन चार कोष्ठ तो अवश्य मिलने चाहिएं।

२०-७-५५

प्रातः ६ बजे शाङ-हाइ से चल कर ५ घण्टे में हाङ-चोउ 杭 州 पहुंचे। हाङ-चोउ चीन का सुन्दरतम नगर है। यदि यहां उष्णता न होती तो यह चीन की स्वर्गभूमि होता। श्वेत और रक्तवर्ण कमलों से भरी हुई झीलें तथा चारों ओर पर्वत-मेखला नगर के सौन्दर्य का मुख्य कारण हैं।

हमारा विश्रान्तिगृह छोटी सी पहाड़ी के ऊपर बना है। इसके समीप ही एक सेना-पति का मन्दिर है। यहां जनता सेनापति के गुणों का स्मरण करने के लिए आती है और श्रद्धा में धूपवत्ती जलाती है।

इसके साथ ही एक वास्तविक मन्दिर है जिसमें अनेक छोटे छोटे तडाग हैं। इनमें काली पीली मछलियां तैरती हैं। बच्चे और बूढ़े, स्त्री और पुरुष इनको सागभाजी खिलाते हैं। पुण्यार्जन की दृष्टि से कई लोग मछलियां मोल लेकर यहां छोड़ जाते हैं।

चीनी इतिहास में हाङ-चोउ का पश्चिम सरोवर सुन्दर दृश्य के लिए प्रसिद्ध है। भूमि और जल दोनों का ही दृश्य मनोहारी है।

हाङ-चोउ के कासार विश्वविख्यात हैं। पश्चिम कासार में दो द्वीप हैं। द्वीप में भी छोटी झील है। इस झील में स्वस्तिका-रूप मण्डप बना हुआ है। मण्डप के पास ही तीन चन्द्र-प्रतिबिम्बी स्तूप हैं। इन स्तूपों में से दीपक का प्रकाश जल में पड़ता है। दीपक स्तूप के अन्दर रखते हैं। स्तूप के गोल छिद्रों पर रक्तवर्ण पत्र लगा देते हैं। पूर्णिमा के दिन जनता बड़ी संख्या में आती है। दन्तकथा है कि ये तीन स्तूप महाकाय धूपपात्र के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पांव थे। धूपपात्र जल में गिर गया और पांव बच गए।

हाङ-चोउ दक्षिणी स्वी वंश की कुछ समय तक राजधानी रह चुका है। किन्तु उनके कोई विशेष स्मारक चिह्न नहीं बचे। हाङ-चोउ बौद्ध धर्म का समृद्धतम नगर है।

थाङ वंश के अन्त में और पञ्चवंश की अवधि में यह प्रदेश लड़ाई झगड़ों से बचा रहा।

षड्वंश के काल से अब तक के बौद्ध स्तूपों और मन्दिरों के अवशेष बचे हुए हैं।

पञ्चवंश के अन्तिम दिनों के वू-य्वे 吳 越 मण्डल का राजा थ्येन्-थाइ सम्प्रदाय का अनुयायी था। अतः हाङ-चोउ के अवशेष अधिकांश थ्येन्-थाइ सम्प्रदाय के अवशेष हैं। ९९२ विक्रम में स्स-मिङ 四 明 (निम्पो) के भिक्षु त्स-लिन् 子 麟 कोरिया गए और वहां से थ्येन्-थाइ दर्शन के ज्ञान को अपने साथ लाए। कोरिया के महाराज ने उनके साथ अपने विद्वान् दार्शनिक ली-जन्-ज को भेजा।

वू-य्वे के महाराज छ्येन् 錢 ने कोरिया के दार्शनिक और उनके साथियों के लिए विशेष भवन की स्थापना की।

यद्यपि थ्येन्-थाइ का दर्शन चीन, कोरिया और जापान में बहुत प्रसिद्ध और सफल हो चुका था किन्तु आचार्य थ्येन्-थाइ के ग्रन्थों का अभी तक त्रिपिटक में समावेश नहीं हुआ था। अनेक यत्न किए गए किन्तु विफल रहे। तब च वू 思 悟 ने अवलोकितेश्वर 觀 音 से प्रार्थना की और अपना बाहु जला छोड़ा जिससे कुछ दिनों के पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई। जब यह समाचार सम्राट् के पास पहुंचा तब १०८१ विक्रम में सम्राट् की अनुमति से आचार्य थ्येन्-थाइ के ग्रन्थों का समावेश त्रिपिटक में किया गया। ४२७ वर्षों के पश्चात् समावेश होना असाधारण यत्नों का फल था।

लेइ-फ़ङ स्तूप 雷峯塔 — यह स्तूप संसार के विशेष स्तूपों में से है। १०३२ विक्रम में वू-य्वे के राजा छ्येन्-शू 錢 俶 ने इसका निर्माण कराया था। ८४००० ईंटों में सर्वतथागताधिष्ठान-हृदयगुह्यधातुकरण्डमुद्राधारणी 寶篋印陀羅尼經 की एक एक प्रति रखी गई और भगवान् बुद्ध के प्रति समर्पण की गई। स्तूप पांच भूमि ऊंचा था। अष्टपार्श्व था। पहली भूमि का प्रत्येक पार्श्व २४ हाथ था।

मिङ 明 वंश के अन्त में इस स्तूप में आग लगी। काष्ठमय सीढ़ी और छतों के अंश जल गए। ईंटों में रखे हुए अनेक धारणी-लिखित पत्र भी अवश्य जले होंगे। जीर्णोद्धार के अभाव में स्तूप की दशा बहुत शीर्ण होती गई और अन्त में १९२४ में समस्त स्तूप नीचे गिर पड़ा। एक एक ईंट बिखर गई और धारणी-लिखित पत्र दृष्टिगोचर हुए। विद्वज्जगत् में सनसनी फैल गई।

जब हम २१-७-५५ को यहां पहुंचे तो बताया गया कि अब ये ईंटें और सूत्र कहीं नहीं मिलते। फिर भी एक ईंट और धारणी-लिखित पत्र की प्रति अद्भुतागार में देखी।

ईंट भस्मवर्ण है। इसका परिमाण १५ × ६१३ × २३ प्रांगुल है। ६१३ × २३ मध्य में गोल छिद्र है जिसका व्यास १ प्रांगुल और गहराई ४३ प्रांगुल है। धारणी-लिखित पत्र का परिमाण २१३ प्रांगुल चौड़ाई और ८२ प्रांगुल लम्बाई है।

इस स्तूप का कौशेय में बना हुआ चित्र हमने हाङ-चोउ के प्रसिद्ध कौशेय आपण से लिया।

वू य्वे के राजा छ्येन्-शू की महारानी ह्वाङ [illegible] ने इस स्तूप का वर्णन लिखा है।

इस स्तूप में से अनेक शिलालेख मिले हैं। इनमें से एक अद्भुतागार में है और शेष की छापें हमको एक पुराने आपण से मिलीं।

लिङ-यिन्-स्स 靈隱寺 – वू य्वे मण्डल में पांच प्रसिद्ध विहार हैं–

(१) चिङ शान् स्स 徑山寺

(२) लिङ-यिन् स्स

(३) चिन्-त्सु स्स 淨慈寺

(४) थ्येन्-थुङ स्स 天童寺

(५) आ-यू-वाङ स्स 阿育王寺

लिङ-यिन् विहार के महन्त ता-पाइ ने बड़े प्रेम से हमको अपने विहार का पूर्ण इतिहास दिया।

भारतीय पण्डित ह्वी-ली 慧理 ने ३८३ विक्रम से ३९१ तक इस विहार की स्थापना की थी। लिङ-यिन् का इतिहास १० पुस्तकों में वर्णित है। समीप की पहाड़ियों और गुहादियों का भी इसमें वर्णन है। विहार के सामने की पहाड़ी का नाम फ़ेइ-लाइ-फ़ङ 飛來峰 है। फ़ेइ का अर्थ उड़ना और लाइ का अर्थ आना। पहाड़ी की आकृति मगध देश के प्रसिद्ध गृध्रकूट के सदृश है। इसको देख कर ह्वी-ली ने आश्चर्य से कहा था–यहां गृध्रकूट कैसे उड़ कर आ गया। गृध्रकूट में दो वानर तपस्या करते थे एक कृष्णवर्ण का, दूसरा श्वेतवर्ण का। यह सचमुच गृध्रकूट है अथवा नहीं इसकी परीक्षा करने के लिए ह्वी-ली ने वानरों को बुलाया और वे सचमुच ही गुफाओं में से बाहर निकले। सो निश्चय हुआ कि यह गृध्रकूट ही है।

मन्दिर बहुत विशाल है। अब भी ३०, ४० भिक्षु यहां रहते हैं। महन्त ता-पाइ जनता के प्रतिनिधि के रूप में प्रान्तीय राजनैतिक सभा के सदस्य हैं। नए साम्यवादी संविधान के धारण के अवसर पर इन्होंने माओ त्से-तुङ को अपने बनाए हुए चित्र भेंट किए थे। हमको भी इन्होंने दो चित्र भेंट किए हैं जिनमें नए संविधान का स्वागत, उसके उद्देश्यों का अभिनन्दन और राष्ट्रपति माओ के प्रति श्रद्धा प्रदर्शित की गई है। इन चित्रों से मन्दिरों तथा शासन के अधिकारियों के सम्बन्धों का अच्छा परिचय होता है। चलने से पूर्व ता-पाइ हमको उस मण्डप में ले गए जिसमें बैठ कर आपने श्री नेहरू के साथ विश्व-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शान्ति पर बातचीत की थी।

इसी विहार में पहले यन्-शोउ 延壽 रहा करते थे। इन्होंने सौ खण्डों में त्सुङ-चिङ-लू 宗鏡錄 का संकलन किया था। यह समन्वय-ग्रन्थ है। इसमें ह्वा-यन्, वेइ-श 唯識, थ्येन्-थाइ 天台 और अन्य बौद्ध सम्प्रदायों के दर्शनों का समन्वय किया गया है।

यन्-शोउ समन्वय निम्न चार वाक्यों में संगृहीत है:-

(१) यदि व्यक्ति केवल ध्यान सम्प्रदाय का अनुयायी हो और सुखावती सम्प्रदाय का नहीं तो ९/१० उसका अधःपतन होगा। मानसिक आधियां उसका हरण कर ले जाएंगी।

(२) यदि ध्यान सम्प्रदाय का अनुयायी न हो और केवल सुखावती का हो तो दस सहस्र में से प्रत्येक अमिताभ के सामने साक्षात् उपस्थित हो सकेगा।

(३) यदि ध्यान और सुखावती दोनों का अनुयायी हो तब वह शृंगधारी व्याघ्र के समान होगा। इस जीवन में वह जनता का नेता होगा और भावी जीवन में महापुरुष अथवा वुद्ध बनेगा।

(४) यदि न ध्यान का और न सुखावती का अनुयायी हो तब अयोमयी शय्या और कांस्य स्तम्भ उसके भाग्य में होंगे। दस सहस्र कल्पों और एक सहस्र जन्मों तक उसको कोई शरण न देगा।

इस प्रकार यन्-शोउ ने ध्यान और सुखावती का समन्वय किया। इसका अपना जीवन शान्तिमय था। युवावस्था में यह कर-समाहर्ता के पद पर था किन्तु जो कर इकट्ठा होता था उस कर से बन्दी पशुओं को छुड़ा कर स्वतन्त्र कर दिया करता था। जब इस अपराध में मृत्युदण्ड घोषित किया गया तब यह सर्वथा शान्त और अव्याकुलचित्त रहा। इसकी अव्याकुलता का समाचार सम्राट् तक पहुंचा। उसने यन्-शोउ को दण्ड-विमुक्त कर दिया और तब से यन्-शोउ भिक्षु बन गया।

फ़ेइ-लाइ-फ़ङ के नीचे एक और श्या-थ्येन्-चू स्स विहार है जो ध्यान के लिन्-ची सम्प्रदाय का सुविख्यात स्थान रहा है। यहां स्वी काल में चन्-क्वान् 真觀 इस विहार के अध्यक्ष थे। ये सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र के प्रकाण्ड प्रवक्ता थे। दिनों और रातों तक दर्शन-चर्चा में व्यग्र रहते थे।

चन्-क्वान् ने ६५२ विक्रम में थ्येत्-चू 天竺 विहार का निर्माण किया था। थ्येन्-चू विहार के तीन स्थान हैं। एक नीचे, दूसरा मध्य में और तीसरा ऊपर। तीनों ही विहार ध्यान, समाधि, विनय आदि के विद्वानों, आचार्यों और साधकों के कारण सुप्रसिद्ध हैं।

चाओ-छिङ-लू स्स– ९९३ विक्रम में इस विहार की स्थापना हुई। १०४७ से १०७८ तक यहां अवतंसक-शुद्ध-जीवन नाम का धार्मिक संघ स्थापित किया गया। इस संघ में साधारण जनता और उच्च कुलों के लोग सम्मिलित हुए। इन्होंने तालाबों में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्वेत कमल लगाए और अपने संघ को श्वेत-कमल-संघ का नाम दिया। शिलालेखों में इस संघ का पूरा वर्णन है।

यह विहार हाङ्-चोउ नगर में ही स्थित है।

काओ-ली स्स 高麗寺 – इस विहार की स्थापना ९८४ में की गई। चिङ्-य्वेन् 淨源 के कारण यह विहार प्रसिद्ध हुआ। चिङ्-य्वेन् ने अवतंसक-सम्प्रदाय की स्वतन्त्र सत्ता स्थापित की। कोरिया से ई-थ्येन् 義天 विद्वान् पण्डित अवतंसक का अध्ययन करने के लिए इस विहार में आए। ये नीले पत्र पर सुवर्ण-लिखित अवतंसक-सूत्र के साठों खण्डों की ३०० प्रतियां कोरिया को अपने साथ ले गए।

लू-फ़ो स्तूप 六和塔 –इस विहार की स्थापना यन्-शोउ ने की थी। इसमें बुद्ध-शरीर है ऐसा कहा जाता है। इसके सामने से छचेन्-थाङ नदी 錢塘江 बहती है। स्तूप की दो भित्तियां हैं एक अन्दर की, एक बाहर की। अन्दर की भित्ति में अनेक शिलाएं लगी हैं जिनमें ४२ अध्याय का सूत्र उत्कीर्ण है। प्रत्येक अध्याय की अनुकृति अलग अलग व्यक्ति ने की है। ११८९ विक्रम में वज्रच्छेदिका-सूत्र और क्वान्-यिन् की मूर्ति उत्कीर्ण की गई थी। स्तूप तेरह भूमि ऊंचा है और अष्टपार्श्व है। इसके शिखर पर चिन्तामणि है। स्तूप विशाल और मनोहर है।

हाङ्-चोउ के विख्यात विद्वानों में महान् आचार्य चू-हुङ 袾宏 भी हैं। इनका जन्म हाङ्-चोउ मण्डल में हुआ था। चू-हुङ के जीवन में एक वृद्धा स्त्री ने परिवर्तन किया। यह स्त्री प्रतिदिन सहस्रों बार बुद्ध का नाम जपा करती थी। चू-हुङ ने उससे जप का प्रयोजन पूछा। उसने कहा– मेरे पति सदा मन में बुद्ध के नाम का जप करते थे और जब उनका मृत्यु-समय आया तो अपने सब मित्रों को आदरपूर्वक नमस्कार किया और बिना किसी कष्ट के इस लोक से सिधार गए। तब से मैं भी बुद्ध के नाम का जप करती हूं।

यह सुन कर चू-हुङ ने अपने पटल पर चार मोटे अक्षर लिखे– जन्म, मृत्यु, घटना, गवाधि। और सुखावती की ओर अपना ध्यान लगाया। बीस वर्ष की आयु में चू-हुङ का विवाह हुआ। एक पुत्र का जन्म भी हुआ किन्तु वह बहुत दिन न जिया। दो वर्ष के पश्चात् उसके पिता की मृत्यु हो गई और दो वर्ष पश्चात् पत्नी भी चल बसी। चू-हुङ की पुनर्विवाह की इच्छा न थी, किन्तु कुल-विच्छेद के भय से माता ने आग्रह किया। दो वर्ष व्यतीत होने पर माता का देहान्त हो गया। आपत्तियों की परम्परा ने चू-हुङ के मन को वैराग्यपूर्ण कर दिया। ३१ वर्ष की आयु में वह भिक्षु बन गया। अध्ययन और भ्रमण में बहुत से वर्ष बिता कर उसने एक विहार की स्थापना करनी चाही। जनता बहुत प्रसन्न हुई। जनता ने उसकी सहायता की और वू-युन्-शान् 五雲山 पर्वत के नीचे युन्-छी स्स 雲棲寺 विहार की स्थापना हुई। चू-हुङ की पत्नी भी ४७ वर्ष की आयु में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भिक्षुणी बन गई। चू-हुङ का घर भिक्षुणी-विहार बन गया। दूर दूर से भिक्षुणियां धार्मिक शिक्षा के लिए आती थीं। ८१ वर्ष की आयु में १६७२ विक्रम में चू-हुङ का देहान्त हुआ। पश्चिमाभिमुख होकर बुद्ध का नाम जपते हुए शान्तिपूर्वक प्राण-निष्क्रमण हुआ। उनकी पत्नी का देहान्त एक वर्ष पूर्व हो चुका था।

चू-हुङ की मुख्य शिक्षा सुखावती की थी। वे ध्यान-सम्प्रदाय के उच्छृंखल मार्ग के पक्ष में न थे। ध्यान और सुखावती दोनों के सम्मिश्रण के पक्ष में थे। मन ध्यान में लगा हो और व्यवहार में सुखावती हो यह उनकी कामना थी। सुखावती-सूत्र का निर्वचन वे अवतंसक दर्शन के अनुसार करते थे। उनके अनुसार शाक्यमुनि बुद्ध का जन्म सुखावती के प्रचार के लिए था। यह शील, ध्यान और प्रज्ञा तीनों का सम्यक् पालन तथा धारणियों का जप जीवन के लिए आवश्यक मानते थे। इस प्रकार उन्होंने समस्त बौद्ध सम्प्रदायों और उपदेशों को एकसूत्रबद्ध किया। व्यावहारिक जीवन में उन्होंने बुद्ध और खुङ-फ़ू-त्स (Confucius) के सिद्धान्तों में भी समन्वय किया। चू-हुङ का प्रभाव अभी तक चीन के जीवन में विद्यमान है।

श-वू तुङ 石屋洞 – यह प्राकृतिक गुहा है। बारह हाथ चौड़ी और पांच हाथ गहरी। इसमें ५१६ अर्हतों के उत्कीर्ण होने का अभिलेख है। मध्य में शाक्यमुनि बैठे हैं। दोनों ओर दो अर्हत्, दो बोधिसत्त्व तथा दो वज्रदेव हैं। ऊपर की ओर दो उड़ती हुई अप्सराएं हैं। शिलालेखों के ऊपर लाख का लेप है। अधिकांश मूर्तियां पञ्चवंशयुग की हैं। एक अभिलेख के अनुसार मूर्तियों की संख्या ७०० से अधिक है।

यन्-श्या तुङ 煙霞洞 – यह श-वू गुहा से लगभग चार ली की दूरी पर है। गुहा का नाम शिला पर लिखा हुआ है। गुहा प्राकृतिक है। अवलोकितेश्वर के साथ महास्थान-प्राप्त की मूर्ति भी उत्कीर्ण है। अवलोकितेश्वर के दाएं हाथ में नम्र-वृक्ष की शाखा और बाएं में पुण्यजलपूर्ण घट है। महास्थानप्राप्त ने मुकुट पहना हुआ है। मुकुट पर बुद्ध की मूर्ति है। महास्थानप्राप्त के बाईं ओर सप्तभूमि और अष्टपार्श्व स्तूप उत्कीर्ण हैं। स्तूप का नाम एकसहस्र-अधिकारी स्तूप है क्योंकि इस पर अनेक अधिकारियों की मूर्तियां, नाम और उपाधियां खुदी हैं। इस गुहा की यही सब से बड़ी विशेषता है। गुहा के अन्त में शाक्यमुनि के पास मायूरी-विद्या-राज 孔雀明王 की मूर्ति है।

फ़ेइ-लाइ-फङ– इस पर्वत में अनेक प्राकृतिक गुहाएं हैं। इसके नाम की व्याख्या हम पहले कर आए हैं। मगध में स्थित गृध्रकूट के साथ इस गिरि का सादृश्य देखना कुछ कठिन नहीं।

यहां चार बड़ी गुहाएं हैं। गुहाओं के सामने से एक छोटी सी नदी निकलती है। नदी के साथ साथ पहाड़ी पर जहां कहीं भी स्थान मिला वहां ही बौद्ध मूर्तियां बना दी गई हैं। यह कार्य पञ्चवंश युग में आरम्भ हुआ और सुङ तथा य्वेन् वंश तक चलता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहा। शिलाओं पर अनेक लेख हैं किन्तु अधिकांश घिस चुके हैं और पढ़े नहीं जा सकते।

ये गुहाएं दक्षिणी चीन के इतिहास में विशेष महत्त्व रखती हैं।

अब हम चारों गुहाओं का वर्णन करेंगे—

(१) छिङ-लिन् तुङ 青林洞

(२) लोहन्-तुङ 羅漢洞

(३) लुङ-हुङ तुङ 龍泓洞

(४) श-शू तुङ 射旭洞

छिङ-लिन् गुहा में उभरा हुआ वैरोचनमण्डल उत्कीर्ण है। इस गुहा में १००८ विक्रम तिथि मिलती है। यह तिथि फ़ेइ-लाइ-फ़ङ शिलालेखों में सबसे पुरानी है। इस गुहा की छत बहुत नीची है।

लुङ-हुङ गुहा के द्वार के नीचे इस कथा का चित्रण है कि श्वेताश्वों पर भारत से बौद्ध सूत्र चीन लाए गए। गुहा की चौड़ाई बीस पाद के लगभग है। छत त्रिकोण है।

इसके साथ ही एक छोटी गुहा है जिसका नाम श-शू गुहा है। छत में प्रकाश आने के लिए छिद्र है। इसी कारण इसका नाम श-शू पड़ा। श-शू का अर्थ है प्रातः-सूर्य का भेदन।

गुहाओं के बाहर और आसपास सैंकड़ों शाक्यमुनि, अमिताभ, मैत्रेय, सिंहारूढ वैश्रवण, अवलोकितेश्वर, देव उष्णीषविजय तथा वज्रपाणि आदि की मूर्तियां बनी हैं।

अधिकांश मूर्तियां च-य्वेन् युग के २४वें और २९वें वर्ष के बीच की है। ऐसा प्रतीत होता है कि य्वेन् के विजेताओं ने सुङ की पुरानी राजधानी में असंख्य मूर्तियां बना कर नए वंश के लिए पुण्यार्जन किया है। (हाङ-चोउ सुङ वंश की राजधानी रह चुका है)। इन मूर्तियों में से कुछ को सेनापति पो-यन् 伯顔 ने बनवाया था और कुछ को मोंगोल भिक्षु याङ-ल्येन्-चन्-च्या 楊璉真加 ने। यह भिक्षु क्याङ-नान् मण्डलों का अध्यक्ष था।

सुङ और य्वेन् की कला में बहुत अन्तर है। सुङ-कला थाङ की उत्तराधिकारिणी है किन्तु य्वेन् भोट और मोंगोल कला है। यह आश्चर्य है कि इस समय के उत्तर चीन में य्वेन् कला की बहुत थोड़ी मूर्तियां मिलती हैं।

इस प्रकार लिङ-यिन् स्स के आसपास अनेक मूर्तियां पहाड़ी में से खोदी गई हैं। यहां गारे मिट्टी की मूर्तियां नहीं हैं। यहां हमने १०वीं, ११वीं शताब्दी की देवनागरी लिपि में ओं मणि पद्मे हूं लिखा देखा। इसका चित्र भी लिया है।

उष्णीषविजय की मूर्ति 佛頂尊勝 — नदी के पर्वतानीक पर स्तूप का रूप है। और इसके नीचे उष्णीषविजय की मूर्ति। मूर्ति और स्तूप के बीच में संस्कृत के अक्षर हैं। उड़ती हुई अप्सराएं बलि का उपहार दे रही हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ़ेइ-लाइ-फ़ङ कला की निम्न विशेषताएं हैं–

(१) पहली बार १८ अर्हतों का निरूपण।

(२) पू-ताइ के रूप में मैत्रेय की अभिव्यक्ति। इससे पहले इस रूप में अभिव्यक्ति और किसी स्थान पर नहीं मिलती।

(३) उष्णीषविजय और वज्रपाणि की, जो भोट और मोंगोल पूजा के विशेष पात्र हैं, प्रथम मूर्तियां।

(४) ध्यान-सम्प्रदाय के छः आचार्यों की मूर्तियां।

(५) शाक्यमुनि की मार-दमन-मुद्रा। सामान्यतः यह मुद्रा चीनी कला में नहीं मिलती।

चिङ-शान् स्स 徑山寺 – ताइ-पिङ क्रान्ति में यह विहार सर्वथा भस्मसात् कर दिया गया था। इसका पुनर्निर्माण हुआ पर पूर्णरूप से नहीं। भवन के मध्य में सुमेरु-वेदी है और इस पर बुद्ध-त्रिमूर्ति है। लोकपाल-भवन के बाईं ओर बहुत बड़ा घण्टा रखा है। यह घण्टा १४६० विक्रम में बना था। इसके खुले हुए भाग का व्यास चार हाथ है। इसके शिखर पर नाग है। कन्धों पर कमल उत्कीर्ण है। चारों पार्श्वों पर लिखा है–

(१) साम्राज्य सदा के लिए सुस्थिर रहेगा 皇圖永固

(२) धर्मचक्र सदा प्रवृत्त रहेगा 法輪常轉

(३) बुद्ध के सूर्य का प्रकाश बढ़ता रहेगा 佛日增輝 इत्यादि।

स-याङ गिरि 思陽嶺 – बुद्धपाल उत्तरभारत के काबुल नगर का निवासी था। जब उसको पता लगा कि वू-थाइ पर्वत में छिङ-ल्याङ-शान् पर मञ्जुश्री 文殊師 का निवास है तब वह काबुल से यहां आया। ७३३ विक्रम में वू-थाइ-शान् के दक्षिण में स्थित स-याङ गिरि पर पहुंच कर वह बहुत प्रसन्न हुआ और पर्वत को नमस्कार करके कहने लगा– तथागत के निर्वाण के पश्चात् महान् बोधिसत्त्व मञ्जुश्री ही सत्त्वों की रक्षा कर रहे हैं। किन्तु आठ बाधाओं के कारण मैं उनके साक्षात् दर्शन नहीं कर सका। मरुस्थल को पार करके आप को नमस्कार करने के लिए मैं यहां पहुंचा हूं। दया करो और मुझे अपने दिव्य रूप का दर्शन दो। जब नमस्कार करके भूमि से उठा तब उसने पहाड़ से उतरते हुए एक बूढ़े मनुष्य को देखा। इस बूढ़े पुरुष ने संस्कृत में कहा– मैं तुम्हारी श्रद्धा से प्रसन्न हूं किन्तु इस देश के लोग पापकर्मों का संग्रह कर रहे हैं, भिक्षु भी शील का उल्लंघन करते हैं। जम्बुद्वीप में उष्णीषविजयधारणी नाम का सूत्र है जो पापों का मार्जन करने में समर्थ है। क्या तुम इस सूत्र को साथ लाए हो। बुद्धपाल ने उत्तर दिया मेरी कामना तो मञ्जुश्री के साक्षात् दर्शन करने की थी इसलिए मैं सूत्र साथ नहीं लाया। वृद्ध पुरुष ने कहा– यदि तुम सूत्र नहीं लाए तो तुम्हारा यहां आना व्यर्थ है। तुम जम्बुद्वीप लौट जाओ और उष्णीषविजयधारणी लेकर आओ। तभी मैं तुमको बतलाऊंगा कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुमको मञ्जुश्री के कहां दर्शन होंगे। बुद्धपाल को बड़ी प्रसन्नता हुई किन्तु जैसे ही उसने अपना सिर उठाया वृद्ध पुरुष लोप हो गया। बुद्धपाल भारत लौट आया और धारणी लेकर सात वर्ष के पीछे ७४० विक्रम में चीन लौटा। इस समय महाराज काओ-त्सुङ राज्य करते थे। इन्होंने बुद्धपाल से सूत्र ग्रहण किया और भारतीय पण्डित दिवाकर तथा अन्यों से चीनी भाषा में अनुवाद कराया तथा बुद्धपाल को कौशेय के ३००० गोल थान दिए। बुद्धपाल के आंसू निकल आए और गद्गद् ध्वनि से उसने महाराज से प्रार्थना की—भगवन् सर्वकल्याण के लिए संस्कृत मूल लौटा दीजिए। महाराज ने अनुवाद अपने पास रख लिया और मूल लौटा दिया। बुद्धपाल मूल सूत्र साथ् लेकर वू-थाइ-शान् की वज्रगुहा में प्रवेश करके लीन हो गया।

तब से उष्णीष-विजय-धारणी समस्त चीन में फैल गई।

वू-थाइ-शान्— शान्-शी प्रान्त में वू-थाइ-श्येन् के उत्तरपूर्व में १२० ली दूर वू-थाइ-शान् पर्वत है। इसके इतिहास के लिए चार आवश्यक ग्रन्थ हैं। इनमें से दो विशेष उल्लेखनीय हैं—

(१) छिङ-ल्याङ के प्राचीन अभिलेख (दो खण्ड)
संकलनकर्ता— ह्वी-श्याङ (थाङ वंश का)

(२) छिङ-ल्याङ के विस्तृत अभिलेख (तीन खण्ड)
संकलनकर्ता— यन्-ई (सुङ वंश १११७ विक्रम)

इनके अतिरिक्त ९वीं और ११वीं शताब्दी के जापानी ग्रन्थ भी हैं।

वू-थाइ-शान् का दूसरा नाम छिङ-ल्याङ-शान् भी है।

यहां ग्रीष्म ऋतु के यौवन में भी ठण्ड रहती है। इसका कारण युग युगान्तरों से संगृहीत हिम है।

वू-थाइ का अर्थ पञ्च-शृंग है। छिङ-ल्याङ नाम अवतंसकसूत्र की टीका से आया है। इस सूत्र के अनुसार यह मञ्जुश्री का निवास है।

चीन में पू-थो-शान् अवलोकितेश्वर का निवास है। ओ-मी-शान् समन्तभद्र का, और वू-थाइ-शान् मञ्जुश्री का।

मञ्जुश्री की उपासना का प्रारम्भ थाङ काल में हुआ। वू-थाइ की प्रसिद्धि भारतवर्ष तक फैल गई। तुन्-ह्वाङ में भी वू-थाइ-शान का भित्तिचित्र विद्यमान है। बुद्धपाल के ८५ वर्ष पश्चात् भारतीय आचार्य अमोघवज्र ने यहां आकर विहारों की स्थापना की।

बुद्धपाल के १०० वर्ष पश्चात् यहां अवतंसकसूत्र की महती टीका लिखी गई और तब से थ्येन्-थाइ-शान् के समान यह अवतंसक दर्शन का केन्द्र बन गया। यहां अनेक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जापानी विद्यार्थी और भिक्षु आते रहे हैं। उन्होंने भी इस पर्वत के वर्णन लिखे हैं।

अवतंसकसूत्र की टीका में इस पहाड़ का विस्तार ५०० ली दिया है। वज्रशेखर-सूत्र का अनुसरण करते हुए पांचों शृंगों का निम्न प्रकार वर्णन है– प्रत्येक शृंग एक तथागत का आसन है और मञ्जुश्री की पांच शिखाओं में से एक का प्रतिनिधि है।

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	मध्य
अ	र	प	स	न
अक्षोभ्य	रत्नसम्भव	अमितायु	अमोघश्री	विरोचन

वू-थाइ-शान् में दो प्रकार के भिक्षु रहते हैं। एक नीलाम्बर और दूसरे पीताम्बर। नीलाम्बर भिक्षु सामान्य बौद्ध भिक्षु हैं किन्तु पीताम्बर लामा हैं। प्रत्येक सम्प्रदाय के पास दस बड़े विहार हैं।

ता-था-य्वेन् स्स 大塔院寺 –प्रसिद्धि है कि यहां प्राचीन समय में भारत के सम्राट् अशोक का बनाया हुआ स्तूप था। यह स्तूप दर्शकों की दृष्टि से लुप्त होकर भूमि के नीचे चला गया। अशोक ने जो ८४००० स्तूप बनाए थे उनमें से यह एक था।

वू-थाइ-शान् की प्रसिद्धि के अनेक कारण हैं। इनमें से एक कारण यह भी है कि थाङ काल के विद्वान् छङ-क्वान् 澄觀 ने अवतंसकसूत्र पर एक महती टीका की रचना यहां की थी। अनेक स्थानों की यात्रा करके छङ-क्वान् ८३३ विक्रम में वू-थाइ-शान् में आ बसे थे और अपना शेष जीवन अवतंसक के अध्ययन और प्रवचन में लगा दिया था। उसकी टीका लिखने के लिए एकान्त स्थान की आवश्यकता थी जहां वे निर्विघ्न संसार से अलग होकर दिनरात लगा कर यह काम पूरा कर सकें। ८४१ विक्रम में उनके लिए अलग भवन बनाया गया। प्रतिदिन प्रातः मञ्जुश्री को नमस्कार करके नई प्रतिभा से प्रेरित हो कर वे तूलिका हाथ में उठाते और किसी प्रकार की बाधा और विघ्न, आलस्य अथवा तन्द्रा, शंका अथवा दुरूहता के बिना सूत्र के जटिल और गम्भीर विचारों का स्पष्टीकरण लगातार तीन वर्षों तक करते गए। टीका की पूर्ति पर चारों ओर से शासकों और भिक्षुओं, उपासकों और आचार्यों की बधाइयां और उपहार आए। और उन्होंनें छङ-क्वान् से प्रार्थना की– आप अपने प्रवचनों से हमारा उपकार करें।

वू-थाइ-शान् में दो प्रसिद्ध गुहाएं हैं–

(१) **चिन्-काङ-खू** 金剛窟 **वज्रगुहा–** प्रसिद्धि है कि इसकी गहराई को आजतक किसी ने नहीं नापा। इसी गुहा में बुद्धपाल लोप हुए थे। मञ्जुश्री का निवास इसी गुहा में है। यह गुहा लामाओं के अधिकार में है।

(२) **नारायण गुहा** 那羅延窟– इसका स्वतन्त्र चीनी नाम कोई नहीं। यह नाम कैसे पड़ा यह अन्वेषणीय विषय है। वज्रगुहा के समान इस गुहा को भी मञ्जुश्री का निवास

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थान माना जाता है। इन गुहाओं के सम्बन्ध में अनेक चमत्कार प्रसिद्ध हैं। एक दिन की कथा है कि ११८३ विक्रम में एक भिक्षु मञ्जुश्री की उपासना के लिए यहां आए। जब वे नारायण-गुहा पर पहुंचे तब उनके साथ अनेक शासन के अधिकारी तथा सौ से ऊपर भिक्षु यात्री के रूप में आए हुए थे। और तो सब नारायण-गुहा में चले गए किन्तु ये भिक्षु बाहर ही खड़े रह गए। इनको बाहर खड़ा देख कर एक अधिकारी ने पूछा आप अन्दर क्यों नहीं जा रहे, आपके मार्ग को किसने रोका है। नवागत भिक्षु ने मुख्य शासनाधिकारी, विहाराध्यक्ष आदि को नमस्कार किया और गुहा में घुस गए। जब अन्दर पहुंचे और मार्ग छोटा हो गया तब उन्होंने अपना वस्त्र ऊपर उठाया और पर्वत में ऐसे प्रवेश कर गए जैसे पर्वत विद्यमान ही न हो। लोगों ने उनको पुकारा पर कोई उत्तर न मिला। तब सबने समझा कि यह भिक्षु कोई सामान्य व्यक्ति न था। सबकी आंखों में आंसू आ गए। तब की चार पंक्तियां गुहा में उत्कीर्ण हैं। इन पंक्तियों के साथ भिक्षु की पीछे छोड़ी हुई बांस की टोपी भी उत्कीर्ण है।

हाङ-चोउ से यहां की प्रसिद्ध हरी चाय तथा छतरियां मोल लीं।

२१ की सायं को ५ बजे हाङ-चोउ से चले और ४१ घण्टे की यात्रा के पश्चात् २३ को दोपहर के ११ बजे कांटोन् पहुंचे। राष्ट्रभाषा चीनी का उच्चारण क्वाङ-चोउ है। क्वाङ-चोउ में पहुंचते ही हमको अपने पुस्तकों से भरे ७३ डिब्बे मिल गए। ये हमारे आने से तीन चार दिन पूर्व पहुंचे थे।

जब हम पहली बार क्वाङ-चोउ में आए थे तब हमने यहां बहुत थोड़े स्थान देखे थे। सर्वप्रथम हम यहां की पत्र-निर्माणी में गए। इसका संचालन शासन करता है। इसका निर्माण १९३३ में हुआ था। १९३८ में जापानी आ गए और बहुत से यन्त्र उठा कर ले गए। यत्न करने पर १९४८ में ये यन्त्र जापान ने लौटा दिए। तीन वर्ष तक जीर्णोद्धार होता रहा। १९५१ से उत्पादन आरम्भ हुआ। इस निर्माणी को ५ गुणा बढ़ाया जा रहा है। इसमें केवल समाचार-पत्रों के पत्र का निर्माण होता है। मा-वेइ नाम के देवदारु-सदृश वृक्ष के लट्ठों से पत्र बनाया जा रहा है। अब गन्ने के छिलकों और फोक का भी प्रयोग कर रहे हैं। गन्ने का रस निपीड़ने के पश्चात् जो फोक बच जाता है उसको यहां भेज देते हैं। भारतवर्ष में भी गन्ने के फोक का प्रयोग पत्र बनाने के लिए होना चाहिए। इस वर्ष का उत्पादन २० सहस्र प्रवर्त (ton) पत्र होने की आशा है। श्रमिक संख्या १७०० है। इसमें २०० स्त्रियां हैं। श्रमिक अधिकांश युवा और युवतिएं हैं। वेतन का माध्य ५३ युआन् है। नवागतों को तीस और मुख्य अभियन्ता (engineer) को २४० युआन् मिलते हैं। निर्माणी के अध्यक्ष का वेतन १५० रुपए है। स्त्रियों को प्रसूति के लिए ५३ दिन की छुट्टी मिलती है। श्रमिकों के लिए निवासगृह बनाए जा रहे हैं। ७००-८०० के लिए बन चुके हैं। जल और बिजली निःशुल्क हैं। घर का भाड़ा नाममात्र हैं। पूर्ण परिवार के लिए ३½ युआन्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मासिक और अकेले व्यक्ति के लिए ३० शतिक (cent) मासिक अर्थात् कुछ आने । जिन व्यक्तियों का परिवार नहीं वे १०, १२, १५, २० की संख्या में एक कोष्ठ में रहते हैं।

इस निर्माणी में प्रयुक्त यन्त्र स्वीडन और जर्मनी से आए हैं। कुछ चीन में बने हैं। यहां बना हुआ पत्र वीतनाम जा रहा है। इस वर्ष ११०० प्रवर्त पत्र जाएगा। निर्माणी में प्रतियोगिता के झण्डे टंगे हैं। जिस श्रमिक-वर्ग ने योजना से बढ़ कर कार्य किया है उनको सुनहरी ध्वजा, जिन्होंने केवल पूरा किया है उनको रक्त ध्वजा और जो पीछे रह गए हैं उनको हरी ध्वजा मिली है। झण्डे कुछ प्रतिदिन के लिए हैं कुछ प्रति-मास के लिए।

२५-७-५५

वू-पाइ-लो-हन्-था अर्थात् **पञ्च-शत-अर्हत्-मन्दिर**– यह १९० वर्ष पुराना है। यहां भिक्षु रहते हैं। मध्य में धातुमयी बुद्ध-मूर्ति है तथा ७५० सेर भार का अशोकस्तूप है। मन्दिर में ५०० अर्हतों की मृण्मयी मूर्तियां पंक्तियों में क्रमबद्ध शोभायमान हैं। मञ्जु वंश के सम्राट् छचेन्-लुङ पूर्व जन्म में अर्हत् के रूप में थे। इनका अर्हद्रूप इस मन्दिर में वर्तमान है। चीन में अनेक स्थानों पर वू-पाइ-लो-हन्-था मिलते हैं। किन्तु इस मन्दिर की विशेषता यह है कि यहां मार्को पोलो (Marco Polo) को भी अर्हतों में सम्मिलित किया गया है।

मन्दिर नगर के बीच में है। प्रतिदिन प्रातः नौ दस बजे ८०, ९० उपासक उपा-सिकाएं नन्मो ओमितोफ़ू (नमो ऽमिताभाय) का जप करने और धूपबत्ती जलाने आते हैं। बुद्ध-जन्मदिन पर सहस्रों की भीड़ लगती है।

ता-फ़ू स्स अर्थात् **महा-बुद्ध-मन्दिर**– यह मन्दिर ४०० वर्ष पुराना है। प्रवेश करते ही तीन बहुत बड़ी ताम्रमयी मूर्तियां हैं। ताम्बे पर मिट्टी का लेप है। इन मूर्तियों के पीछे अवलोकितेश्वर है। यह भी ताम्बे का। प्रभामण्डल का गोल बिम्ब तथा उसमें किरणरूप पीतल की पट्टियां हैं। इन की शोभा अपूर्व है। यहां दस भिक्षु रहते हैं। जब भी ये किसी के घर में पूजा पाठ करने जाते हैं तो बुद्ध की मूर्ति अपने साथ ले जाते हैं। इस प्रयोजन के लिए चार मूर्तियां अलग रखी हुई हैं। ये भी पीतल की हैं। इनकी ऊंचाई १५, १६ अंगुल होगी। आज लोगों के घर में मूर्तियां नहीं हैं इसलिए भिक्षुओं को मूर्तियां अपने साथ ले जानी पड़ती हैं।

सुन्-यात्-सन्-विश्वविद्यालय– इसकी स्थापना १९८१ विक्रम में हुई थी। पाठचक्रम ४ वर्ष का है। रूसी भाषा के अध्ययन के लिए दो वर्ष का पाठचक्रम है। शिक्षापद्धति भी रूसी है। प्रत्येक विषय के अध्यापक इकट्ठे होकर प्रतिदिन के पाठ का निश्चय करते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सप्ताह में कितने घण्टे किस विषय की पढ़ाई हो इसका निर्धारण शिक्षा-विभाग द्वारा होता है।

विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभाग में राजनीति का अध्ययन अनिवार्य है। पहले वर्ष में रूस के साम्यवादी पक्ष का पिछले ५० वर्षों का इतिहास पढ़ाया जाता है। दूसरे वर्ष में चीनी साम्यवादी पक्ष और क्रान्ति का ३५ वर्ष का इतिहास पढ़ाया जाता है। तीसरे वर्ष में मार्क्स और लेनिन् के सिद्धान्तों का परिचय, चौथे वर्ष में मार्क्स और लेनिन् का दर्शन किस प्रकार जीवन का आधार बनाया जाए यह शिक्षा दी जाती है। रूसी भाषा का अध्ययन भी प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अनिवार्य है। विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए दो वर्ष तक और अन्यों के लिए तीन वर्ष तक। विश्वविद्यालय में १६०० विद्यार्थी हैं। ३२० अध्यापक हैं। विद्यार्थी और अध्यापक विश्वविद्यालय में ही निवास करते हैं।

पुस्तकालय में तुन्-ह्वाङ की तीन वलिताएं हैं तथा अद्भुतागार में सुन्-यात्-सन् के जीवन का प्रदर्शन करने के लिए अलग कोष्ठ है।

क्या विद्यार्थी, क्या बुद्धिजीवि-वर्ग, क्या श्रमिक-वर्ग, सभी प्रातः एक अथवा डेढ़ घण्टा दैनिक समाचारपत्र तथा साम्यवाद का अध्ययन करते हैं। शासन के कार्यकर्ताओं का तो यह कर्तव्य ही है।

आज सुदर्शना के लिए चीनी की मुद्रा ढूंढने निकले। चीन मुद्राओं का घर है। सब से सुन्दर मुद्राएं हाथीदांत पर बनती हैं। जो मुद्रा सुदर्शना ने छांटी उस पर मृगराज व्याघ्र का रंगीन और ओजःपूर्ण चित्रण किया हुआ है। प्रसिद्ध चित्रकार फ़ङ-कुङ-श ने १९५५ के ग्रीष्म में इस चित्र को मुद्रा पर खोदा था। दूसरे पार्श्व पर राष्ट्रपति माओ-त्स-तुङ की कविता है।

२६-७-५५

प्रातः सात बजे प्रस्थान किया। गाड़ी के दोनों ओर कोसों तक बाढ़ आई हुई थी। गांव तथा खेत बाढ़ में बह गए एवं निमग्न हो गए। समाचारपत्रों में सूचना आई। जनता और शासन ने यथासम्भव सहायता की, किन्तु किसी राजनैतिक पक्ष ने इसको आन्दोलन का साधन नहीं बनाया। यह चीन के तन्त्र की विशेषता है। किसी प्रकार की अशान्ति, असन्तोष, आन्दोलन अथवा विरोधसभाएं कहीं देखने में नहीं आतीं। शासन ही सब योजनाएं बनाता है। घर भी शासन ही बनाता है। धीरे धीरे जनता की सुविधाओं में वृद्धि होती है। ४, ५ वर्ष में तो सारे देश का स्तर ऊंचा नहीं उठ सकता। जनता धैर्यशील है। इस बात को समझती है और शासन का साथ देती है। शासन की योजनाएं पूरा करने में जी नहीं कतराती। बड़े बड़े कार्यों में श्रमिकों को केवल चावल और थोड़ासा द्रव्य मिल जाता है। वे उसी से सन्तुष्ट रहते हैं। सबको इसी बात की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चिन्ता है कि देश का उत्पादन और शक्ति बढ़ें। उत्पादन के बढ़ाने में सेना भी जुटी हुई है। वह केवल लड़ाई की प्रतीक्षा नहीं करती।

आज दोपहर के ग्यारह बजे चीन की सीमा पर पहुंचे। ७३ लकड़ी के बड़े डिब्बे क्वाङ-चोउ से यहां हमारे साथ ही गाड़ी में आए हैं। इनके साथ दो डिब्बे और जुड़ गए हैं। इनमें कुछ ऐतिहासिक ग्रन्थ हैं जो हमें क्वाङ-चोउ से मिले। सीमा पर चीनी अधिकारियों ने हमारे किसी डिब्बे को नहीं खोला। हमारे साथ प्रति-दिन के प्रयोग के तेरह ट्रंक थे। इनको भी उन्होंने खोल कर नहीं देखा। यह चीनी अधिकारियों का विशेष अनुग्रह था। उनको पेइ-चिङ से आदेश आ चुका था। वे जानते थे कि हमारे साथ जितनी भी सामग्री जा रही है वह विशेष और प्राचीन है। सामान्य चीनी नियमों के अनुसार ८० वर्ष से अधिक प्राचीन कोई भी वस्तु देश के बाहर ले जाना निषिद्ध है। हमारे तो ७५ के ७५ डिब्बे ८० वर्ष से अधिक प्राचीन सामग्री से भरे हुए हैं। १३ ट्रंकों में भी प्राचीन वस्तुएं ही हैं। चीनी सीमा को पार करते ही हॉङ-कॉङ का अंग्रेज़ी राज्य प्रारम्भ होता है। हमको बड़ा आश्चर्य हुआ कि अंग्रेज़ी अधिकारियों ने भी हमारी किसी वस्तु को देखने का यत्न नहीं किया। न ही उन्होंने कोई प्रपत्र भरवाया। समस्त सम्भार दो घण्टे में चीनी संयान से उतार कर अंग्रेज़ी संयान में रख दिया गया।

हॉङ-कॉङ में हमको दो दिन मिले। इनमें से एक दिन भाचित्रों को धुलाने में लगा और दूसरा दिन चीनी मुद्रलिख ढूंढने, मोल लेने और उसका प्रयोग समझने में लगा। चीनी मुद्रलिख जापानियों का आविष्कार है। अंग्रेज़ी मुद्रलिख में केवल ९२ अक्षर छप सकते हैं। इसमें ४००० अक्षर छापने का प्रबन्ध है। हमको देवनागरी, बंगला, मलयालम, तथा भारत से गई हुई तिब्बत, लंका, बर्मा, थाई, कम्बोज, लाओस् देशों की लिपियों के लिए २००, ३०० अक्षरों वाले मुद्रलिख की आवश्यकता है। हमारे वैज्ञानिक उसको भी नहीं बना सके। वे लिपियों को ही परिवर्तन करना चाहते हैं। यह आविष्कार-युग है। लिपि के अनुकूल मुद्रलिख बनना चाहिए।

२९-७-५५ को प्रातः साढ़े ग्यारह बजे हम कार्थेज् नाम के अंग्रेज़ी जलयान में सवार हुए। हमारा समस्त सम्भार भी जलयान में पहुंच गया। बारह बजे जलयान-प्रस्थान की घर्घर ध्वनि आरम्भ हुई। चीनी शासन के प्रतिनिधियों ने अन्तिम नमस्कार किया। हमारा चीन का भ्रमण समाप्त हुआ।

* * *

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समुद्र सर्वथा शान्त था। ऋतु भी सुहावना था। समय का सदुपयोग करने के लिए हमने तुन्-ह्वाङ के रंगीन चित्रों को क्रम में लगाने का काम हाथ में लिया। तुन्-ह्वाङ के चित्रों के हमनें दो दो भाचित्र लिए थे। एक रंगीन और एक सितासित (काला और श्वेत)। सितासित चित्र तुन्-ह्वाङ में ही धुल गए थे। उनके पीछे गुहा की संख्या और चित्र का संक्षिप्त नाम तथा युग डा० छाङ ने लिख दिए थे। रंगीन चित्रों की धुलाई हॉङ-कॉङ में हुई थी। अब हमनें रंगीन और सितासित चित्रों को एक क्रम में लगाया। इसमें पूरे दो दिन लग गए। जलयान के दूसरे यात्रियों की उत्सुकता और जिज्ञासा उत्कट थी। कइयों ने तो हमारे क्रम लगाने के कार्य में सहायता भी की। चित्रों का क्रम लग जाने पर हमको ठीक ठीक पता लगा कि हमारे पास कितनी कुछ सामग्री आई है। संतोष भी हुआ कि अब यह हमारी सम्पत्ति है।

जलयान पर खाने पीने के अतिरिक्त हमारे पास कोई और काम न था। खेल-कूद में हमारी रुचि न थी। चीन के निवास और भ्रमण के संस्मरणों को लिखना ही हमारा मनोरञ्जन बन गया। प्रतिदिन दस बारह घण्टे मैं लिखाता और सुदर्शना लिखती। बम्बई पहुंचने से पहले पहले हमनें अपने संस्मरण पूरे किए। यही संस्मरण आपके सामने इस पुस्तक के रूप में प्रस्तुत हैं।

दो अगस्त को प्रातः सिंहपुर पहुंचे। यहां भारतीय दूतावास है। श्री टण्डन दूतावास के अध्यक्ष हैं। आपने हमारा बड़े प्रेम से स्वागत किया। हॉङ-कॉङ के समान सिंहपुर के पत्रकारों ने भी हमारी चीनयात्रा और वहां से एकत्र किए हुए सांस्कृतिक संग्रह का उल्लासपूर्वक समाचार प्रकाशित किया। यहां पर ही हमको लण्डन के प्रसिद्ध पत्र 'टाइम्ज़' के कतरन मिले जिससे पता चला कि हमारी यात्रा के साफल्य का पश्चिमी संसार में भी साश्चर्य अभिनन्दन हुआ है। सिंहपुर से अनेक सज्जन मिलने आए। सब की एकमात्र इच्छा यही थी कि हमारे संग्रह के विषय में और अधिक बातें सुनें और यदि सम्भव हो तो कुछ देखें भी।

सिंहपुर के चीनी निवासियों ने विशाल बौद्ध मन्दिर की स्थापना की है। रुपया बहुत व्यय किया है। किन्तु इसमें चीन के मन्दिरों का वैभव नहीं। कला भी बहुत नीचे स्तर की है।

सिंहपुर से चल कर हमारा जलयान पीनांग में ठहरा। पीनांग का अर्थ सुपारी है। यह सुपारी के निर्यात का महान् पत्तन है।

पीनांग के पश्चात् जलयान कुछ डोलने लगा। फिर भी हम अपना काम करते रहे। नौ अगस्त को श्री लंका की राजधानी कोलम्बो पहुंचे। कोलम्बो में भारतीय राजदूत श्री चक्रवर्ती तथा पुराने मित्र शिवरामकृष्ण, भिक्षु शिवली, स्फटयातु के प्रसिद्ध व्यापारी श्री भट्ट आदि के साहचर्य्य में दिन बड़ी शीघ्रता से निकल गया। सिंहली तथा अंग्रेज़ी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के समाचारपत्रों ने श्रीलंका की बौद्ध जनता के लिए हमारी चीनयात्रा के विस्तृत विवरण प्रकाशित किए।

ग्यारह अगस्त को प्रातः आठ बजे बम्बई पत्तन पर कार्थेज् ने लंगर डाला। हमारे परमसखा श्री श्रेयांस प्रसाद जैन हमारे उतरने से पूर्व ही जलयान पर आ गए। आयात-निर्यात-विभाग के अधिकारी हमारे भारी सम्भार को बिना खोले ही पत्तन से बाहर निकलने दें और संयान में समस्त वस्तुएं आज ही हमारे साथ लद कर नागपुर पहुंच जाएं इत्यादि कामों में सहायता के लिए बम्बई प्रदेश के राज्यपाल और हमारे सुहृद्वर श्री हरिकृष्ण मेहताब ने अपने कर्मचारी जलयान पर भेजे।

आज कुलियों की हड़ताल है। वर्षा भी मूसलाधार पड़ रही है। फिर भी अनभिज्ञ साम्यवाद-प्रभावित श्रमिकों ने हमारे सम्भार को जलयान से उतारना स्वीकार किया। यह सम्भार भारत और चीन के सम्बन्धों की सांस्कृतिक निधि है। भारत और चीन का गौरव है। इसका आभास पाकर श्रमिकों ने प्रेम और उत्साह से काम किया।

सायंकाल छः बजे की गाड़ी पर सवार होकर हम अगले दिन प्रातः दस बजे नागपुर पहुंच गए। सम्भार से भरा हुआ संयान का पूरा एक डिब्बा अगले दिन पहुंचा। यद्यपि इस समय हमको १५०३ रुपए संयान का भाड़ा देना पड़ा तथापि पीछे जाकर भारतीय शासन ने हमको ये रुपए लौटा दिए।

* * *

चीन की यात्रा समाप्त हो चुकी है तथापि इसके सम्बन्ध में और इसके कारण अभी बहुत कुछ करना शेष है। सर्वप्रथम भारत के प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी का अनुरोध है कि इस सामग्री का दिल्ली में प्रदर्शन हो। भारत की जनता को पता लगे कि भारत और चीन के भूतकाल में क्या सम्बन्ध थे।

डेढ़ मास की सज्जा के पश्चात् २९ सितम्बर को सायं ५॥ बजे डा. राधाकृष्णन्, पण्डित जवाहरलाल नेहरू तथा चीन के राजदूत ने प्रदर्शनी के उद्घाटन में भाग लिया।

चीन के राजदूत श्री युआन् चुङ-श्येन् का भाषण साम्यवादी चीन की विचारधारा का द्योतक है। चीन की जनता तथा शासनाधिकारियों की हमारे प्रति क्या भावनाएं हैं उनका भी इनके भाषण से स्पष्ट भान होता है। इनके एक एक शब्द का महत्त्व है। मूल भाषण चीनी में और उसका अधिकृत अनुवाद अंग्रेज़ी में हुआ। आंगलानुवाद हम नीचे उद्धृत करते हैं—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चीन की यात्रा समाप्त हो चुकी। भारत के तत्कालीन प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू के अनुरोध से अभियान की सामग्री की दिल्ली में प्रदर्शनी हुई। डेढ़ मास की सज्जा के उपरान्त २९ सितम्बर १९५५ को सायं ५।। बजे डॉ. राधाकृष्णन् ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। चित्र में पं. नेहरू, आचार्य रघुवीर और उनकी पुत्री डॉ. राधाकृष्णन् के साथ।

On 29 September 1955, at New Delhi Dr. Radhakrishnan, the Vice-President of the Republic of India, inaugurated the exhibition of paintings, art objects and manuscripts brought back by Prof. Raghu Vira from his expedition to China.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"His Excellency the Vice President, His Excellency the Prime Minister, Dr. Raghu Vira, ladies and gentlemen,

"It is with great pleasant and enthusiastic feeling that I am here to take part in this rather unique cultural exhibition organized by the Ministry of Education, Government of India.

"We all know that Dr. Raghu Vira, the famous Indian scholar, recently visited China and had a very extensive tour there.

"During his stay he was able to collect, under the patronage and cooperation of the Chinese Government and people, and through his desire, wisdom and endeavour, a large quantity of precious and rare ancient Buddhist literature, literary and linguistic works, paintings and copies of stone scripts, etc. They are valuable heritages of mankind, and real pieces of art that are not to be measured by time. Naturally everybody will be attracted and charmed by them. But here and now, we — we Chinese and Indians — must be having an additional proud feeling within us, that all that is displayed here, whether hand-written, printed, carved on stone, or flying on the walls, are unmistakably marvellous results of the cultural and art interflows between China and India in ancient times.

"Indeed, we are proud of the enduring relationship between our two countries — a relationship of peace, mutual influence, mutual inspiration and mutual help.

"Our great forefathers, Fa-Hsien, Hsüan Chwang, Dharma, Kāśyapa Mātanga, Gobharaṇa and numerous others, in a fearless and self-denying spirit, living through endless years and surviving the most hazardous journeys, trekked to India. They brought back with them the Buddhist literature and arts of India at that time, developed them and adopted them into Chinese tradition. And here they are as the invaluable treasures commonly held dear by the peoples of our two countries. They not only are indispensable material for the study of India's ancient history, culture, religion and art, but also should be looked upon as historical basis upon which inspiration for the furtherance of friendship and cooperation between our two countries may be founded.

"A Chinese custom goes that a married girl will from time to time visit her parents. Now a girl, a richly dressed and smiling Indian girl,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

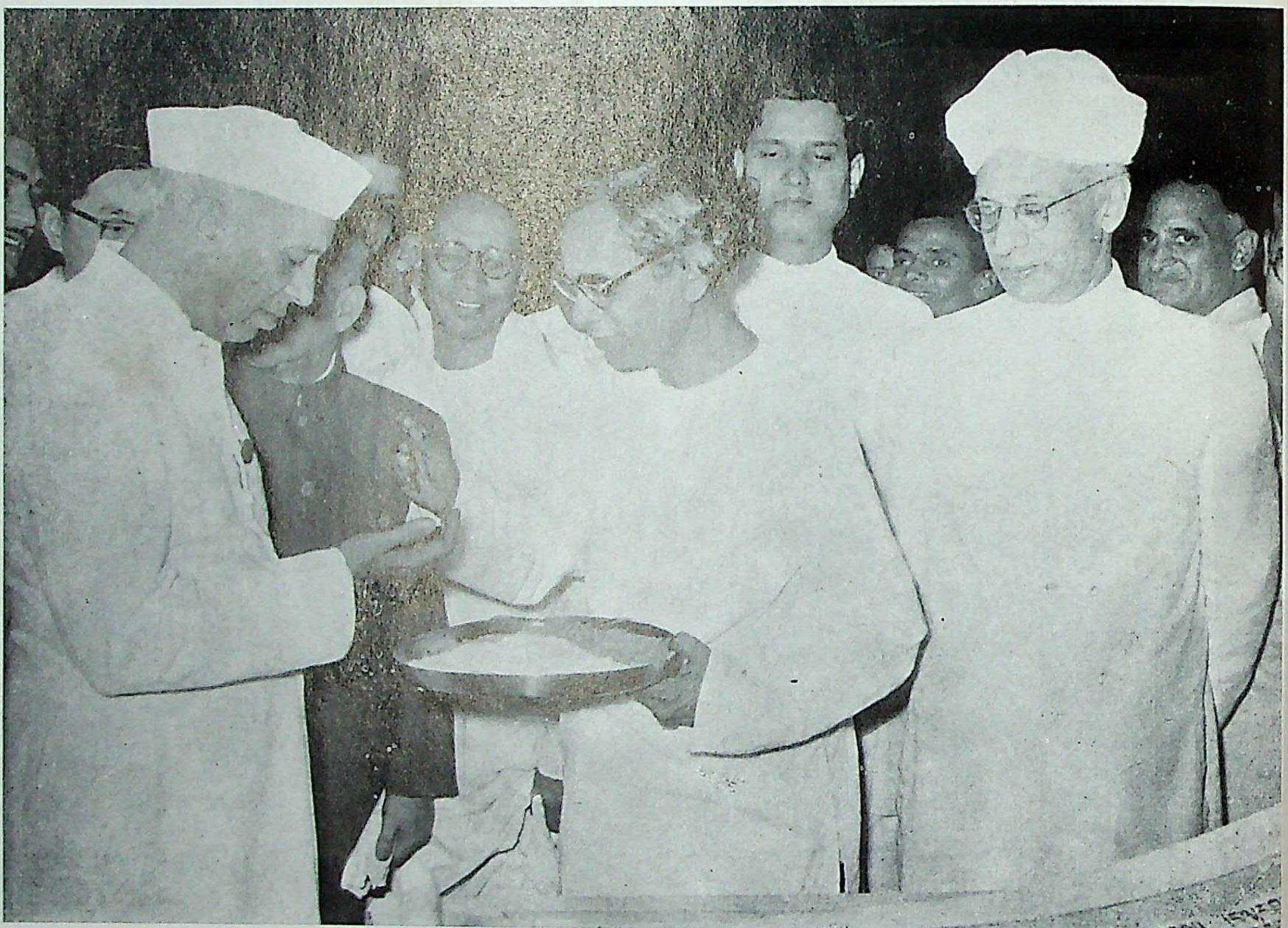

प्रधान मन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरू को आचार्य रघुवीर मोंगोल विहारों से लाए जौ के सत्तू और गुड़ की शर्करा का प्रसाद चखा रहे हैं। यह भारतीय भोजन भारतीय आचार्यों द्वारा मोंगोल विहारों में फैला और उनके जीवन का अङ्ग बन गया।

At the exhibition, Prime Minister Pt. Jawahar Lal Nehru lovingly accepts the consecrated offering of barley flour and brown jaggery which Prof. Raghu Vira has brought from the Mongolian monasteries. Mongol tradition has it that this offering was introduced by Indian Ācāryas.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"His Excellency the Vice President, His Excellency the Prime Minister, Dr. Raghu Vira, ladies and gentlemen,

"It is with great pleasant and enthusiastic feeling that I am here to take part in this rather unique cultural exhibition organized by the Ministry of Education, Government of India.

"We all know that Dr. Raghu Vira, the famous Indian scholar, recently visited China and had a very extensive tour there.

"During his stay he was able to collect, under the patronage and cooperation of the Chinese Government and people, and through his desire, wisdom and endeavour, a large quantity of precious and rare ancient Buddhist literature, literary and linguistic works, paintings and copies of stone scripts, etc. They are valuable heritages of mankind, and real pieces of art that are not to be measured by time. Naturally everybody will be attracted and charmed by them. But here and now, we — we Chinese and Indians — must be having an additional proud feeling within us, that all that is displayed here, whether hand-written, printed, carved on stone, or flying on the walls, are unmistakably marvellous results of the cultural and art interflows between China and India in ancient times.

"Indeed, we are proud of the enduring relationship between our two countries — a relationship of peace, mutual influence, mutual inspiration and mutual help.

"Our great forefathers, Fa-Hsien, Hsüan Chwang, Dharma, Kāśyapa Mātanga, Gobharaṇa and numerous others, in a fearless and self-denying spirit, living through endless years and surviving the most hazardous journeys, trekked to India. They brought back with them the Buddhist literature and arts of India at that time, developed them and adopted them into Chinese tradition. And here they are as the invaluable treasures commonly held dear by the peoples of our two countries. They not only are indispensable material for the study of India's ancient history, culture, religion and art, but also should be looked upon as historical basis upon which inspiration for the furtherance of friendship and cooperation between our two countries may be founded.

"A Chinese custom goes that a married girl will from time to time visit her parents. Now a girl, a richly dressed and smiling Indian girl,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

after spending some one thousand or two thousand years in China, is returning to India and having family re-union. With great joy we all cheer her. She is beautiful and strong, because she stands for the great strength of 1000 million population of China and India.

"History testifies to the incessant development of relations between our two countries. In the past six years, mutual understanding, cultural and economic intercourse between our two countries have been increasing by each passing day. From their own experience the peoples of our two countries now realize more than ever that only the independence and prosperity of our two countries could safeguard our cultural heritage, our happy life and peace in Asia and the world, and that activities of cultural intercourse would promote advancement of relations among countries.

"The fact that Dr. Raghu Vira could collect during such a short time the valuable materials scattered through hundreds of years and over the vast territory of China and have them shipped to Delhi in perfect order, is in itself a great achievement and vivid manifestation of the keen desire for sincere friendship between our two countries.

"We must thank Dr. Raghu Vira for his hard work and respectful efforts. We must also congratulate the Ministry of Education, Government of India, and Dr. Raghu Vira for their inspiring contribution towards the cultural interflows and friendship between China and India by so successfully arranging this exhibition."

General Yuan Chung-Hsien

दिल्ली की जनता के लिए हमारी प्रदर्शनी अदृष्टपूर्व, अप्रत्याशित तथा वैचित्र्यपूर्ण थी। भोट, मोंगोल, चीनी बौद्ध तथा तान्त्रिक चित्रों से जनता की आंखें विस्फारित हुईं। प्राचीन भारत का जाज्वल्यमान स्वरूप विशेष आकर्षक बना। यम, यमान्तक, महाकाल के कलात्मक रौद्ररूप, भारतीय तथा चीनी आचार्यों और अर्हतों के ओजस्वी आलेख्य; चीन के कोने कोने से एकत्रित, पत्थरों पर खुदे हुए प्राचीन संस्कृत के शिलालेखों की बृहदाकार विशाल छापों के दर्शनों से जनता में आत्मगौरव भावना तथा तद्दर्शनजन्य तृप्ति क्षण क्षण में झलकती थी।

प्रदर्शनीभवन बड़ा होते हुए भी हमारी सामग्री के लिए छोटा पड़ा। १३१ डिब्बों में से हम केवल ३० खोल पाए। भोट, मोंगोल, मञ्चू और चीनी साहित्य, जो २००० वर्षों में संस्कृत से अनुवाद किया गया, वह निदर्शनमात्र ही खोला गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

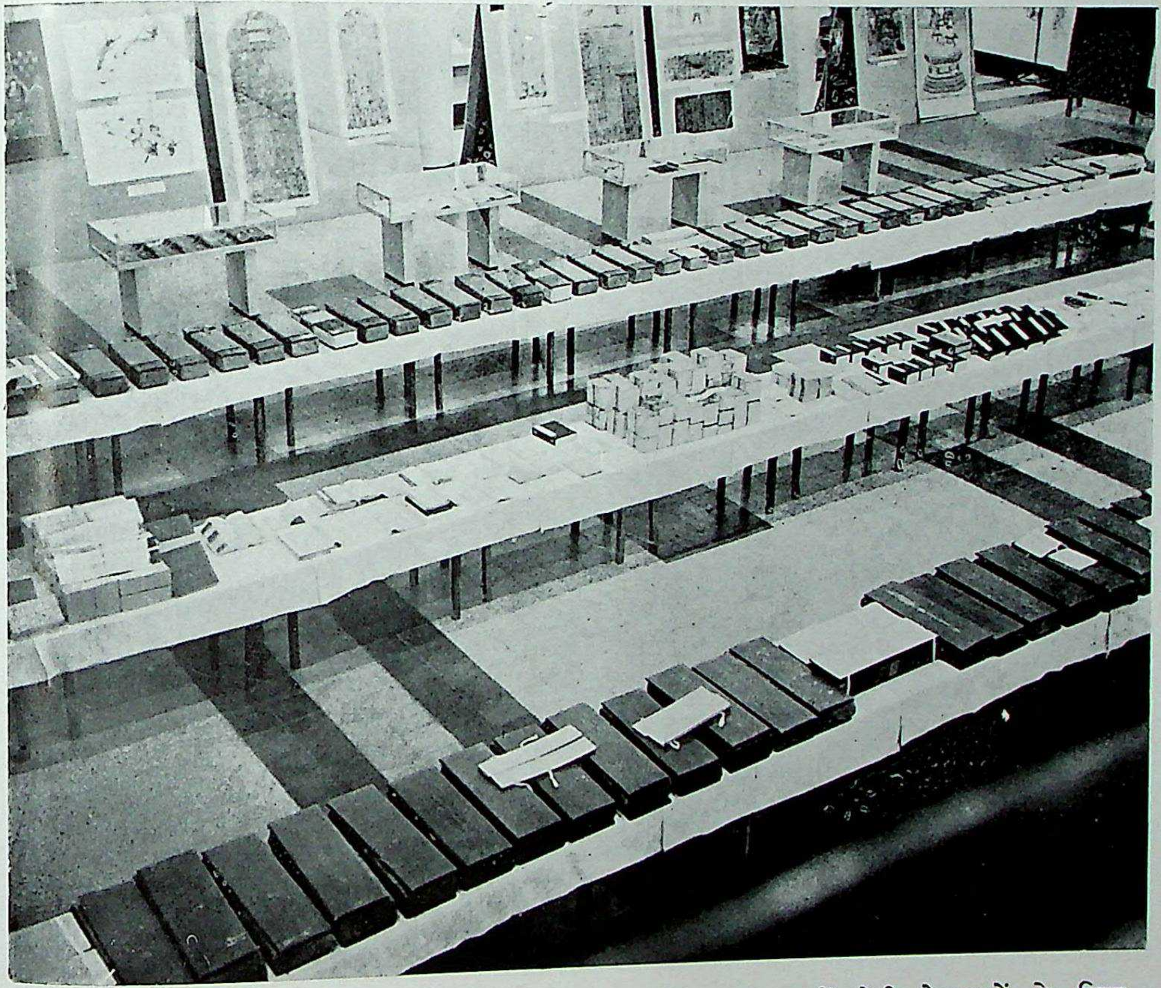

चीन से आचार्य रघुवीर भारत-अनुप्राणित अपार सामग्री लाए। इनमें देवी देवताओं के चित्र, चीनी, भोट, मोंगोल, शीश्या साहित्य की पुस्तकें और कोष, शिलालेखों की छापें और मूर्तियां विशेष उल्लेखनीय हैं। दिल्ली में इन वस्तुओं की प्रदर्शनी हुई। प्रधान मन्त्री से लेकर जनता तक यहां आई और उन्होंने सांस्कृतिक अमृतपान किया।

A general view of the exhibition of manuscripts, xylographs, paintings, thankas, rubbings of inscriptions, objects of art, etc. brought by Prof. Raghu Vira from his expedition to China.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

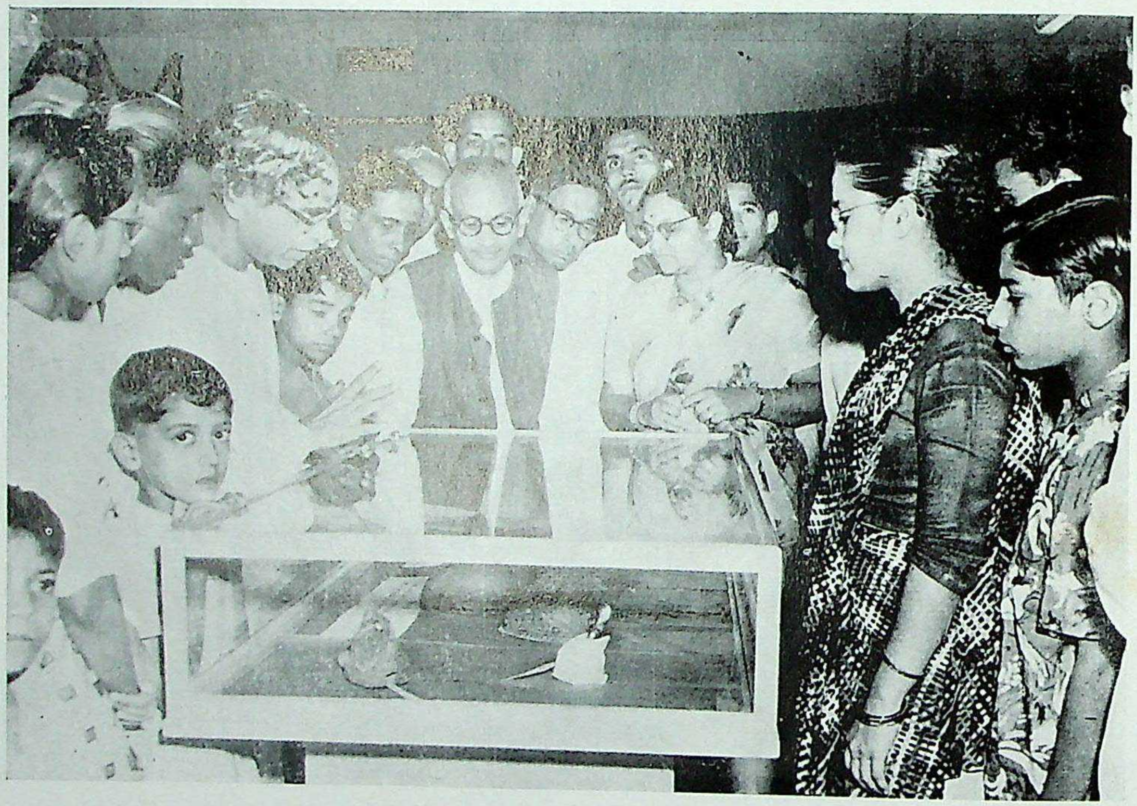

प्रदर्शनो के एक स्थाम में रत्नजटित तान्त्रिक कपाल, क्वाङ्-चोउ के षड्बोधिवृक्ष मन्दिर से प्राप्त घण्टा तथा आम्दो के प्रथित कुम्-बुम् विहार से चोङ-खा-पा सुमतिकीर्त्ति की प्राणप्रतिष्ठित मूर्ति दिखाई दे रही है। आचार्य रघुवीर श्री जयदयाल जी डालमिया और उनके परिवार को प्रदर्शनी में आयोजित विविध वस्तुओं की व्याख्या कर रहे हैं।

A stand at the exhibition showing the Tantric kapāla, a wooden bell from the 'Temple of Six Bodhi Trees' at Kuang-chou, an ancient consecrated image of Tsoṅ-kha-pa Sumatikīrtti from his birth-place. Prof. Raghu Vira explaining the objects to Shri Jaidayalji Dalmia and the members of his family.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रदर्शनी की दर्शक-पञ्जिका से जनता की भावनाओं का अच्छा पता चलता है—

"डा. रघुवीर की चीन से लाए हुए दुर्लभ संग्रह को देख कर अपने प्राचीन गौरव का गर्व जागृत हो उठता है।"

श्रीमती रमा जैन

"Most remarkable exhibition I have ever seen. Dr. Raghu Vira's efforts in this direction alone will make him one of our profound scholars for all time."

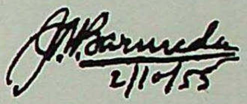

"Most fascinating a study and very beautiful."

Mrs. W. J. Kaufman

"It was a great day for me to visit today the grand collections brought by Professor Dr. Raghu Vira from China. They represent our life for centuries— a concentrated cultural representation of Indo-Chinese relations. The magnitude of this representation has few parallels in the history of the country."

Siddheshwar Varma

" अत्याकर्षक तथा रोचक प्रदर्शनी। "

हरिविष्णु कामत

"We enjoyed the exhibition tremendously."

Mr. and Mrs. J. A. Murray
(American Embassy)

"श्री डाक्टर रघुवीर का यह संग्रह अद्भुत है। उन्होंने जो कार्य किया है वह बहुत मूल्यवान् है।"

पुरुषोत्तमदास टंडन

"La presentation de cette exposition est remarquable et est fait avec art."

Pom Pottet
(of Geneva)

"After a thousand years of slavery India is coming out from the great slumber. So long she was not allowed to know her neighbouring brothers by the foreign usurper rulers. Now the children of the soil

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

have been freed from their prison house. How glad I am to see this exhibition which has given me a new life, and what shall I write, a new vision— how new India will take shape. I wish my countrymen will learn the languages of all her neighbours so that they can understand not only them but know and realize their inner self. English, French, German, Russian will not be able to give India her ancient past. To know India and her culture requires one to learn the Deva-bhāshā, Sanskrit, and languages of the East."

Binay Bhushan Datta

"ऐसी अपूर्व और खोजपूर्ण प्राचीन संग्रहों की प्रदर्शनी भारत में न कहीं देखी और न सुनी गई। इससे अधिक लिखना लेखनी की शक्ति के परे है– लेखनी बिनु नयन, नयन बिनु लेखनी।"

फणीन्द्र बाजपेयी

"It is very interesting exhibition, principally to the religous spirited. I hope this spirit will preserve it for ever in China, in Tibet and in India."

Miguel Serrano
(Ambassador for Chile)

"A highly inspiring and impressive collection of great historical value. The service done to cause of Indo-China amity and the new horizons opened for research in all fields in the country is beyond praise."

G. L. Nanda
(Minister for Planning)

* * *

चीन की यात्रा से भारत लौटते ही रूस तथा भारत के ऐतिहासिक सम्बन्धों की खोज करने के लिए रूसी शासन का निमन्त्रण आया था। ६ अक्तूबर का प्रदशनी समाप्त हुई। सो रूस जाने की सज्जा आरम्भ की। चीन के समान रूस में भी भारतीय साहित्य, धर्म, कला, दर्शन तथा कथाकहानियों की अनन्त सामग्री है। जो वस्तुएं चीन में न मिल पाईं, वहां से लुप्त हो गईं, उनमें से अनेक के रूस में मिलने की आशा है॥

॥ भारत-चीन-संस्कृतिर्विजयताम् ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

अ

अ (अक्षोभ्य) १५८

अक्षयदीपगृह (क्वान्-जन् स्स में) १०२

अक्षोभ्य ६३,१५८

अग्निक्रीडा २१

अङ्गुष्ठमात्र कमण्डलु १०

अद्भुतागार (क्वाङ्-चोउ में) ५, (मुक्देन् में) १२३

अधो ह्वा-यन् स्स ६३ (ता-तुङ् नगर में विहार)

अनुत्तरा सम्यक्सम्बोधि २८

अनुसंधान-विभाग, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय ३५

अन्ताराष्ट्रिय विद्यार्थि-संघ-स्वास्थ्याश्रम ३०

अन्ताराष्ट्रिय यात्रि-केन्द्र १०

अप्सराएं ५६, १०३, १५४, १५५

अभिधर्म की भोट और चीनी पारिभाषिक शब्दमाला २६

अमिताभ ६३, ६४, ६५, १५२, १५५

अमिताभ-गुहा (श-शान्) १४६

अमिताभ-सूत्र (तुन्-ह्वाङ में भित्तिचित्र) ७९

अमितायु १५८

अमृत-हृदयाङ्गाष्टगुह्योपदेश १२५

अमोघवज्र (भारतीय आचार्य) १४, १०४ (ता-शिङ-शान् स्स में), १०७

अमोघवज्र-शिलालेख १०४

अमोघवज्र-समाधि १०४

अमोघवज्र-समाधि-मन्दिर १०४

अमोघवज्र-सम्मानोपाधि १०४

अमोघवज्र से-ली १०४

अमोघश्री १५८

अमोघसिद्धि ६३

अयुत-बुद्ध-गुहा (लुङ-मन्) ११३

अर्हत् ८ (अठारह अर्हत्), ६४, १०३, ११४, ११७, ११८, १५४, १५६

५१६ अर्हतों का उत्कीर्ण अभिलेख १५४

५०० अर्हतों का मन्दिर ४०

५०० अर्हतों की मृण्मयी मूर्तियां (वू-पाइ-लो-हन्-था में) १६०

अर्हद्-युग्म ११७

अवतंसक दर्शन १५४, १५७

अवतंसक-दर्शन के आचार्य क्वेइ-फ़ङ-त्सुङ-मी १०६

अवतंसक शुद्ध जीवन धार्मिक संघ (चाओ-छिङ-लू स्स में) १५२

अवतंसक सम्प्रदाय १५३

अवतंसक-सूत्र ५०, १०५ (काइ-य्वेन् स्स में), १५३ (सुवर्णलिखित), १५७

अवतंसक-सूत्र-टीका १०७, १५८

अवतंसक-सूत्र-विश्वकल्पना-शिलाचित्र (काइ-य्वेन् स्स में) १०५

अवलोकितेश्वर ६३ (युन्-काङ में शिलालेख), ७० (तुन् ह्वाङ में सहस्रहस्त), १५०, १५५, १५७ (पू-थो-शान् में अव° का निवास), १६०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अशोक-सिंहस्तम्भ (शाङ-हाई में) १४६
अशोक-स्तूप १५८ (ता-था-ख्वेन् स्स में), १६० (वू-पाइ-लो-हन्-था में)
अष्टकोण-आसन (लुङ-मन्) ११६
अष्टकोण-स्तम्भ-धारणी १११
अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता १२४
अहिंसा-पञ्चाशिका (अहिंसा पर चीनी कविताएं ४१, ४३

आ

आंगल भारतीय बृहत्कोष ४१
आदर्श श्रमिक २२
आनन्द ९४, ११४, ११८
आन्-शान् (नगर) ६३, १२४
आन्-शी (नगर) ७०, ८८
आम्-दो ६१
आयुर्वेद २७ (युङ-हो-कुङ में अध्ययन अध्यापन), १२० (युङ-हो-कुङ में आयुर्वेद के ग्रन्थ)
आयुर्वेद-विद्यालय (कुम्-बुम् में) ९२, ९४
आ-यू-वाङ स्स (वू-ख्वे मण्डल में) १५१
आर्य से प्रारम्भ होने वाले ग्रन्थ और अन्य नाम अपने क्रम में दिए गए हैं।
आर्यदेव १४४
आलि-कालि ४१
आसन (लुङ-मन् में अष्टकोण आसन) ११६

इ

इन्द्र २४, ४० (अर्हत्)
इ-फ़ू=पू-छी

ई

ईंट (लेइ-फ़ङ स्तूप से प्राप्त सर्वतथागताधिष्ठानहृदयगुह्यधातुकरण्डधारणी युक्त) १५०
ई-चिङ ९९ (ता-च्येन्-फू स्स), ११४
ई-च्वे-तुङ (=ल्येन्-ह्वा-तुङ, लुङ-मन्) ११६
ई-थ्येन् (कोरिया का विद्वान्) १५३
ई-नदी ११२

उ

उइगूर—देखिए वीगूर
उत्तर वेइ-कला (तुन्-ह्वङ में) ७६
उत्तर वेइ-कालीन गुहा (तुन्-ह्वाङ में) ७६
उपदेश-गुणतन्त्रस्य गण्डूषिकशल्योष्ण-तापनान्त कृताकृत पाराकाल मृत-पाश्यच्छोदस्य खड्ग विहरति स्म (युङ-हो-कुङ के भोट आयुर्वेद ग्रन्थ का संस्कृत शीर्षक) १२०
उपरि ह्वा-यन् स्स (ता-तुङ नगर में विहार) ६३
उपाधिपत्र (भिक्षुओं का) १११
उपासना-कोष्ठ (मुस्लिम विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में) ३४
उलान्-बातर् में तन्जूर का सूचीपत्र २८
उष्णीषधारणी ९४
उष्णीषविजय देव १५५
उष्णीषविजय-धारणी १०४ (काइ-ख्वेन्-स्स-धारणी-स्तम्भ), १२२, १४६ (चीनी में), १५६, १५७ (संस्कृत मूल)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उष्णीषविजय-मूर्ति १५५, १५६

ए

एर्कस् (Eduard Erkes, लाइप्सिक् विश्वविद्यालय में चीनी के अध्यापक) २८, ११२
एकसहस्राधिकारी स्तूप (यन्-श्या तुङ) १५४

ऐ

ऐतिहासिक ग्रन्थ (क्वाङ-चोउ में) १६१

ओ

ओ-मी-शान् (समन्तभद्र का निवास) १५७
औषध-विद्यालय—आयुर्वेद-विद्यालय देखिए
ओं मणि पद्मे हूं ८५ (तुन्-ह्वाङ की तान्त्रिक गुहा में), ९२, १५५ (देवनागरी लिपि में)

क

कज़ाक् भाषा (का राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में अध्ययन-अध्यापन) ३४
कञ्जूर (भोट भाषा में) १४, ३८ (६, ७ हस्तलिखित भाग पेइ-चिङ विश्वविद्यालय में हैं), ४९ (प्रतिवर्ष पारायण). १२९ (देखिए चोने क°, छिङ क°, देर्गे क°, नार्थाङ क°, पेइ-चिङ क°, ल्हासा क°)
कञ्जूर (मञ्जु भाषा में) १५
कञ्जूर (मोंगोल भाषा में) ४५, ५० (फ़ा-शी स्स में), १२९
कन्फूशस मन्दिर ५
कमण्डलु १० (अंगुष्ठमात्र)
कमला (श्रीमती) १४२
करोटि-विद्या (दुल्वा में) ९२
कल्याणमित्र (शास्त्रार्थ में श्रेष्ठ के लिए उपाधि) ९५
कांस्य मूर्तियां (शी-काङ में) ९२
कांस्य-लेख ३७
काइ-य्वेन् स्स (शी-आन् में) १०४
काओ-त्सुङ सम्राट् ९७, ९९, ११२, ११७, १४४, १५७
काओ-त्सुङ राजकुमार (चीनी में योगाचारभूमिशास्त्र के उपभूमिका-लेखक) १०३
काओ-लिन्, डॉ. (आयुर्विज्ञान-विद्यालय के अध्यक्ष) ११
काओ-पेइ-त्येन् (पेइ-चिङ् सीमा पर कृषि-उत्पादन-सहकारी मण्डल) ३१
काओ-ली स्स १५३
काङ्-शी राजा १०२
कांटोन् १५९
कान्-सू प्रान्त ८९
कालख मूर्ति (कुम्-बुम् में) ९३
कालचक्र-विद्यालय ९४
कालिन्दी (कुम्-बुम् में) ९३
काली देवी (कुम्-बुम् में) ९३
काल्-गान् (स्थात्र) ४७
काश्यप ४० (अर्हत्), ९४, ११०, ११४, ११८
काष्ठ की कृष्णवर्ण मूर्तियां ४५
काष्ठफलक ४९ (फ़ा-शी स्स में ५,०००), ९४ (कुम्-बुम् में संग्रह), १४३
काष्ठमूर्तियां ४०, ४५ (कृष्णवर्ण)
किन्-फङ् (अभिधर्म की भोट और चीनी पारिभाषिक शब्दमाला के प्रकाशक) २६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुओ-मिन्-ध्साइ (विद्या-विभाग के सम्पर्काधिकारी) १२
कुओ-मो-ज़ो (विद्या-विभाग के प्रधान) ३७, ४१
कुमारजीव १०६, १४५ (माध्यमिक शास्त्र के अनुवादक)
कुम्-बुम् ४३, ६१-६५
कुम्-बुम् पुस्तकालय ६२
कुम्-बुम् मुद्रणालय ६४
कू-काई (जापान के शिंगोन्-सम्प्रदाय के प्रवर्तक) १०४
कू-कुङ्-पो-वू-य्वेन् (=प्रासाद) १५
कू-फ़ू-कुन्-नान् १२७
कू-याङ्-तुङ् (लुङ्-मन्) ११६
कू-याङ्-तुङ् शिलालेख ११६
कृत्तिवासस् (चिन्-आन् स्स में) १४८
कृषक-क्रान्ति ५
केसकर ३
कोरिया १५०
कोलम्बो (लंका) १६३
क्रान्ति-शिक्षणालय ५
क्रीडास्थान (क्वङ्-चोउ में) ४
क्वाङ्-चोउ (=कांटोन्) ४, ११, १२८ १५६ १६१
क्वाङ्-चोउ अद्भुतागार ५
क्वान्-ची मन्दिर (पेइ-चिङ् का प्रसिद्धतम मन्दिर) २६, १२५, १३२
क्वान्-जन् स्स (शी-आन् में लामा मन्दिर) १०२ (यहां अक्षयदीपगृह है)
क्वान्-यिन् (=अवलोकितेश्वरी)८, १५३
क्वेइ-फ़ङ्-त्सुङ्-मी ध्यानाचार्य १०५
क्वेङ्-फ़ङ्-त्सुङ्-मी शिलालेख (ध्साओ-थाङ् स्स) १०६
क्वो-छिङ् १४४
क्वो-मिन्-ताङ् ११, ६७
क्वो-लून् ३

ख

खण्डित गुहा (लुङ्-मन् में) ११३, ११७
खण्डित गुहा शिलालेख (लुङ्-मन् में) ११७
खुङ्-फ़ू-त्स (Confucius) १५४

ग

गजदन्त से बनी मूर्ति (पञ्चोत्स-मन्दिर) ६६
गरुड ६४, ११७ (लुङ्-मन् में मूर्ति), १३१
गान्धार प्रभाव ७६, ७६, ८४, ६६
गुप्तकला का प्रभाव ११४, (लुङ्-मन्) ११६
गुहा-अन्तर्वस्तु-पञ्जिका (तुन्-ह्वाङ्-गवेषणालय की) ८२
गुहाओं की रक्षा (तुन्-ह्वाङ्) ८१
गुहा-चित्र-मूर्ति-वर्णन-पञ्जिका (तुन्-ह्वाङ्-गवेषणालय की) ८१
गुहा-रेखाचित्र-पञ्जिका (तुन्-ह्वाङ्-गवेषणालय) ८१
गुहा-लेख-पञ्जिका (तुन्-ह्वाङ-गवेषणा-) लय ८२
गृध्रकूट १५१, १५४
गोवर्धन १२, १४२
ग्रीष्म-प्रासाद (पेइ-चिङ् में) ४४

घ

घण्टा-भवन (शी-आन् में) ६७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

च

चक्रवर्ती (लंका में भारतीय राजदूत) १६३
चङ्-कू उपासक १११
चङ्-क्वाङ् धर्माचार्य का शिलाचित्र १०४
चङ्-चुङ्-चिङ् (उपाध्यक्ष, विदेश सांस्कृतिक सम्पर्क मण्डल) ४१
चतुर्मुख ब्रह्मा (चिन् आन् स्स में) १४७
चन्-क्वान् (निर्माता और अध्यक्ष, श्या-थ्येन्-चू स्स) १०२, १५२
चन्-चङ्-तो (संस्कृति-उपमन्त्री) ४१, ४५
चन्दन-पात्र (छिङ्-राजप्रासाद में) १६३
चन्दन-मूर्तियां १२३
चन्द्रकला (स्तूप पर चित्रित) ६१
चन्द्र-प्रतिबिम्बी स्तूप १४६
च-युन् भिक्षु ११६
च-वू १५०
चाओ-छिङ्-लू स्स १५२
चाओ-युङ्-चुङ् (दुभाषिया) १२
चाङ्-काइ-शेक् २४
चाङ्-च्या-खोउ १३०
चान्द्र तिथि (चीनी समाचारपत्रों में) १२५
चाय-भवन (कुम्-बुम् में ཇ་ཁང་) ६३
चिङ्-चोउ १४४
चिङ्-छिङ् १०६
चिङ्-त्वेन् (अवतंसक सम्प्रदाय के आचार्य) १५३
चिङ्-लिङ् (नान्-चिङ् बौद्ध-सूत्र-मुद्रणालय) १४३
चिङ्-शान् स्स ११२, ११५ (लुङ्-मन्), १५१ (वू-थ्वे मण्डल में), १५६
चिङ् शान् स्स शिलालेख ११५
चिङ्-हाइ प्रान्त ६०
चिन्-आन् स्स १४६, १४७
चिन्-काङ्-खू वज्रगुहा (वू-थाइ-शान् में मञ्जुश्री का निवासस्थान) १५८
चिन्तामणि २८, ११५, ११६, १५३ (त्रयोदशभूमिक स्तूप-शिखर पर)
चिन्-त्सु स्स (वू-थ्वे मण्डल में) १५१
ची (संस्कृत के प्राध्यापक) ४३, ४६, १३२
ची-कुङ् (श्वेन्-च्वाङ् के मुख्य अनुवादक-सहायक) १०३
ची-कुङ् स्तूप (शिङ्-च्याओ स्स में) १०३
चीन की महाभित्ति २६, ४७
चीन में संस्कृत ४५
ची-नान् १४४
चीनी आचार्यों के ग्रन्थ १२६
चीनी त्रिपिटक – 'त्रिपिटक' देखिए
चीनी, मञ्जु, मोंगोल और भोट में राजाश्म शिलाओं पर उत्कीर्ण युङ्-हो-कुङ् का इतिहास २७
चीनी मुद्रलिख १६२
चीनी लेख १२३ (बुद्धमूर्ति पर), १३१
चीनी संसद् १२७
ची-लू भिक्षु (अध्यक्ष, श्वेताश्व विहार) ११०
ची-श-लिन् (अध्यक्ष, प्राच्य-भाषा-विभाग, पेइचिङ् विश्वविद्यालय) ४१
ची-सा त्रिपिटक के ७००० खण्ड (शान् सी के पुस्तकालय में) १०१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चुङ्-निङ् १११
चू-चाङ् (=मुक्ता नदी) ११
चू-च्यान् (नगर) ६८, ६९, ८९
चू-छू-मङ्-शुन् (४५९-५०० विक्रम, तुन्-ह्वाङ् की एक गुहा के निर्माता) ६१
चूता इतो (प्राध्यापक, तोक्यो विश्व-विद्यालय) ५९
चू-त्सान् (क्वान्-ची के अध्यक्ष जिनकी योग में रुचि है) २९
चू-युङ्-क्वान् (महाभित्ति का उत्तर द्वार) १३०, १३१
चू-हुङ् (संस्थापक, युन्-छी स्स) १५३, १५४
चोउ-अन्-लाइ (चीन के प्रधान मन्त्री) ४१, १२५, १३८, १४०
चोङ्-ख-प ५० (पीतल की मूर्ति), ९१, ९३ (पाद-चिह्न), ९४ (ग्रन्थावली), ९५
चोने कन्जूर ९३ (कुम्-बुम् में)
च्या-छिङ ११०
च्येन्-त्वेन् ६१
च्वाङ-त्सुङ सम्राट् ११०

छ

छङ-क्वान् (अवतंसक-सूत्र के विद्वान् टीकाकार) १५८
छाङ, कुमारी (दुभाषिन) ८९
छाङ (अध्यक्ष, तुन्-ह्वाङ गवेषणालय) ७०, ७५, १४२
छाङ-त्येन्-योउ (संयान-अभियन्ता) ४७
छाङ-पेइ-लो ("चीन में संस्कृत शब्दों का प्रयोग" पर कार्य कर रहे हैं) २५
छाङ-मिङ-तान् (केन्द्र-प्रान्त-सम्पर्काधि-कारी) ४६
छान् त्सुङ (=ध्यान सम्प्रदाय) १४३
छान् नदी १०३
छा-यिङ १०९
छिङ कन्जूर १०२ (छिङ् वंश के समय भोट में १०० भागों में प्रकाशित। क्वान्-जन् स्स में)
छिङ्-कालीन श्वेन्-च्वाङ् का चित्र ७९
छिङ् महाराज १२४
छिङ् राजप्रासाद १२३
छिङ्-लिन् तुङ् (फ़ेइ-लाइ-फङ्) १५५
छिङ्-ल्याङ् १५७
छिङ्-ल्याङ्-प्राचीन-अभिलेख १५७
छिङ्-ल्याङ्-विस्तृत-अभिलेख १५७
छिङ्-ल्याङ् शान् (=वू-थाइ शान्) (मञ्जुश्री-निवास) १५६, १५७
छिङ् वंश ७४, ७६ (तुन्-ह्वाङ् में छिङ् वंश कालीन मूर्तियां), १२३ (इतिहास)
छी-यूङ्-था त्रयोदशभूमिक स्तूप (=पूर्वीय पो-मा स्स) ११०
छी-श्या स्स (नान्-चिङ् में) १४४
छी-श्या स्स-शिलालेख १४४
छ्येन्-फो (=सहस्र-बुद्ध-गुहा, लुङ-मन् में) ११३
छ्येन्-थाङ नदी १५३
छ्येन् महाराज १५०
छ्येन्-लुङ (मञ्जु सम्राट्) २८ (विक्रम १८०१ का शिलालेख), १६०
छ्येन्-शी स्स (लुङ-मन् में) ११३
छ्येन्-शू राजा १५०, १५१
छ्वि-कुङ ११६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज

जन्-पो-सङ (बौद्ध) ३८
जन्-वाङ-फ़ू-क्वो-चिङ् ग्रन्थ (संस्कृत से अनूदित प्रज्ञापारमिता का अंग) १२५
जम्बुद्वीप १५६
जलकूप (वृद्ध भिक्षु भेड़ियों को पानी देता है) ८८
जलयान-उद्योग १४६
जलोन्मज्जनवस्त्र कलाशैली (=थाओ-चुङ्-त-थाओ-इ-थ्सु-श्वी) ७५
जवाहरलाल नेहरू २, १४, ३६, १३८, १५१, १६४
जातक-कथा-चित्र (लुङ्-मन् में) ११५
जापानी ग्रन्थ १५७
जापानी भिक्षु १५८
जाम्यङ् कुनसि खाङ्(འཇམ་དབྱངས་ཀུན་གཟིགས་ཁང་) ६३
जावा-निवासी श्रमिक नेता (सिद्धासन लगाते हुए) १०
जीवित बुद्ध ६२, ६५
जीवित-बुद्धोपदेश-भवन (फ़ा-शी स्स में) ५०
जेतवन (युङ्-हो-कुङ् के लिए प्रयुक्त) २८
जेहोल् (मञ्चूरिया में) ४३, १२३
जो-खाङ् (कुम्-बुम् में) ६३
ज्ञानगुप्त (चीन में भारतीय आचार्य) १०४
ज्योति (क्वान्-जन स्स में २५० वर्षों से सतत प्रज्वलित) १०२
ज्योतिष-विद्यालय (कुम्-बुम् में) ६२, ६४
ज्योतिष अध्ययन-अध्यापन (युङ-हो-कुङ में) २७
ज्योतिष ग्रन्थ ६४
ज्योतिष-विद्यालय (कुम्-बुम् में) ६४

ट

टण्डन (दूतावास, सिंगापुर) १६३

त

तञ्जूर (भोट भाषा में)—देखिए देर्गे त°, नार्थाङ त°, पेङ-चिङ त°
तञ्जूर (मोंगोल भाषा में) २८
तथागत-सितातपत्रे अपराजित-महाप्रत्यंग पारमी-मिद्ध नाम धारणी (फ़ा-शी स्स में पाठ) ५०
तथागतासन (पञ्चश्रृङ्ग) १५८
तन्त्र का अध्ययन-अध्यापन (युङ-हो-कुङ में) २७
तन्त्रविद्यालय (कुम्-बुम् में) ६२
तपस्वी भिक्षु ११०
ता-अर् स्स (=कुम्-बुम्) ६१-६५
ताइ-त्सुङ सम्राट् १०२ (चीनी में योगाचारभूमिशास्त्र के भूमिका लेखक), १०४, १०५, ११५
ताइ-पिङ क्रान्ति १४५, १५६
ताओ-ग्रन्थसंग्रह (पेइ-चिङ प्रासाद में) १२७
ताओ मन्दिर ६६
ताओ-यिन् (योगाचार-दर्शन के विद्वान्) १०५
ताओ-यिन् धर्माचार्य का शिलालेख १०५
ताङ्त्--देखिए शी-श्या

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ताङ-युङ-तुङ (पेइ चिङ वि. वि. के दर्शन विभाग के अध्यक्ष; 'बुद्ध-धर्म का इतिहास' के लेखक) ३८
ता-च (ध्यान-सम्प्रदाय के आचार्य) १०५
ता-चाओ-व्-ल्याङ स्स (भोट नाम དཔག་བསོད་གླིང་) ५०
ता-चिङ ग्राम १२१
ता-च्येन्-फू स्स (शी-आन्) ९९
ता-ता धर्माचार्य (योगाचार, विनय और सुखावती के महापण्डित) १०६
ता-तुङ (शान्-सी प्रान्त की राजधानी) ४७, ५१
ता-तुङ (=महती गुहा, लुङ-मन् में) ११६
ता-तुङ शिलालेख (लुङ-मन् में) ११६
ता-था-ख्वेन् स्स (में सम्राट् अशोक का स्तूप) १५८
तान्त्रिक गुहा (तुन्-ह्वाङ में भोट गुहा) ७८, ८५
तान्त्रिक-बीज-पुस्तक ४३
ता-पाई (लिङ-यिन् स्स के महन्त) १५१
ता-फ़ङ-श्येन् स्स (लुङ-मन् में) ११७
ता-फ़ङ-श्येन् स्स शिलालेख (लुङ-मन् में) ११७
ता-फ़ू स्स (=महाबुद्ध-मन्दिर) १६०
ता-फो-तुङ गुहा (युन्-काङ् में) ६२
ताम्र मूर्तियां (शी-काङ्) ९२
ता-यन्-था (शी-आन् में) ९७ (भारतीय सूत्रों और मूर्तियों की रक्षा के लिए), ९८ (वन्य हंस का महामन्दिर)
ता-यन्-था-इतिहास ९८
ता-ली १०४
ता-शिङ्-शान् स्स १०४
तिङ्-ह्वी-छान्-श (=समाधि-प्रज्ञा-ध्यानाचार्य उपाधि) १०६
तुङ्-च्याओ स्स (भिक्षुणी मन्दिर) ३०
तुङ्-था-तुङ् (युन्-काङ्) ६१
तुङ्-लिन्-विहार १०६
तुन्-ह्वाङ् ४२ ६०, ६१, ६६, ७१-८८, १०१, १५७ (वु-थाइ-शान् भित्ति-चित्र)
तुन्-ह्वाङ्-कला ८३
तुन्-ह्वाङ् की सहस्रवर्ष प्राचीन छापें १०१
तुन्-ह्वाङ् के कलाकार युन्-काङ् में ६१
तुन्-ह्वाङ् गवेषणालय ७१, ८०
तुन्-ह्वाङ् गवेषणालय में खण्डित अंश ७३
तुन्-ह्वाङ् गुहाएं ९९
तुन्-ह्वाङ् ग्रन्थ ७४, १०० (जापान में प्रकाशित)
तुन्-ह्वाङ् चित्र (शी-आन् के विश्रान्तिगृह में) ९७
तुन्-ह्वाङ् दर्शक पञ्जिका ८४
तुन्-ह्वाङ् नगर ८०
तुन्-ह्वाङ् पर जापानी पुस्तक ७८
तुन्-ह्वाङ् बौद्ध कला पञ्जिका (तुन्-ह्वाङ् गवेषणालय) ८२
तुन्-ह्वाङ् भित्तिचित्र ७४
तुन्-ह्वाङ् लामा ८८
तुन्-ह्वाङ् वलिताएं ४४, ७२, ७४, १०१ (शी-आन् विश्वविद्यालय के पुस्कालय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में), १०१ (तू-शू-क्वान् पुस्तकालय में), १४७ (यू-फ़ू स्स में), १६१ (सुन्-यात्-सन्-विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में), १०१ (फ़ू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स में)
तुन्-ह्वाङ्-वलिता-सूची ४४
तुन्-ह्वाङ् शिलालेख ८४
तुन्-ह्वाङ् शिवमूर्ति ५६
तुन्-ह्वाङ्-शैल-शिखर ८६
तुन्-ह्वाङ्-संस्था ८७
तुषार भाषा द्वारा संस्कृत शब्द चीनी में ४६
तू-शुन् (अवतंसक-सम्प्रदाय के प्रवर्तक) १०६
तू-शू-क्वान् (=शान्-सी प्रान्त का पुस्तकालय) १०१
त्रयोदशभूमिक स्तूप (लू-फ़ो स्तूप) १५३
त्रिपिटिक (चीनी भाषा में) ३० (तुङ्-च्याओ स्स में), ३१ (तुङ्-च्याओ स्स में जिह्वारुधिर से), ६४ (अधो ह्वा-यन् स्स में), ६६ (लान्-चाओ स्थित बौद्ध-सभा-पुस्तकालय में मिङ् वंश का संस्करण), १०० (शी-आन् विश्वविद्यालय-पुस्तकालय में), १०१ (शान्-सी प्रान्त के तू-शू-क्वान् पुस्तकालय में ची-सा के ७००० से अधिक खण्ड, मिङ् संस्करण आदि छः संस्करण हैं), १२४ (मुक्देन् के नगर पुस्तकालय में सुङ् य्वेन्, छिङ् संस्करण), १४७ (चिन्-आन् स्स में ची-सा, शाङ्-हाइ और ताइ-शो संस्करण), १४७ (यू-फ़ू स्स में ची-सा संस्करण की मूल प्रति), १५०
त्रिपिटक-परिशिष्ट १२८, १३८
त्रिपिटक-मुद्रण ऐतिहासिक शिलालेख (वो-लुङ् स्स में) १०५
त्रिपिटक-सूची (नांजो) १३२
त्रिभूमि-स्तूप (श-था-तुङ् गुहा, युन्-काङ् में) ६१
त्रिमूर्ति ११२, ११५ (लुङ्-मन् में), १५६ (त्रिमूर्ति बुद्ध) (देखिए—बुद्ध त्रिमूर्ति)
त्रिमूर्ति वृषभारूढ शिव ५६
त्रिरत्नविवरण ६० (युन्-काङ् गुहाओं की खुदाई पर लिखा ग्रन्थ)
त्रिशूलधारी शिव ५६, १४७
त्स-लिन् भिक्षु १५०
त्सु-मुङ् भिक्षु १४६

थ

थाइ-त्सुङ् सम्राट्—देखिए ताइ-त्सुङ्
थाइ लिपि—भाषाविज्ञान-पीठ-पुस्तकालय में प्राचीन थाइ लिपि में हस्तलिखित पुस्तिका २६
थाइ-वू सम्राट् ५६, ६१
थाइ हो के सप्तम वर्ष का शिलालेख (युन्-काङ् की ११वीं गुहा में) ६३
थाओ-चुङ्-त-थाओ-इ-थ्सु-श्वी (=जलोन्मज्जन-वस्त्र-कला-शैली, तुन्-ह्वाङ्) ७५
थाङ्-कालीन गुहा (लुङ्-मन् में) ११२
थाङ्-कालीन मूर्तियां (तुन्-ह्वाङ् में) ७५
थाङ्-कालीन हस्तलिखित ग्रन्थ (तू-शू-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्वान् पुस्तकालय में) १०१
थान्-याओ भिक्षु ५९ (युन्-काङ् की प्रथम ५ गुहाएं खोदीं), ६१
थो-पा (तार्तार् जाति) ५२
थ्येन्-आन्-मन् १६
थ्येन्-थाइ (सम्प्रदाय) १४४, १५०, १५२
थ्येन्-थाइ-शान् १५७
थ्येन्-थुङ् स्स (वू-ग्वे मण्डल में) १५१
थ्येन्-शोउ ११६
थ्येन्-साङ् (फू-तू स्स का लामा) ४५
थ्स-अन् स्स (शी-आन् में) ९७, १०३
थ्स-अन् स्स अनुवाद-भवन १०३
थ्स-अन् स्स के महान् त्रिपिटक धर्माचार्य (श्वेन्-च्वाङ्) ९७
थ्साओ-थाङ् स्स (कुमारजीव के अनुवाद-कार्य का मुख्य स्थान) १०६

द

दलाइ लामा ३० (फू-थी स्स में), ३५, ३६ (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में), ९१, ९२, १०२ (क्वान्-जन् स्स में), १४७
दाह-संस्कार १०३ (भारतीय पद्धति से विद्वान् ची-कुङ् का), १०४ (आचार्य दिवाकर का)
दिवाकर (भारतीय पण्डित) १०४, १५७
दुन्दुभि-भवन (शी-आन् में) ९७
दुभाषिया १२, १३
दुल्वा ९२
देर्गे कन्जूर १४ (पेइ-चिङ् पुस्तकालय में), ३० (सुङ्-चू स्स में), ९३ (कुम्-बुम् में)
देर्गे तन्जूर १४ (राष्ट्रीय-अल्पसंख्य जाति-भाषा-साहित्य-विभाग में), ३० (सुङ्-चू स्स में), ९३ (कुम्-बुम् में)
देवनागरी लिपि में ओं मणि पद्मे हूं (लिङ्-यिन् स्स में) १५५
देवयुग्म ११७
देवराज ११८
दोलोनोर् (मञ्चूरिया में) ४३
द्वाचत्वारिंशदध्याय-सूत्र १०९, ११०, १५३

ध

धर्म का अध्ययन-अध्यापन (युङ्-हो-कुङ् में) २७
धर्मचक्र १५६
धर्मचक्र और मृग ४९
धर्मरक्ष १०९ (पो-मा-स्स में), ११०
धर्म-विद्यालय (कुम्-बुम् में) ९२
धर्मनन्दी विहार ४९
धर्माचार्य १०४, ११८
धातुगर्भ-सप्तभूमि स्तूप ७
धातुमूर्तियां ४०
धारणियां (तुन्-ह्वाङ् में भोट) ७३
धारणी ग्रन्थ १२० (युङ्-हो-कुङ् में चार भाषाओं में), १२३ (श-सङ् स्स में)
धारणी-जप १५४
धारणी-लिखित पत्र १५०
धारणी-लेख १३१
धारणी-स्तम्भ १०४ (थाङ्-वंशीय, काइ-य्वेन् स्स में), १४६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धार्मिक ग्रन्थ (पेइ-चिङ्-पुस्तकालय में) १२७
धार्मिक चित्र (तुन्-ह्वाङ् में) ७९
धृतराष्ट्र (लोकपाल) १३१
ध्यान १५२, १५४
ध्यानाचार्य १०५, ११८
ध्यान-सम्प्रदाय (=छान्-त्सुङ्) १४३, १५२, १५४
ध्यान-सम्प्रदाय का उत्कर्ष १०६
ध्यान-सम्प्रदाय के आचार्यों की मूर्तियां १५६

न

न (विरोचन) १५८
नगर-पुस्तकालय (मुक्देन्) १२३
नतजानु-सिंह-गुफा (लुङ्-मन् में) ११३ ११६
नन्दी (चिन्-आन् स्स में) १४७
नम्मो ओमितोफ़ू (नमोऽमिताभाय का जप १६०
नरेन्द्रयशस् (चीन में भारतीय आचार्य) १०४
नवभूमिक काष्ठ-स्तूप (तुन्-ह्वाङ् में) ८०
नवशब्द-निर्माण (चीन में) २३, २८
नाग-कन्याओं के चित्र ६४, १३१
नागदन्त मूर्ति (पञ्चोत्स मन्दिर में) ९६
नागपुर १६४
नागसेन (अर्हत्) ४०
नागार्जुन १४४
नान्-चिङ् २९ (प्रथम मिङ राजा की समाधि), १४२
नान्-चिङ्-अद्भुतागार १४२
नान्-चिङ्-नगरपालिका १४६
नांजो की त्रिपिटिक-सूची १३२
नाममुद्रा (सुदर्शना के लिए) १६१
नारायण-गुहा (मञ्जुश्री का निवास-स्थान) १५८
नारायण-गुहा-लेख १५९
नारायणचन्द्र सेन (पेइ-चिङ् विश्व-विद्यालय में भारतीय विद्यार्थी) २९
नार्थाङ् कञ्जूर १४ (पेइ-चिङ् पुस्तकालय में), ३४ (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में), ४९ (फ़ा-शी स्स में), ९३ (कुम्-बुम् में), ९४ (कुम्-बुम् के आयुर्वेद-विद्यालय में)
नार्थाङ् तंजूर १४ (राष्ट्रीय-अल्पसंख्य-जाति-भाषा-साहित्य-विभाग में), ४९ (फ़ा-शी स्स में). ९३ (कुम्-बुम् में, यहां हस्तलिखित नार्थाङ् भी है)
निङ्-श्या प्रान्त १२६
निमन्त्रण-पत्र १
निर्वाण-समाधि २८
नोलमेघ मन्दिर ४०
नीलाम्बर भिक्षु (वू-थाइ-शान् में) १५८
नीलोत्पल-गुहा (लुङ्-मन् में) ११६
नेहरू —देखिए जवाहरलाल नेहरू
न्याय-चर्चा (विहारों-मन्दिरों में) ४६

प

प (अमितायु) १५८
पक्षि-कूजन सुनने के लिए भवन (ग्रीष्म प्रासाद में) ४४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पञ्चदशभूमिक मन्दिर (श्याओ-यन्-था) ६६

पञ्चभूमिक स्तूप १०२ (वृक्ष को काट छांट कर क्वान्-जन् स्स में), ११६, १४४ (छी-श्या स्स में), १४५ (छी-श्या स्स में शरीर स्तूप), १४६ (श-शान् में)

पञ्चमूर्ति—देखिए बौद्ध पञ्चमूर्ति

पञ्चवंशकालीन गुहा (तुन्-ह्वाङ् में) ७६

पञ्चवंशकालीन चित्र (तुन्-ह्वाङ् में) ७४

पञ्चवंशकालीन स्तूप (तुन्-ह्वाङ् में) ७२

पञ्चवर्षीय योजना (चीन की) १२८

पञ्चशत-अर्हत्-मन्दिर (=वू-पाइ-लो-हान्-था) १६०

पञ्चशील १४

पञ्चश्रृङ्ग (=वू-थाइ) १५७

पञ्चश्रृङ्ग वर्णन १५८

पञ्चोत्स (लान्-चाओ में) ८९

पञ्चोत्स-मन्दिर (लान्-चाओ में) ९६

पञ्छेन् लामा ३० (फू-थी स्स में), ३६ राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में), ९१, १०२ (क्वान्-जन् स्स में), १४७

पत्र-निर्माणो (क्वाङ्-चोउ में) १५९

पद्मगुहा (लुङ्-मन् में) ११६

पद्माकार प्रभामण्डल ११७

पाताललोक के दृश्य (ग्रीष्म-प्रासाद के त्रिभूमिक रंगमण्डप में) ४४

पा-ता-लिङ् १३०

पा-थू-सङ् (सुङ्-चू स्स के ज्येष्ठ लामा) ३०

पाद-चिह्न (चोङ्-ख-प के) ९३

पारस देश की कला (चीन में) ११४

पारिभाषिक शब्दावलि समिति २८

पिङ्-याङ्-तुङ् (लुङ्-मन् में) ११४

पितृपूजा के विशाल भवन २९

पीतनदी १२७

पीत मन्दिर (=श-सङ् स्स, मुक्देन्) १२३

पीताम्बर भिक्षु (वू-थाइ शान् में लामा) १५८

पीनांग १६३

पी-विन्-स्स=नीलमेघ-मन्दिर ४०

पुई भाषा की लिपि २६

पुण्डरीकसूत्र—देखिए सद्धर्मपुण्डरीकसूत्र

पुनीत-भूमि सम्प्रदाय—देखिए सुखावती सम्प्रदाय

पुरातन साहित्य-विक्रयशाला १२८

पुरावशेष-विभाग ९५

पुरुषोत्तम प्रसाद (पेइ-चिङ् विश्व-विद्यालय में हिन्दी के अध्यापक) ३८

पू-क्वाङ् स्स १०५

पू-खुङ् (=अमोघवज्र आचार्य) १०४

पू-खुम् (अनुवाद) १२५

पू-छी आचार्य १०५

पूजा कोष्ठ (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में भोट और मोंगोल विद्यार्थियों के लिए) ३४

पू-ताई (के रूप में मैत्रेय) १५६

पू-थो-शान् (अवलोकितेश्वर का निवास) १५७

पूर्वीय पो-मा स्स (=छी-युङ्-था) ११०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पेइ-क्वाङ्-त्रू (अध्यक्ष, श-सङ् स्स) १२३
पेइ-चिङ् १२, १२०, १२५, १४२
पेइ-चिङ् कञ्जूर १४ (पेइ-चिङ् पुस्तकालय में), ४८ (शी-ली-थू-चाओ में), ४९ (फ़ा-शी स्स में), ९३ (कुम्-बुम् में)
पेइ-चिङ् की शासन-चालित वस्त्र-निर्माणी संख्या १ ३१
पेइ-चिङ् के आधुनिक भवन ३७
पेइ-चिङ् तंजूर १४ (पेइ-चिङ् पुस्तकालय में), ४९ (फ़ा-शी स्स और शी-ली-थू चाओ में), ९३ (कुम्-बुम् में), १२९ (सरस्वती विहार में आया)
पेइ-चिङ्-थू-षू-क्वान् = पेइ-चिङ् पुस्तकालय
पेइ-चिङ् पुस्तकालय १४, १५, १२५
पेइ-चिङ् प्रासाद १२७
पेइ-चिङ् भारत दूरभाष २२
पेइ-चिङ् विश्वविद्यालय ३८
पेइ-लिन् (शी-आन् में शिलावन) १०३ (योगाचारभूमिशास्त्र की भूमिका-शिला सुरक्षित है), १०५
पोलियो (P. Pelliot) ७३, ७७, ७९, ८७
पो-मा स्स (लो-याङ् में) १०८
पो-यन् (सेनापति) १५५
पो-श (उपाधि, कुम्-बुम्) ९५
प्रज्ञा १५४
प्रज्ञापारमिता १२५
प्रज्ञापारमिता-हृदय-सूत्र २३ (मोंगोल में), ५०, १०३ (शिलालेख)
प्रतिपदा-पाठ (फ़ा-शी स्स में लामाओं द्वारा) ५०
प्रथम मई उत्सव १६
प्रथम मई के घोषनाद १८-२१
प्रदर्शनी १२५ (भारत और चीन के सांस्कृतिक सम्बन्ध), १६४ (दिल्ली में)
प्रधान मन्त्री (चीन के) ४१, १२५, १३८, १४०
प्रभा (पेइ-चिङ् विश्वविद्यालय में हिन्दी की अध्यापिका श्रीमती~) ३८
प्रभातरत्न (युन्-काङ् में) ६१, ६३
प्रभातरत्न-स्तूप ६१
प्रभूतरत्न (युन्-काङ् चित्रों में) ५७
प्रासाद २३
प्रासाद-पुस्तकालय १५, २४

फ

फङ्-कुङ्-श (चित्रकार) १६१
फङ-श्येन् स्स (लुङ्-मन् में) ११७
फङ्-श्येन् स्स-शिलालेख (लुङ्-मन् में) ११७
फ़न्-क्वो-कुङ्-शिलालेख १०५
फाग्स्पा (मोंगोल लिपि के निर्माता) १३१
फाग्स्पा (तुन्-ह्वाङ् में षड्-भाषा-शिलालेख) ८४
फाग्स्पा (मोंगोल)-लेख १३१
फ़ा-त्सुङ् ग्रामोपाध्याय (युन्-काङ्) ६३
फ़ान् गुलिक् १३२
फ़ा-शी स्स (= धर्मनन्दी विहार) ४९
फ़ा-श्येन् (अनुवादक) १३२
फिङ्-छङ् (= ता-तुङ्) ५१, ५३
फ़ी-लू-को भवन (पो-मा स्स में) ११०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ़ू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स १००
फ़ू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स-पुस्तकालय १०१
फ़ू-छिन् वाले च्येन् य्वेन् के द्वितीय वर्ष =४२३ विक्रम ६१
फ़ू-तू स्स ४५
फ़ू-तू स्स-पुस्तकालय ४५
फ़ू-थी स्स (=बोधि-विहार) ३०
फेइ-चाङ्-फाङ् (त्रिरत्नविवरण के लेखक) ६०
फ़ेइ-लाइ-फङ् (पर्वत-गुहाएं) १५१, १५२, १५४
फ़ेइ-लाइ-फ़ङ्-कला १५६
फ़ो-लाइ गुहा (युन्-काङ्) ५५
फ़ोल्कर (बर्लिन् अद्भुतागार के अधिकारी Völker) २८
फ़ो-हाइ स्स ११८

ब

बम्बई १६४
बहुभाषा-कोष १५
बहुविभागीय विक्रयागार ६
बाण्डुङ् सम्मेलन ४१
बामियान् (अफगानिस्तान में) ५२
बुद्ध १०० (त्रिभंग मूर्ति, ७वीं शती, भारत से चीन में), ११७, १२३
बुद्ध की प्रभास्वर मूर्तियां (ग्रीष्म-प्रासाद में) ४४
बुद्ध की महती मूर्ति (तुन्-ह्वाङ् में) ७९
बुद्ध के शरीरांश (लंका से) २९
बुद्धगया से बोधिवृक्ष ६
बुद्धचरण (वो-लुङ् स्स में) १०५
बुद्ध-जन्मदिवस ८८ (तुन्-ह्वाङ्), १६०
बुद्ध-जन्मोत्सव (तुन्-ह्वाङ्) ७९
बुद्ध-त्रिमूर्ति ११२, ११५ (लुङ्-मन् में), १५६
बुद्ध-धर्म प्रचारकों की मूर्तियां (कुम्-बुम् में) ९३
बुद्ध-धर्म (राज्य-धर्म के रूप में) ५३
बुद्ध-नाम-जप १५३
बुद्ध-परिमल-स्तम्भ मन्दिर ४४
बुद्धपाल (भारतीय भिक्षु) १५६, १५७, १५८
बुद्ध-भवन (उपरि ह्वा-यन् स्स में) ६३
बुद्ध-मूर्ति ५ (१५०० वर्ष पूर्व भारतवर्ष से आई), ६१ (स्वी-ता-फो तुङ् गुहा में), ७९ (तुन्-ह्वाङ् में ६६ हाथ ऊंची), ९१ (बोधिवृक्ष पर), १०१ (तू-शू-क्वान् पुस्तकालय में ५०० वर्ष प्राचीन), १०२ (६ठी, ७वीं शती की, अद्भुतागार में), १०२ (क्वान्-जन् स्स में थाङ् वंश कालीन चन्दन की, भारतवर्ष से आई कांस्य की), १०९ (पो-मा स्स में), ११३ (लुङ्-मन् में), १४३ (हान् वंश की), १५४ (महास्थामप्राप्त मुकुट में), १६०
बुद्ध लेटे हुए (तुन्-ह्वाङ् में) ७९
बुद्ध-विहार-निर्माण-पुण्य ११८
बुद्ध-वृक्ष (तुन्-ह्वाङ् में) ७९
बुद्ध-शरीर (लू-फ़ो स्तूप) १५३
बेकाल झील ५३
बोधि-धर्म (भारतीय आचार्य) १०७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बोधि-पत्रों पर अर्हतों के चित्र १०
बोधिवृक्ष ६, ६१ (कुम्-बुम् में), ६३
बोधिवृक्ष-स्तूप (कुम्-बुम् में) ६३
बोधिसत्त्व ७६ (तुन्-ह्वाङ् में), १०३, ११४, ११५ (आत्माहुति करते हुए), ११६, ११७, ११८, ११६, १२३, १५४
बोधिसत्त्वचर्यावतार ५०
बोधिसत्त्व युग्म ११५, ११७
बौद्ध आचार्यों के इतिहास-शिलालेख १०५
बौद्ध उपदेश १५४
बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार ८४
बौद्ध पञ्चमूर्ति (लुङ्-मन् में) ११७
बौद्ध पञ्चमूर्ति-शिलालेख ११७
बौद्ध मन्दिर (मण्डल में) १०४
बौद्ध मूर्तियां ६६ (चू-च्यान् में), १४५ (पर्वतोत्कीर्ण)
बौद्ध विद्या का केन्द्र (ता-शिङ्-शान् स्स) १०४
बौद्ध संग्रह (नगर-पुस्तकालय, मुक्देन्) १२४
बौद्ध सभा (लान्-चाओ में) ६६
बौद्ध सभा पुस्तकालय ६६
बौद्ध सम्प्रदाय १५४
बौद्ध सूत्र ४४ (तुन्-ह्वाङ् वलिताओं में), १३२, १५५
बौद्धसूत्र-मुद्रणालय १४३
बौद्ध सूत्रों की अग्निपरीक्षा १०६
बौद्ध स्तूप (हाङ्-चोउ में) १५०
ब्रह्मा २४, १४७ (चिन्-आन् स्स में चतुर्मुख ब्रह्मा)

भ

भट्ट (लंका के स्फटचातु व्यापारी) १६३
भागवत पुस्तकालय भवन (अधो ह्वा-यन् स्स में) ६४
भानुचन्द्र वर्मा (पेइ-चिङ् विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्यापक) ३८
भारत-चीन-वीगूर सम्बन्ध २६
भारत-चीन सम्बन्ध ११४
भारतवर्ष १५७
भारतीय धर्मदूत (पों-मा स्स में) १०८
भारतीय पद्धति से दाह-संस्कार १०३
भारतीय प्रभाव (तू-शू-क्वान् अद्भुतागार) १०१
भारतीय भिक्षु (युन्-काङ् में) ६०
भारतीय मूर्तियां (चीन में) ६०, १००
भारतीय लिपि १३२
भारतीय श्वेन्-च्वाङ् (आचार्य रघुवीर के लिए) ४१, ६५, १३६, १४१
भाषाविज्ञान-पीठ २५
भाषाविज्ञान-पीठ पुस्तकालय २६
भिक्षुणी (तुन्-ह्वाङ् में) ८८
भिक्षुणी-विहार १५४
भैषज्यगुरु ५०, ६४, ६८
भोट कञ्जूर—देखिए कञ्जूर
भोट (षड्-भाषा-शिलालेख, तुन्-ह्वाङ् में) ८४
भोट-अंग्रेजी कोष (शरच्चन्द्रदास-कृत का चीन में पुनर्मुद्रण) ३६
भोट कला तथा साहित्य ११४, १५५
भोट काष्ठलिपियां (पेइ-चिङ् विश्वविद्यालय में) ३८
भोट-चित्र-गुहा (तुन्-ह्वाङ् में) ८६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भोट-चीनी कोष (फू-थी स्स में निर्माणाधीन) ३०
भोट तान्त्रिक गुहा (तुन्-ह्वाङ् में) ७८
भोट नृत्य ६०
भोट पूजा १५६
भोट बौद्ध साहित्य (शी-आन् विश्वविद्यालय के पुस्तालय में) १००
भोट भाषा ६०
भोट भाषा का अध्ययन-अध्यापन (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में) ३४, ३५
भोट में ओं मणि पद्मे हूं (तुन्-ह्वाङ् में) ८५
भोट, मोंगोल पूजा-गृह (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में) ३५
भोट लेख ७८ (तुन्-ह्वाङ्), १२३ (बुद्ध-मूर्ति पर) १३१ (शिलालेख)
भोट स्तूप १३१

म

मगध ११४, १५४
मगध के भिक्षु कलाकार (युन्-काङ् में) ६०
मञ्जु १३६, १४१
मञ्जु कञ्जूर के ६० भाग १५
मञ्जु ग्रन्थ १००(शी-आन् विश्वविद्यालय पुस्तकालय में), १२६ (पेइ-चिङ् विश्वविद्यालय में)
मञ्जु-चीनी कोष १५
मञ्जु त्रिपिटक १५
मञ्जु में बौद्ध साहित्य १५
मञ्जु-मोंगोल ग्रन्थों का सूचीपत्र २४
मञ्जु लिपि के आलंकारिक रूप १५
मञ्जु लेख (बुद्धमूर्ति पर) १२३
मञ्जुश्री ६३ (कुम्-बुम् में), ६६, १५६, १५७, १५८
मञ्जुश्री-उपासना १५७
मञ्जुश्री का धर्मोपदेश (युन्-काङ् की छठी गुहा में) ६२
मञ्जुश्री का निवास १५६, १५७ (वू-थाइ शान्), १५८ (चिन्-काङ् खू वज्रगुहा और नारायण-गुहा में)
मञ्जु सम्राट् छ्येन्-लुङ् १६०
मञ्जु साहित्य (दशसहस्र खण्ड) १५
महती गुहा (=ता-तुङ्, लुङ्-मन् में) ११३, ११६
महाकाय धूपपात्र १४६
महाकाल ६३(कुम्-बुम् में), १४७ (चिन्-आन् स्स में)
महाकाल-चित्र ५०
महाकाल-मन्दिर (चीनी में—महाकाल-म्याओ) ४५
महा-बुद्ध-मन्दिर (=ता-फू स्स) १६०
महाभित्ति २६, ४७, १३०
महायान १४४
महा-रत्न सञ्चय-सूत्र २३
महास्थामप्राप्त ६३ (युन्-काङ् में शिलालेख), १५४ (मूर्ति)
महा ह्वा-यन् स्स=अधो ह्वा-यन् स्स ६४
माओ-त्स तुङ् १, १६, २६ (~और श्वेन्-च्वाङ् की भारत-यात्रा-पुस्तक), १२५, १५१, १६१
मातंग (पो-मा स्स में) १०६
मातंग-मूर्ति-कोष्ठ-भित्तिलेख १०६
माध्यमिक शास्त्र १४४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मायूरी-विद्याराज मूर्ति (यन्-श्या तुङ् में) १५४
मार-दमन मुद्रा (में शाक्यमुनि) १५६
मार्को पोलो (अर्हत्) १६०
मार्क्सवाद (शिक्षा का आधार) ३४
मिङ् ७७
मिङ्-ती सम्राट् १०६
मिङ् राजा (द्वितीय) का शरीर समाधिस्थ २६
मिङ् राजाओं की समाधियां २६
मिङ्-लुङ् भवन १०३
मिङ्-शा शान् (तुन्-ह्वाङ् में पहाड़ी) ६०
मिङ् संस्करण का त्रिपिटक (तू-शू क्वान् पुस्तकालय में २००० खण्ड) १०१
मिङ्-सङ्-शाओ बौद्ध पण्डित (छी-श्या स्स के संस्थापक) १४४
मी-लो-फ़ो ८
मुक्देन् १५, १२१-१२४
मुक्देन् अद्भुतागार १२३
मुक्देन् की भेंट (धारणी-ग्रन्थ) १२३
मुक्देन् मन्दिर १२२
मुद्रणालय (कुम्-बुम् में) ६४
मुद्रलिख (चीनी भाषा का) १६२
मू-त्सुङ् सम्राट् १०६
मूर्ति-पीठ (तुन्-ह्वाङ् के) ८६
मूर्तियां, ४० (सुवर्ण-पत्र-मण्डित काष्ठमयी ५०८ मूर्तियां), १४३ (मृण्मय सुवर्ण-मण्डित १०,००० मूर्तियां)
मृगदाव ५८
मृच्छकटिक का चीनी अनुवाद २६
मेघनाद साहा ६६
मैत्रेय ६३ (युन्-काङ् में). ६३ (कुम्-बुम् में), ६६ (सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, रांगा, पञ्चधातु से बनी हुई), ११४, ११७, १३४, १३५, १५५, १५६ (पू-ताइ रूप में)
मैत्रेय-भवन (कुम्-बुम् में) ६३
मो-गाओ-कू (मरु-महागुहा) का शिला-लेख (तुन्-ह्वाङ् में) ८४
मोंगोल १३६, १४१
मोंगोल कञ्जूर—देखिए कञ्जूर
मोंगोल कला १५५
मोंगोल काष्ठलिपियां (पेइ-चिङ् विश्व-विद्यालय में) ३८
मोंगोल नृत्य ६०
मोंगोल पूजा १५६
मोंगोल भाषा ३४ (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में अध्यापन का विशेष प्रबन्ध), ३६ (प्रचारात्मक साहित्य), ६२
मोंगोल-भोट कोष १५
मोंगोल मन्दिर युङ्-हो-कुङ् २७
मोंगोल में ओं मणि पद्मे हूं (तुन्-ह्वाङ् में) ८५
मोंगोल में हृदय-सूत्र २३
मोंगोल लेख ७८ (तुन्-ह्वाङ् में), १२३ (बुद्ध-मूर्ति पर)
मोंगोल व्याकरण ५१
मोंगोल समाचारपत्र (राष्ट्रीय अल्प-संख्यक विद्यालय के वाचनालय में) ३६
मोंगोल साहित्य में संस्कृत शब्द ४५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

य

यन्-ई (संकलनकर्ता, छिङ-ल्याङ् विस्तृत अभिलेख) १५७
यन्त्रोपकरण-निर्माणी (मुक्देन् में) १२५
यन्-शोउ १५२ (त्सुङ्-चिङ्-लू = बौद्ध सम्प्रदायों के दर्शन का संकलनकर्ता), १५३ (लू-फ़ो स्तूप का संस्थापक)
यन्-शोउ समन्वय १५२
यन्-श्या तुङ १५४
यब्-युम् = नद्ध-युग (तुन्-ह्वाङ् में) ८६
यम २४
याकुशि-जी मन्दिर में बुद्धचरण १०५
याङ्-त्स (नदी) १२, १४२
याङ्-निङ् द्वार (शी-आन् में) ९९
याङ्-पिङ् १०८
याङ्-ल्येन्-चन्-च्या (मोंगोल भिक्षु) १५५
याङ् सम्राट् ६२
यिङ्-त्सुङ् सम्राट् १३१
यिशिकावा (युङ्-हो-कुङ् के अध्यक्ष, वृद्ध वैद्य) २७, १२०
यी छान्-चू भिक्षु (तुन्-ह्वाङ् में) ७३
युआन् चुङ्-श्येन् (भारत में चीनी राजदूत) १६४
युङ्-मन् ७१
युङ्-लुङ् ११६
युङ्-हो-कुङ् २७. १२०, १२५
युङ्-हो-कुङ्-आयुर्वेद-विद्यालय १२०
युङ्-हो-कुङ् का इतिहास २७
युङ् हो-कुङ् का फ़ो-छाङ् अर्थात् बुद्ध भाण्डागार २७
युङ्-हो-कुङ्-ज्योतिष तथा भूगोल विद्यालय १२०
युङ्-हो-कुङ्-तन्त्र-विद्यालय १२०
युङ्-हो-कुङ्-धर्मपाठ-विद्यालय १२०
युङ्-हो-कुङ् में आयुर्वेद, ज्योतिष, तन्त्र और धर्म का अध्ययन-अध्यापन २७
युङ्-हो-कुङ् में सम्राट् छ्येन्-लुङ् का शिलालेख २८
युङ्-हो-कुङ्-विद्यालय-पाठचक्रम १२५
यु-छ्वेन् विहार १४४
युन्-काङ् ४२, ५२-६३ (गुहाएं), ७३, ११२, ११३, १४५
युन्-काङ् शिलालेख ११२
युन्-छी स्स १५३
यू-ताओ-छ्वेन् (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में भोट-कोष बना रहे हैं) ३५
यू-फू स्स १४७
यू-ह्वा प्रासाद (में श्वेन्-च्वाङ् रहे) ९७
योग २९
योगाचार दर्शन पर टीका (१०० खण्डों में ची-कुङ् द्वारा लिखित) १०३
योगाचारभूमिशास्त्र का चीनी अनुवाद १०२
य्वे (अध्यक्ष, शी-आन् विश्वविद्यालय) ९९
य्वेन्-कालीन स्तूप (तुन्-ह्वाङ्) ८०
य्वेन्-कुङ् भिक्षु ११०
य्वेन्-तिङ् भिक्षु (हुङ्-फू स्स के अधिपति) १०३
य्वेन्-त्स (कोरिया के महाराज के पौत्र और श्वेन्-च्वाङ् के शिष्य) १०४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्वेन्-त्स स्तूप (शिङ-च्याओ स्स में) १०३
ग्वेन्-लाङ ११०
ग्वेन्-वंशीय शिलालेख (तुङ-ह्वाङ में, छः भाषाओं में) ८४
ग्वे-फ़ाङ-तुङ (=औषध-योग-गुहा, लुङ-मन्) ११८
ग्वे-फ़ाङ्-तुङ शिलालेख ११९

र

र (रत्नसम्भव) १५८
रघुवीर का अंकनी-चित्र ८५
रत्नखचित मूर्तियां (छिङ् राजप्रासाद में) १२३
रत्नसम्भव ६३, १५८
रवीन्द्रनाथ ठाकुर १२४, १२६
राघवन् (भारतीय राजदूत) १३, १३८
राजेश सरण (पेइ-चिङ् विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्यापक) ३८
राधाकृष्णन् १६४
रामायण के चीनी साहित्य में उल्लेख २६
राष्ट्रपति माओ त्स-तुङ्—देखिए माओ-त्स-तुङ्
राष्ट्रभावना २५
राष्ट्रभाषा २५
राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय (पेइ-चिङ् में) ३३-३७
राष्ट्रीय-अल्पसंख्य-जाति-भाषा-साहित्य विभाग १४
राहुल (अर्हत्) ४०
रुद्रस्वरूपा मूर्तियां ४५
रूसी भाषा (विश्वविद्यालय में) १००
Robert Heidenreich (येना Jena के पुराविशेषज्ञ) २८

ल

लक्ष बुद्ध मन्दिर=कुम्-बुम् ९१
लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास-प्रकरण का चीनी अनुवाद २६
लंका १६४
लंका के भिक्षु कलाकार (युन्-काङ् में) ६०
लंका से बौद्ध भिक्षु, चीन में ६१
लाओ-चुन्-तुङ् (लुङ्-मन् में) ११९
लाञ्छा लिपि ९३, १२२, १३१
लान्-चाओ (कान्-सू प्रान्त की राजधानी) ६७, ८९-९०, ९५
लाब्राङ् (कान्-सू प्रान्त में) ४३
लिगेती (बूदापेस्ट से प्राध्यापक) २८
लिङ्-यिन् स्स १४४, १५१ (वू-ग्वे मण्डल में), १५५
लिङ्-यिन् स्स-इतिहास १५१
लिन्-ची ध्यान सम्प्रदाय १५२
ली-इ-फु ९८
ली-उङ्-बिङ् (चीन के इतिहास का लेखक) ५२
ली-जन्-ज (कोरिया का दार्शनिक विद्वान्) १५०
ली-ते-ची (मोंगोल के विद्वान् और राष्ट्रीय-अल्पसंख्य-जाति-भाषा-साहित्य-विभाग के अध्यक्ष) १४
ली-श्याओ-लुन् ११५
लुओ-छाङ्-फेइ ("चीनी ध्वनिशास्त्र के अध्ययन में भारत की देन" के लेखक) २५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लुङ्-मन् ११२-१२०, १४५
लुङ्-मन् शिलालेख ११२
लुङ्-हुङतुङ् (फ़ेइ-लाइ-फङ्) १५५
लुङ्-हुङ् तुङ द्वार-चित्र-कथा १५४
लू-फ़ो स्तूप १५३
लू-शान् १०७
लेइ-फ़ङ् स्तूप (हाङ्-चोउ) १५०
लोकपाल धृतराष्ट्र १३१
लोकपाल-भवन (चिङ्-शान् स्स में) १५६
लोकेश्वर (कुम् बुम् में) ९३
लो-चाङ्-पेइ (अध्यक्ष, भाषाविज्ञान-संस्था) ४१
लो-त्सुन् भिक्षु ६०
लो-याङ् १०८, १११, ११२
लो-याङ्-भिक्षु १०६
लो-हन्—देखिए अर्हत्
लो-हन् तुङ् (फ़ेइ-लाइ-फङ्) १५५
ल्याङ् उत्तर ६१
ल्येन्-ह्वा-तुङ् (=ई-च्वे तुङ्, लुङ्-मन्) ११६
ल्याओ लिपि का शिलालेख (मुक्देन् के छिङ्-राजप्रासाद में) १२३
ल्यू-ली छाङ् में बौद्ध पुस्तकें २३
ल्हा-सा ९१, ९२
ल्हासा कन्जूर ३० (फू-थी स्स में), ९३ (कुम्-बुम् में), ९४ (कुम्-बुम् के आयुर्वेदविद्यालय में)

व

वंशीय इतिहास १२८
वज्रगुहा (वू-थाइ-शान् में) १५७
वज्रछेदिका-सूत्र ११९, १५३
वज्रदेव १५४
वज्रदेव-युग्म ११५, ११६
वज्रधरदेव ११८
वज्रधर-युग्म ११७
वज्रपाणि ९३ (कुम्-बुम् में), १५५ १५६
वज्रमण्डल-शिलाचित्र (काइ-य्वेन् स्स में) १०५
वज्रयोद्धा ११४
वज्रशेखर-सूत्र १५८
वज्रामृतपञ्जिका (पेइ-चिङ् विश्व-विद्यालय में) ३८
वनवासिन् (अर्हत्) ४०
वन्-छङ् सम्राट् ५९
वन्-म्याओ (में ऐतिहासिक-शिलालेख-संग्रह) १०५
वन् सम्राट् १४५
वर्तुल लिपि ९३
वस्त्र-निर्माणी (पेइ-चिङ् में) ३१-३३
वाङ् (तुन्-ह्वाङ् में) ७३
वाङ्-चिङ्-लू (शी-श्या के विद्वान्) ४४
वान्-फ़ो-तुङ् (=सहस्र-बुद्ध-गुहा, लुङ्-मन् में) ११६
वान्-फ़ो-तुङ्-शिलालेख (लुङ्-मन् में) ११६
वान्-श्वेन्-थ्स (भारत में चीनी अधिकारी) ११४
वार्नर् (Warner) ७४, ७५
विदेश-व्यापार नीति २५
विद्या-सभा (पेइ-चिङ् में) १३३
विनय ९२ (दुल्वा), १५२
विनायक (तुन्-ह्वाङ् में) ६१
विमलकीर्त्ति ६०, ६२ (युन्-काङ् की छठी गुहा में)
विरूढक (लोकपाल) १३१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विरूपाक्ष (लोकपाल) १३१
विरोचन १५८
विश्वकोष (=स्स-कू-चुन्-शू) १२४
विश्वसागर का शिला-चित्र (काइ-य्वेन् स्स में) १०४
विष्णु ५६ (युन्-काङ् की फ़ो-लाइ गुहा में पञ्चमुख गरुडारूढ~), ६१ (तुन्-ह्वाङ् में), ६२ (युन्-काङ् की आठवीं गुहा में)
विहारों के इतिहास के शिलालेख १०५
वीगूर ८४ (षड्-भाषा-शिलालेख, तुन्-ह्वाङ), १४१
वीगूर काष्ठमुद्र ७६, ७७
वीगूर भाषा का अध्ययन-अध्यापन (राष्ट्रीय अल्पसंख्यक विद्यालय में विशेष प्रबन्ध) ३४
वीगूर (प्राचीन) भाषा में श्वेन्-च्वाङ की जीवनी २६
वीगूर लेख १३१
वु-पाइ-लो-हन्-था १६०
वु-युन् शान् (पर्वत) १५३
वू (चिन्-वंश के महाराज) १०४
वू-चाओ (नदी) ५२
वू-जङ भिक्षु (तुन्-ह्वाङ में) ८४
वू-ता-तुङ पञ्चगुहा (युन्-काङ में) ५६
वू-ती स्वप्नचित्र (तुन्-ह्वाङ में) ७५
वू-थाइ (=पञ्चशृङ्ग) १५७
वू-थाइ-शान् (पर्वत) ७६ (तुन्-ह्वाङ में), १५६, १५७, १५८
वू-थाइ-शान्-इतिहास १५७
वू-थाइ-शान्-वज्रगुहा १५७
वू-थाइ-श्येन् १५७
वू-पाइ-लो-हन्-था (=पञ्चशत-अर्हत्-मन्दिर) १६०
वू महारानी ११२, ११७
वू-य्वे १५१
वू-य्वे मण्डल (हाङ-चोउ) १५०
वू-श्याओ-लिङ (संस्कृत नाम—दिवाकर रपाध्याय, चार संस्कृत ग्रन्थों का चीनी में अनुवाद कर रहे हैं) २६
वृषभारूढ शिव त्रिमूर्ति ५६
वेइ-अक्षर गुहा (लुङ-मन् में) ११७
वेइ-अक्षर-गुहा-शिलालेख (लुङ-मन् में) ११७
वेइ-फ़ङ भिक्षु १४६, १४७
वेइ महारानी ११५
वेइ वंश का इतिहास ५६, ११३
वेइ-श बौद्ध सम्प्रदाय १५२
वेदिक मिस्टिसिज़्म Vedic Mysticism १२४
वैरोचन बुद्ध ६३, १०५ (काइ-य्वेन् स्स में शिलाचित्र), ११७, ११८
वैरोचनमण्डल (छिङ-लिन् तुङ्) १५५
वैश्रवण (लोकपाल) १३१, १५५
वो-लुङ स्स १०५

श

शक्रेन्द्र-गुहा (मगध की) ९८
श-खू स्स (लुङ-मन् में) ११९
श-खू स्स शिलालेख ११९
शंख (भारतवर्ष से क्वान्-जन् स्स में) १०२
श-ची स्स ११८
श-च्या-फ़ो गुहा (युन्-काङ में) ५५
श-था तुङ (युन्-काङ में) ६१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शन्-श्यू (सम्राड्गुरु) १०५
श-फ़ो स्स की ६ गुहाएं (युन्-काङ् में) ५६
श-वू तुङ् (गुहा) १५४
श-वू तुङ्-शिलालेख १५४
श-शान् गुहाएं १४५
श-शू तुङ् (फ़ेइ-लाइ-फङ् में) १५५
श-श्येन् (काश्मीर के राजकुमार) ६१
श-सङ् स्स (=पीत मन्दिर, मुक्देन् में) १२३
श-हू (अनुवादक) १३२
शाओ-लिन् विहार (आचार्य बोधिधर्म का कार्यस्थान) १०७
शाकुन्तल का चीनी अनुवाद २६
शाक्य तुङ् (युन्-काङ् में) ६३
शाक्यमुनि २८, ५७ (युन्-काङ् गुहाओं में), ६०, ६१ (युन्-काङ् की श-था तुङ् गुहा में), ६२ (ता-फ़ो तुङ् गुहा में युन्-काङ् की विशालतमा मूर्ति), ६३ (युन्-काङ् में) ६४, ६२ (कुम्-बुम् में), ६४, ६५, १०३, ११४-११७, ११६, १५४, १५५, १५६ (मार-दमन-मुद्रा में)
शाक्यमुनि-जीवनवृत्त ६६ (गजदन्त-मूर्ति), १४५
शाक्यमुनि-भवन ६२ (युन्-कङ् की ६ठी गुहा), ६३ (कुम्-बुम् में जो-खाङ)
शाङ-श्वेन् ११७
शाङ-हाइ ६६, १२८, १४६
शान्-ताओ ध्यानाचार्य (लुङ-मन् में) ११८
शाब्-तेन् ल्हा-खाङ (कुम्-बुम् में) ६४
शिङ्-आन् (=शी-आन्) ६७
शिङ्-च्याओ स्स १०३
शिङ्-च्याओ स्स शिलालेख १०४
शिन्-च्याओ फ़ान्-त्येन् (पेइ-चिङ् का विश्रान्तिगृह) १२
शिलालेख
अष्टकोण स्तम्भ धारणी १११
इतिहास (विहारों और आचार्यों का) १०५
उष्णीषविजया-धारणी १०४, १४६
औषध-योगों पर ११६
काइ-य्वेन् स्स में धारणी-स्तम्भ १०४
कुम्-बुम् में ६३
कू-याङ् तुङ् (लुङ्-मन् में) ११६
क्वेइ-फ़ङ्-त्सुङ्-मी के ध्यानाचार्य का १०६
खण्डित गुहा (लुङ्-मन् में) ११७
चिङ्-शान् स्स (लुङ्-मन् में) ११५
छी-श्या स्स में १४४
ताओ-यिन् धर्माचार्य का १०५
ता-च आचार्य का १०५
ता-तुङ् (लुङ्-मन् में) ११६
ता-फङ्-श्येन् स्स (लुङ्-मन् में) ११७
तुन्-ह्वाङ् में ७४, ७८, ८४, ८५
त्रिपिटक मुद्रण-वण्टन-विषयक शिलालेख (वो-लुङ् स्स में) १०५
थाइ राजकुमार की भूमिका (लुङ्-मन् में) ११५
द्वाचत्वारिंशदध्याय-सूत्र १५३
नारायण-गुहा में १५६
पञ्चमूर्ति (लुङ्-मन् में) ११७
पू-छी आचार्य का १०५
पो-मा स्स में १०६, ११०
फङ्-श्येन् स्स (लुङ्-मन् में) ११७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फन्-क्वो-कुङ् में बुद्धभक्त सेनापति का
१०६
फ़ेइ-लाइ-फङ् में १५४
बुद्धचरण (जापान के नारा नगर में)
१०५
बुद्धमूर्ति-निर्माण-विषयक (लुङ्-मन् में)
११५
भारतीय धर्मदूतों के (पो-मा स्स में)
१०८
युन्-काङ् में ११२
योगाचारभूमिशास्त्र पर सम्राट् की
भूमिका और राजकुमार की उप-
भूमिका, मिङ्-लुङ् भवन में १०३
ल्वे फ़ाङ् तुङ् (लुङ्-मन् में) ११६
लाओ-चुन् तुङ् (लुङ्-मन् में) ११६
लुङ्-मन् में ११२, ११४, ११६, ११७
ल्याओ लिपि में (छिङ्-राजप्रासाद में)
१२३
वज्रछेदिका ११६ (लुङ्-मन् की श-खू
स्स में), १५३
वान्-फ़ो तुङ् (लुङ्-मन् में) ११६
विश्वसागर का शिलाचित्र १०४
वेइ-अक्षर-गुहा (लुङ्-मन् में) ११७
श-वू तुङ् में १५४
शिङ्-च्याओ स्स में १०३
श्वेतकमल-संघ १५३
श्वेन्-चुन् महाराजा का (तुन्-ह्वाङ् में)
८४
श्वेन्-त्सुङ् सम्राट् और धर्माचार्य चङ्-
क्वाङ् के चित्र १०४
षड्भाषिक (तुन्-ह्वाङ् में) ८४
समन्तमुख-प्रवेश-रश्मि-विमलोष्णीष-प्रभा-
सर्वतथागतहृदय-समविरोचन-धारणी
१३२
सर्वदुर्गतिपरिशोधनोष्णीषविजयधारणी
१३१
शिलालेख-वन = पेइ-लिन्
शिलालेख संग्रह १०२ (तू-शू-क्वान्
अद्भुतागार में चार सहस्र शिलालेखों
का संग्रह), १०५ (पेइ-लिन् में),
१२४ (मुक्देन् के नगर पुस्तकालय में
शिलालेखों की छापों का संग्रह)
शिलोत्कीर्ण-लेख-पञ्जिका (तुन्-ह्वाङ्
गवेषणालय में) ८२
शिव ६१ (तुन्-ह्वाङ् में), ६२ (युन्-
काङ् की ८वीं गुहा में)
वृषभारूढ त्रिमूर्ति ५६ (युन्-काङ् की
फ़ो-लाइ गुहा में)
त्रिशूलधारी शिव ५६, १४७ (चिन्-
आन् स्स में)
शिव-मूर्ति (तुन्-ह्वाङ् में) ५६
शिवरामकृष्ण १६३
शिवली (लंका के भिक्षु) १६३
शिशुशाला (पेइ-चिङ् में) १०७
शी-आन् (शान्-सी प्रान्त की राजधानी)
६६, ७७, ६६, १०२, १४३
शी-आन् पुस्तकालय ६६
शी-आन् विश्वविद्यालय ६६
शी-काङ् ६२
शीतमण्डप (पो-मा स्स में) ११०
शी-निङ् ६०, ६५
शी-मिङ् स्स (में श्वेन्-च्वाङ् रहे) ६७
शी-यन् के स्मारक रूप में धारणी-लेख
१११

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शील १५४
शी-ली-थू-चाओ (होहे-हॉता में मोंगोल मन्दिर) ४९
शी-श्या (ताङुत् जाति की भाषा) ४३, ४५, १३१
शी-श्या अक्षर १२७
शी-श्या अनुवाद (सुङ् संस्करण से) १२७
शी-श्या काष्ठमुद्रणफलक १२६
शी-श्या कोष (कारा-हॉता से) ५१
शी-श्या गुहा (तुन्-ह्वाङ् में) ७५
शी-श्या ग्रन्थ ४३ (त्रिपिटक), ४४ (पेइ-चिङ् पुस्तकालय में), १०१ (शान्-सी तू-शू-क्वान् में), १२६ (पेइ-चिङ् पुस्तकालय से)
शी-श्या चित्र १२७
शी-श्या लेख ७८ (तुन्-ह्वाङ में), ८४ (तुन्-ह्वाङ् में षड्-भाषा-शिलालेख), १३१
शुद्धोधन-जातक (तुन्-ह्वाङ् में) ७६
शुद्धौषधि शक्ति विशेषाख्यात काशदेश-नामलोऽर्क-वल्लरीर्नाम माररोगहः प्रतिभक्षं विहारं। (युङ्-हो-कुङ् में भोट आयुर्वेद ग्रन्थ का संस्कृत शीर्षक) १२०
शून्यता-सिद्धान्त १४४
शून्यवाद के प्रसिद्ध प्रवक्ता भिक्षु (फ़ू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स में) १०१
शूबर्ट (बर्लिन् अद्भुतागार से) २८, ३०
शृंगधारी व्याघ्र १५२
शोतोकु राजकुमार (मूर्तिकार) ५२
श्याओ-यन्-था (शी-आन् में पञ्चदश-भूमिक मन्दिर) ९९
श्याओ-वन् सम्राट् ६२
श्या-थ्येन्-चू स्स (लिन्-ची ध्यान सम्प्रदाय का विख्यात स्थान) १५२
श्येन्-वन् (सम्राट् श्याओ-वन् के पिता) ६२
श्येन्-वन्-ती (थो-पा सम्राट् ५२३-५२७ विक्रम) ५३
श्येन्-हङ् ११६, ११७
श्ये-पिङ्-शिङ् (कवयित्री) ४१
श्रमिक-संघ ४६
श्रावस्ती के चमत्कारों का चित्रण (युन्-काङ् में) ५७
श्रेयांसप्रसाद जैन १६४
श्वेत-कमल-संघ (=अवतंसक-शुद्ध-जीवन-धार्मिक संघ) १५३
श्वेताश्व-विहार (=पो-मा स्स) १०८
श्वेन्-चुङ् महाराजा (तुन्-ह्वाङ् में) ८४
श्वेन्-च्वाङ् २६ (भारत यात्रा), ७१, ७९ (तुन्-ह्वाङ् में चित्र), ९७ (शी-आन् के थ्स-अन् स्स विहार में ~ की अध्यक्षता में अनुवाद), ९८ (~ द्वारा अनूदित ग्रन्थों की सूची), १०० (फ़ू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स में पञ्च-भूमिक समाधि, लेख, और मृत्तिका-मूर्ति), १०१ (फ़ू-क्वो-शिङ्-च्याओ स्स में अस्थि-अवशेष), १०२ (योगाचारभूमिशास्त्र का चीनी में अनुवाद), १०३ (स्तूप), १०५, ११४, १२६, १४३ (अस्थि-अवशेष)
श्वेन्-च्वाङ् का चित्र ७९
श्वेन्-त्सुङ् सम्राट् १०४ (शिलाचित्र),

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११२
श्वेन्-वू १११ (ग्राम), ११३ (राजा)

ष

षड्बोधिवृक्ष मन्दिर ६
षड्बोधिवृक्ष मार्ग १०
षड्भाषा-लेख १३०

स

स (अमोघश्री) १५८
संयुक्त अग्रसंघ (United Front Organization) १२८
संस्कृत का अध्ययन १३२
संस्कृत ग्रन्थ (चीनी में) २६, १४६
संस्कृत मन्त्र १४, २३ (राजप्रासाद से भोट, मोंगोल, मञ्जु और चीनी लिपियों में संस्कृत मन्त्र-संग्रह)
संस्कृत लिपि १४, १५५
संस्कृत लेख ८४ (तुन्-ह्वाङ् के षड्भाषा-लेख में)
सद्धर्मपुण्डरीक ५७ (युन्-काङ् में इसके उपदेश का चित्रण), ६०, ६१, ६३, १५२, १५३
सप्तभूमि स्तूप (लान्-चाओ में) ६७
समन्तभद्र ९८, १५७ (ओ-मी शान् में ~ का निवास)
समन्तमुख-प्रवेश-रश्मि-विमलोष्णीष-प्रभा-सर्वतथागत-हृदय-समविरोचन-धारणी १३२
समाधि १५२
समाधि-प्रज्ञा-ध्यानाचार्य (उपाधि) १०६
सम्राड्भिषेक (आचार्य अमोघवज्र द्वारा) १०४
सम्राडादेश (ता-यन्-था में) ९८
स-याङ् गिरि १५६
सरस्वती (कुम्-बुम् में) ९३
सरस्वती-विहार-ग्रन्थमाला १३२
सर्वतथागताधिष्ठानहृदय-गुह्यधातुकरण्ड-धारणी २३ (प्रासाद-संग्रह में), १५० (लेइ-फ़ङ् स्तूप की ईंटों में)
सर्वदुर्गतिपरिशोधनोष्णीषविजय-धारणी १३२
सहस्र बुद्ध ९२ (कुम्-बुम् में)
सहस्र-बुद्ध-गिरि (छी-श्या स्स में) १४४, १४५
सहस्र-बुद्ध-गुहा (=वान्-फ़ो तुङ्, लुङ्-मन् में) ११६
सा-चाओ मण्डल (=आधुनिक तुन्-ह्वाङ्) ८४
सान्-वेइ-शान् (तुन्-ह्वाङ् में) ६१
साम्-थान् (शी-ली-थू-चाओ के मुख्य लामा) ४९
साम्यवादी गीत (संयान में) ३
साहित्य-दर्पण के नाटक-परिच्छेद का चीनी अनुवाद २६
सिंहचर्मावृत स्तम्भ (कुम्-बुम् में) ९४
सिंहपुर (=सिंगापुर) १६३
सिंहपुर बौद्ध मन्दिर १६३
सिंखु साली तुतुङ् (श्वेन्-च्वाङ् की जीवनी के वीगूर में अनुवादक) २६
सिद्धम् लिपि ८, ८५, १३२, १४७
सिद्धासन ९, १०
सुइको (जापान कला का युन्-काङ् पर प्रभाव) ५७
सुखावती ११८, १५२, १५३, १५४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुखावती-सूत्र का अवतंसक दर्शन के अनुसार निर्वचन १५४
सुङ्-चू स्स २७ (भोट ग्रन्थों का काष्ठ-फलकों द्वारा मुद्रण), ३०
सुङ्-रे-जाम्छो (चिङ्-हाइ प्रान्त के संस्कृति और शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष) ६१
सुङ्-शान् १०७
सुदर्शना का तैलचित्र ८५
सुन्-यात्-सन् ५ (~स्मारक), ६ (~भवन), ७ (~स्मारक), ४० (~शवाधान), १४२, १६० (क्वाङ्-चोउ में ~विश्वविद्यालय)
सुभग (अर्हत्) ४०
सुमेरु (चन्दन का) ४५
सुमेरु-वेदी (चिङ्-शान् स्स में) १५६
सुवर्णप्रभास-सूत्र ५९ (~ के अनुसार युन्-काङ् की गुहाओं का निर्माण), ६०
सुवर्णमण्डित बुद्धचित्रित ईंटें १४३
सुवर्ण-स्तूप (कुम्-बुम् में) ९३
सूत्रपाठ १४७
सूत्रपाठ-भवन (कुम्-बुम् में) ९२
सत्र-पुस्तिका ५०
सूत्र-रक्षा-मन्दिर (=ता-यन्-था) ९८
सूर्य (स्तूप पर चित्रित) ९२
सोनाम् जाम्छो का स्तूप (कुम्-बुम् में) ९२
सोल्का (कुम्-बुम् में) ९४
स्टाइन (Aurel Stein) ७३
स्तूप-गुहा (=लुङ-मन् में नत-जानु-सिंह-गुहा) ११६
स्फोट-क्रीडा २१
स्वर्गलोक के दृश्य (ग्रीष्म-प्रासाद के त्रिभूमिक रंगमण्डप में) ४४
स्वस्तिका-रूप मण्डप १४९
स्वी-ता-फ़ो तुङ् (युन्-काङ् में) ६१
स्वीवंश-कालीन चित्र (तुन्-ह्वाङ् में) ७५
स्स-कू-चुन् शू (मुक्देन् के नगर-पुस्तकालय में ३००० खण्डों में विश्व-कोष) १२४
स्स-पू-श-थाङ् (मोंगोलिया के स्मारक-उद्यान में नया प्राणी) ५०
स्स-मिङ (निम्पो) १५०
स्स-शुन् वीथि (हो-नान् नगर में) ११४

ह

हरिकृष्ण महताब (बम्बई प्रदेश के राज्यपाल) १६४
हरीन्द्र चट्टोपाध्याय ३८
हॉङ्-कॉङ ३, १६२
हाङ्-चोउ १४९, १५३, १५९
हाङ्-चोउ-कासार १४९
हारर् ९२
हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन ३८, ३९
हिम-मञ्जूषा १२३
हुङ्-फू स्स (शी-आन् में) १०२, १०३
हुङ्-सङ् (अध्यक्ष, विदेश सांस्कृतिक सम्पर्क मण्डल) ४१
हुतात्म-स्मारक-स्तम्भ (होहे-हॉता में) ५१
हृदय-पारमितासूत्र—देखिए प्रज्ञापारमिता-हृदय-सूत्र
हृदय-सूत्र—देखिए प्रज्ञापारमिता-हृदय-सूत्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होता के राजा (तुन्-ह्वाङ्) ७९
हो-नान् १०८, ११४
होहे-हॉता (आभ्यन्तर मोंगोल की राजधानी नील-नगरी) ४३, ४६ ४८
ह्वाइ-जन् थाङ् भवन १२७
ह्वाङ् महारानी १५१
ह्वाङ्-हो (अर्थात् पीतनदी) ८९, ९०
ह्वा-यन् सम्प्रदाय १५२
ह्वा-यन् स्स ६३ (ता-तुङ् नगर में दो विहार), १०६
ह्वी-च्येन् (लुङ्-मन् में धर्माचार्य) ११८
ह्वी-तिङ् भिक्षुणी ६३
ह्वी-ली (लिङ्-यिन् विहार के संस्थापक भारतीय पण्डित) १५१
ह्वी-श्याङ् (छिङ्-ल्याङ् प्राचीन अभिलेख के संकलनकर्ता) १५७

* * *

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh